लेबेदेव की नायिका

प्रतापचन्द्र 'चन्द्र'

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

लेबेदेव की नायिका

एक

वह डोमतला अब नहीं रहा। उसके पच्चीस नम्बरवाले घर में जो बँगला थियटर निर्मित हुआ था, वह बहुत दिन पहले खत्म हो गया। अब वहा बडी बडी सडकें निकल आयी हैं, बडी बडी इमारतें खडी हैं। उस जगह की धूल का क्या अब भी उस थियेटर की याद है जहा पहले पहल बँगला भाषा के नाटक खेले गये थे, बगाली अभिनेताओ और अभिनत्रियो की टोली ने अभिनय किया था?

वह बहुत दिन पहले की बात है। १७९५ ई०। पालवाले जहाज तब सात समुद्र पार करके कलकत्ता शहर के घाट से आ लगते थ। डगर डगर पर पाल्की ढोनेवाले कहारों की सुरीली हुहकारे गूजती रहती थी। बग्धी टमटम फिटिन घूमते फिरते रहते। मोमबत्ती और रेंडी के तेल मे जलनेवाली रोशनियाँ जुगनुओं की आभा को लजाती होती। गगा मे भरी नौकाओ मे दास-दासियो का विक्रय चलता। वेश्याओ के गान और नूपुर झकार से हवा मुखरित रहती। अपराधियो को बेंत मारना, यातना देना, यहाँ तक कि फाँसी देना भी लाल-बाजार के चौराह पर खुलेआम सबके सामने होता। गोरी मेम के अभाव मे साहब लोग इसी देश की रमणियो के साथ घर बसाते।

कलकत्ता शहर मे उस समय कम्पनी शासन का दौर था, वहा से पाश्चात्य हवा बहने लगी थी, अनेक जातियो के लोग—अग्रेज, फ्रासीसी, पुर्तगाली, डच,

डेन, इटालियन, अर्मेनियाई, चीनी, हब्शी—शहर की धूल भरी गलियों मे चक्कर काटते रहते। साहब लोग संस्कृत, बँगला, हिन्दी, फारसी सीखते थे, देशी व्याकरण, आईन-कानून, धर्मग्रन्थ लिखते थे, कोर्ट-कचहरी, छापेखाने खोलते थे। देशी लोग पढ़ते थे यूरोप की भाषा, पहनते थे विलायती पोशाक, और विलायती सभ्यता और संस्कृति को अपनाते जा रहे थे।

वह एक विलक्षण आदान प्रदान का युग था—सिर्फ वस्तुओं का नहीं, मन का भी।

बँगला थियेटर इसी तरह के एक आदान प्रदान का परिणाम था, एक गुमनाम बंगाली भाषा शिक्षक ने जिसकी परिकल्पना की थी और एक स्वप्नदर्शी रूसी वादक के प्रयास से जिसे प्रतिष्ठा मिली थी।

जुगनू की चमक की तरह उस थियेटर की ज्योति जलते ही बुझ गयी। लेकिन इतिहास के पन्ने पर अपने निशान वह छोड़ गया।

कौन था वह भाषा शिक्षक कौन था वह वादक—इतिहास कुछ कुछ इसकी जानकारी देता है, किन्तु कौन थे वे अभिनेता, कौन थीं वे अभिनेत्रियाँ, इतिहास इसके बारे मे मौन है।

हो सकता है ऐसे अनेक लोग हों जिनकी बात अभी कही गयी है।

गेरासिम लेबेदेव तेज निगाह से स्त्री के रूप को परख रहा था। श्रीमान गोलोकनाथ दास ने आज जिस स्त्री को हाजिर किया है उसे महज ही अनदेखा नहीं किया जा सकता, काफी रौनकदार चेहरा। देह का रंग अखरोट के समान, जरीदार साड़ी मे वह और भी खूबसूरत लगती थी। उसकी लम्बी नाक पर झिलमिलाती वस्त्राभा, गोलाकार आँखो मे काजल, माथे पर लाल टीका, पैरो मे आलते की छाप, पान खाने से लाल-लाल हुए पतले होंठ, काले बालो मे सूर्यमुखी के फूल—उसके पूरे शरीर पर यौवन के उभार का आकर्षण छाया हुआ था। वह नृत्य की मुद्रा मे एक बार लेबेदेव के सामने घूम गयी, नितम्बो की रंगीन आभा ने शुभ्र परिधान की बाधा नहीं मानी। हाथ की डिबिया से जरा सा सुवासित जरदा मुख मे डालते हुए तनिक आँख मारते हुए रमणी बोली "क्या है साहब! आँख की पलक तो गिरती नहीं। मैं पसन्द आयी कि नहीं?"

उसका कण्ठस्वर मधुर होने पर भी तेज था। वह सुन्दरी थी, किन्तु जरा छोटे शरीरवाली।

गोलोक दास ने भर्त्सना के स्वर में कहा, 'कुसुम, बेअदबी मत करो।"

"मरण और क्या !" कुसुम ने छूटते ही कहा, "बेअदबी फिर कहा की मैंने, गोलोक बाबू ? सिर्फ जानने की इच्छा हुई कि साहब 'हाँ' कहकर मुझे निगल जायेंगे या नही ?"

स्त्री खूब रोबवाली है, लेबेदेव ने मन ही मन सोचा। उसके स्वर मे तेजी है काफी दूर तक सुनायी देगा।

"आ मृत्यु', कुसुम अपने-आपसे बोली, "बोलो बाबू, पसन्द आयी कि नही ? साहब होने से क्या होगा, एक साँड के सामने क्या काठ की मूरत की तरह खड़े रहा जा सकता है ?"

कुसुम एक क्षण भी चुप होकर खड़ी नही रह सकती। वह हरिणी की तरह चकित है। लेबेदेव तन्मय होकर मन ही मन रमणी के रूप की विवेचना करने लगा।

कुसुम गाल पर हाथ धरे बोली, "अच्छी मुसीबत! देखती हूँ साहब मेरा रूप देखकर विभोर है !"

"आह कुसुम, कहता हूँ चुप रहो !" गोलोकनाथ ने सतर्क स्वर मे कहा।

'एक धाकड अपनी मतवाली आखो से मुझे निगलेगा। लेकिन बाबू, मैं चुप नहीं रह सकती।"

कुसुम तेज कदमो से लेबेदेव के निकट बढ गयी। रोबभरे स्वर में प्रश्न किया, "बोलो न साहब, मैं पसन्द हूँ कि नही ?"

अबकी लेबदेव ने पूछा, "ठाकुरानी गाना जानती है ?"

जीभ काटते हुए कुसुम बाली, "यह निकला ! साहब बँगला जानता है ? छि छि, छि छि, तौबा ! गोलोक बाबू पहले क्यो नही बताया ? अन्यथा मैं इतनी रसीली बातें नही कहती।"

लेबदेव ने फिर गम्भीर स्वर मे कहा, "ठाकुरानी, एक गीत गाओ।"

कुसुम बोली, "क्या गाऊँ, ठुमरी या ठप्पा ?"

लबदेव बोला, "भारतचन्द्र राय का गीत गाओ।"

"इस," कुसुम खिलखिलाकर हँस पडी, "देखती हूँ साहब रसिककुमार है। विद्यासुन्दर गाये बिना मन जागेगा नही। तो वही गाऊ।"

कुसुम ने गान छेड दिया। लेबेदव साथ-साथ वायलिन बजाते हुए सुर का अनुसरण करने लगा। कुसुम ने गाया—

कि बलिलि मालिनि फिरे बल बल।
रसे तनु डगमग मन ढल ढल॥

शिहरिल्लो क्लरव, तनु कापे थर थर
हिया हैलो ज्वर ज्वर आंखि छल छल।
तेमागिया लावलाज, कुलर मामाय बाज
भजिबो स ब्रजराज रूप चल चल॥

रहिते ना पारि घर, आकुल पराण करे
चित न धैरज धर पिक कल कल।
दखिवो से श्यामराय, बिकाइवा रागा पाय
भारत भाविया ताय ढल ढल॥

उसका अनवरुद्ध कण्ठस्वर तेज होने पर भी मधुर था। गाना समाप्त होने पर कुसुम उठती हुई बोली, 'गाना तो सुना, मुजरा देंगे न ?"

गोलोक ने कहा "मुजरे के लिए उतावली मत मचा, साहब अगर तुझे एक बार थियेटर में पहुंचा दें तो कितने ही बड़े बड़े धनी मानी मुजरे के लिए तेरे चरण धरकर आग्रह करेंगे।'

"सच !" कुसुम उल्लसित होकर बोली "तब तो बदन मल्लिक यदि मुजरे के लिए आये तो झाड़ू मारकर उसे सजा दूंगी। अपने बिलौटे के विवाह में उसने सिन्धुबाला को गाने के लिए बुलाया, और मुझे खबर देना जरूरी नहीं समझा। जबकि मदुआ रात रातभर मेरे घर में गाना सुन गया। साहब, बताओ न, मैं थियेटर के लिए जँची या नहीं ?"

लेबदव ने संक्षेप में कहा "नापसन्द।"

"अयँ! मैं पसन्द नहीं ?" कुसुम सबके सामने रो पड़ी। रुदन भरे स्वर में बोली "गोलोक बाबू अभी एक डोली मँगाओ। मुझे अभी घर पहुंचा दो।'

गोलोक दास हताश हो बोला 'साहब, कुसुम भी तुम्हें पसन्द नहीं आयी ? ऐसी सुन्दरी !"

रुदन के बीच ही कुसुम बोली सुना न ? नापसन्द! मर गयी और क्या!"

"ठाकुरानी," लेबदव हल्के हँसकर बोला, "हठात गुस्सा मत करो। तुम अपूर्व सुन्दरी हो, तुम चंचल हो। किन्तु अपने मनोभाव का दमन करना नहीं जानती। मनोभाव पर काबू नहीं रहने से अभिनय में सफलता सम्भव नहीं। अभिनय की प्रवृत्ति तुम्हारे अन्दर नहीं है। तुम्हें भारतचन्द्र के गीत के लिए पसन्द किया।'

कुसुम न आँचल से आँखें पोछी, कुछ सदिग्ध स्वर मे प्रश्न किया, 'सिर्फ गीत ?"

लेबेदेव अबकी उत्साह से बोला, "तुम गाओगी, मैं और मेरे दल के लोग देशी और विलायती वाद्ययन्त्र बजायेंगे। सारगी, बासुरी, वीणा, तानपूरे के साथ वायलिन, चेलो, क्लारियानट आदि विदेशी वाद्य बजेंगे। सोचता हूँ वह सुनने म सुखद प्रतीत होगा। इण्डियन सरिनेड्।"

गोलाक ने कहा, "हाँ कुसुम, साहब बडे भारी वादक है। राजा सुखमय राय के यहाँ दुर्गापूजा के समय विलायती सुर म देशी गान का आयोजन हुआ था। अर छि छि, एकदम बेकार, बिल्कुल नही जमा। साहबा ने अखबार म कितनी निन्दा की। लेकिन साहब की वायलिन ने जसे तेरे सुर मे सुर मिलाकर बात की है। सुना नही, कुसुम ?"

कुसुम आश्वस्त होकर बोली, 'वह ता कहा, लेकिन गाऊँगी कहा ?

लवदेव ने कहा, "स्टेज पर।"

कुसुम ने बात समझी नही, एकटक ताकती रही।

लेबदेव ने गोलोकनाथ दास से पूछा, 'बाबू, स्टेज का बँगला क्या होगा ?"

"स्टज, स्टेज," जरा सोचकर गोलोक बाला, "मच—मांचा!"

'नही नही, गोलोक बाबू," क्षुब्ध होकर कुसुम बोली, "बलिहारी है तुम लोगा के शौक की! घर मे कहो, बाहर कहो, नाट्य मन्दिर म कहो, मै गा सकती हूँ। मुझे काटकर फेंक डालो तब भी माचा के ऊपर खडी होकर नही गा सकती। मैं क्या गुड की गुडिया हूँ!'

"अरी बेवकूफ," गोलोक ने कहा, 'वह माचा (मचान) नही, मच—रगमच है। ठीक जैसे बडे लोगो के घर का मदाना दालान, तू उसी ऊँचे दालान से गायगी और लोग सुनेंगे जैस कान पाथकर, पीछे की तरफ बैठन के लिए सीढीनुमा गैलरी, ऊपर बरामदे म बाक्स, जसा अग्रजी थियेटर होना है बसा ही होगा बँगला थियटर।

कुसुम ने खुश होकर हाथ से ताली दी, "खूब मजा आयेगा, मैं तब गोरी मेम लोगो की तरह स्टेज पर खडी हो स्टज पर ही गाऊँगी न ?"

"अवश्य ठाकुरानी," लेबेदेव न कहा, "तुम्हारे सगीत से इण्डियन सरिनेड खूब जमेगा। मन तुम्हें भारतचन्द्र के गान के लिए पसन्द किया।'

'मरा मुजरा लेकिन खूब अच्छा करक देना होगा।"

"अवश्य। मैं तुम्हें खुश कर दूगा।"

कुसुम गुनगुनाती, गाती चली गयी।

गोलोकनाथ दास ने कुसुम का परिचय पहले ही दे दिया था। कायस्थ घराने की बालविधवा आठ वप की आयु म विवाह हुआ था। लेकिन यौवन के आगमन से पहले ही वह पतिहीना हो गयी। उतनी छोटी लडकी थी, इसलिए समाजपतियो ने उसे सती नही होने दिया। चिता म नही मरने पर भी समाज के लिए वह मर गयी। उसका तन भरा रूप मन भरा रस। वैधव्य का बन्धन वह क्यो सहती? कुल को कलकित करके कुसुम एक दिन दूर के रिश्ते के एक रसिक देवर के साथ घर से निकल गयी। वह पुरुष सगीतविद्या म पारगत था। देहदान के विनिमयस्वरूप कुसुम ने उससे ठुमरी, टप्पा, कीतन तथा और भी कितने ही गान सीख लिये। उसके रूप और गुण की चर्चा रसिक समाज म फैल गयी। उसके चहेतो की सख्या भी बढ गयी। साथी को त्याग कुसुम ने यौवन के ज्वार मे अपने को छोड दिया। कुछ कुछ दिनो के लिए कितने ही घाटो से बँधी लेकिन हमेशा के लिए नही। चितपुर म ही उसका डेरा है गायिका के रूप म ख्याति व्यापक न होने पर भी अच्छी-खासी है। गोलोक दास ने ठीक ही कहा कुसुम ने सुर पाया है। लवेदेव ने देखा, कुसुम की आखो म भापा है। इण्डियन सरिनेड उसम जम उठेगा। कुसुम को पाकर लेवदेव की एक दुश्चिन्ता खतम हुई। बँगला गीत गानेवाली गायिका खोजने के लिए अब और भटकना नही होगा।

लेबेदव नाटक की पाण्डुलिपि लेकर बठा। पास हो-पास तीन भापाओ म लिखी —अग्रेजी रूसी और बँगला। खूब हाशिया देकर सज्जित लिखावट। खुद उसके ही हाथ की लिखी, साफ साफ।

किन्तु नाटक उसका अपना नही। डोरल साहब द्वारा लिखित अग्रेजी नाटक, दि डिसगाइस उसका शीर्षक। लवन्देव न मुख्य रूप से उसे बँगला मे रूपान्तरित किया था। बिलकुल अनुवाद नही उसम अग्रेजी और मूर भापा भी कुछ-कुछ छोड दी थी। अच्छा जमा हुआ नाटक। तीन अको म समाप्त। मूल नाटक की घटना स्पेन मे घटित हुई थी पात्रो के नाम यूरोपीय, जैसे—डान पड्रो, क्लारा आदि लेवदेव ने नाम बदल दिये थे, क्लारा हो गयी सुखमय। प्रथम दृश्य म क्लारा पुरुष वेश म उपस्थित। नाटक वही से जमने लगता है। जो सब घटनाएँ मड्रिड और मविल म घटी थी, वे सब कलकत्ता और लखनऊ म घटती हैं। घटनाएँ कितनी करीब चली आयी। जस सबकी जानी, सबकी पहचानी हो।

नाटक का अनुवाद करने के बाद लेबेदेव ने देशी पण्डितों को पढ़कर सुनाया था। उन्होंने सराहा, सशोधन सुझाये। लेबदेव इस देश के लोगों को जानता है। ये लोग गजन-तजन और प्रहसन पसन्द करते हैं। इसीलिए नाटक म चोर ढूढनेवाले चौकीदार की व्यवस्था थी।

उसके भाषा शिक्षक गोलोक दास ने कहा, "साहब, अभिनय किये बिना नाटक का रस नहीं जमता। नाटक तो हुआ, अब अभिनय हो।"

लेबेदेव ने कहा था, 'थियेटर कहाँ है ? तुम्हारे बगाली अभिनेता-अभिनत्री कहाँ हैं ?"

गोलोक दास बोला था, "तुम थियटर की व्यवस्था करो। मैं अभिनेता और अभिनेत्रियों का जोगाड करता हूँ।'

लेबदेव को बात हल्की नहीं लगी थी। बँगला थियेटर—लेबेदेव का बँगला थियेटर। एक बढ़िया और नयी बता होगी।

'बहुत अच्छा," लेबेदेव न कहा, "तीन महीने, मात्र तीन महीन के भीतर मैं बँगला थियेटर खोलूगा। तुम बगाली अभिनेता अभिनेत्रियो का जोगाड करो।"

लेकिन काम दोनों ही का सरल नहीं था। तीन मास के भीतर थियेटर की व्यवस्था करनी होगी। बहुत सा रुपया लगेगा। लगे भले ही बहुत-सा रुपया। लेबेदेव भाग्य स जुआ खेलेगा। चाहे रोजगार करना पडे, कर्ज उधार लेना पडे, वह तीन मास के भीतर एक ऐसे थियेटर का निमाण करेगा जिसका जोड इस कलकत्ता शहर के दशी विदेशी लोग कभी न पायेंगे। थियटर के लिए अब गवनर जनरल की अनुमति चाहिए। सर जान शोर अवश्य ही सुप्रसिद्ध वादक को निराश नहीं करेंगे।

मगर बगाली अभिनेता-अभिनेत्री ? वह दायित्व गोलोक दास का है। इसी लिए गालोक दास नट नटी की खोज म निकला था। कलकत्ता शहर मे रामलीला, कवियों का दगल (पेशेवर तुक्कडो के वाग्युद्ध का खेल), कृष्ण-यात्रा आदि चल ही रही थी। गोलोक दास ने अभिनता जुटा लिये। हरसुन्दर विश्वम्भर, नीलाम्बर तथा और भी कइयों ने लेबेदेव के सामने परीक्षा दी। हरसुन्दर करघा चलाने का जातिगत धन्धा छोडकर यात्रादल मे आ मिला है। विश्वम्भर हलवाई सन्तान है। नीलाम्बर ब्राह्मण-पुत्र है। उनके घरो की स्थिति अच्छी है, किन्तु नाटक दल मे शामिल होने के लाभ के चलते वे अपने पिता से लड-झगडकर भाग आये हैं। इनमें साहस है स्वर की शक्ति है और यात्रा अभिनय का कुछ ज्ञान भी है। सीख पढ जाने पर ये थियेटर का ढर्रा अपना ही लेंगे। गोलोकनाथ न एक के बाद एक कितनी ही रमणियाँ दिख-

गयी—नर्तकी, गायिका कन्याएँ। नारी चरित्र की छोटी मोटी भूमिकाओं के लिए लेबेदेव ने उनमें से कइयों को पसन्द किया। छोटी हीरामणि, आतर, सौदामिनी आदि को थियेटर के काम के लिए बहाली की गयी। निम्न जाति की लड़की आतर बड़े लोगों के घरों में दासी का काम करती है। स्वर में जोर खूब है। झगड़ा करने में उस्ताद। और छोटी हीरामन वर्णश्रेष्ठ ब्राह्मणों में भी श्रेष्ठ कुलीन ब्राह्मण की कन्या। वह अपने पति की उन्नीसवीं पत्नी है। उसके बाद भी लगता है उसके पति ने दो 'गण्डा' (गण्डा=चार) शादियाँ की थीं। हीरामणि के विवाह के श्रम में उसके पिता की सम्पत्ति स्वाहा हो चुकी थी, विवाह के पाँच वर्ष के दौरान मात्र एक बार हीरामन का पति उसके साथ रहने आया था, सो भी एक मोटी रकम लेकर। दरिद्र पिता अपनी बेटी की साध मिटाने के लिए बार बार रुपया कहाँ से लाते? इसीलिए हीरामणि वहां जा पड़ी जहाँ कुल की कद्र नहीं रूप यौवन की कद्र है। हीरामणि में रूप भले न हो, यौवन था। वह नाटी, मोटी किन्तु युवती थी। ये हो हुए अभिनेता-अभिनेत्री। किन्तु कलारा अर्थात सुखमय की भूमिका में कौन अभिनय करे? लबेदेव एसी बंगालिन युवती चाहता है जो जरा सयानापन लिये होने पर भी कमनीया, दीर्घांगिनी और स्फूर्तिमयी हो तथा सिर्फ मातृभाषा नहीं, बल्कि अंग्रेजी और मूर भाषा में पारंगत हो। ऐसी चौकस बंगाली रमणी कहाँ मिलेगी?

लेबेदेव ने कहा, 'बाबू तीन मास के भीतर मुझे नाटक प्रस्तुत करना है। कलारा अर्थात् सुखमय की भूमिकावाली अभिनेत्री का जोगाड़ नहीं करने पर थियेटर तो बन्द हो जायगा।"

गोलोक दास जानता है कि बंगाली अभिनेत्री का जोगाड़ करना सहज नहीं।

इस देश की रमणियाँ नाचगान में पारंगत होती हैं। बंगभूमि की 'यात्रा' में पुरुष ही नारी भूमिका में अभिनय करते हैं—राधा, वृन्दा, मालिन मौसी या सखी का वेश सजाकर। कलकत्ते में विलायती कायदे के स्टेज पर थियेटर चलाना साहबों ने ही शुरू किया था। देशी समाज में तब भी वह प्रचलित नहीं हो पाया था। उस विलायती थियेटर में भी कुछ समय पहले तक साहब लोग ही मेम की भूमिका में उतरते थे। दाढ़ी मूछ साफ कर, गाउन पहनकर मेम के वेश में हँसी-मसखरी और छकाने की कला दिखाते। लेकिन धनकुबेर विस्टो साहब की मेम ने शौक से अभिनय कर पहले पहल मार्ग दिखाया। मेम अभिनय करके पुरुषों को मात करती यहाँ तक कि पुरुष वर्ग में भी स्टेज पर उतर पड़ती। इनकी देखादेखी रण्डल साहब कलकत्ता थियेटर' के लिए इंगलैण्ड से कई अभिनेत्रियाँ ले आये। कलकत्ते की साहबी कोठियों ने असली मेमों का अभिनय देखने के

लिए पेशेवर मच पर भीड जमा दी।

सर विलियम जोन्स ने कालिदास की 'शाकुन्तल' का अग्रेजी मे अनुवाद किया। वह नाटक भी कलकत्ता थियेटर म सफलतापूर्वक अभिनीत हुआ। तो फिर प्रयास करने पर अग्रेजी नाटक को बँगला मे नही खेला जा सकता ? अवश्य ही खेला जा सकता है। लेकिन मुसीबत है बगाली अभिनेत्री को लेकर। लेबेदेव ने पाण्डुलिपि लेकर जिस नायिका की फरमाइश की, उसे ढूढ निकालना ही समस्या थी।

कुछ देर सोचकर गोलोक दास बोला, "एक स्त्री की बात मन म आती है। उसका चेहरा बहुत कुछ तुम्हारे वर्णन के अनुसार है। वह बँगला लिख पढ सकती है। कामचलाऊ मूर भाषा भी बोल लेती है। साहबो के घर मे काम करके मोटामोटी अग्रेजी का भी अभ्यास कर लिया है। बहुत बुद्धिमती, बहुत अच्छी स्त्री, लेकिन उसकी देह का रग उतना साफ नही है।"

"देह के रग से क्या आता जाता है ?" लेबेदेव ने कहा, "वह यदि मुँह खोलकर बोल सकती है तो मैं उसको तालीम दे दूगा। क्या नाम है उसका ?"

"चम्पा, चम्पावती।"

'बडे काम का नाम। कहा रहती है ?"

"मलगा मे।"

"आज ही उसको लाने की व्यवस्था करो। उसका चेहरा देखू, कथा वार्त्ता सुनू, चलने बोलने की जाँच करूँ।"

"आज तो उसे नही पा सकते।"

"क्यो ?"

जरा इतस्तत करके गोलोक दास बोला, "वह अभी लालबाजार के जेल मे है।"

"जेल म ? क्या, क्यों ?"

"चोरी के अभियोग मे।" गोलोक दास न कहा, "मैं जानता हूँ वह बिल्कुल मिथ्या आरोप है। उसने कुछ भी अपराध नही किया, वह सर्वथा निर्दोष है।"

"तब भी उसे जेल हो गया ?"

"अग्रेजो के विचार स कभी कभी मिथ्या आरोप पर फाँसी तक हो जाती है। सुना नही कि उतने बडे श्रद्धापात्र महाराजा नन्दकुमार को जालसाजी के अपराध मे फासी पर लटका दिया ! किसम कहूँ ? न्यायालय म अन्याय का बमरा ! उस दिन घृणा के मारे हम लोग तडके ही उठकर कलकत्ता म दूर चले गये थे। गगाजल मे डुबकी लगाकर शुद्ध हुए थे। चम्पावती को सिर्फ जेल नहीं, और भी

क्या-क्या दण्ड भोगना पड रहा है—कौन जाने ?"

"किस तरह उसे मुक्त किया जा सकता है ?'

"साहब, तुम्हारा तो कितने ही जज-बरिस्टर एटर्नी के साथ परिचय है, कोशिश करके देखो न !"

"कोशिश जरूर करूँगा, लेकिन ठाकुरानी को किस तरह देखा पाया जा सकता है ?"

"तुम चेष्टा करोगे तो लालबाजार मे जरूर देखने देंगे।"

"अच्छा, कहते हो तो चलो, इसी समय चेष्टा करें।'

लेबेदेव की बग्घीगाडी रुक गयी। घोडा और आगे बढ नही पाया। सामने जन-अरण्य। इतने सारे काले मस्तक सफेद टोपी, पीली पगडी देख घोडा ठमककर खडा हो गया, एक अच्छी-खासी छटपटाहट के साथ पीछे हटना चाहा लगाम खीचकर चाबुक मारकर उसे काबू मे ले आना कठिन हो गया। नाना जातियो के स्त्री-पुरुष—हिंदू, मूर, अंग्रेज, पुतगाली, फिरगी बर्मी, अर्मीनियाई चीनी—बहूबाजार की कच्ची सडक खचाखच भरी थी।

नाक मुह-आख मे धूल ही धूल घुसी जा रही थी। सडक पर, बरामदो पर, छतो पर, खिडकियो पर लोग-ही-लोग। सबकी आँखो म उत्सुकता।

बग्घी का पीछे लौटाने का भी उपाय न था। इतनी देर मे फिटिनो, टमटमो, पालकियो ने पीछे से आकर माग को अवरुद्ध कर दिया था।

लेबेदेव ने पास के एक-दो लोगो से जिज्ञासा की, "महाशया, आज इस जगह इस तरह की भीड क्यो है ?"

"जानते नही, आज 'खाँचा रथ' (खाँचा=पिंजडा) बाहर निकलेगा ? बहुत दिन से बाहर नही निकला। जरा देर पहले लालबाजार से पुलिसवाले ढिंढोरा पीट गये हैं।" इतना कहकर वह आदमी लालबाजारवाली सडक की ओर उत्सुक नेत्रो मे देखने लगा।

"वह कैसा रथ है ? मैंने कभी ऐसा रथ देखा नही।" लेबेदेव कौतूहल के साथ बोला।

साथी गोलोक दास ने बताया "वह एक कैदी गाडी है। जगन्नाथ के रथ के ऊँचे चक्के की तरह दोतल्ला बराबर ऊँचे चक्के। बीच की लकडी से झूलता पिंजडा। उसी पिंजडे मे रहता है कैदी।'

एक आदमी प्रशसा करते हुए बोला, "आज सिर्फ कैदी नही, जनाना कैदी !

कातवाली का आदमी ढोल पीट गया है। जनाना कैदी है न, इसीलिए इतनी भीड है।"

एक दूसरे आदमी ने टिप्पणी की, "भीड होगी कैसे नही ? औरत की उमर बच्ची है, किन्तु बुद्धि से पक्की शैतान ! साहस कैसा ? मेम के गले से तुल्सी-दाना चुरा लिया ! पकडे जाने पर खेद नही !"

"साहब लोग दोनो हाथ काट देंगे।" पहला आदमी बोला, "उनका दण्ड बहुत कडा होता है।"

"छोटे अपराध पर भारी दण्ड !" माला जपना बन्द कर एक वृद्ध ने कहा, "किसी ने कभी सुना है कि जाल्साजी के आरोप मे फासी हो ? उन्होने महा राजा नन्दकुमार को अलीपुर के मदान मे फासी पर लटका दिया। मिथ्या अभियोग ! इसी को कहते हैं विवेक ! पता नहीं, इस स्त्री के भाग्य मे क्या है !"

"दादा, साहब लोगो की निन्दा नही करो।" एक तरुण ने सावधान किया, फिर लेबेदेव की तरफ सकेत कर कहा, "देखते नही, यहाँ भी एक लाल मुह-वाला है।"

यह बात लेबेदेव के कान तक गयी। वह नाराज नही हुआ। जरा हँसकर वह बोला, "महाशयो, मैं वह लाल मुहवाला नही हूँ। मैं इगलिश-मैन नही, मैं रूसी हूँ, रूस मेरा देश है।"

"वह कौन-सा देश है ?" वृद्ध ने प्रश्न किया।

एक आदमी बोला, "रहने दो दादा, दूसरे देशो और जातियो की जान-कारी मत लो। कितने देशो के लोग इस कलकत्ता शहर मे आ जुटे है, यह माँ काली ही जानती है !"

किसी हिन्दुस्तानी (हिन्दीभाषी) ने तुक मिलाकर मजाक किया, "गाडी-घोडा लोना पानी और रण्डी का धक्का हाय, ऐसे मे जो बचे मुसाफिर मौज करे कलकत्ता हाय !"

लेबेदेव ने तुकबन्दी सुनकर उल्लसित हो गोलोक से पूछा, "गुरु महाराज, इस नयी कविता का अर्थ क्या है ?"

गोलोक मुस्कराकर बोला, "साहब, इसका अर्थ तुम्हारा न जानना ही उचित है।"

भादो मास की सन्ध्या। अच्छी खासी उमस। आकाश मे शरत के मेघ तैर रहे थे। सडक पर लोग पसीने मे नहा रहे थे। आज का असाधारण तमाशा देखने

के लिए वे लोग बडी देर से प्रतीक्षा कर रहे थे। अंग्रेजी हुकूमत में कैदियों को सजा सिर्फ दी ही नहीं जाती है, लोगों को दिखाकर दी जाती है। कोडों से पिटाई, सूली, फांसी आदि देने की सब क्रियाएँ जनसाधारण के सामने खुले तौर पर सम्पन्न की जाती है। लोग भीड लगाकर देखने आते हैं। अपराधी दण्ड पाते हैं। अपराध फिर भी खत्म नहीं होते। आज बहुत दिनों के बाद फिर 'खांचा-रथ' के बाहर निकलने की बात है। उस पर भी युवती कैदी। सडकों पर, नुक्कडों पर, घरों की छतों और बरामदों पर इसीलिए लोगों की भीड है। और भी कितनी देर तक खडे रहना पडेगा, कौन जाने!

थोडी देर बाद ही जनसमुद्र उद्वेलित हो उठा। दूर से ढाक-ढोल शहनाई की ध्वनि कानों में पडी। आवाज धीरे धीरे पास आ रही थी। लोगों के सिरों पर दो चार चलते फिरते लाल निशान दिखायी पडे।

करीब दसेक सिपाही हाथ की लाठी से प्रहार करते हुए भीड को हटाने की कोशिश कर रहे थे। हट जाओ 'अबे उल्लू हट जाओ' की चीखें सुनायी दे रही थीं। रास्ता छोड दो। लोग जरा पीछे हटे, फिर आगे खिसके। दो चार लोग लाठी से आहत हुए। ढाक ढोल शहनाइवाले नाचते हुए आगे आ रहे थे। कैदी को लेकर जैसे महोत्सव हो। पीछे लाल निशानधारी लाल वरदी-वाले घुडसवारों का दल। तेज अरबी घोडे छटपट कर रहे थे। इस बार लोग भयभीत हो पीछे हट गये। रास्ता बना दिया।

"वो रहा खांचा रथ, खांचा रथ वो!" उत्सुक जनता में शोर मचा।

गोलोक दास का विवरण ठीक था। करीब चौदह फीट ऊंचे बडे-बडे चक्के सिरों के ऊपर से दिखायी दे रहे थे बीच की लकडी से झूल रहा था पालकी की तरह एक पिंजडा। दो कैदी उसमें किसी तरह बैठ सकते थे। पिंजडे में जगह जगह फांकें थीं ताकि कैदियों की आँखों को हवा लगे। गाडी को सिपा-हियों की एक टोली घेरे हुए है, हाथों में हथियार। कुछ सरकारी अर्दली कन्धे लगाकर 'खांचा-रथ' को खींच जा रहे थे।

ढाक-ढोल बाजा ने कान हिला दिये। निशानधारी घुडसवार बडे गम्भीर थे। सिपाही लोग कतार में चल रहे थे। इधर किसी की दृष्टि नहीं है। लोग उत्सुक होकर पिंजडे की फांकों में देख रहे हैं। कैसी है वह महिला कैदी, जिसको दण्डित करने के लिए इतनी धूमधाम है!

"वही तो, दिखायी देती है फांकों में होकर!" एक दर्शक बोला।

एक और आदमी ने कहा "अहा, बच्ची उमर है! देखते हो, कैसा चाँद-सा चेहरा है!"

"ऐसी औरत चोरी कर सकती है, मुझे यह विश्वास नही होता।" कोई गही बाल उठा।

"मुझे भी विश्वास नही होता।" लेबेदेव ने कहा।

पिंजडे मे जिस तरुणी को जानवर की तरह लटका रखा गया था, उसका शरीर दीर्घाकार और सुगठित था। सौम्य-सुन्दर मुख पर लालिमा। तलाभाव के कारण ललाये हुए काले केश, फटी गुलाबी साडी किसी तरह लज्जा का ढँक रही थी। उसकी दृष्टि कोमल थी, नेत्रो मे था दबा हुआ अभिमान। उसके स्निग्ध यौवन की सुषमा मन पर छाप छोड जाती थी।

गोलोक दास सिर झुकाकर बोला, "साहब, यही चम्पा है—चम्पावती।"

लेबेदेव ने कहा, "सच! मैं इसी तरह की एक ठाकुरानी को क्लारा अर्थात सुखमय की भूमिका मे देखना चाहता हूँ। इसे जल्दी मुक्त करना होगा।"

"सचमुच, चोरी नही कर सकती," गोलोक बोला, "तुम जैसे भी हो उसे छुटकारा दिलाओ।"

"तुम चिंता किये बिना अपने घर जाओ।" लेबेदेव ने निश्वास छोडते-छोडते कहा, "मैं एटर्नी डान मैकनर से सम्पर्क स्थापित करता हूँ। वह इसके बारे मे झटपट व्यवस्था करेगा।"

डान मैकनर की टोह मे लेबेदेव 'हारमोनिक टैवन' आ पहुचा। उस समय सांझ लगभग घिर आयी थी। कलकत्ता शहर का सर्वोत्तम विश्राम स्थल। यहा साहब-मेम नाचते गाते और खाते पीते हैं। लालबाजार की एक सुन्दर इमारत मे यह टैवन है। यहाँ का बचा हुआ या जूठा खाद्य पदार्थ जेलखाने मे चला जाता है, गरीब कैदियो के भोजन के लिए।

हारमोनिक टैवन इसी बीच मे जम उठा था। द्वार के निकट बग्घी, फिटिन, चेरियट आदि खडे थे, दो-चार कीमती पालकियां भी थी। सबका की मजलिस आसपास ही जमी हुई थी। गाजा चरस की गन्ध उधर से नाक मे घुसी आ रही थी। पालकी ढोनेवाले हाथ पैर सीधे कर रहे थे। बाहर थोडा अन्धकार था, लेकिन टैवन के भीतर झाड फानूसवाले लैम्पो का समारोह था। मशाल्ची दौडधूप कर रहा था, पखा खीचनेवाला पखे की डोरी को खीचत खीचते झूम रहा था। भीतर से पीकर मदमत्त लोगा की चीख-पुकार आ रही थी, बीच-बीच मे विलायती बाद्या की झकार सुनायी दे जाती थी।

लेबेदेव को टैवन के सेवकगण पहचानते हैं। एक सेवक को अपनी बग्घी सौंपकर उसने टवन में प्रवेश किया। एक भोजपुरीभाषी दरवान ने सलाम ठोका।

टैवन में एक ओर ताश खेलने की अनेक मेजें थीं। लम्प की मद्धिम रोशनी में कलकत्ता शहर के गोरे वाशिन्दे जुआ खेल रहे थे— 'ह्विस्ट', पाँच तासोंवाला 'लू'। बहुत से रुपयों का लेन देन होता है। कम्पनी के उच्च अधिकारी भी जुआ खेलते हैं। औरतें भी पीछे नहीं रहतीं। एक ओर कक्ष में खाना शुरू हो चुका था। सान्ध्य पार्टी—'सपर'। भुना गोश्त, ठण्डी मछली की डिश, चेरी ब्राण्डी, लाल मदिरा—और भी कितना कुछ! बावर्ची लोग दौड़धूप कर रहे थे।

डान मकनर ताश के अड्डे पर नहीं, भोजन-कक्ष में भी नहीं। लेबदेव बिलियर्ड रूम में घुसा। कमरा सुगन्धित खमीरी तम्बाकू की गन्ध से भरा था। अनेक लोग बिलियर्ड खेल रहे थे, बीच बीच में हुक्काबरदार के हाथ में थमे हुक्के की नली से तम्बाकू का कश ले लेते थे। वहीं मैकनर मिल गया। फूला फूला मुँह गोल चेहरा, पोशाक का दबाव ऐसा कि मानो चर्बी फट पड़ेगी किसी भी क्षण। हाथ में बिलियर्ड का डण्डा लिये मैकनर ने जिज्ञासा की, "हलो गेरासिम हाउ गोस योर ब्लडी बेंगाली थियेटर ?"

लेबेदेव मन ही मन जल उठा। बोला, 'ब्लडी कौन बंगाली या थियेटर ?"

मकनर ने कहा, "बाइ जोव्, दोनों ही। चन्द्रलोक के पीछे दौड़ो भागो नहीं। सुना है, दायें बायें कर रहे हो। अन्त में विपत्ति में पड़ोगे।"

'विपत्ति में पड़ने पर तुम बचाओगे, मिस्टर मकनर' लेबेदेव ने कहा, 'मैं तब तुम्हारा मुवक्किल होकर आऊँगा।

'हम हैं भाड़े के गुण्डे,' मकनर बोला, 'जो पहले फीस देगा उसकी तरफ से हम लड़ेंगे।"

लेबदेव ने कहा, "क्राइस्ट कहते हैं कि जो तुम्हारे कोट के लिए दावा करे उसे ज्यादा भी दे डालो, नहीं तो कानूनजीवी आकर देह पर से कमीज तक उतार लेंगे।"

मैकनर तमककर बोला, 'तुम भी क्रिश्चियन हो ? डोंट ब्लासफेम।"

लेबेदेव ने झट जवाब दिया, 'मैं पहले मनुष्य हूँ, फिर क्रिश्चियन।"

इसी बीच टामस रावर्थ आ धमका। वह एक नीलामकार है। 'कलकत्ता थियेटर' के जरा कमजोर पड़ जाने पर रावर्थ ने उसे नये सिरे से चलाने का

निश्चय किया था। लेबेदेव को वह शक्तिशाली प्रतिस्पर्धी मानता था। उसने व्यग्य से कहा, "क्या मिस्टर लेबेदेव, क्या अब भी तुम्हारे मगज मे बगाली थियेटर का कीडा कुलबुला रहा है ? कीडा मगज को खोदकर खा जायगा, तब भी बगाली थियेटर नही होगा।"

"क्या ?"

'हम किसी भी हालत में तुम्हे कलकत्ता थियेटर भाडे पर नही देंगे। जानते हो, मैं अब उस थियेटर का सचालक हू ?"

मै मोटी रकम दूगा।"

"उस रकम पर मैं लात मारूँगा।"

"मैं नया थियेटर बनाऊँगा।"

"हिज एक्सेलेन्सी गवनर जनरल तुम्ह नया थियेटर बनाने की अनुमति कभी नही दे सकते।"

"मैंन उनसे दरख्वास्त की है, अनुमति पाऊँगा।"

"हम बाधा डालेंगे। तुम एक बजनिया हो, बाजा लेकर रहो। हर काम म दखल मत दो। तुम थियेटर का क्या समझते हो ?"

डान मैक्नर ने टिप्पणी की, "उस पर भी बगाली थियेटर !"

"मेरी सलाह सुनो, मिस्टर लेबेदेव," रावथ ने कहा, "थियेटर खोलने की वह सब बदगुमानी छोड दो। तुम रूस से आये हो, हम—अग्रेजा—ने दया करके बाजा बजाने का धधा करने दिया, यही काफी है !"

मैक्नर बोला, 'इगलिश होते तब भी कोइ बात थी। खुद रूसी हो और खोलना चाहते हो बगाली थियेटर !"

मकनर और रावथ बिलियड खेलने मे जुट गये।

दातरफा आक्रमण से लेबेदेव जैसे कुछ स्तम्भित हो उठा। क्लॉरेट का पात्र हाथ मे लिये, बीच बीच मे लाल मदिरा की घूट भरते हुए वह सोचने लगा।

गेरासिम स्तेपनोविच लेबदेव। उसका जन्म रूस के यूक्राइन मे हुआ। उससे क्या हो गया ? इसी कलकत्ता शहर म कितनी ही जातियो, कितन ही देशो धर्मो के लोग रहते है। काम धधा करके खाते हैं, भाग्य को फिरा लेते या गँवा देते हैं। अगर लेबेदेव थियेटर खोलता है तो उससे अंग्रेजी थियटर-वाले डरते क्या हैं ?

डरने की ही बात है। लेबेदेव ने मन ही-मन आत्मतोष का अनुभव किया। बात डरने की ही है क्योंकि गेरासिम लेबेदेव एक सुप्रसिद्ध वादक है। यानर-वश मे उसका जन्म हुआ किन्तु वृत्ति थी उसकी वादक की। पिता के अत्याचार

के चलते वह देश से भाग निकला। लिखाई-पढ़ाई अधिक दूर तक हुई नहीं थी, किन्तु ज्ञान की चाह थी विस्तारव्यापी। नवीन को जानने का, नया कुछ करने का आग्रह असीम था। पीछे न प्रभावशाली वंश की सिफारिश थी, न ही स्वदेशी स्वजातिवालों का बढ़ावा। तब भी लेबेदेव कलकत्ता शहर में जाना-माना व्यक्ति है। अखबारों में रोज रोज उसकी प्रशस्तियां निकलती हैं। सिर्फ कलकत्ता शहर ही क्या, मद्रास में भी उसके नाम की ख्याति है। १५ अगस्त १७८५। रोदिना' जहाज मद्रास के समुद्र में लंगर डालने जा रहा था। साथ-ही साथ लेबेदेव के संगीत की ख्याति मद्रास पहुँच गयी। लंगर डालने से पहले ही टाउन मेजर ने उसे सम्मानपूर्वक शहर में ले आने के लिए नाव भेजी। मद्रास में दो वर्ष वह रहा, देश विदेश का गाना-बजाना सुनाया, वायलिन चेलो बजाया। आर्केस्ट्रा तैयार की। मद्रास की अंग्रेजी कोठियों को मत्त कर दिया। वहाँ खाने पहनने का कोई अभाव नहीं था, अभाव था नवीनत्व का। नवीन की चाह के चलते गेरासिम लेबेदेव ने मद्रास के छोटे साहबी समाज से बँधे रहना नहीं चाहा। उसने सिर्फ गाना बजाना नहीं सुनाया, मलाबारी (मलयालम) भाषा सीख ली। वह देववाणी संस्कृत सीखना चाहता था, जिसमें ब्राह्मणों के धर्म-दर्शन-ग्रन्थ लिखित हैं। दक्षिण के पण्डित रूसी भाषा नहीं जानते थे, न अंग्रेजी पर उनका अधिकार था। इसीलिए १७८७ ई० में वह मद्रास छोड़कर कलकत्ता चला आया।

कलकत्ता शहर बड़ा अद्भुत है। गन्दा, अस्वास्थ्यकर। नाले गड्ढों की रुका-वटें। मियादी बुखार और दूसरे रोगों की आमदरफ्त। राह-घाट में फूली सड़ी लाशें बदबू छोड़ती हैं। तब भी उस शहर में प्राण है, नवीन के प्रति आन्तरिक आकर्षण है। जज विलियम जोन्स ने १७८४ ई० में प्राच्य और पाश्चात्य विचारों के आदान-प्रदान के लिए रायल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की। हॉलहेड ने बंगला छापाखाने में बँगला व्याकरण छपवाया। इस शहर में साहब लोग संस्कृत फारसी-बँगला सीखते हैं और पण्डित लोग अंग्रेजी। इसीलिए नया कुछ जानने, नया कुछ सीखने और नया कुछ करने की इच्छा लेकर लेबेदेव इस कलकत्ता शहर में आया। यहाँ और भी अधिक धन वह कमा सकेगा, यह इच्छा भी उसके भीतर थी।

जहाज चाँदपाल घाट पर आ लगा। उस जहाज का नाम था—'रनो'। मद्रास से कलकत्ता पहुँचने में पन्द्रह दिन लगे। छोटी-बड़ी मँझली नौकाओं ने मद्रास के जहाज को घेर लिया। हुगली नदी में बजरों की भीड़ थी। तिहरे ऊँचे पालवाली नौका धीरे धीरे बही जा रही थी। प्रखर धूप में घाट के घर-

बँगले नदी किनारे झकाझक कर रह थे। किले की लाल पत्थरोवाली प्राचीर गगा के वक्ष पर उभर आयी थी। नया शहर, अनजाना देश, अपरिचित आगन्तुक, सिफ सगीत मे निपुणता का सम्बल।

एक नाव पर बक्स पिटारे लादे गय। वाद्ययन्त्रो को सँभालना कठिन है, खासकर वायलिन-चेलो का विशाल बक्स। सब कुछ सँभालकर लेबेदेव घाट पर उतरा। डेरे मकानो के दलाल और टैवर्न के लोगो ने उसे घर लिया। पालकी वहारा और घोडागाडीवालो ने भीड लगा दी। और भी कौन कौन तो आय थे, उघरे बदनवाले सावले बगवासी जिनकी बातें समझ मे नही आयी। सहसा कही से गोरा सन्तरी आ गया, वह चुन चुनकर उन्ह बेंत मारने लगा, बूट की जमकर ठोकरें लगाने लगा। लेबेदेव उसका कारण नही जान पाया, सामने जगह बन गयी। एक गाडीवान ने अनुमति की अपक्षा किये बिना बक्स पिटारा को फिटिन पर लाद दिया। ऐसे ही समय मे सफेद धोती और मिर्जई पहने, पन-केक की तरह सपाट कालो टोपी माथे पर डाले और छाती पर चादर लपटे एक प्रौढ देशी सज्जन ने अंग्रेजी मे प्रश्न किया, "डू यू वाण्ट दोभाष, सर ? आइ स्पीक इगलिश, बेंगाली, मूर "

उसका चेहरा जरा भारी था, रग सांवला, आँखो मे बुद्धिमत्ता की झलक। उसने अंग्रेजी मे आवृत्ति की।

उच्चारण उसका शुद्ध नही, फिर भी उसकी बातो से जाहिर था कि वह शेक्सपियर की पक्तियाँ बोल गया। लेबेदेव ने जिज्ञासा की, 'डू यू स्पीक रशियन ?"

"रशियन !" वह आदमी सकपकाते हुए बोला, "वह कौन सी भाषा हुई ? ससार म कितनी ही तो भाषाएँ हैं !" फिर आश्वस्त हो बोला, "नो सर, आइ स्पीक सैंस्क्रट, लिटिल, लिटिल, थोडा-थोडा।"

"सैंस्क्रट ?" लेबेदेव उल्लास के साथ बोला "यू स्पीक सैंस्क्रट, स्पीक इगलिश ? यू विल बी माइ लिंग्विस्ट। व्हाट्स योर नेम ?"

"श्रीयुत बाबू गोलोकनाथ दास, टीचर एड लिंग्विस्ट।"

गोलोक दास के साथ लेबेदेव का वही प्रथम परिचय था। और वही परिचय कुछ ही दिना मे प्रगाढ हो गया, क्योकि गोलोकनाथ दास नवीनता का पुजारी है।

गोलोक की एक छोटी-सी पाठशाला है। वहा वह लडको को लिखना-पढना सिखाता है। उससे उसे सन्तोष नही होता। समय समय पर साहब लोगो को भाषा सिखाने का काम करता है। इसमें जीविका का समाधान है,

फिर नवीनता का रस भी है। गोलोक इतने पर भी धर्मनिष्ठ हिन्दू है। फिरंगियों के स्पर्श से जो पाप लगता है, वह प्रतिदिन गंगास्नान से दूर हो जाता है। संगीत के प्रति गोलोक का झुकाव उसी प्रकार है। ध्रुपद, ख्याल, तराना और हाफ-आखड़ा तक ही उसका थोड़ा विस्तार है। व्यवस्था अच्छी हुई, लेबेदेव उससे देशी भाषा सीखेगा और गोलोक सीखेगा विलायती गाना-बजाना।

लेबेदेव ने गोलोक को फिटिन पर चढ़ा लिया, ४७ नम्बर टिरेटी बाजार आ पहुंचा। एक फ्रांसीसी या वनीसियन मिस्टर टिरेटी ने लालबाजार के पास एक बाजार बसाया था, चावल दाल सब्जी की आढ़त। शहर का प्राय केन्द्र स्थल। लेबेदेव का आवास गोलोक दास ने ही अपनी पसन्द से ढूंढ दिया।

उसने गोलोक दास से जानना चाहा "अच्छा, बाबू, सन्तरियों ने तुम्हारे देश के लोगों को सहसा मारा क्या?"

गोलोक बोला "चांदपाल घाट पर लाट साहब हवाखोरी के लिए आते हैं। वहाँ किसी काले आदमी का खाली बदन, खाली पैर आना मना है, सन्तरी वहाँ पहरे पर तैनात रहते हैं और उन लोगों को देखते ही मार पीटकर भगा देते हैं।"

लेबेदेव जरा लज्जित होकर बोला, "मैं इंगलैण्ड नहीं, रूस देश का निवासी हूँ।"

गोलोक ने कहा, "मैंने पुर्तगाली, डच और डेन देखे हैं। फ्रांसीसी और इटालियन को देखा है, किन्तु इस शहर में रूस देश के निवासी को नहीं देखा।"

इसी रूसी का सिर्फ आना ही न हुआ बल्कि थोड़े ही दिनों में उसने कलकत्ता शहर को जीत लिया। बन्दूक तोप के जोर से नहीं, संगीत के रसमाधुर्य से। वह हर तरह का गाना-बजाना जानता है। उसका अपना कण्ठस्वर भी मधुर है। वायलिन चेलो वह बढ़िया बजाता है एक आर्केस्ट्रा-दल भी उसने बना लिया है। उसका नायक वह स्वयं है। उसके दल में अंग्रेज, जर्मन, ईस्टइंडीज और नीग्रो वादक हैं। नाना जातियों के लोगों को तालीम देकर लेबेदेव ने इस आर्केस्ट्रा दल का निर्माण किया है। ओल्ड कोर्ट हाउस और अनेक जगहों में लेबेदेव का संगीत लोकप्रिय हो उठा। समूह-के समूह लोग उसका वाद्यसंगीत सुनने जाने 'कलकत्ता गजट' में उसके गाने-बजाने की सुख्याति मुद्रित अक्षरों में प्रकाश पाने लगी। पहले के यश में कई गुना वृद्धि हुई। साहब लोगों ने खुले हाथों उसे बढ़ावा दिया। ऐसा संगीतशिल्पी यदि अपना थियेटर खोले तो उससे रावय जम अंग्रेज थियेटरवाले का जलना स्वाभाविक ही है।

'कलकत्ता थियेटर' जहन्नुम में जाय!—अपने-आप ही बोल उठा लेबेदेव।

लगता है यह बात उसने अयमनस्क हो जरा ज़ोर से कही थी।

बात कान मे पडते ही रावथ बिलियर्ड खेलना छोडकर लेबेदेव के सामने आ खडा हुआ, एकबारगी तमतमाकर पूछा, "क्या कहा ?"

लेबेदेव सकपकाया नही, इस बार वह स्वेच्छा से बोला, "जहन्नुम मे जाये कलकत्ता थियेटर ! उसकी तो लाल बत्ती जलने-जैसी अवस्था है ! इस बार नीलाम पर बेच डालो। मैं उसे खरीद लूगा।"

भद्दी गाली गलौज करते हुए रावथ गरज उठा, "तू एक विदेशी है, तेरी हिमाक्त तो कम नहीं ?"

"तुम क्या इस देश के हो ?" लेबेदेव ने प्रश्न किया।

"शट-अप कुत्ते के पिल्ले ! भूल मत जा कि कलकत्ता शहर हमने बसाया है, सेट्लमेंट के मालिक है हम। हम जो चाहे वही कर सकते है। जज, बैरिस्टर, एटर्नी, पुलिस, सब हमारे है। तू एक घृणित कीडा है।"

"देखता हूँ तुम गला फुलाकर मुरगे की तरह सूरज को निगलने का गौरव पाना चाहते हो।"

"फिर बात पर बात !" रावथ बिलियर्ड का डण्डा लेबदेव पर दे ही मारता यदि ऐन वक्त पर डान मैक्नर ने बाधा नही दी होती।

मक्नर ने कहा, "गेरासिम, भद्र व्यवहार करना सीखो। हो सकता है तुम अच्छे वादक हो, हो सकता है तुम श्वताग हो, तब भी भूल नही जाओ कि तुम रूसी हो।"

रावथ गरजने लगा, "डान, मैं आज ही कोशिश करूँगा कि यूरोप जाने-वाले अगले जहाज मे उस श्वेत भालू को बरफ के देश मे भेज दिया जाय।'

गुस्से से थरथराता वह बाहर चला गया।

मैक्नर बोला, गेरासिम, तुम नाहक अपनी विपत्ति को बुला लाये हो। रावथ ज़ालिम आदमी है। उसे हाकिमो का बल है। नीलाम की अच्छी अच्छी वस्तुएँ जज साहबा की बीबिया सस्ते दामा मे उससे पा जाती हैं। उसको छेड-कर तुमने अच्छा नही किया।"

"मेरा क्या दोष है ?" लेबेदेव ने कहा, "मैंने तो झगडना चाहा नही। वही तो पीछे पडकर मारपीट करने आया।"

'खत्म हो वह अवाछित प्रसग," मैक्नर ने कहा, "थियेटर तो तुम खोलने जा रहे हो, बगाली थियेटर ! अभिनय के लिए सुदर मादक बगालिन छोकरिया जुटायी हैं कि नही ? अच्छा माल हो तो मुझे भेज दो न ! एक बार बजबज के बगीचेवाले घर मे दो चार दिन मस्ती काटी जाये।"

"तुम्हे अब छोकरियों का क्या अभाव है ?" लेबेदेव बोला, 'सुनता तो हूँ कि तुमने हर तरह की स्त्रियों का घर मे डाल लिया है।"

"दो चार दिन बाद ही सब जाने कैसे बासी हो जाती हैं," मक्नर ने कहा, "मैं ऐसी रमणी चाहता हू जिसका मजा लेते समय सारे शरीर मे सिहरन जाग उठे।"

"अर्थात जल की तरह देखने मे, किन्तु भँवर की तरह शक्तिवाली।"

"ठीक कहते हो' मक्नर कौतूहल के साथ बोला, "मिला है क्या वैसा माल ?'

लेबेदेव ने कहा 'मैं एक शिल्पी हूँ। लडकी लडके का दलाल मैं नहीं। तुम्हारा बेनियन खबर करने पर अनेक रमणियों का जोगाड कर देगा। लेकिन आखिरकार एक युवती को पाने के लिए मैं तुम्हारी सहायता चाहता हूँ।"

'कहते क्या हो ? मक्नर उत्साह से भरकर बोला "कौन है वह भाग्यवती ? कितनी उम्र है ? देखने मे कैसी है ? जाति क्या है ?"

"इतनी सूचना की जरूरत क्या है ?' लेबेदेव ने कहा, "मैं तुम्हे दलाल के रूप मे नही चाहता। एटर्नी के रूप मे चाहता हू।'

"किसी की बहू को घर से बाहर लाना होगा ?" मक्नर ने कहा, "जैसे हेस्टिंग्स ने मिसेज इमहोफ को किया था ?'

"उतनी दूर का साहस मुझे नही है," लेबेदेव बोला, "एक युवती को जेल से बाहर निकाल लाने के लिए तुम्हे नियुक्त करता हूँ।'

'यह तो बडा जटिल विषय है।' मैक्नर ने कहा 'घर की बहू को बाहर लाना सहज है किन्तु जेल की कैदी को बिल्कुल ही नही। चेष्टा कर सकता हूँ, अगर मोटी फीस दो।

'कितनी फीस ?'

"बीस मुहरें। आधी अग्रिम।' मैक्नर ने कहा।

लेबेदेव ने पाकिट से दस मुहरें निकाल दीं। मक्नर गिनकर पाकिट मे रखते हुए बोला "कौन है वह आसामी जिसके लिए एक बार पर इतनी सोने की मुहरें झनझनाकर फेंक दीं ?'

"वह मेरे बँगला थियेटर की नायिका है।

'एक काली युवती !' नुक्ताचीनी करते हुए मक्नर बोला, 'तुम्हारी पसन्द इतनी नीचे चली गयी ?"

"उसका चेहरा मेरी 'कल्पना' अर्थात सुखमय की भूमिका के लिए पूर्णत उपयुक्त है।' लेबेदेव ने कहा, "वह युवती मुझे चाहिए।'

'लेकिन कैदी युवती की बात लोग सुनेंगे तो तुम्हारे थियेटर मे बिलौट चीखेंगे।"

"कैदी के रूप म जानेंगे क्या ?" लेबेदव ने कहा, "हाँ, तुम अगर इस गोपनीय बात को फैला न दो ! मैं उसका नाम बदल दूगा। चम्पा से गुलाब हो जायेगी। गुलाब की तरह उसका कला-जीवन खिल उठेगा। देखो, तुम कहीं भेद म खोल देना।"

"मुवक्किल की गोपनीय बाता का दबा रखना ही हमारी शिक्षा है। चलो, जेलखाना चलें। पहले यह पता कर लू कि उसके विरुद्ध क्या अभियोग है, क्या सजा है। लालबाजार का जेल सडक के उस पार है। अभी वहाँ पहुचकर तुम्हारी विरह-यन्त्रणा को कम करने का प्रयास करें।"

दीपक तले ही अँधेरा। जेलखाने के निकट ही पाप का अड्डा। लालबाजार के आसपास सस्ते होटल बहुत हैं। इटालियन, स्पेनिश, पुतगीज लोग उनके मालिक है। नजदीक ही वेश्याओं की बस्ती है। देश देश के गोरे नाविक सस्ती देशी शराब पीकर यौन क्षुधा को चरिताथ करने के लिए वहाँ जाते हैं। रास्ते के कीचड, नाले गड्ढा से बचकर अँधेरी रात म रास्ता पार करना ही कठिन है। तब भी लेबेदेव के आग्रह ने किसी बाधा को नही मानना चाहा।

जेल मे पता लगाकर चम्पा को ढूढने मे कठिनाई नही हुई। आज ही वह 'खाचा रथ' मे शहर घूम आयी है। किन्तु उसकी मुक्ति असम्भव प्रतीत हुई।

वह युवती मिस्टर राबट मरिसन के घर मे दाई का काम करती थी। मेरिसन चादनी के पास एक छोटी सी मदिरा की दूकान चलाता है। दूकान पर स्वामित्व उसकी मेम का है। मेम के गले का तुलसीदाना (स्वणहार) चुराने का दोष। चम्पा ने आरोप को अस्वीकार किया था।

पुलिस ने जानना चाहा, 'लेकिन तुम्हारे लडके के गले मे तुलसीदाना कहाँ से आया ?"

आसामी बोली, "तुलसीदाना मेरा है, मुझे दिया है।"

"किसने दिया है ?"

आसामी निरुत्तर !

"किसने दिया है, जल्दी बता।"

आसामी ने सिफ यही कहा, "मेरा तुलसीदाना है मेरा, मेरा।"

न्यायालय मे वह दोषी साबित हुइ साबित होने की बात ही थी। हापलेस

केस ! 'खाचा-रथ' और दस बेंत की सजा।

मेकनर ने मन्तव्य जाहिर किया, "अत्यन्त सुन्दरी तरुणी, इसीलिए न्याया-धीश ने द्रवित होकर हल्की सजा दी। किसी पुरुष के वैसा अपराध करने पर जरूर उसका हाथ काट देने का हुक्म दे दिया जाता।"

पहली सजा वह भोग चुकी है दूसरी बाकी है। पता लगाकर मेकनर ने जान लिया कि कल सुबह लालबाजार के चौराह पर तरुणी को खुलेआम बेंत मारी जायेगी।

'अपील नहीं हो सकती?' लेबदेव न जानना चाहा।

'समय बीत चुका है।"

जस्टिस हाईड को पकडागे? लेबदेव ने कहा, "जज साहब की तरुणी मेम गान बजाने की बडी भक्त है। मेरा बजाना उसे बहुत पसन्द है। बीवी को पकडने पर जज साहब अवश्य कोई सुव्यवस्था कर देंगे।'

'वह क्या करेंगे?' मेकनर ने कहा 'उनका हुक्म आते आते तक सवेरे बेंत मारना हो चुकेगा। चौराह पर हजारो लोगो के सामने तुम्हारी प्रेयसी को बेंत मारी जायगी। शोक मत करो, उसे अच्छा सबक मिलेगा, पीठ का चमडा सख्त होगा जिससे, अगली दफा बेंतो को सहना सहज हो सके। मेरी बाकी फीस?"

"तुम एक क्रूर जानवर हो' लेबेदेव ने कहा, 'तो भी तुम्हारी फीस कल भेज दूगा। आज उतनी रकम साथ नही।"

"फीस पाने पर तुम्हारी बवजह झिडकी को हजम करूगा," मेकनर बोला, "नहीं तो अदालत में तुम्हारे साथ मुलाकात होगी।"

तडके ही लालबाजार की सडक के किनारे जैसे मेला लग गया था। भोर की किरण फूटते-फूटते अपराधियो की सजा शुरू हो गयी। खुले तौर पर सजा। उसीको देखने के लिए दल-के-दल नाना जातियो के स्त्री पुरुष आ जुटे थे। कील ठोकना, बलि के बकरे का गला जिस प्रकार लकडी में फँसा देते हैं उसी प्रकार अपराधी के गले और हाथ को अटका दिया गया था। पूरे दिन भर धूप में उसी तरह अटके रहना होगा। दूर से दुष्ट छोकरो के एक दल ने कैदियो के मुँह पर कीचड फेंका था। कोई रोकनेवाला नहीं, एक-दो कैदियो ने क्षुब्ध हो न बोलने योग्य गालियाँ देकर शरीर की जलन को मिटाना चाहा था। दूसरे ही क्षण सन्तरी रूल लेकर आ गया था। आख मुह बन्द कर अपमान सहते जाने के सिवाय कोई चारा नहीं।

लेबेदेव सुबह होते ही आ गया था। सारी रात उसे ठीक से नींद नहीं आयी। युवती कैदी चम्पा की बात बार बार मन मे आ जाती थी। ख्याल आया था कि अगर चम्पा सज-धजकर स्टेज पर खडी हो जाये तो कैसी सुन्दर लगेगी ! सामने के लैम्प के प्रकाश मे उसकी दीर्घ सुगठित देह और ढलमलाती मुखछवि अवश्य ही दर्शकों का मन जीत लेगी। लेबेदेव तडके ही लालबाज़ार के चौराहे पर आ उपस्थित हुआ था।

और आ गया था गोलोकनाथ दास। उसके मुख पर आज हँसी नही। कैसी तो भावहीन मुद्रा है। उसने सुन लिया था कि चम्पा को मुक्त करना सम्भव नही।

लेबेदेव ने डान मैक्नर को साथ ले आना चाहा था। उसने सीधे कह दिया—एक सौ मुहरें देने पर भी वह आठ बजे से पहले बिस्तर नही छोडेगा।

ऊँचे तख्त पर एक एक करके अपराधियों को लाया गया था। प्रहरी चीख कर अपराधी का नाम और उसका अपराध बताता। उसके बाद दण्ड। किसी को पाच बेंत, किसी को दस बेंत, किसी को पन्द्रह बेंत। बेंत की चोट से अपराधी आर्त्तनाद कर उठते, दर्शकों मे से अनेक लोग हाथ से ताली देते थे, चिल्लाते थे।

इस बार प्रहरी चिल्लाया—"चम्पावती, मिस्टर राबर्ट मेरिसन की दासी / मिसेज मेरिसन के गले का तुलसीदाना चुराने की दोषी। 'खाचा रथ' और दस बेंत।"

प्रहरी चम्पा को तख्त पर ले आये। उसकी आखो मे विद्रोहिणी का तेज था। मानो कोई भय ही नही। फटे गुलाबी वस्त्र ने उसकी ताम्रवर्णी कान्ति को उज्ज्वल कर दिया था। दर्शकों मे क्षणभर के लिए स्तब्धता छा गयी।

चम्पा के हाथ पीछे बँधे थे। दीर्घ सुगठित शरीर और उन्नत वक्ष नीले आकाश की पृष्ठभूमि म अत्यन्त स्पष्ट था। उसके पाव मे बेडी थी। भागने का उपाय नही।

सन्तरियों ने सख्त हाथो से चम्पा को तख्त पर उकडू बैठा दिया। पीछे यमदूत की तरह एक आदमी बेंत लिये खडा था।

तैयार। उस आदमी ने चम्पा की पीठ पर का कपडा खीचकर गिरा दिया। दर्शकों मे दबी चचलता। कोई एक आदमी सिसकार उठा।

यमदूत की तरह उस आदमी ने सडाक से चम्पा की पीठ पर बेंत मारी। उसकी देह जरा एंठ गयी लेकिन मुख पर वही कठोरता। उसने कोई चीत्कार नही की।

फिर फिर फिर

एक कोई मेम साहिबा तेज स्वर म चिल्ला उठी, "और जार से, और जार से।"

लेवेदेव चीखा, "रुको, रुको।"

दशका म से बहुतो ने चिल्लाना शुरू किया, कोई उल्लास से, कोई क्षोभ से। उनकी सम्मिलित चीख मे लेवेदेव की अकेली चीख डूब गयी। सिफ गोलाक दास की आखो से अविराम आँसू झर रह थे। बेंत का आठ प्रहार होने के बाद चम्पावती की देह लुढक गयी। सन्तरियो ने पाँव सीधे कर उस देह को देखा। वे एक दूसरे का चेहरा देखने लगे। लगा, वह युवती बेहोश हो गयी थी। स्त्रियो के छल का कोई अन्त नही, हुक्म टलेगा नही। बेंत लगाओ। दस प्रहार पूरा होना चाहिए।

सजा पूरी होने के बाद सन्तरियो ने चम्पा के शरीर को घसीटकर तख्त के किनारे किया और वहा से उठाकर निकट की धूल मिट्टी पर छोड दिया। हाथ का बन्धन और पाँव की बेडी वे खोल चुके थे।

गोलोक दास पागल की तरह भीड को ठेलकर उधर बढा जहाँ चम्पा की सज्ञाहीन काया पडी हुई है। लेवेदेव भी उसके पीछे हो लिया। गोलोक दास ने सीधे जाकर चम्पा का सिर अपनी गोद मे रख लिया। उसकी आखो का जल बहकर चम्पा के मुख पर जा गिरा।

गोलोक ने लेवेदेव से कहा, 'साहब, तुम इसको बचाओ, इसको बचाओ। यह मेरी नतिनी है। मेरी नतिनी।"

रुदन के आवेग मे गोलोक दास सज्ञाहीना के वक्ष पर गिरकर बिफर उठा।

दो

लेवेदेव के घर मे चम्पा ने उसी अवस्था में आश्रय पाया।

डाक्टर आया था। गोरा डाक्टर। प्रयास मे लेवेदेव ने कोई कसर नही रखी। 'विजिट' के सालह रुपये दकर डाक्टर जैक्सन का लाया गया। किन्तु उसने जो उपचार किया, वह तो कोई वद्य हकीम भी कर सकता था। युवती की पीठ पर बत के आघात से काले निशान पड गय थ। कितनी ही जगह जख्म के चिह्न। पूरे शरीर म असह्य यन्त्रणा। डाक्टर ने आकर रक्त साफ कराया,

शरीर मे शक्ति लाने के लिए लाल शराब पीने का निर्देश दिया। चम्पा ने शराब नही ली। वह कुछ स्वस्थ हुई। साथ ही वह अपने घर जाने के लिए आतुर हो उठी। लेकिन लेबेदेव ने उस समय उसे जाने नही दिया।

बगल के कमरे मे लेबेदेव ने गोलोकनाथ दास से बातचीत शुरू की, चम्पा के बारे में।

"बाबू, तुम्हारी जो नतिनी है उसके बारे म पहले सुना नही। फिर ऐसी सुदरी नतिनी ?"

गोलोक बोला, "साहब, वह मेरी अपनी नतिनी नही है। मेरी पालिता नतिनी। वह जसे एक कहानी है।'

गोलोक पुरानी स्मतियो मे भटकने लगा।

माघ का भोर। गोलोक रोज की तरह चित्पुर घाट पर गगास्नान के लिए उतरा था। कँपकँपाते जाडे का ठण्डा जल। ज्यादा लोगो की भीड नही थी। भोर के कुहासे मे थोडी दूर से आगे दृष्टि नही जाती थी। जरा बाद ही एक बडी नौका सामने से गुजर गयी। गोलोक दास इस नौका को पहचानता है। इसका नाम 'भरा' है। यह दास-व्यवसायियो की नौका है। छोटे-छोटे लडके-लडकियो से भरी हुई। दो-तीन विशालकाय हब्शी नौका की रखवाली कर रह थे। कुहास मे भी काले पत्थर सी उनकी काया स्पष्ट नजर आ रही थी। दास-व्यवसायी पकड लाते हैं लडके-लडकियो को। अकाल पडने पर बहुतेरे मा-बाप अपने लडके-लडकियो को बेच देते हैं। व्यवसायी उन्हे खरीद लेते है और नौका पर लादकर कलकत्ता ले आते है। गगाघाट पर गाय बछडा भेड-बकरे की तरह उन्हे बेच दिया जाता है। कीमत भी सस्ती।

नौका के कुहासे मे विलीन होत न-होते सहसा छपाक की एक हल्की आवाज आयी। कुछ जैसे जल मे जा गिरा। उसके बाद ककश स्वर मे चीख सुनायी पडी। 'पकडो, पकडो, भागा, भागा।' 'लडकी भाग गयी। साथ साथ कद्दावर लोगो ने जल मे कूद पडने की आवाज कानो तक आयी। 'कहा गयी रे ?' गोताखोर की आवाज। कुछ लोग जसे सारी गगा को छानकर खोज रहे थे। बीच गगा से कोई चिल्लाया, 'राम राम, एक साला मुर्दा! अरे छि!' गगा मे लाशें बहती रहती है। लगता है खोजनेवाले ने किसी सडी लाश का आलिंगन कर लिया था।

क्षण भर म गोलोक के सामने तैर उठा एक सुहाना मुखडा, आठ-नौ बरस की एक लडकी, ढलमलाता रूप, घिसे ताँबे जसा रग, सिर के काले केश जल म भीगकर मुख पर लिपटे हुए। आखो मे आतक। लडकी साँस लेने के लिए

तडफडाकर फिर जल मे समाने लगी, लेकिन समा नही पायी। गोलोक दास ने उससे पहले ही उसे थाम लिया था।

हाफ्ते हाफ्ते लडकी अस्फुट स्वर मे बोली, "मरने दो। मुझे डूब मरने दो। इन दत्यो के हाथ से मुझे बचने दो।"

गोलोक दास ने उसको बचा लिया।

उस कुहासे मे भीगे वस्त्र के आचल से ढँककर वह उसे गलिया से होकर सीधे अपने घर ले आया।

वही लडकी चम्पा है। आठ-नौ वष की रुग्णा लडकी अब सुगठित सुदर तरुणी है।

गोलोक दास न आत्मीया की तरह उसका पालन पोषण किया, लिखना पढना सिखाया। छिप छिपकर वह पढती थी। लडकियो का लिखना-पढना उस समय चालू नही हुआ था। गोलोक ने उसे गाना भी सिखाया।

लेकिन गोलोक उसे रख नही पाया। दो एक वष उसने चम्पा का साव धानी से रखा था, राह बाट यो ही निकलने नही देता था। दास व्यवसायी बडे हिंसक होते हैं। अपने मुह का कौर निकल जाने पर वे दिग्दिगत को छान डालते ह। उनके दूत चारा तरफ घूमते रहते ह। उस पर कलकत्ता शहर मे अग्रेजी कानून उनका सहायक है।

चम्पा की दाहिनी भौह के पास का तिल एक वैष्णवी की पकड मे आ गया, जो उन दास व्यवसायियो की भेदिया थी। थाने से सिपाही आकर मुहल्ले भर के लोगो के सामने से चम्पा को पकड ले गये। हुकूमत की ताकत के साथ गोलोक क्या लड पाता? चम्पा की मुक्ति के लिए उसने एक दो गोरे छात्रो की सिफारिश चाही। उन्होने कहा, "बाबू, हम कानून के दास है। पसा हो तो खरीद लो।"

गोलोक के पास पैसा कहाँ! मामूली अध्यापकी से क्या उसकी ऐसी आय है कि कलकत्ता शहर मे एक सुन्दरी षोडशी क्रीतदासी को खरीद सके? उसे खरीदा एक अफीमची खोजे ने जो टिरेटी बाजार का एक नामी व्यवसायी था। उसने सबसे अधिक कामत चुकायी। आदमी वह पकी उमर का था। और पाँच लोग मना करें, ऐसा भी नही। चम्पा को वह जतन से रखता। चम्पा भी उसे अपने पिता की तरह मानती, सेवा करती, गाना सुनाती। सहसा वह आदमी कलकत्ते के मियादी बुखार से चल बसा। वह एक वसीयत कर गया था। वसीयत म उसने चम्पा को कुछ रकम दी थी, और दासता से मुक्ति भी।

लेबेदेव न जानना चाहा कि गोलोक ने लडकी को अपन घर मे क्या नही

लौटा लिया।

समाज। कठिन समाजव्यवस्था। दास व्यवसायी जिसे पकड ले गये, अर्मीनियाई फिरगी के घर मे जिसने रातें गुजारी, उसे अपनी नतिनी होने पर भी गोलोक दास अपने घर मे शरण नही दे पाता। किसी हिन्दू के घर म उसके लिए जगह नही। इसीलिए चम्पा ने फिरगी के घर मे दासी का काम करना शुरू किया।

"क्यो नही किसी फिरगी के साथ ब्याह दिया ?" लेवेदेव न जिज्ञासा की।

"ब्याहना चाहा था," गोलोक दास ने कहा, "वह बडी जिद्दी लडकी है, साहब ! उसने कहा कि मैं जीवन मे शादी-ब्याह करूँगी ही नही।"

"क्या कहते हो ?" लेवेदेव ने पूछा, "इतनी राहो स गुजरी और अब भी कुमारी है ? फिर लालबाजार म तो सुना कि उसके एक लडका है।

"साहब," क्षुब्ध स्वर मे गोलोक बोला, "वह कष्ट-कथा तुम्हारा न सुनना ही अच्छा है।"

'बाबू, अगर तुम्ह कष्ट हो तो मत कहो।" लेवेदेव सहानुभूति के साथ बोला।

"साहब, तुम अपने थियेटर मे उसे काम देना। उसका चरित्र-स्वभाव तुम जान लो, यही अच्छा है।"

आगे की कहानी गोलोक दास सुना गया।

मलगा इलाके के पचमेल मुहल्ले म भाडे पर एक डेरा लेकर चम्पा रहती थी। वयस्का, सुन्दरी युवती। मुहल्ले के छोकरा की नजर से उसको बचाये रखने की समस्या थी। तब भी समय पाते ही गोलोक दास निगरानी कर जाता। एक परिचित वृद्धा रात मे उसके साथ सोती थी। दासीवृत्ति मे भी मुसीबत थी। मालिका की लालसा। एक के बाद एक चाकरी चम्पा छोडती गयी, अन्त मे देख सुनकर राबट मेरिसन के घर मे काम करने लगी। साहब का घर बैठकखाना म था। घर मे लोग कम थे, मेम रुग्णा लेकिन बहुत कडे मिजाज की। साहब के ऊपर तज निगाह रखती। मेम की सेवा के लिए चम्पा ने दाई का काम पाया। मेम कडी है, साहब से बची रहगी चम्पा। लेकिन वैसा हुआ नही।

"वही पुरानी कहानी।" लेवेदेव बोला।

'कहानी पुरानी, किन्तु घटना मे नवीनता है।' गोलोक दास ने कहा।

मेरिसन मदिरा का व्यवसाय करता था। व्यवसाय बडा नही था, चौरगी के पास दूकान थी। वह पतीस वष का होगा, लेकिन उसकी मेम उससे पाच वष बडी है। मदिरा की दूकान मेम के पूवपति की थी। उस पति के मरने पर

मेम स्वामिनी हुई। मरिसन उस दूकान मे काम करता था, नौकरी को स्थायी बनाने के लिए उसन स्वामिनी से विवाह कर लिया। नही तो, क्या उस चिडचिडी ग्रौर निचुडी विगतयौवना से विवाह करता? मेरिसन वेश्याग्रो की वस्ती मे ग्राता जाता था। नयी दाई पर उसकी नजर का गडना स्वाभाविक था। लेकिन चम्पा ग्रपने को सँभाले रहती, जितना सम्भव होता साहब के ससग से बचते हुए मेम के आसपास रहती। साहब के भय प्रलोभन, किसी मे भी विचलित नही हुई। चम्पा ठीके पर दासी का काम करती थी, रात मे वह साहब के यहा नही रहना चाहती थी। उस वैठकखानावाले अचल मे डकैता का उपद्रव था। मुहल्ले के साहब डकैता को डराने के लिए शाम से ही रात भर पारी पारी से बन्दूक की हवाई फायर करते। इसीलिए रोज ग्रँधेरा घिरने मे पहले ही चम्पा अपन मलगावाले घर मे लौट आती। जिस दिन मेम की तवीयत ज्यादा खराब रहती, उस दिन मालकिन आग्रह करके चम्पा को अपने यहा रोक रखती।

एक दिन सध्या म साहबा के नाच गान का आयोजन था, किसी मित्र के घर मे। साधारणतया मेम ऐसे आयोजनो म नही जाती थी। लेकिन उस दिन तवीयत दुरुस्त होने के कारण वह उत्साह के साथ तैयार हो गयी। वहा मुखौटे पहनकर सब नाचेंगे। पहचान पान पर मजा ही मजा। नाच मे छद्मवेश धारण करने के लिए अग्रेजी दूकान म पोशाकें भाडे पर मिलती हैं। मेम न चम्पा से कहा, 'हमारे लौटने तक रात हो जायगी। आज तुम रह जाओ।" वह रह जाना ही उसका काल सिद्ध हुआ।

शाम का मम जरा पहल ही अकेली लौट आयी। साहब आया नही, मेम सीधे सोन के कमरे मे चली गयी वहा चम्पा घर के काम मे लगी हुई थी। कमरे म रोशनी तज नही थी। कोई बात किय विना मेम ने कमरे का दरवाजा वन्द कर दिया। चम्पा ने समझा कि वह पोशाक बदलेगी, इसलिए पोशाक उतारन म मदद करन के लिए आग वढ आयी। उस पोशाक के भीतर से मम नही, स्वय साहब मेरिसन निकला। उसने मेम के छद्मवेश म नाच मे भाग लिया था, नाच खत्म होन से पहले ही वह पत्नी को छोडकर उसी छद्मवेश म वुरी नीयत से घर लौट आया।

वह रात चम्पा के कौमाय जीवन के लिए कालरात्रि हो गयी।

उस नरपशु के खिलाफ नालिश नहा हुइ?' लेवदव न पूछा।

"दासी पर वल प्रयोग। यह तो हमेशा ही होता है। कौन नालिश करे? करन पर क्या होना, नहीं जानता। लेकिन नारी का मन, समझना मुश्किल। चम्पा न नालिश ता नहीं ही की, वल्कि उसके वाद स साहब का वढावा दिया।

मलगावारो डेरे मे उसने आना-जाना शुरू कर दिया।"

"ठाकुरानी जरूर मिस्टर मेरिसन को चाहती है।" लेवदेव ने कहा।

"पता नही," गोलोक बोला, "उसकी उम्र भी कच्ची ठहरी। मेरिसन देखने मे अच्छा है, वह उसके जीवन का पहला पुरुष है।"

कहानी और सुनी न जा सकी।

चम्पा दरवाजे के पास आ खडी हुई। गोलोक दास की सफेद चादर पहन कर उसन अपनी लाज ढक रखी थी। श्वत अलकाररहित सज्जा मे उसकी रूप-सुषमा जैसे खिल उठी थी।

दरवाजे पर खडी हो वह बोली, "दादू, घर चलूगी। तुम एक डोली मँगाओ।'

गोलोक स्नेह से बोला, "वह क्या नतिनी, अभी भी तेरी देह कांपती है। ऐसे म घर जायगी? मिस्टर लेबेदेव ने तुझे आश्रय दिया है।"

"मिस्टर लेबेदेव को धयवाद।" चम्पा आत्ममर्यादा के साथ बोली, "उन्होंने आज मेरा बहुत उपकार किया है। लेकिन मुझे घर जाना ही होगा।"

"ठाकुरानी," लेबेदेव ने आश्वस्त किया, "आप जब तक पूण स्वस्थ न हो जायें, यहाँ आराम मे रह सकती हैं।"

"सो नही होगा, साहब," चम्पा ने अनुनय किया, "मुझे अभी जाना होगा। पता नही, इन कई दिनो मे मेरे बच्चे की क्या हालत हुई।"

"नतिनी अपने बच्चे के लिए व्यग्र है।" गोलोक ने कहा, "मैंने स्वय पता किया है, बूढी दीदी उसकी देखरेख करती है। मुन्ना अच्छी तरह ही है।"

"उसको देखने के लिए व्यग्र हूँ।" चम्पा बाली, "तुम अभी एक डोली मँगाओ, दादू।"

गोलोक डोली लाने चला गया।

"लेकिन ठाकुरानी, तुम चोर तो नही हो।" लेवदेव बोला।

"आपने कैसे जान लिया?"

'ऐसी जिसकी कहानी है, वह कैसे चोर हो सकती है?"

"मेम ने कहा, गवाह ने कहा, सिपाही ने कहा, मजिस्ट्रेट ने कहा—तुम चोर हो। कलकत्ता शहर ने जाना मैं चोर हूँ। तब भी आप कहेंगे कि मैं चोर नही हो सकती?"

"ठाकुरानी, तुमने तो बताया नही कि तुम्ह किसने वह तुलसीदाना दिया था।"

"आपने कैसे जानी वह बात? आप क्या सुनवाई के समय उपस्थित थे?"

"वह बात बाद म । ग्रभी यह बताओ कि वह तुलसीदाना तुम्हे दिया किसने था ? क्या तुमन उसका नाम नही बताया ?"

चम्पा क्षण भर के लिए चुप हो रही । उसके बाद माथा नीचा करके दब हुए क्षोभ के साथ अस्फुट स्वर म बोली, "वही मेरे लिए बडी लज्जा की बात है ! वह हार उसमे लिया क्यो ? क्या उसको अपना सवस्व दे दिया ?"

यह मानो चम्पा का स्वगत चिंतन था।

- 'समझ गया हूँ वह कौन है ! मिस्टर मरिसन ।" लेबेदेव न कहा ।

क्षोभ फट पडा क्रोध बनकर । चम्पा कठोर हो बोली, "वह झूठा है वह ठग है वह जुआबाज चोर है । उसी ने मरे गले मे हार डाल दिया था । बोला, हिन्दू विवाह की भाति तुम्हारे गले म यह हार पहनाता हूँ, सोन का हार, अपन पैस से खरीदा हुआ । बाद म पता चला उस हार को वह बीवी के गहने की पेटी मे चुरा लाया है । वह हार एक हिन्दू व्यापारी न उनके विवाह के समय मेम का दिया था ।'

'ठाकुरानी, यह बात तुमने अदालत मे क्यो नही कही ?" लबदव न जिज्ञासा की ।

साथ साथ चम्पा ने उत्तर दिया "चोरी के कलक से साहब अपनी प्रतिष्ठा खो दे, यह मैं सह नही सक्ती थी । लेकिन जज के सामने सारी बात खोलकर रख देना ही मेरे लिए उचित था । नही कर पायी वसा ।'

'ठाकुरानी, तुम उसको चाहती हो ?'

"नही जानती !' कहकर चम्पा माथा झुकाये रही ।

'क्या तुम उसके पास लौट जाओगी ?'

"मेरे घर मे घुसन लगगा तो निकाल बाहर करूगी उसे ।"

चम्पा की यह बात अन्त करण स निकली है या नही, लेबेदव समझ नही पाया । उसने सहानुभूति के साथ पूछा, तुम कुछ अन्यथा नही समझना, मैं सुनना चाहता हूँ कि तुम्हारा निवाह कैस होगा ? निवाह के खच का दावा करना चाहो तो म सहायता कर सकता हूँ ।

घणामिश्रित अभिमान से चम्पा बोली "नही नही, उस सबकी जरूरत नही । अपनी अबोध सन्तान को उसके पैसे से खिलाने की मन मे चाह नही । फिर कोई नौकरी करूँगी । लेकिन चोर को चाकरी अब देगा कौन ?"

"मैं दूगा !" लबेदेव ने उसी क्षण कहा ।

चम्पा सन्दिग्ध हो उठी । मानो पुरुषमात्र पर उम विश्वास नही । बोली, "नही-नही, आपके यहा नही । आप मरे दादू के मित्र है, छात्र है ।

लेबेदेव ने तरुणी का सकेत समझ लिया। वह आश्वस्त करते हुए बोला, "मुझ पर विश्वास करो, मैं तुम्हे सम्मानजनक काम देना चाहता हूँ। एक थियेटर म खोल रहा हूँ, बँगला थियेटर। तुम मेरे थियेटर की अभिनेत्री रहोगी।"

"थियेटर!" चम्पा अवाक रह गयी, "वह तो सुनती हूँ, साहब-मेम लोग करते ह। क्या मैं कर सकूगी ?"

"जरूर करोगी," लेबेदेव ने कहा, "तुम बँगला जानती हो, हिन्दी जानती हो, इतने दिन साहबो के घर मे काम किया है, अग्रेजी भी थोडा बहुत जानती हो। सुना, कुछ कुछ गानी भी हो। सबसे बडी बात कि तुममे साहस है। मेरे बँगला थियेटर की तुम ही नायिका होगी।"

चम्पा तब भी जैसे प्रस्ताव पर यकीन नही कर पा रही थी, वह बोली, "मुझे सिखा-पढा तो देंगे न ?"

"जरूर, जरूर।" लेबेदेव ने आश्वस्त किया।

चम्पा की आँखो मे जैसे एक नया आलोक फूट पडा। लेकिन कुछ देर बाद ही वहा सन्देह की छाया उतर आयी। वह बोली, "लेकिन साहब, मैं बदनाम चोर हूँ। लोगो में आपके थियेटर की बदनामी होगी। माफ करें। मैं आपके थियेटर मे भाग नही ले सकूगी।"

वह बदनामी झूठी है, झूठी। फिर भी लेबेदेव जरा चिंतित हुआ, मैकनर ने कल यही बात कही थी—'एक चोर स्त्री होगी तुम्हारे थियेटर की नायिका।' उसके बाद उसने अपने को सभाल लिया। बोला, "चिन्ता मत करो ठाकुरानी, मैं तुम्हे बिल्कुल एक नयी रमणी बना दूगा, कोई तुम्हे पहचान नही पायगा। तुम्हारा पुरातन खत्म हो जायेगा। तुम थियेटर मे नवीन नाम, नवीन रूप और नवीन सज्जा के साथ अभिनय करोगी।"

तीन

गवर्नर जनरल सर जान शोर ने बँगला थियेटर खोलने की अनुमति दे दी है। लेबेदेव अपने खच से इमारत बनवायगा, जहा चार सौ दशक बैठ सकें।

लेबेदेव को क्षण भर का भी अवकाश नही। समय कम रह गया है, शीत-काल आते ही थियेटर चालू करना है। इस बीच इमारत का बनना, स्टेज

बाधना, सीन आँकना, गाने बजाने की व्यवस्था करना — कितने ही काम हैं, कितने ही काज।

टाउन मेजर अलेक्जेण्डर किड उसका सहायक है। मुनाफे का मौका देखकर जगन्नाथ गांगुलि ने थियेटर की इमारत बनाने का जिम्मा लिया। नक्शे में कितना कुछ फेर बदल हुआ। अन्त में जाकर भवन निर्माण का काम शुरू किया गया। रुपया चाहिए रुपया। कुछ जमा किया था लेबेदेव ने, उसका अधिकांश इसी बीच निकल गया। गाने बजाने के चलते उसका नाम है, उधार उसे सहज ही सुलभ हो जाता है। अतः उसने रुपये उधार ले लिये। बनियन की सहायता के कारण रुपये के चलते विशेष बाधा नहीं आयी। लेकिन मुश्किल हुआ सीन आँकने का काम। दक्ष चित्रकार मिलने की समस्या थी। टामस रावथ के थियेटर में जोसफ बैटल काम करता है। चित्र आँकने में उसका हाथ मँजा हुआ है। लकड़ी-कपड़े पर रंग और तूलिका के खेल से ऐसे दृश्यपट उभर आते हैं जिनकी तुलना नहीं। बैटल को यदि फोड़ लाया जाता तो बड़ी सुविधा होती। उसके सम्मानार्थ कलकत्ता थियेटर में एक विशेष अभिनय-रात्रि आयोजित हुई थी, उसमें जो लाभ हुआ वह बैटल को ही मिला था। लेबेदेव के प्रस्ताव पर वह राजी ही नहीं हुआ। अन्त में एक नौसिखुए चित्रकार के द्वारा ही दृश्यपट तैयार कराये गये। लेबेदेव का मन धकधकाने लगा।

गाने बजाने की तैयारी थी। गोलोक दास ने बढ़िया बँगला गीत जुटा दिये थे। सुर-ताल का बोध उसे था। उसने अपने-आप ही वायलिन बजाना सीखा था। लेबेदेव के साथ ताल मिलाकर वह चल पाता था। बँगला गान के साथ विलायती वाद्य का समन्वय खूब अच्छा बन पड़ा था। लेबेदेव खुद संगीत का निर्देशन करता था।

लेकिन मुसीबत थी नाटक की भाषा को लेकर। लेबेदेव ने पूरे नाटक का बँगला में रूपान्तरित किया। तब भी केवल बँगला में नाटक खेलने का साहस उसे नहीं हो रहा था। कलकत्ता शहर के दर्शक पँचमेल ठहरे। अंग्रेज, बंगाली हिन्दुस्तानी (हिन्दीभाषी), मूर—कितनी ही जातियों के लोग कलकत्ता में रहते हैं। केवल बँगला भाषा का थियेटर खोलने पर यदि दर्शक नहीं जुटे तो सारा रुपया बरबाद! इसीलिए लेबेदेव ने एक नया प्रयोग किया। नाटक के प्रथम अंक के सारे दृश्य बँगला में रखे। द्वितीय अंक के तीनों दृश्यों में प्रथम दृश्य मूरों की भाषा में, दूसरा दृश्य बँगला में और तीसरा दृश्य अंग्रेजी में रहेगा। और शेष अंक रहेगा पूरा-का-पूरा बँगला में।

गोलोक दास बोला, "यह तो खिचड़ी हुई!

लेबेदेव ने उत्तर दिया, "तुम लोग खिचडी खाते हो न ! तुम लोग बँगला मे यात्रा-गान सुनते हो, यूरोपवाले अग्रेजी मे थियेटर देखते है। लेकिन मेरी खिचडी एक नये काव्य को उपस्थित करेगी।"

गोलोक ने कहा, "किन्तु इस अदभुत सम्मिश्रण को रसिक लोग पसन्द करेंगे ?"

"यही तो मेरी परीक्षा है।" लेबेदेव ने कहा, "बाबू यह बँगला थियेटर ही तो सम्मिश्रण है। तुम्हारा यात्रा गान खुले मे होता है, मच पर नही। तुम्हारे यात्रा गान मे विचित्र परदे नही रहते। ये सब विलायती चीजें मैं बँगला थियेटर को दूगा। बढिया बगला गान के साथ विलायती वाद्य बजेंगे। और अगर भाषा मे बगला, हिन्दुस्तानी और अग्रेजी हो तो कितना मजा आयेगा ! लोग हँसी से लोट पोट होगे। कामेडी।"

'किन्तु " गोलोक दास ने कुछ कहना चाहा।

"किन्तु नही, बाबू, गेरासिम लेबेदेव किन्तु नही जानता।" लेबेदेव ने आत्मविश्वास के साथ कहा, "वह जो तुम लोगो का मजेदार खिचडी गाना है—'वह श्याम गोइग मथुरा, गोपियो के पीछे दौडता। कहा अक्रूर ने, अकल इज ए ग्रेट रास्कल।' तुम्हारे देशवासी तो मजा चाहते है, दिल्बहलाव चाहते है—गोपाल भाड, रामलीला की सगति, कवियो का विवाद, खयाल, तराना। मैं भी एक नया उपयोगी काव्य प्रस्तुत करूँगा।

भाषा का तर्क वितर्क यदि खत्म भी हुआ तो विशेष कठिनाई हुई चम्पा को लेकर। अब चम्पा उसका नाम नही। लेबेदेव ने उसको नाम दिया है गुलाब। गुलाब की तरह सुन्दर। क्लारा की भूमिका लेबेदेव ने उसे दी है। प्रथम अक मे क्लारा वाद्यसगीत के साथ डान पेड्रो के रूप मे आयेगी। बँगला नाटक मे क्लारा का नाम सुखमय हो गया है। अर्थात् प्रारम्भ म चम्पा सुखमय की भूमिका म उपस्थित होगी, पुरुष-वेश मे। वह आकर वादकों से कहेगी, "महाशयो वह भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं। और उन्होने हम लोगो से जाने को कहा है—शुभ हो।'

चम्पा ने अभिनय के अश याद कर लिये थे, रिहर्सल के समय ठीक-ठीक बोल नही पाती थी। मानो पाठशाला की पढाई हो।

लेबेदेव स्वय रिहर्सल करा रहा था और आवश्यकतानुसार निर्देश भी दे रहा था।

"फिर से बोलो।" लेबेदेव ने आदेश दिया।

चम्पा बोली, "महाशयो, भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई है "

"हुआ नही, हुआ नही।" लेबेदेव रोकते हुए बोल उठा, "तुम्हारी बात मे सन्तोष का भाव नही जगा। इतनी रुष्टता क्यो ? वादकगण फिर बजायें। गुलाब फिर से कहेगी।"

वादकों ने फिर वाद्यसंगीत दिया।

चम्पा फिर से जल्दी जल्दी बोली, "महाशयो, भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं और उन्होने हम लोगो से कहा है "

चमक उठा लेबेदेव, मानो कोई अरबी घोडा चारो पैर उठाकर उछल पडा हो। 'इतनी हडबडाहट किसलिए ? सुनने के बाद जरा रुको—पाज—एक, दो—और उन्होने कहा । फिर बजाओ।"

कुछ क्षोभ के साथ वादकों ने फिर बजाना शुरू किया।

चम्पा इस बार धीरे धीरे बोली, "महाशयो, भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं "

लेबेदेव की ओर ताका उसने, उसकी भौह टेढी। चम्पा ने डरकर पूछा, "इस बार भी नही हुआ ?"

लेबेदेव बोला, "नही, ठाकुरानी, तुम क्लारा के चरित्र को ठीक से समझ नही पाती हो। क्लारा पुरुष के वेश मे उपस्थित है, वह उत्साहित है, जीवन्त है, उसके मन का आनन्द उमडा पड रहा है '

"मैं नही कर पाऊँगी मैं अभिनय नही कर पाऊँगी।" चम्पा अपनी रुलाई को छिपाने के लिए बगलवाले कमरे मे दौड गयी।

'ओफ्फोह, यह बगाली ठाकुरानी इतनी भावुक है!" लेबेदेव हताश हो बोला।

गोलोक दास इतनी देर से चुपचाप देख रहा था। चम्पा की असफलता से वह भी हताश हो उठा। कुछ आतंकित स्वर मे वह बोला, "गुलाब सुन्दरी जब पाट नही बोल पाती है तो फिर और किस स्त्री को देखा जाय!"

छोटी हीरामणि पान का डिब्बा हाथ मे लिये, गाल भर पान दबाये, आगे आकर बोली, "उस औरत पर इतनी कृपादृष्टि है साहब की। क्यो, मैं क्या वह नही कर सकती ? रूप बनाकर कितने मर्दों के साथ स्वाग किया है और थियेटर मे अभिनय नही कर सकती ?" कहकर पान की पीक उसने पीकदानी मे फेंक दी।

कुसुम मुह बनाकर बोली, 'और मैं ही किसी से क्या कम हूँ, हीरी ? मैं ही क्यो वह बडा पाट नही पा सकती ? मेरा ऐसा रूप है, तब भी क्या सिर्फ

गाना ही गाते रहना होगा ?"

"नहीं-नहीं," तनिक क्षुब्ध हो लेवेदेव ने कहा, "वह कर सकेगी, वह कर सकेगी। उसमें शक्ति है, किन्तु प्राण नहीं। मैं उसे सिखा पढ़ा ही लूगा, दूसरा अभ्यास चले।"

लेबेदेव पास के कमरे मे गया। चम्पा धरती पर पड़ी हुई, मुह छिपाये फफक-फफककर रो रही थी। जूते की आहट सुनकर भी उसने मुँह ऊपर नहीं किया।

लेबेदेव ने पुकारा, "ठाकुरानी।"

चम्पा हिली नहीं।

लेबेदेव ने फिर आवाज दी, "गुलाव ठाकुरानी।"

इस बार चम्पा ने रुआसा चेहरा उठाकर देखा।

लेबेदेव ने जरा व्यावसायिक लहजे म कहा, "गुलाब ठाकुरानी! तुम्ह रोने की भूमिका नहीं दी गयी है, हँसने की भूमिका दी गयी है। आखें पोछ डालो।"

चम्पा ने आँचल से आखें पोछ ली।

लेबेदेव न शिक्षक की भाति कहा, "मैं फिर कहता हू, क्लारा के चरित्र को ठीक मे नहीं समझ पायी हो। क्लारा पुरुष के वेश म उपस्थित है। वह उद्धत है, वह जीवन्त है, वह आनन्दोमत्त है।"

'साहब, मैं नहीं कर पाऊँगी।" चम्पा हताश हो बोली, "मुझे छुट्टी दे दो।"

"गुलाव ठाकुरानी, तुम नहीं कर पाओगी तो कौन कर पायेगी ?" लेबेदेव ने कहा, "तुम बँगला, हिन्दुस्तानी, अंग्रेजी भाषाएँ जानती हो। तुम्हारा स्वर खूब तेज मगर मधुर है। समय मेरे पास कम है, क्लारा का पार्ट कौन करे ?"

चम्पा उठ बैठी। सन्दिग्ध स्वर मे बोली, "क्या मैं कर पाऊँगी ? सच ?"

"अवश्य कर पाओगी," लेबेदेव ने कहा, "तुम्हारे भीतर शक्ति है, लेकिन प्राण नहीं।"

चिन्तित हो चम्पा न सिर झुका लिया।

हठात लेबेदेव ने पूछा, 'मिस्टर मेरिसन तुम्हारे घर आता है ?"

चम्पा तनिक लज्जा के साथ बोली, 'दो तीन दिन आया था। मैं सामने नहा गयी।"

"वह एक हरामजादा है!" लेबेदेव ने कहा, "लेकिन उसे आने दो, आने दो उसे।"

रिहसल समाप्त होते होते काफी देर हो गयी। कलकत्ता शहर में सुबह और शाम के वक्त ही काम काज चलते हैं। दोपहर विश्राम। पसीने से सराबोर कर देनेवाली प्रचण्ड गर्मी में खिड़की दरवाजे बन्द कर पखे के नीचे विश्राम। लेकिन लेबदेव को विश्राम नहीं। दोपहर में जब सारा शहर ऊँघता रहता, तब वह अपनी धम-दशन भाषातत्त्व की चर्चा लेकर बैठता। प्रयोजन के अनुसार ब्राह्मण पण्डित लोग आते हैं। वे लोग कुछ पारिश्रमिक के बदले में प्रवासी रूसी के साथ भारतविद्या की विवेचना करते हैं। आठ वर्षों में उसने बहुत कुछ जान-समझ लिया है। सस्कृत भाषा थोड़ी सी ही सीखी है बँगला और उड़िया का अच्छी तरह सीख लिया है। रूसी भाषा और सस्कृत के बीच उसने एक अद्भुत साम्य पाया है। सारी दोपहर गम्भीर तत्त्वों की छानबीन करते-करते मन भारी हो उठा। लेबेदेव बग्घी हाकते हुए हवाखोरी को निकला। आज डोमतला थियेटर का भवन देखने जाने की उसकी इच्छा नहीं। सावधान, जगन्नाथ गागुलि कजूस निकला तो हुआ सब गुड़ गोबर। उस तरफ भी उसकी नजर है, लेकिन आज उस तरफ माथा न खपाना ही अच्छा। गगा किनारे 'कोस' जाने की इच्छा नहीं हुई। वहा यूरोपियन लोगों की भीड़ है। झुण्ड के झुण्ड साहब-मेम गाड़ी हाकते हुए हवाखोरी कर रहे होंगे। अनेक जान पहचानवाले निकल पड़ेंगे। शिष्टाचार निभाने चला तो बोर होना पड़ेगा। इसके अलावा वह हवा-खोरी की नहीं, धूल निगलने की जगह है।

निरुद्देश्य भाव से घूमते फिरते चादनी चौक की परिक्रमा करता हुआ वह मलगा अचल मे आ पहुचा। हठात मन मे आया कि चम्पा के घर जाना है। सवेरे के रिहसल के समय वह बिफर उठी थी, उसे जरा उत्साहित करना है। और, चम्पा के घर पहले कभी गया भी नहीं है।

मलगा पँचमेल इलाका है। मलग लोग कब इस क्षेत्र में नमक बनाते थे, इसका कोई ठिकाना नहीं। इस समय नाना जातियों के लोग यहाँ रहते हैं। हिंदू मूर, चीनी, बर्मी और फिरगी आस-पास रहते हैं। जाति वर्ण धर्म की विभिन्नता रहने पर भी शहर में काय व्यापार के लिए साथ साथ रहने को वे बाध्य हैं। कलह विवाद उनमे नहीं होता, सो नहीं। दुर्गापूजा और मुहर्रम के मौकों पर कुछ वर्ष पहले दगे भी हो चुके हैं, तब भी वे साथ साथ ही रहने को बाध्य हैं।

गली सीधी है। छोटे छोटे लड़की-लड़के रास्ते में खेल रहे थे। धूल-कीचड़ की उन्हे चिन्ता नहीं। घरों की छतों पर अनेक लड़के पतग उड़ा रहे थे। पतग की कलाबाजी के खेल मे खूब उत्साह किसी पतग के कट जाने से

लडके चिल्लाने लगे—वो गया, वो गया ! कटी पतंग को पकडने के लिए पेड की सूखी डालपात-बँधा लम्बा बांस लेकर लडके उसके पीछे दौड पडे।

रास्ते के किनारे-किनारे नाली। कूडे-कचडे के ढेर। रुका हुआ गन्दा पानी। शहर के कोतवाल के अधीन हर थाने मे मैला फेंकनेवाली गाडियां थी, कर्मचारी थे, किन्तु मैला समय पर साफ नही होता।

बग्घीगाडी के पीछे छोटे लडकी लडको का झुण्ड दौड पडा। कोई कोई गाडी के पीछे लटक गया। लेबेदेव ने रोका।

चम्पा का घर ढूढ निकालने मे ज्यादा दिक्कत नही हुई। छोटा दुतल्ला घर, पुराना, बहुत दिनो से मरम्मत आदि हुई नही। दरवाजा खुलते ही चढाई। पास ही ईट की सीढियां सीधे ऊपर गयी है। सीढी के पास ही एक कुआ। नीचेवाले घर मे एक काला पुर्तगाली परिवार रहता है। चम्पा दूसरे तल्ले पर रहती है।

अप्रत्याशित आगन्तुक को देखकर चम्पा को सिहरन-भरा आश्चर्य हुआ। उसे वह कहा बिठाये, किस तरह आतिथ्य करे, इन्ही बातो मे वह व्यस्त हो उठी। अन्त मे बैठने के लिए एक कुर्सी रख दी।

दोपहर की नीद के बाद दोनो आँखें फूली फूली लग रही थी, सिर के बाल उलझे रूखे। उसका काफी कुछ सौन्दर्य जैसे चला गया हो।

दो कमरे और एक बरामदा। फूल के गमले मे खिले हुए फूल। पिंजडे मे काकातुआ (तोता) झूलता है, बोलता है, 'वेलकम, वेलकम।' खूब साफ-सुथरा आवास। कमरे मे एक पालना झूल रहा था। उसमे बिछौने मे लिपटा एक शिशु। धपधप गोरा रंग, चादी से चमकते केश। चम्पा के साथ रहनेवाली बूढी-मा पालने के पास बैठी हुई थी। नये साहब को देख कमरे से उठकर बाहर चली गयी।

लेबेदेव ने शिशु को दुलारा। शिशु रो उठा। चम्पा ने असीम लाड से उसे गोदी मे उठा लिया, नाचते नाचते बोली, 'मुन्न मेरे, लाल मेरे। ना-ना और रो मत, और रो मत।" शिशु का रोना थमते ही चम्पा ने उसे फिर सुला दिया।

लेबेदेव ने जरा हँसकर कहा, "तुम्हारा बेटा यूरोपियन जैसा दीखता है।"

चम्पा बोली, "वही तो काल हो गया। मेरिसन की मेम ने जिद की, तुम्हारे बच्चे को देखूगी। मैं उसे नयी पोशाक मे सजाकर, गले मे तुलसीदाना पहनाकर उसके घर ले गयी। मेरे बच्चे को देखते ही वह आग बबूला हो उठी। साहब को बुलाकर मेरे बच्चे के पास खडा कर दिया, कभी मेरे बच्चे की तरफ,

रिहर्सल समाप्त होते होते काफी देर हो गयी। कलकत्ता शहर में सुबह और शाम के वक्त ही काम काज चलते हैं। दोपहर विश्राम। पसीने से सराबोर कर देनेवाली प्रचण्ड गर्मी में खिडकी दरवाजे बन्द कर पंखे के नीचे विश्राम। लेकिन लवेदेव को विश्राम नहीं। दोपहर में जब सारा शहर ऊँघता रहता, तब वह अपनी धर्म-दर्शन-भाषातत्त्व की चर्चा लेकर बैठता। प्रयोजन के अनुसार ब्राह्मण पण्डित लोग आते हैं। वे लोग कुछ पारिश्रमिक के बदले में प्रवासी रूसी के साथ भारतविद्या की विवेचना करते हैं। आठ वर्षों में उसने बहुत-कुछ जान-समझ लिया है। संस्कृत भाषा थोड़ी सी ही सीखी है बँगला और उड़िया को अच्छी तरह सीख लिया है। रूसी भाषा और संस्कृत के बीच उसने एक अद्भुत साम्य पाया है। सारी दोपहर गम्भीर तत्त्वों की छानबीन करते-करते मन भारी हो उठा। लेबेदेव बग्घी हाँकते हुए हवाखोरी को निकला। आज डोमतला थियेटर का भवन देखने जाने की उसकी इच्छा नहीं। सावधान, जगन्नाथ गांगुलि कंजूस निकला तो हुआ सब गुड गोबर। उस तरफ भी उसकी नजर है लेकिन आज उस तरफ माथा न खपाना ही अच्छा। गंगा किनारे 'कोस' जाने की इच्छा नहीं हुई। वहाँ यूरोपियन लोगों की भीड है। झुण्ड के झुण्ड साहब-मेम गाडी हाँकते हुए हवाखोरी कर रहे होंगे। अनेक जान पहचानवाले निकल पड़ेंगे। शिष्टाचार निभाने चला तो बोर होना पड़ेगा। इसके अलावा वह हवा-खोरी की नहीं, धूल निगलने की जगह है।

निरुद्देश्य भाव से घूमते फिरते चाँदनी चौक की परिक्रमा करता हुआ वह मलंगा अंचल में आ पहुँचा। हठात् मन में आया कि चम्पा के घर जाना है। सवेरे के रिहर्सल के समय वह बिफर उठी थी, उसे जरा उत्साहित करना है। और, चम्पा के घर पहले कभी गया भी नहीं है।

मलंगा पँचमेल इलाका है। मलंग लोग कब इस क्षेत्र में नमक बनाते थे, इसका कोई ठिकाना नहीं। इस समय नाना जातियों के लोग यहाँ रहते हैं। हिन्दू, मूर, चीनी, बर्मी और फिरंगी आस पास रहते हैं। जाति वर्ण धर्म की विभिन्नता रहने पर भी शहर में काय व्यापार के लिए साथ साथ रहने को बाध्य हैं। कलह विवाद उनमें नहीं होता, सो नहीं। दुर्गापूजा और मुहर्रम के मौके पर कुछ वर्ष पहले दंगे भी हो चुके हैं, तब भी ये साथ साथ ही रहने को बाध्य हैं।

गली सीधी है। छोटे छोटे लड़की लड़के रास्ते में खेल रहे थे। धूल-कीचड़ की उन्हें चिन्ता नहीं। घरों की छतों पर अनेक लड़के पतंग उड़ा रहे थे। पतंग की कलाबाजी के खेल में खूब उत्साह किसी पतंग के कट जाने से

लडके चिल्लाने लगे—वो गया, वो गया ! कटी पतग को पकडने के लिए पड की सूखी डालपात बँधा लम्बा बास लेकर लडके उसके पीछे दौड पडे ।

रास्ते के किनारे किनारे नाली । कूडे कचडे के ढेर । रुका हुआ गन्दा पानी । शहर के कोतवाल के अधीन हर थाने म मैला फेंकनेवाली गाडिया थी, कर्मचारी थे, किन्तु मला समय पर साफ नही होता।

बग्घीगाडी के पीछे छोटे लडकी लडको का झुण्ड दौड पडा । कोई-कोई गाडी के पीछे लटक गया । लेबदेव न रोका ।

चम्पा का घर ढूढ निकालने म ज्यादा दिक्कत नही हुई । छोटा दुतल्ला घर, पुराना, बहुत दिनो से मरम्मत आदि हुई नही । दरवाजा खुलते ही चढाई । पास ही इट की सीढिया सीने ऊपर गयी ह । सीढी के पास ही एक कुआ । नीचेवाले घर मे एक काला पुतगाली परिवार रहता है । चम्पा दूसरे तल्ले पर रहती है ।

अप्रत्याशित आगन्तुक को देखकर चम्पा को सिहरन भरा आश्चर्य हुआ । उसे वह कहाँ बिठाय, किस तरह आतिथ्य कर, इन्ही बाता मे वह व्यस्त हो उठी । अन्त म बठने के लिए एक कुर्सी रख दी ।

दोपहर की नींद के बाद दोना आखें फूली फूली लग रही थी, सिर के बाल उलझे रुखे । उसका काफी कुछ सौन्दय जैसे चला गया हो ।

दो कमरे और एक बरामदा । फूल के गमले म खिले हुए फूल । पिंजडे मे काकातुआ (तोता) झूलता है, बोलता है, 'वेलकम, वेलकम ।" खूब साफ सुथरा आवास । कमरे मे एक पालना झूल रहा था । उसम बिछौने मे लिपटा एक शिशु । धपधप गोरा रग, चादी से चमकते केश । चम्पा के साथ रहनेवाली बूढी-मा पालने के पास बैठी हुई थी । नये साहब को देख कमरे से उठकर बाहर चली गयी ।

लबेदेव ने शिशु को दुलारा । शिशु रो उठा । चम्पा ने असीम लाड से उसे गोदी मे उठा लिया, नाचत-नाचत बोली, मुन मेरे, लाल मेरे । ना-ना, और रो मत, और रो मत ।" शिशु का रोना थमते ही चम्पा न उस फिर सुला दिया ।

लेबेदव ने जरा हँसकर कहा, "तुम्हारा बटा यूरोपियन जैसा दीखता है ।"

चम्पा बोली, "वही तो काल हो गया । मेरिसन की मेम ने जिद की, तुम्हार बच्चे को देखूगी । मैं उसे नयी पोशाक मे सजाकर, गले मे तुलसीदाना पहनाकर उसके घर ले गयी । मेरे बच्चे को देखत ही वह आग-बबूला हो उठी । साहब को बुलाकर मेरे बच्चे के पास खडा कर दिया, कभी मेरे बच्चे की तरफ,

कभी साहब की तरफ। दोनों के माथे पर रुपहले केश ! और जाती कहाँ ! अकथनीय गाली गलौज ! उसके बाद मेम की दृष्टि तुलसीदासा पर पडी। मेम दौडकर गयी, सन्दूक खोलकर गहना के बक्स का देखा। साथ ही साथ अस्वस्थ शरीर लिए ही दौडी चली गयी थाने मे खबर करने के लिए।"

"और मेरिसन ने क्या किया ?"

'उसने कहा, मामला गरम है, भागो घर। मैंने कहा, थाने की पुलिस को कौन रोकेगा ? वह बोला 'बेंत के कुछ प्रहार ही तो ? सह जाओगी। मैं अभी टैवन जाता हू।' यह कहकर वह धडधडाते हुए चला गया। धडकता हृदय लेकर मैं घर लौटी। मेरे लौटते न लौटते पुलिस आयी और मुझे पकडकर थाने मे ले गयी।"

"वे सब बातें रहने दो।" लेबदव बोला, "तुमने थियेटर देखा है ?"

'नही। देखती कैसे ? विलायती थियेटर ! सुनती हू टिकट का दाम बहुत होता है। हम गरीब लोग, थियेटर के लिए पैसा कहा से पायें ? हाँ, यात्रा गान सुना है, विद्यासुन्दर का खेल। आपके नाटक की तरह उसमे भी नकली वेश। पुरुष ने विद्या का रूप सजाया, उफ मा ! क्या भाव ! क्या नखरे ! क्या छिनाल पन ! नकियाते स्वर मे गाता—

हाय करता है कैसे जिया
जाने क्या मुझे हो गया !
हाय करता है जैसे जिया,
कहूँ किससे क्या हो गया !"

चम्पा नकल उतारते हुए अपने आप ही खिलखिलाकर हँस उठी।

लेबेदेव मन ही मन खुश हो उठा। कनारा की भूमिका के लिए इसी तरह की उत्फुल्लता चाहिए। उसने कहा, तुम थियेटर देखोगी ?"

'मैं ?"

'हाँ तुम थियेटर करोगी। और थियेटर देखोगी नही ?"

'दिखाने पर ही देखूगी।'

आज ही। चलो, आज कलकत्ता थियेटर मे खेल है—'ट्र ऑर नथिंग'। प्रहसन। खूब मजेदार।"

'लेकिन आज ही चलू ?"

"क्यो, तुम्हें कोई काम है ?"

"मुझे और क्या काम ? आपका रिहर्सल न रहने से मै बेकार हूँ। सोचती थी आपके ही काम में खलल पडेगा।"

"तुम्हे थियेटर दिखाना भी मेरा एक काम है। एक थियेटर देखने से तुम जो समझ पाओगी, उसे मैं बार-बार कह भी तो नही सकूगा।"

"तब तो आप जरा ठहरें, मैं झटपट कपडे बदल आती हू।"

"अच्छा।"

साम घिर आयी है। हिंदू घरो मे शख बज रहे हैं। बूढी-मां एक तेल का दीपक जला गयी। दीवार से टॅंगे दुर्गा के चित्र पर रोशनी पडी। लेबेदेव की की दृष्टि उस तरफ खिच गयी। अदभुत यह देवी परिकल्पना। ईश्वरीय शक्ति की प्रतीक मुकुटधारिणी दुर्गा। मानो कुमारी (मरियम) की भाति विराज रही हो, पूरे विश्व की सारी शक्ति की आधारस्वरूपा यह दस भुजावाली दुर्गा।

चम्पा का बच्चा रो उठा। बूढी मां बच्चे को लेकर चली गयी।

लेबेदेव ने दुर्गा की छवि को अनेक बार देखा है, किन्तु ऐसे शात परिवेश मे देखने का सुयोग नही मिला था। लेबेदेव मन ही मन दुर्गा-तत्त्व का विश्लेषण करने लगा।

चोर की भाति एक श्वेत युवक घर मे घुसा, खाली पाव घुसा था इसलिए लेबेदेव उसकी पगध्वनि नही सुन पाया। युवक सुदर था, सिर के बाल रुपहले।

"चम्पा कहा है?" रूखे स्वर मे उसने जिज्ञासा की।

"आप मिस्टर मेरिसन हैं?"

"मैं शैतान का शागिर्द हूं।" दात पीसते हुए मेरिसन ने कहा। उसने एक बार शय्या की तरफ घूरा। विस्तृत शय्या। दोपहर की निद्रा के बाद उसे ठीक करने का समय नहीं मिला था। मेरिसन ने सदिग्ध आखो से लेबेदेव की आर देखा। उसके बाद कर्कश स्वर मे बोला, 'अब समझा, कि किस बूते पर यह औरत मुझे घर मे घुसने नही देती!"

ऐसे ही समय मे चम्पा दरवाजे पर आकर खडी हो गयी। वह सजधज कर आयी थी। हल्के पीले रग की एक सुदर बेलबूटेवाली साडी पहने, माथे पर लाल बिन्दी, जूडे मे फूल। साज सिंगार म अतिशयता नही, किंतु मनोहारिता।

उसको देखत ही मेरिसन गरज उठा, "ब्लडी होर! तरी हिमाकत तो कम नही? तू मुझे खदेडकर नया लवर ले आयी है!"

"छि छि क्या बोल्ते हो तुम, बाब साहब?" चम्पा जीभ काटते हुए बोली, "मिस्टर लेबदेव मेरे नये मालिक हैं। उनके थियेटर मे मैं काम करती हू।"

"अरे वही सफेद भालू! चरित्रहीन वायलिनवादक?" मेरिसन चिचिया उठा, "सुना है, अग्रेजी थियेटर के साथ होड करके एक बॅंगला थियेटर खोलना चाहता है! दो दिन मे लाल बत्ती जले जायेगी।"

लेबदव इस बार तमक उठा लेकिन गम्भीर सयत स्वर मे बोला, 'मिस्टर मेरिसन, अनधिकार चर्चा न करें।"

मेरिसन ने झट जवाब दिया, "तुम भी इस घर मे अनधिकार प्रवेश मत करो।"

चम्पा बोली, "बॉब साहब, क्या मेरे मालिक का अपमान करते हो ?"

मेरिसन बोला, "अरी औरत, तेरा मालिक मैं—था, हूँ और रहूगा। इस घर मे किसी रूसी सफेद भालू को घुसने नही दूगा।"

चम्पा बोली, "यह घर मेरा है। अपने घर म जिसे मर्जी होगी उसे आने दूगी मैं। तुम बाहर जाओ बाब साहब!"

"औरत, इतना बडा तेरा साहस ?" चीखकर मेरिसन बोला। वह चम्पा पर झपट पडा, उसके एक ही थप्पड से चम्पा मेज पर लुढक गयी।

अबकी लेबेदेव का हाथ अचानक चल पडा घूसे पर घूस मारकर उसने मेरिसन को घर के बाहर कर दिया। मेरिसन मुकाबला करने के लिए आया था, लेकिन लेबेदेव के भारी बूटो के आघात से बरामदे म जा गिरा। लेबदेव ने निममता पूवक ठोकर मारते मारते उसे सीढिया पर लुढका दिया।

मेरिसन अँधेरे मे लुढकते लुढकते नीचे जा गिरा।

कम्बख्त को सजा देकर लेबदेव बहुत खुश हुआ। लेकिन चारो ओर शोर-गुल मच गया। मेरिसन की चीखो से डरकर बच्चे ने भी रोना शुरू कर दिया। चम्पा की बूढी मा भी कसमसाने लगी। इतनी देर मे चम्पा उठ खडी हुई। उसकी वेश-भूषा अस्तव्यस्त, ओठ के पास से रक्त बहने लगा है।

नीचे के अधकार मे मेरिसन उछल-कूद मचा रहा था, "शैतान औरत, रूसी गुण्डे से मुझे पिटवाना! मैं भी सबक सिखाऊँगा, तेरे पास स अपने लडके को छीन ले जाऊँगा।"

मेरिसन सीढिया से निकलकर बाहर चला गया। इस क्षेत्र मे मारपीट चलती ही रहती है। इसीलिए कुछ ही देर म शोर-गुल ठण्डा पड गया।

चम्पा मूर्तिवत खडी रही।

लेबेदेव आगे आया। बोला, "उसकी धमकी से डर तो नही गयी हो ?"

चम्पा का स्वर काप उठा, "अपने लिए नही डरती, लेकिन वह जो उसने कहा कि बच्चे को छीन ले जायगा!

"कहने से ही हो गया ?" लेबेदेव ने आश्वस्त किया, 'इस देश मे क्या सरकार नही है ?"

'सरकार तो उन्ही लोगो की है" चम्पा डरी डरी-सी बोली, "वह मदिरा का

व्यवसाय करता है, उसके पास अनेक गुण्डे-बदमाश हैं। मैं कभी काम से बाहर जाऊँगी, उसी बीच बूढ़ी माँ को मार-पीटकर वह बच्चे को उठा ले जायेगा।"

इस बार सचमुच ही लेबेदेव चिंतित हो उठा। कलकत्ता शहर मे चोरी-डकैती राहजनी होती ही रहती है। यही उस दिन तो चौरंगी-जैसी जगह से डकैत लोग एक स्त्री को उठा ले भागे थे।

"वही तो, सोचकर देखता हूँ," लेबेदेव ने कहा, "कल जैसे भी हो कोई व्यवस्था करनी होगी। लेकिन आज की रात कोई भय तो नही ?"

"नही," साहस के साथ चम्पा बोली, "आज की रात के लिए मैं डरती नहीं। मेरे घर मे हँसिया है, मैं सारी रात जागकर पहरा दूगी। मेरी जान लिये बिना मेरे बच्चे को उठाकर कोई नही ले जा पायेगा।"

चम्पा ने घर मे से हँसिया बाहर निकाली। कितने ही डाभ नारियल काटने से उसकी धार गजब की तेज हो गयी है। लालटन के आलोक मे वह चमकने लगी।

लेबेदेव ने एक बार चम्पा की तरफ और एक बार दस भुजावाली दुर्गा के चित्र की तरफ देखा।

"खरियत रहे," कहत हुए लेबदेव ने विदा ली। जाते जाते सोचता रहा कि चम्पा और उसके शिशु को सुरक्षित रूप से रखने की व्यवस्था कहाँ की जाये!

चार

किन्तु सुबह होने पर लेबेदेव चम्पा की बात भूल गया। उसकी वजह थी। भोर होते न होते ही श्रीमान् बाबू जगन्नाथ गागुलि आ धमके। थियेटर के भवन के लिए ईंटा से भरी नौका गगाघाट पर आयी थी। पुलिसवालो ने नौका को रोक रखा था। पता लगने पर जगन्नाथ ने आदमी भेजे थे, नौका खाली नही करायी जा सकी। कारण कुछ भी नही। पुलिस का सीधा जवाब 'हुक्म नहीं है।' अत इंट नही आने से थियटर का भवन बनेगा कैसे ?

"अवश्य ही रावथ साहब की करतूत है।" जगन्नाथ ने कहा।

'सो हो सकता है," चिन्तित स्वर मे लेबेदेव ने स्वीकार किया, 'लेकिन अब किया क्या जाये ?"

"कुछ घूस देने पर माल उतारा जा सकता है।" जगन्नाथ जानकार की तरह बोला।

"घूस मैं नही दूगा।' लेबेदेव ने कहा।

"तब तो माल कब उतरेगा, पता नही।"

"मैं बल्कि टाउन मेजर कर्नल अलेक्जेण्डर किड के पास जाता हू।" लेबदव ने कहा। दूसरे ही क्षण चिन्ता से उसने भौह सिकोड ली। टाउन-मेजर अच्छा खासा रसिक आदमी है। लेबदेव से उसने जब तब करके लगभग दो हजार रुपय उधार ले रखे हैं। चुका देन का नाम तक नही। अबकी देखते ही रुपय माँग बठेगा। अग्रेज राजकमचारियो का ढग ही अलग है। रुपये पान पर ही व बात करते है। लेकिन अभी रुपय माँगने पर टाउन मजर को खुश करना मुश्किल होगा। लेबेदेव पर अपनी ही बहुत-सी देनदारी चढ गयी है।

'जगन्नाथ बाबू आपके पास पाँच छ सौ रुपय होगे?" लेबेदेव न जिज्ञासा की।

'सोच तो मैं ही रहा था कि आपसे रुपये माँगूगा," जगन्नाथ बोला, 'आपके घर का भाडा चार मास से बाकी पडा है। चूने का दाम मैंन दिया था, वह भी आपस वापस नही मिला मुझे।'

लेबेदेव न टिरेटी बाजारवाला घर छोड दिया था। वहा बडी भीडभाड रहती। लोगो और दूकानदारो-पसारियो का शोर। वहाँ सगीत साधना मे विघ्न होता। तीन नम्बर बेस्टन लेन पास ही है। मकानमालिक हैं जगन्नाथ गागुलि। लेबेदव किरायेदार हैं। वेस्टन साहब की आवास-भूमि के छोट छोटे टुकडे करके छोटे छोट मकान बना दिये गये थे। उन्हीमे एक मकान है—तीन नम्बर। दोतल्ला मकान कुछ ही वर्षों मे नोनी लग गयी थी। मोटी दीवारें, गरमी के मौसम मे भीतर खूब ठण्डा रहता है। सामने एक छोटा बागीचा। एक आउट हाउस भी है। वह दुमजिला है। भाडा लेते समय जगन्नाथ ने मकान की मरम्मत नही करवायी। मोटी रकम खच करके लेबदेव ने मरम्मत करवा ली थी। मिस्टर गेरासिम लेबदेव कलकत्ता शहर का चोटी का वादक है। उसके आवास म कुछ साज-सज्जा होनी ही चाहिए। जगन्नाथ के साथ उस रकम का कोई हिसाब किताब अभी तक नही हुआ है।

लेबदेव ने कहा, "सच है कि भाडा बाकी पड गया है लेकिन मुझे भी तो मकान की मरम्मत के खाते मे आपसे बहुत-से रुपये पान हैं।

जगन्नाथ थूक निगलत हुए बोला, "उसका अभी क्या? वे सब बातें बाद म होगी। अभी तो इटवाली नौका को खाली करान चलें।"

टाउन मेजर के यहाँ जाने के लिए लेबेदेव अकेला ही बग्घीगाडी लेकर बाहर निकला। कसाईटोला के कीचडवाले रास्ते से होकर गाडी ने काठ के पुल पर से चैनल क्रीक को पार किया और एस्प्लेनेड आ पहुची। उसके बाद धन-खेना के पास से जो रास्ता भागीरथी के किनारे किनारे गार्डनरीच चला गया है, उसीको पकडकर वह आगे बढने लगी।

किड साहब का घर गार्डनरीच मे है। शहर के अनेक धनी-मानी साहब लोग वही रहते है। किड साहब की गहिणी एक देशी महिला है। दो लडको के साथ सुखपूर्वक ही वे घर गृहस्थी चला रहे ह।

किड साहब के यहा पहुचने म काफी समय लग गया। चढती धूप से पसीना-पसीना। साहब लोग बिस्तर से उठ गये थे। प्रातःकम के बाद वे हुक्के को लेकर व्यस्त थे। ऐसे समय मे उसी सुगन्धित खमीरी तम्बाकू के धूम्रजाल को भेदते हुए खिदमतगार के साथ लेबेदेव वहा उपस्थित हुआ।

कनल ने प्रसन्न भाव से उसको 'सुप्रभात' कहा। पारस्परिक कुशल क्षेम पूछने के बाद लेबेदेव न नौकावाली बात छेडी। किड को आश्चय बिल्कुल नही हुआ। बोला, "बाबू जगन्नाथ गागुलि ने ठीक ही कहा है, यह सब उसी राबथ की शतानी है। वह आदमी शुरू से ही तुम्हारे बँगला थियटर के पीछे पडा हुआ है। गवनर जनरल से थियेटर का लाइसेन्स जारी किये जाने की कायवाही को उसने रोक ही दिया होता, यदि मैं और मिस्टर जस्टिस हाइड बीच मे न्ही पडते। गेरासिम, तुम्ह खूब सावधानी से कदम उठाने है।"

जरा खुशामद करते हुए लेबेदेव ने कहा, "टाउन मेजर जिसकी पीठ पर हो, उसे फिर भय क्या?"

"नही-नही," किड बोला, "वह आदमी बडा धूत है। घूस देकर, औरत जुटाकर उस आदमी ने बहुतो को हाथ म कर रखा है। ऐसा कोई काम नही जो वह कर नही पाये। जो भी हो, तुम्हारी इटवाली नौका खाली हो जायेगी। कोतवाली को मैं चिट्ठी लिख देता हूँ।"

खिदमतगार कलम दावात ले आया। किड साहब ने उसी क्षण चिट्ठी लिख दी। लेबेदेव धन्यवाद देकर चलने ही का था कि उसी समय किड जरा हिचकते हुए बोला, "हाँ देखो, कुछ रुपये मुझे उधार दे सकते हो? समझ ही पाते हो कि रुपये की बडी खीचतान रहती है।"

"कितने रुपय?"

"ज्यादा नही, चारेक सौ होने से चल जायेगा। तुम्हारे पहलेवाले रुपये के साथ-साथ इसे भी चुका दूँगा।"

"मेरे पास तीन सौ रुपये ह।'

"अच्छा, वही दे दो।"

लेबेदेव तीन सौ रुपय देकर चिट्ठी के साथ कलकत्ता लौट आया। पसीने स लथपथ लेबेदेव जब घर लौटा तब दिन ढल चुका था। आज दिन भर भोजन नहीं। नौका खाली न होने पर थियेटर का काम बन्द हो जाता।

कसाईटोला के पास ही डोमतला है। उसी के पच्चीस नम्बरवाले प्लाट को भाडे पर लेकर लेबदेव न थियेटर खडा किया है। कलकत्ता थियटर तो भाडे पर मिल नहीं सकता, रावथ न साफ साफ कह दिया है। ओल्ड कोटहाउस मे नाच गान सगीत चलना था, वह भी कुछ वष पहले ध्वस्त हो गया। नया थियेटर बनाय बिना कोई चारा नहीं। डोमतला जगह साहबो के मुहल्ले के पास है। कलकत्ता थियटर भी अधिक दूर नहीं। पास ही चितपुर है। इस थियटर को स्पधा के बीच खडा करना होगा। नया थियटर। नयी ही उसकी शिल्प चातुरी होगी। स्टज को बगाली ढग से सजाना होगा, जैसे दुगापूजा-उत्सव के समय पूजा मण्डप सजाये जाते ह।

लेबेदव अपन ही प्रयास मे बैलगाडियो पर इटें लदवाकर पच्चीस नम्बर को पहुचा आया। नक्शे के अनुसार भवन बहुत हद तक तैयार हो गया है। स्टेज, बाक्स पिट बन गय है। चीनी कारीगरो न गैलरी की पालिश का काम शुरू कर दिया है। पच्चीस नम्बर म जैसे कमयज्ञ हो रहा है। देशी ठेकेदार ने लेबदेव के निर्देश पर राज मजूरो मे भवन खडा करवा दिया। जगन्नाथ गागुलि भी देखरेख रखता है। जोसफ बैटल के अभाव म दूसरे चित्रकार द्वारा जो दृश्यपट तयार करवाये गय थे व लेबदेव को पसन्द नहीं आये। उसने स्वय रग और तूलिका लेकर दृश्यपट पर पथ दृश्य, विश्राम गृह सुसज्जित भवन आदि का अकन शुरू कर दिया। मास्को की रगशाला मे अपने मित्र पयोदेर वोलोकोव को दृश्यपट का अकन करते देखा था। उसी जानकारी का लेबेदेव ने काम म लाना चाहा। आहार विश्राम भूलकर सारे दिन लेबदेव ने कहा कैसे गुजार दिय, इसकी उसे सुध न रही।

घर लौटते समय रास्ते मे विचार आया, आज भी अपराह्न मे रिहसल का आयोजन है। बहुत देर हो गयी, अभिनता-अभिनेत्री दल और वादकगण अवश्य ही उसकी राह देखते बठे होग।

लेकिन घर लौटने पर मन खुशी स भर उठा। बाबू गोलोकनाथ दास ने इसी बीच रिहसल शुरू कर दिया है। नीचेवाले हॉल मे नाटक का रिहसल चल रहा है। पास के कमरे म स्पिनर वाद्यसगीत का रिहसल ले रहा है। स्पिनर

एक ईस्टइण्डियन युवक है। लेबेदेव के दल मे क्लारियोनेट बजाता है। अच्छा तेज होशियार युवक। मालिक का बहुत ही प्रिय।

गोलोक दास ने कहा, "रिहर्सल के लिए सोचिए नही। साहब, आप जाइए नहा धोकर जरा सुस्ता आइए।"

वही अच्छी बात।

भिश्ती चमडे की थैली म कुएँ का ठण्डा पानी लाकर गुसलखाने के बडे टब म डाल गया। पसीने से भीगी पोशाक उतारकर टब मे गले तक नग्न देह को डुबोये रखने से मन मे स्निग्धता भर गयी। निचली मजिल से वाद्यसगीत की आवाज आती है। वह तो कुसुम का सुरीला कण्ठ है! 'विद्यासुदर' का गान।

उस बगाली बाबू ने विलक्षण रचना की थी। जीवन का पूरा पूरा उपभाग करना जानता था। कौन कहता है कि भारत के लोग सिर्फ धर्म को लिये रहते हैं? वे जीवन का पूरी तरह से उपभोग करना जानते हैं। इस काव्यरचना का अनुवाद करना है। यूरोप के लोग भारत के जीवनप्रेम को जान लें।

हँसी! वाद्य के स्वर का दबाकर हँसी खिलखिलाहट कानो मे आयी। अभिनय का रिहर्सल करते समय नाटक की मजेदार घटना पर वे हँस उठे हैं। नहीं नही, वे हँसायेंगे, हँसेंगे नही। रिहर्सल करते-करते ठीक हो जायेगा। पुरुषवेश मे नारी—चम्पा—वही तो, दिन भर उस लडकी की कोई व्यवस्था नही हो पायी। फुर्सत कहा मिली!

आज ही गोलोक बाबू से कहकर चाहे जो भी व्यवस्था करनी होगी। लडकी के मन मे निर्भयता की स्फूर्ति नही रहने पर सुखमय की भूमिका जमगी नही। इतनी साध से रचा गया नाटक मार खा जायेगा।

सहसा व्यावहारिक बुद्धि ने सिर उठाया। लगता है, अनेक नवीन अभिनेता-अभिनेत्रिया को लेकर पहले ही दिन पूरे नाटक को मचस्थ करना युक्तिसगत नहीं होगा। यदि पूरा नाटक पहले दिन ही असफल रहा तो थियटर को जमाना मुश्किल होगा। इसके अलावा गोलोक बाबू भी नाटक की खिचडी भाषा पसद नही करते। एक काम किया जा सकता है। लेबेदेव नाटक को काट छाँटकर सक्षिप्त कर देगा। पहली रात उसी सक्षिप्त नाटक का अभिनय होगा, एकाकी के रूप म, पूरा-का पूरा बँगला भाषा मे। पहली रात वह चम्पा के द्वारा नाटक नही शुरू करवायेगा, सगिनी भाग्यवती के द्वारा करवायेगा। इस विशेष परिवर्तनवाले विषय पर सोच विचार लेने की आवश्यकता है।

हठात् शिशु के रोने का स्वर कानो मे पडा। निचली मजिल से ही आ

"सो जो हो, सँभाल लिया जायेगा।" चम्पा बोली।

शिशु उतनी देर म तृप्त हो चुका है, मा का स्तन छोड दिया है चम्पा छाती पर कपडा खीचकर शिशु को नकली डाट सुनाती है, "नटखट लडके, फिर खाय खाय करके रो नही पडना। भरपेट जो पी लिया है, सो रात होने तक मुह बन्द रखना जब तक कि मेरा रिहसल न खत्म हो जाये।"

लेबदेव के साथ-साथ शिशु को गोद मे लिये चम्पा हाल मे घुसी जहा रिहसल चल रहा था।

गोलोकनाथ दास सामने रिहसल करा रहा था। खूनी, चौकीदार, गुमास्ता—ये जोर-जोर से अपना अपना सवाद बोले जा रहा था। दासी भाग्यवती की भूमिका मे अतर अच्छी ही लग रही थी। लेबेदेव के आ जाने पर भी उसने रिहसल बन्द नही किया। गोलोक दास के अनुशासन की शिक्षा कडी है। अच्छा हुआ, गोलोक बाबू ने स्वय रिहसल का भार लिया है। लेबेदेव एक आसन खीचकर बैठ गया। चम्पा की भूमिका देखनी है, कैसी उतरती है वह।

जरा बाद ही चम्पा की भूमिका शुरू हुई। उसके बच्चे ने सौदामिनी की गोद मे आश्रय लिया था। चम्पा ने छद्मवेशी सुखमय के सवाद बोलना शुरू किया।

आज जसे एक दूसरी चम्पा है। पिछले दिनवाली उसकी वह जडता कहाँ गयी? खब बेधडक स्वर से वह अपने सवाद बोलती गयी। जब भी दो एक जगह गलती उभर आयी थी, किन्तु गोलोक दास के बताते ही उसने उसे सुधार लिया।

रतनमणि की भमिका म सौदामिनी थी। अच्छा मर्यादित भावबोध है उसका। अच्छी व्यक्तित्वसम्पन्न आकृति है। गोलोक दास उसे खूब पसन्द करते हैं। चम्पा के बच्चे को सौदामिनी छोटी हीरामणि की गोद म रखने गयी। किन्तु हीरामणि नाक भौह सिकोडती हुई बोल उठी, "इस, क्या घिनौना, मैंने जीवन में दाई का काम किया नहीं! छोट बच्चे का वह सब छूना घिसना, घिन आती है मुझे। बदन से कैसे सडे दूध की गन्ध आती है। डाल दो न मा-बाप वनी उस औरत की गोद मे!"

हीरामणि ने बातें खूब जोर से ही कही थी। कान मे पडते ही चम्पा न बच्चे का सौदामिनी की गोद से उठा लिया। शान्त स्वर मे बोली, "हीरादीदी, मैं दाई का ही काम करती हू। इतने पुरुषो के साथ घर बसाने पर भी तुम्ह तो एक भी नही हुआ। तुम बच्चे का मम क्या समझोगी?'

हीरामणि उबल पडी। बोली, "फिर बढ-चढकर बातें! चलनी कहे सूप

रहा है न ! मा जैसे उसको पुचकार रही है। यहा फिर शिशु कौन सा आ गया ?

गुसलखाने से निकलकर लेवदेव नीचे उतर आया। सीढी के पास ही चम्पा, उसकी गोद म शिशु।

उस शिशु का रोना ही लेवेदेव को सुनायी पडा था। रोना अब और नहा। छाती का कपडा हटाकर चम्पा शिशु को स्तन-पान करा रही थी। शिशु उता वली के साथ मा का दूध पी रहा था। मेडोना का वह रूप उसे बहुत अच्छा लगा।

लेवेदव का देखकर चम्पा लजायी नही। स्तन पान कराते-कराते ही वाली, 'साथ लिये ही आ गयी। छाड आने की हिम्मत नही हुई। बहुत देर स अपनी सौदामिनी मौसी की गोद मे था। भूख लगते ही नटखट लडका पूरे स्वर म चीखने लगा।

'मिस्टर मरिसन ने कोई और उपद्रव तो नही किया ?' लेवेदेव न जिज्ञासा की।

"दोपहर तक तो नही।' बोली चम्पा, "पता नही रात मे फिर कसी मूरत लेकर जाता है। कल सारी रात सोयी नही।"

रोज राज के रात्रि जागरण से तुम्हारा शरीर टूट जायगा। एक बार मियादी बुखार न जकड लिया ता फिर खर नही। तुम एक काम करो।'

"क्या ?'

'मैं कहता हू कि जब तक सुविधाजनक घर नही मिल जाता तब तक तुम इसी घर मे रह जाओ। मेरिसन यहा हमला करने का साहस नही करेगा।'

"नही-नही। चम्पा ने लज्जा के साथ प्रतिवाद किया, "वह कसे होगा ?'

"काई असुविधा नही होगी।' लेवेदेव ने कहा 'मेरे उस आउट-हाउस का दातल्लेवाला कमरा खाली है। वही तुम रहो, और देरी करने से लाभ क्या, आज रात से ही।'

"आज रात से ?"

"वही अच्छा होगा,' लेवेदव ने कहा "तुम्हारा सामान वगैरह बाद म ले ही आना होगा। गोलोकबाबू से कह देता हूँ, वही सारी व्यवस्था कर देंग।"

-चम्पा किसी तरह राजी नही हुई। बोली 'वह नही होगा मिस्टर लवदव। आपके सामन अभी बहुत-सारे काय हैं। ऐसे मे आपके घर म आफत का आना ठीक नहीं हागा।'

- "लेकिन मिस्टर मेरिसन अगर उपद्रव करे ?"

"सो जो हो, सँभाल लिया जायगा।" चम्पा बोली।

शिशु उतनी देर मे तृप्त हो चुका है, माँ का स्तन छोड दिया है चम्पा छाती पर कपडा खीचकर शिशु को नकली डाँट सुनाती है, "नटखट लडके, फिर खाय-खाय करके रो नही पडना। भरपेट जो पी लिया है, सो रात होने तक मुह बन्द रखना जब तक कि मेरा रिहसल न खत्म हो जाये।"

लेवेदेव के साथ-साथ शिशु को गोद मे लिये चम्पा हॉल मे घुसी जहाँ रिहसल चल रहा था।

गोलोकनाथ दास सामने रिहसल करा रहा था। खूनी, चौकीदार, गुमास्ता—ये जोर-जोर स अपना-अपना सवाद बोले जा रहा था। दासी भाग्यवती की भूमिका मे अतर अच्छी ही लग रही थी। लेवेदेव के आ जाने पर भी उसने रिहसल बन्द नही किया। गोलोक दास के अनुशासन की शिक्षा कडी है। अच्छा हुआ, गोलोक बाबू ने स्वय रिहसल का भार लिया है। लेवेदेव एक आसन खीचकर बैठ गया। चम्पा की भूमिका देखनी है, कैसी उतरती है वह।

जरा बाद ही चम्पा की भूमिका शुरू हुई। उसके बच्चे ने सौदामिनी की गोद मे आश्रय लिया था। चम्पा ने छद्मवेशी सुखमय के सवाद बोलना शुरू किया।

आज जसे एक दूसरी चम्पा है। पिछले दिनवाली उसकी वह जडता कहा गयी? खूब बेधडक स्वर से वह अपने सवाद बोलती गयी। अब भी दो एक जगह गलती उभर आयी थी कितु गोलोक दास के बताते ही उसने उसे सुधार लिया।

रतनमणि की भूमिका मे सौदामिनी थी। अच्छा मयादित भावबोध है उसका। अच्छी व्यक्तित्वसम्पन्न आकृति है। गोलोक दास उसे खूब पसन्द करते हैं। चम्पा के बच्चे को सौदामिनी छोटी हीरामणि की गोद मे रखने गयी। किंतु हीरामणि नाक भौंह सिकाडती हुई बोल उठी, "इस, क्या घिनौना, मैंने जीवन मे दाई का काम किया नहीं" छोट बच्चे का वह सब छूना घिसना, घिन आती है मुझे। बदन से कैसे सडे दूध की गन्ध आती है। डाल दो न मा-बाप-वनी उस औरत की गोद मे!"

हीरामणि ने बातें खूब जोर से ही कही थी। कान मे पडत ही चम्पा न बच्चे का सौदामिनी की गोद से उठा लिया। शात स्वर मे बोली, "हीरादीदी, मैं दाई का ही काम करती हूँ। इतने पुरुषो के साथ घर बसाने पर भी तुम्ह तो एक भी नही हुआ। तुम बच्चे का मम क्या समझोगी?'

हीरामणि उबल पडी। बोली, "फिर बढ चढकर बातें! छलनी कह सूप

स कि तुम्हारे पीछे छेद क्यों ! तुम्ह तो एक भी हुआ नहीं ! अरी अँखफूटी, मैं अगर चाहती तो गण्डा गण्डा बच्चे जन लेती।"

रिहृसल का सिलसिला टूट गया। गोलोक दास धमकी दे उठा, "आह तुम स्त्रिया व सब अनगल बातें यहा मत बोलो। साहब अभी ही निकाल देगा।"

"निकाल द," हीरामणि रुआसी हो बोली, "उस दाई औरत को निकाल द। मुझे बच्चा नहीं हुआ तो तुझे क्या ? मरे उसका बच्चा, लादा होकर मरे।"

चम्पा ने कोई जवाब नहीं दिया। सिफ असीम स्नेह से बच्चे को जकड लिया।

हीरामणि अपने-आप बडबडाने लगी।

क्षणिक व्यवधान के बाद रिहृसल फिर चलने लगा।

पास के कमरे से कुसुम दौडी आयी। उसका सुन्दर मुखडा रक्तिम था। जल्दी-जल्दी निश्वास छोड रही थी। क्रुद्ध स्वर मे वह बोली, "साहब, क्या मैं यहाँ अपमानित होने के लिए आती हू ?'

"क्या क्या हुआ ?" लेबेदेव ने दबे स्वर म जिज्ञासा की।

"तुम्हारा वह मुआ फिरगी मरा हाथ पकडकर खींचाखींची करता है।"

' मिस्टर स्फिनर !"

हाँ वही काठ का भोपू बजानेवाला।' ओठ बिचकाते हुए कुसुम बोली, "फिरगी बोलता क्या है कि मैं कृष्ण हू, तुम राधा हो। चलो साहब, फसला करने चलो।

लेबेदेव का हाथ धरकर खींचते-खींचते कुसुम उसे बगलवाले कमरे म ले आयी।

वाद्य दल म एक दबी खुशी का माहौल था। लेबेदेव को अच्छा लगा। अपने मन म आनन्द न होने पर कैसे वे दूसरे को आनन्दित कर सकेंगे ?

कुसुम न होठ फुलाकर नालिश की, "साहब, पूछिए न ! वह मुआ फिरगी मरा हाथ पकडकर खींचाखाची करता है कि नहीं ?"

'स्पिनर" लेबदेव न नकली गम्भीरता से पूछा "बीबीजी का अभियोग सच है ?

'हाँ सर।'

'क्या तुमने ऐसा किया ?'

"मिस न मेरे गाल पर चपत मारी।"

'क्यों ?'

कुसुम न प्रत्यारोप किया, "वह क्या बोला कि तुम राधा की तरह सुन्दर हो और मैं कृष्ण की तरह काला ?'

स्फिनर बोला, 'मिस ने मुझे मुआ फिरंगी कहा है। मेरा रंग मिट्टी की तरह काला है, इन लोगों का कृष्ण भी तो काला है।"

कुसुम हनहनायी, "खूब किया है, मुआ फिरंगी कहा है। अबकी कहूँगी कठभोंपू बजनिया, वह क्या कहता नहीं कि मैं बेसुरा गाती हूं!"

"सच है सर," स्फिनर ने कहा, "मिस ने बेसुरा गाया, तो मैंने भूल बता दी थी। इसीलिए मिस जो-सो बोलने लगी।"

लेबेदेव ने गम्भीर होकर अपना मत दिया, "तुम दोनों ने अपराध किया है। इसकी एकमात्र सजा होगी कि तुम दोनों एक दूसरे का चुम्बन लो।"

वादकदल 'हो हो' कर हँस पड़ा, स्फिनर सजा भुगतने के लिए आगे बढ़ा। कुसुम ने मुंह फिराकर स्वर-भंकार दी, "इस्, सबके सामने एक मुए फिरंगी का चुम्बन मुझे सहना होगा? मर गयी! तोबा, तोबा! यह क्या अत्याचार है!"

स्फिनर बोला, "सर, अदालत का यह अपमान है! मिस को गिरफ्तार करें।"

सहसा कुसुम लेबेदेव के गले से झूल गयी बोली "गिरफ्तार तो मैं होना चाहती हूँ लेकिन साहब की नेक नजर में तो सिर्फ गुलाबसुन्दरी ही है।"

वादक लोग फिर 'हो हो' करके हँस पड़े। लेबेदेव जैसे कुछ अकबका गया।

गर्दन पर से कुसुम का हाथ हटाते हुए लेबेदेव ने कहा, "मैं थियेटर का अधिकारी हूँ। अगर सुन्दरियां अपने अपने कार्य करें तो मेरी दृष्टि में वे सभी समान हैं।

इसी एक बात से वादकगण जैसे संयत हो उठे। स्फिनर तनिक लज्जित होकर बोला, "मिस, बहुत सा समय नष्ट हो चुका है। आओ, हम लोग 'विद्या सुंदर' के तीसरे गाने का रिहर्सल करें।"

कुसुम गाने लगी।

गोलोक दास परामर्श करने आया। नाटक के द्वितीय अंक के शेष सारे ही दृश्य अंग्रेजी भाषा में हैं। उन्हें किनके द्वारा कहलाया जाय? गोलोक ने नीलाम्बर बंद्योपाध्याय के नाम की विशेष रूप से सिफारिश की।

नीलाम्बर साहब बनना चाहता है। उसने अपने नाम तक को साहबी ढंग का बना डाला है। नीलुम्बुर बैण्डो। ब्राह्मण पुत्र होने पर भी वह 'लाल पानी' और गोमांस खा पी चुका है। पादरियों की संगत करके उसने अंग्रेजी भी कुछ मांज ली है। उसके पास दो चार जोड़े कोट पण्ट और शर्ट हैं। साहबी दूकान के जूते और मोजे भी फैशन के मुताबिक हैं, उन्हें पहने ही वह अपना अधिकांश

समय गुजारता है। ढेंकी के बारे में अंग्रेजी की बात चलने पर वह यह नहीं कहता, 'टू मेन धापुस् धपुस, वन मन भनता है।' वह ढेंकी का प्रतिशब्द जानता है। नीलाम्बर ही अंग्रेजी बोल सकता है।

नीलाम्बर ने सारे वाक्य कण्ठस्थ कर डाले हैं। उसका अंग्रेजी उच्चारण शुद्ध नहीं। स्फिनर उसके उच्चारण को घिस माज देगा। कुछ भी हो, हास्य नाटक है, उच्चारण में कुछ त्रुटियाँ रहने पर अंग्रेज दर्शकों को मजा आयेगा।

आज रात का रिहर्सल तो पूरा हो गया। अभिनेता अभिनेत्री और वादकों के दल में जिन्हें घर लौटना था वे लौट गये। केवल गोलोक दास अभी तक गये नहीं। एकान्त होने पर लेबेदेव ने गोलोक के सामने एक नया प्रस्ताव रखा।

'देखो गुरु महाराज मैंने बड़े नाटक को छोटा कर दिया है। पहली रात ही इतने बड़े नाटक का प्रस्तुत करना कठिन होगा। अगर छोटा नाटक जम गया तो पूरा नाटक खेला जायेगा।'

गोलोक ने कुछ हताश हो कहा, "क्या, लगता है साहब को भरोसा नहीं ?"

"ठीक, वही बात है।"

'तो क्या बड़े नाटक का रिहर्सल बन्द रहेगा ?"

"नहीं नहीं, रिहर्सल चले। इतने लोगों को सिखाने में समय लगेगा। एक बात है गुरु महाराज इस बार के लिए तुम्हारी सलाह मान ली। प्रथम एकांकी पूरा-का पूरा बँगला भाषा में ही होगा। क्यों, खुश तो हुए ?"

'बुरे से अच्छा।' गोलोक कुछ सन्तुष्ट हो बोला।

'हाँ, एक बात याद आयी" लेबेदेव ने कहा "जानते हो, कल रात मिस्टर मेरिसन ने तुम्हारी नातिनी के घर पर हमला किया था।"

"चम्पा ने पूरी घटना मुझे बतायी है।"

"मेरिसन धमकी दे गया है कि बच्चे को उठा ले जायेगा।"

"सुना है।"

"एक व्यवस्था करने से अच्छा रहेगा। मैंने उस आउट हाउस में रह जाने के लिए तुम्हारी नातिनी से कहा था, वह राजी नहीं हुई।"

"जानता हूँ।

"इसी बीच उसने तुम्हें सूचना दे दी ?

"चम्पा मुझसे कुछ भी नहीं छिपाती।"

"आह ! उसकी रक्षा की क्या व्यवस्था की ?"

"स्फिनर उसके घर के पास रहता है। उसने कहा है कि वह देखता-सुनता

रहेगा।"

"हू।"

एक अव्यक्त कुण्ठा लेबेदेव के मन को कुरेदने लगी। चम्पा ने उसके आश्रय मे आना नही चाहा। लेकिन उसी के कमचारी स्पिनर की देखरेख स्वीकार कर ली। लगता है लेबेदेव के मन की उद्विग्नता को गोलोक दास ने भाँप लिया। वह अपनी ओर से ही बोला, "मेरी नतिनी बहुत समझदार औरत है। उसने कहा, साहब के घर मे चले आन पर लोग तरह-तरह की बातें करेंगे। उससे साहब के नाम को क्षति पहुचेगी।"

'तुम्हारी नतिनी बहुत अच्छी है, बहुत अच्छी।" लेबेदेव न अस्फुट स्वर मे कहा। उसके मन मे तो भी एक काँटा रह ही गया। वह ईस्टइण्डियन चम्पा की देखभाल करगा!

रुपये की समस्या ही लेबेदेव के सामने प्रबल हो उठी। सुना जाता है कि कलकत्ता थियेटर का निमाण करने मे लगभग एक लाख रुपया लग गया था। साहबो के चन्दे से रुपया जमा हुआ था। यहाँ तक कि गवनर जनरल तक ने चन्दा दिया था। लेकिन लेबदेव ने बिल्कुल अपने बूते पर बँगला थियेटर खडा किया है। इसके लिए उसकी दुश्चिन्ता कम नही। फिर भी उस पर जैसे धुन सवार है।

कलकत्ता थियेटर मे प्रवेश का मूल्य है—पिट एव बाक्स के लिए एक सोने की मुहर अर्थात सोलह रुपये और गैलरी के लिए आठ रुपये। लेबेदव अपने थियेटर के प्रवेश मूल्य को आधा कर देगा। इतने कम मूल्य पर अच्छे मनोरजन का उपलब्ध होना इस कलकत्ता शहर म मुश्किल है। कलकत्ता थियेटर की भाँति ही बँगला थियेटर मे भी लेबदेव झाड फानूसवाले लैम्पो की भरमार कर देगा। कलकत्ता थियेटर प्रहसन के साथ-साथ गीतो का आयोजन करता है, वेस्टमिन्स्टर ब्रिज, तलवारबाजी की स्पर्धा आदि द्वारा दशकों को चमत्कृत करता है। लबेदेव भी हास्य नाटिका के अलावा इण्डियन सेनिरेड सुनायेगा खेल के बीच बीच म जादूगरी-लफ्फाजी दिखायेगा। लेबेदेव किसी भी मामले मे कलकत्ता थियेटर से पीछे न रहगा। लेकिन एक जगह वह मात खा जायेगा। वह है दृश्यपट के अकन का मामला। इस मामले मे कुछ भी लेबेदेव के मन के मुताबिक नही हो पाया था। जोसफ बैटल को फोड ले आ पाने म वह बिल्कुल ही असमथ रहा। इस सेट्लमेट मे बटल् जैसा दृश्यपटशिल्पी मिलना कठिन

ह्वीटफोड का बना क्लॅरेट, पुरानी लाल पोट और शेरी—सबकुछ को गिनाना असम्भव। पहले सुरापान, फिर भोजन और खुली हँसी मजाक, अजीबो गरीब। जगन्नाथ ने आयोजन मे कोई कसर नही रखी। इसके बीच बीच मे हुक्कावरदार लोग सुगंधित भिलसा-आल्यािगादी तम्बाकू दिये जा रहे थे।

लेकिन मदिरा के कई पात्र खाली करने के बाद स्थूलकाया रमणी मिसेज लूसी मेरिसन खूब लाल हो उठी। नशे स टल्मलाते नन। लेवदेव के साथ परिचय होत ही मिसेज मेरिसन बोली, "ग्राइस्ट! तुम्ही मिस्टर लेबेदेव हो ?"

"हाँ, मैं ही हूँ वह विदेशी वादक, मैंडम!" लेवेदेव न हुक्के की नली निकालते हुए कहा।

"तुम स्वीट डार्लिंग हो! सुनती हू तुम्ही न उस काली दाई को मेरिसन के चगुल से छुडाया है।"

उसके बाद लेबेदेव के हुक्के की नली को हाथ से खीचते हुए मेरिसन की गहिणी बोली, "दो जरा, तुम्हारे निज के हुक्के मे कुछ दम मार लू। तुम मेरे बहुत प्रिय हो।"

कलकत्ते के अंग्रेज समाज मे एक महिला का परपुरुष के हुक्के से दम खीचना एक बडी आपत्तिजनक बात थी।

लेबेदेव ने कहा, "मैंडम, फाल्तू नली तो मैं लाया नही।"

"उससे क्या होता है ?" मिसेज मेरिसन बोली, "तुम्हारी नली से तम्बाकू का धुआ खीचने मे मुझे बडा आनन्द आयेगा।"

लूसी मेरिसन ने दो चार सुखद दम मारे।

"तम्बाकू कैसी लगी ?" लेबेदेव ने पूछा।

"अच्छी, मगर खूब तेज।" मिसेज मेरिसन बोली।

"मैं जरा तेज तम्बाकू पीना पसन्द करता हू। खाटी भिल्सा तम्बाकू सत्तर रुपये मन, मेमस ली एण्ड केनेडी की दूकान से खरीदी हुई।'

मक्नर की आँखें मदिरा के प्रभाव से खूब लाल हो उठी थी। उसने कहा, 'हलो, गेरासिम, तुम्हारी वह चोर नायिका कैसी शय्यासगिनी है ? म उसके साथ एक रात सोना चाहता हू।'

लेबेदेव ने प्रतिवाद किया, "एक महिला के सामने ये सब बातें कहते तुम्हारी जबान मे हक्लाहट नही होती ?"

'बाइ जोव," मैक्नर बाला, "मजा लेत समय तुम्हारी जबान नही अटकती तो मेरी क्यो अटके ? और फिर इस सुन्दरी महिला ने तो मेरे मधुर सम्भाषण का आनन्द ही लिया है।'

है। लेबेदेव न वटल् के पास फिर से आदमी भेजा था। यहा तक कि थियेटर का भागीदार भी बना लेना चाहा था, लेकिन बैटल तब भी नही पसीजा।

बैटल को अपने दल में खीच ले आने के लिए लेबेदेव को एक चाल सूझी। जगन्नाथ गागुलि के यहा दुगापूजा का उत्सव है। मकान-भाड़े और ठीकेदारी के काम से जगन्नाथ न पैसे खूब कमा लिय थे। उभरता हुआ धनी मानी व्यक्ति। इसीलिए इस बार वह खूब धूमधाम से दुगा पूजनोत्सव मना रहा था। अवश्य ही देव भवन और मल्लिक-भवन के दुर्गापूजा समारोह के सामने उसकी क्या बिसात थी! फिर भी जगन्नाथ के दुर्गा पूजनोत्सव की अच्छी-खासी धूम रही। पूजा की ऊँची भाकी भाड फानूसवाले लम्पो से बरामदा दिन की तरह आलोकित लग रहा था। आम्रपल्लव, कदली स्तम्भ, नारिकेल, धूप-गन्ध—किसी भी बात म कमी नही थी। ढाक ढाल, शहनाई, झाझ घण्ट का शोरगुल ऊंचाई पर था। लोगा की भीड। जगन्नाथ ने इस बार साहबा-अफ्सरो को आमन्त्रित किया था। उनके लिए लुभावने खाद्य पदाथ और मधु पान की व्यवस्था थी। बाईजी के नृत्य का आयोजन था। जगन्नाथ की ऐसी क्षमता नही थी कि खूब प्रसिद्ध बाइया का मुजरा कराता, वे सब तो पर्व-त्योहारो के अवसर पर देवबाबू और मल्लिकबाबू के यहाँ के लिए रिजर्व्ड रहती। जगन्नाथ ने अन्य कुछ बाइया क साथ साथ कुसुम को बुलाया। वह विद्यासुन्दर गान गायेगी और बहु-नाच करेगी। यह भी एक नवीनता। अवश्य ही जगन्नाथ ने लेबेदेव को आमन्त्रित किया था। आमन्त्रिता मे अनेक परिचित साहब मेम थे। एटर्नी डान मैकनर, बैरिस्टर जान शा और उसकी हिन्दुस्तानी रखल, मिस्टर और मिसेज मेरिसन —य सब लाग भी आय थे। और आय थे जोसफ बैटल और टामस रावथ। जगन्नाथ न कहा था कि उन्हे बुलान का खास मतलब है। मदिरा-जाम के प्रभाव म आकर य लोग यदि लबदव के साथ आपसी मेल मिलाप कर लें तो बहुत ही अच्छा हो। जल म रहकर मगर से बैर करन स चलेगा नहीं। अंग्रेज लोग मेटन्मट के प्रभु हैं। लेबेदेव हम देश का आदमी। प्रभु जाति के साथ प्रतिस्पधा कर पाना मुश्किल है। उसमे अच्छा यह कि कुछ तय निपटारा हा जाय। मदिरा की मस्ती और बाइया की मोहिनी माया इसे सहज कर दगी। किन्तु सहज बिल्कुल ही हुआ नहीं।

बात यह हुई। सन्ध्या आरती के बाद जगन्नाथ के हॉल म साहब-मेम लोगा का जमाव हुआ। यहाँ भाड फानूसवाले लम्प का प्रकाश था, मेज पर भाँति भाँति के देशी विदेशी खाद्य पदाथ—इलायची-नमकी भेटकी आदि मछलियाँ भुना मास बैरी-पोलाव, पावरोटी, लन्दन की विशिष्ट मदिरा, ब्राउन-एण्ड-

ह्वीटफोड का बना क्लॉरेट, पुरानी लाल पोट और शेरी—सबकुछ को गिनाना असम्भव। पहले सुरापान, फिर भोजन और खुली हँसी मजाक, अजीबो गरीब। जगन्नाथ ने आयोजन मे कोई कसर नही रखी। इसके बीच बीच मे हुक्काबरदार लोग सुगंधित भिलसा आलियाबादी तम्बाकू दिये जा रहे थे।

लेकिन मदिरा के कई पात्र खाली करने के बाद रणकाया रमणी मिसेज लूसी मेरिसन खूब लाल हो उठी। नशे से ढलमलाते नैन। लेबदेव के साथ परिचय होते ही मिसेज मेरिसन बोली, "आइरट! तुम्ही मिस्टर लेबेदेव हो?"

"हाँ, मैं ही हू वह विदेशी वादक, मैडम!" लेबेदेव ने हुक्के की नली निकालते हुए कहा।

"तुम स्वीट डार्लिंग हो! सुनती हू तुम्ही ने उस काली दाई को मेरिसन के चंगुल से छुड़ाया है।"

उसके बाद लेबेदेव के हुक्के की नली को हाथ से खीचते हुए मेरिसन की गृहिणी बोली, "दो जरा, तुम्हारे निज के हुक्के मे कुछ दम मार लू। तुम मेरे बहुत प्रिय हो।"

कलकत्ते के अंग्रेज समाज मे एक महिला का परपुरुष के हुक्के से दम खीचना एक बडी आपत्तिजनक बात थी।

लेबदेव ने कहा, "मैडम, फाल्तू नली तो मैं लाया नही।"

"उससे क्या होता है?" मिसेज मेरिसन बोली, "तुम्हारी नली से तम्बाकू का धुआ खीचने मे मुझे बडा आनन्द आयेगा।'

लूसी मेरिसन ने दो चार सुखद दम मारे।

"तम्बाकू कैसी लगी?" लेबदेव ने पूछा।

"अच्छी, मगर खूब तेज।" मिसेज मेरिसन बोली।

"मैं जरा तेज तम्बाकू पीना पसन्द करता हू। खाटी भिलसा तम्बाकू, सत्तर रुपये मन, मेसस ली एण्ड केनेडी की दूकान से खरीदी हुई।"

मैकनर की आँखें मदिरा के प्रभाव से खूब लाल हो उठी थी। उसने कहा, 'हलो, गरासिम, तुम्हारी वह चोर नायिका कैसी शय्यासगिनी है? मै उसके साथ एक रात सोना चाहता हू।"

लेबेदेव ने प्रतिवाद किया, "एक महिला के सामने ये सब बातें कहते तुम्हारी जबान मे हकलाहट नही होती?"

"बाइ जोव" मैकनर बोला, "मजा लेते समय तुम्हारी जबान नही अटकती तो मेरी क्यो अटके? और फिर इस सुन्दरी महिला ने तो मेरे मधुर सम्भाषण का आनन्द ही लिया है।"

ह्वाटफोड का बना क्लॅरेट, पुरानी लाल पोट और शेरी—सबकुछ को गिनाना असम्भव। पहले सुरापान, फिर भोजन और खुली हँसी-मजाक, अजीबो गरीब। जगन्नाथ ने आयोजन में कोई कसर नहीं रखी। इसके बीच-बीच में हुक्काबरदार लोग सुगंधित भिलसा-आलियाबादी तम्बाकू दिये जा रहे थे।

लेकिन मदिरा के कई पात्र खाली करने के बाद रुग्णकाया रमणी मिसेज लूसी मेरिसन खूब लाल हो उठी। नशे से ढलमलाते नैन। लेबेदेव के साथ परिचय होते ही मिसेज मेरिसन बोली, "ग्राइस्ट! तुम्हीं मिस्टर लेबेदेव हो?"

"हाँ, मैं ही हूँ वह विदेशी वादक, मैडम!" लेबेदेव ने हुक्के की नली निकालते हुए कहा।

"तुम स्वीट डार्लिंग हो! सुनती हूं तुम्हीं ने उस काली दाई को मेरिसन के चंगुल से छुड़ाया है।"

उसके बाद लेबेदेव के हुक्के की नली को हाथ से खींचते हुए मेरिसन की गृहिणी बोली, "दो जरा, तुम्हारे निज के हुक्के में कुछ दम मार लूं। तुम मेरे बहुत प्रिय हो।"

कलकत्ते के अंग्रेज समाज में एक महिला का परपुरुष के हुक्के से दम खींचना एक बड़ी आपत्तिजनक बात थी।

लेबेदेव ने कहा, "मैडम, फालतू नली तो मैं लाया नहीं।"

"उससे क्या होता है?" मिसेज मेरिसन बोली, "तुम्हारी नली में तम्बाकू का धुआं खींचने में मुझे बड़ा आनन्द आयेगा।"

लूसी मेरिसन ने दो चार सुखद दम मारे।

"तम्बाकू कैसी लगी?" लेबेदेव ने पूछा।

"अच्छी, मगर खूब तेज।" मिसेज मेरिसन बोली।

"मैं जरा तेज तम्बाकू पीना पसन्द करता हूँ। खांटी भिलसा तम्बाकू, सत्तर रुपये मन, मेसस ली एण्ड केनेडी की दूकान से खरीदी हुई।"

मैकनर की आँखें मदिरा के प्रभाव से खूब लाल हो उठी थी। उसने कहा, 'हलो, गरासिम, तुम्हारी वह चोर नायिका कैसी शय्यासंगिनी है? मैं उसके साथ एक रात सोना चाहता हूं।"

लेबेदेव ने प्रतिवाद किया, "एक महिला के सामने ये सब बातें कहते तुम्हारी जबान में हकलाहट नहीं होती?"

"बाइ जोव" मैकनर बोला, "मजा लेते समय तुम्हारी जबान नहीं अटकती तो मेरी क्यों अटके? और फिर इस सुन्दरी महिला ने तो मेरे मधुर सम्भाषण का आनन्द ही लिया है।"

है। लवेदेव न वटल के पास फिर ग आदमी भजा था। यहाँ तर कि मिस्टर का भागीदार भी बना लना चाहा था, लकिन बैंटल तब भी नहीं पसीजा।

वटल को अपन दल मे खीच ले आन क लिए लेवन्व का एक चाल सूझी। जगन्नाथ गागुलि क यहाँ दुर्गापूजा का उत्सव है। मकान भाडे और ठीकेदारी के काम स जगन्नाथ न पस खूब कमा लिय थ। उभरता हुआ धनी मानी व्यक्ति। इसीलिए इस बार वह खूब धूमधाम स दुर्गा पूजनोत्सव मना रहा था। अवश्य ही देव भवन और मल्लिक-भवन के दुर्गापूजा-समारोह के सामन उसकी क्या बिसात थी। फिर भी जगन्नाथ क दुर्गा-पूजनोत्सव की अच्छी-खासी धूम रही। पूजा की ऊँची झाँकी झाड फानूसवाल लम्पा स बरामदा दिन की तरह आलो कित लग रहा था। आम्रपल्लव कदली-स्तम्भ नारिकल, धूप-गन्ध—किसी भी बात म कमी नहीं थी। ढाक-ढोल शहनाई, झाँझ-घण्टे का शोरगुल ऊचाई पर था। लोगो की भीड। जगन्नाथ न इस बार साहबो-अफसरा को आमन्त्रित किया था। उनक लिए लुभावने खाद्य पदाथ और मधु-पान की व्यवस्था थी। बाईजी के नत्य का आयोजन था। जगन्नाथ की ऐसी क्षमता नहीं थी कि खूब प्रसिद्ध बाइया का मुजरा कराता क्‍ सब तो पव-त्योहारो के अवसर पर देवबाबू और मल्लिकबाबू के यहा के लिए रिजव्ड रहती। जगन्नाथ ने अन्य कुछ बाइया क साथ साथ कुसुम को बुलाया। वह विद्यासुन्दर-गान गायेगी और बहू-नाच करेगी। यह भी एक नवीनता। अवश्य ही जगन्नाथ ने लेवदेव को आमन्त्रित किया था। आमन्त्रितो म अनक परिचित साहब मेम थे। एटर्नी डान मक्नर, बरिस्टर जान शा और उसकी हिन्दुस्तानी रखल मिस्टर और मिसेज मेरिसन —ये सब लाग भी आय थ। और आय थे जोसफ बैंटल और टामस रावथ। जगन्नाथ ने कहा था कि उन्हे बुलाने का खास मतलब है। मदिरा-जाम क प्रभाव म आकर य लोग यदि लेबेदेव के साथ आपसी मेल मिलाप कर लें तो बहुत ही अच्छा हो। जल म रहकर मगर से बर करन से चलेगा नही। अग्रेज लोग सटलमट के प्रभु हैं। लेबेदेव रूस देश का आदमी। प्रभु जाति क साथ प्रति स्पर्धा कर पाना मुश्किल है। उससे अच्छा यह कि कुछ तय निपटारा हो जाय मदिरा की मस्ती और बाइया की मोहिनी माया इसे सहज कर दगी। किन्तु सहज बिल्कुल ही हुआ नही।

बात यह हुई। सन्ध्या आरती के बाद जगन्नाथ के हॉल मे साहब मम लोगो का जमाव हुआ। वहा भाड फानूसवाले लम्प का प्रकाश था, मेज पर भाति भाँति के देशी विदेशी खाद्य पदाथ—इल्सा तपसी भेटकी आदि मछलियाँ, भुना मास, कॅरी पोलाव पावरोटी, लन्दन की विशिष्ट मदिरा ब्राउन एण्ड-

ह्वीटफोड का बना क्लॅरेट, पुरानी लाल पोट और शेरी—सबकुछ को गिनाना असम्भव। पहले सुरापान, फिर भोजन और खुली हँसी मजाक, अजीबो गरीब। जगनाथ ने आयोजन म कोई कसर नही रखी। इसके बीच-बीच मे हुक्कावरदार लोग सुगंधित भिलसा-आलियाबादी तम्बाकू दिये जा रहे थे।

लेकिन मदिरा के कई पात्र खाली करने के बाद रक्तकाया रमणी मिसेज लूसी मेरिसन खूब लाल हो उठी। नशे से टलमलाते नैन। लेबेदेव के साथ परिचय होते ही मिसेज मेरिसन बोली, "क्राइस्ट! तुम्ही मिस्टर लेबेदेव हो?"

"हा, मैं ही हू वह विदेशी वादक, मैंडम!" लेबेदेव ने हुक्के की नली निकालते हुए कहा।

"तुम स्वीट डार्लिंग हो! सुनती हूँ तुम्ही ने उस काली दाई को मेरिसन के चगुल से छुडाया है।"

उसके बाद लेबदेव के हुक्के की नली को हाथ से खीचते हुए मेरिसन की गृहिणी बोली, "दो जरा, तुम्हारे निज के हुक्के मे कुछ दम मार लू। तुम मेरे बहुत प्रिय हो।"

कलकत्ते के अंग्रेज समाज मे एक महिला का परपुरुष के हुक्के से दम खीचना एक बडी आपत्तिजनक बात थी।

लेबेदेव ने कहा, "मैंडम, फालतू नली तो मैं लाया नही।"

"उससे क्या होता है?" मिसेज मेरिसन बोली, "तुम्हारी नली से तम्बाकू का धुआ खीचने मे मुझे बडा आनन्द आयेगा।"

लूसी मेरिसन ने दो चार सुखद दम मारे।

"तम्बाकू कैसी लगी?" लेबेदेव ने पूछा।

"अच्छी, मगर खूब तेज।" मिसेज मेरिसन बोली।

"मैं जरा तेज तम्बाकू पीना पसन्द करता हूँ। खाटी भिलसा तम्बाकू, सत्तर रुपये मन, मेसर्स ली एण्ड केनेडी की दूकान से खरीदी हुई।"

मैकनर की आँखें मदिरा के प्रभाव से खूब लाल हो उठी थी। उसने कहा, 'हलो, गेरासिम, तुम्हारी वह चोर नायिका कसी शय्यासगिनी है? मैं उसके साथ एक रात सोना चाहता हूँ।'

लेबेदेव ने प्रतिवाद किया, "एक महिला के सामने ये सब बातें कहते तुम्हारी जबान मे हकलाहट नही होती?"

"बाइ जोव!" मैकनर बोला, "मजा लेते समय तुम्हारी जबान नही अटकती तो मेरी क्यो अटके? और फिर इस सुन्दरी महिला ने तो मेरे मधुर सम्भाषण का आनन्द ही लिया है।"

"यू आर ए नॉटी ब्वाय, मिस्टर मैक्नर !" मिसेज मेरिसन ने कहा और मुखनत्री से मकनर की गोल ग्रीवा पर हल्का आघात किया।

"यू आर ए क्लेवर गर्ल, मिसेज मेरिसन" मैक्नर बोला, 'मिथ्या चोरी का आरोप लगाकर कैसे तुमने अपने पति की रखैल को सजा दिलवायी ?"

मेरिसन हाथ मे मदिरापात्र लिये आगे बढ आया, उसे देखकर मकनर चुपचाप खिसक गया। मेरिसन नशे के झाक मे भी उस घूसवाली बात को भूला नही था। डगमगाते हुए आगे आकर उसने लेबेदेव की कालर को कसकर पकड लिया। बोझिल स्वर म बोला, यू ब्लडी रशियन बेयर, मेरी चहेती को हथिया लिया और अब मेरी वाइफ को भी हथियाना चाहता है ?"

"बाब डियर" लूसी मरिसन न पति को अपने पास खीच लिया। बोली, "मै तुम्हे छोड और किसी को नही जानती।"

मेरिसन ने लडखडाते स्वर म लेबेदेव से करुण अनुनय किया "यू डार्लिंग रशियन बेयर तुम मेरी वाइफ को ले लो, मेरी चहेती को लौटा दो।"

नशे के झोक मे मरिसन दहाड मारकर रोन लगा। उसकी पत्नी रूमाल से उसकी आख पोछने लगी।

लेबदव इस दाम्पत्य परिवेश से परे खिसक गया। उधर शिल्पी जोसेफ बैंटल् ने बरिस्टर जान शा की हिन्दुस्तानी रखैल के साथ बातचीत जमा ली है। लेबेदेव धीमे कदमो से उसी दल मे जा मिला।

बैंटल कह रहा था, 'मडम शा, बहुत दिनो से तुम्हारा एक पोर्ट्रेट आकन की इच्छा है।'

पान के डिब्बे से पान का बीडा निकालकर मुह म रखते हुए जान शा की हिन्दुस्तानी रखैल मिफ मीठा मीठा हसी।

बटल बोला "तुम एक भीगी साडी पहनोगी। तुम्हारे शरीर से वह लिपटी रहेगी। वह चित्र मेरा मास्टरपीस होगा।'

जान शॉ ने बाधा डालते हुए कहा, "उस आनन्द से तुम वचित रहोगे, अगर मेरे साथ द्वन्द्व-युद्ध के लिए नही राजी होन। आ जा मेरी जान !

कमर म हाथ डालकर जान शा अपनी रखल को बैंटल् के अवाछित सान्निध्य से दूर कहा और खीच ले गया।

बैंटल एक भरपूर घूट मदिरा गले म उतारते हुए बोला, 'नाइस्ट, इस आदमी का कोई तमीज नही।'

सुयोग समझकर लेबेदेव कुछ अन्तरग हो गया, बोला, 'ठीक कहा तुमने, इस आदमी को सचमुच तमीज नहीं। तुम्हारे जैसा इतना बडा कलाकार यदि

उस महिला का चित्र आँके तो यह चिरकाल के लिए विख्यात हो उठे।"

सन्तोष और आनन्द से बैंटल् पिघला, बोला, "मुझे सद्यस्नाता रूप गर्ल का चित्र नहीं आँकने दिया। सारे शरीर से भीगा वस्त्र लिपटे रहने पर वह नग्नता में भी अधिक आकर्षक होगी। सुनता हूँ तुम्हारे थियेटर-दल में ऐसी अनेक रमणियाँ हैं जिन्हें देखने पर दृष्टि हटायी नहीं जा सकती, या कि जैसा उनका चिकना चम है वैसा ही उनका परिपुष्ट यौवन है। क्या यह बात सच है?"

लेबेदेव ने अस्वीकार नहीं किया, यद्यपि यह प्रसंग उसे पसन्द नहीं।

"बाइ जोव,' बैंटल् ने कहा, "अब तो एक दिन तुम्हारे घर पर धावा मारना होगा।'

"तीन नम्बर वस्टन लेन," लेबेदेव बोला, "तुम्हें तो कितनी ही बार बुला भेजा, तुम ही जो आना नहीं चाहते।"

'आऊँगा, एक दिन छिपकर आऊँगा।' बैंटल् ने कहा, "जानते तो हो ही कि रावथ के जानने पर '

कहते-न-कहते जाने कहाँ से रावथ आ धमका। लगता है, दूर से प्रतिद्वन्द्वी को देख रावथ को सन्देह हुआ था। मदिरापात्र हाथ में लिये आगे आकर वह कठोर स्वर में बोला, "तुम लोग किस बात का षड्यन्त्र कर रहे हो?"

बैंटल् बोला, "और किस बात का? हम नारी-देह के सौन्दर्य का विवेचन कर रहे हैं।"

'नहीं, वह रूसी एडवेंचेरर तुम्हारा समवयसी नहीं हो सकता! उससे हमारा थियेटर बदनाम हो जायगा। भूल मत जाओ कि मैं तुम्हें तनख्वाह देता हूँ!" खूब तेज स्वर में रावथ बोला।

'मैं तुम्हें और भी ज्यादा तनख्वाह दूँगा।" दृढ़ स्वर में लेबेदेव ने कहा।

"यू ब्लडी स्वाइन," रावथ गरज उठा, "तू मेरे शिल्पी को फोड़ ले जाना चाहता है? तो यह ले।'

रावथ ने लेबेदेव के मुँह को लक्ष्य कर मदिरा का गिलास दे मारा। नशा और उत्तेजना के चलते उसका हाथ काँप रहा था। इसलिए लक्ष्य चूक गया। मदिरा का गिलास झनझनाकर टूट गया। लेकिन आगत अतिथियों में से किसी ने भ्रूक्षेप तक नहीं किया। इस तरह की बातें होती ही रहती हैं। जगन्नाथ के बेयरा दल ने काँच के टुकड़े चुनकर उठा लिये।

बात अधिक दूर तक नहीं गयी। सारंगी और तबला, नर्तकी की नूपुर-ध्वनि ने उन्हें आकृष्ट किया। बाई का नाच शुरू हुआ। जीनतबाई का नाच।

घाघरा पहनकर घूँघट डाले बाई नाच रही है। मुसलमान बाईजी, मुसलमान वादकगण। कलकत्ता शहर के बाबू लोगों में दुर्गापूजनोत्सव के वे भी अंग हैं।

बाई-नाच में लेबेदेव की रुचि नहीं है, वह सिर्फ सोचता है कि कुसुम कब वह-नाच नाचेगी। बैटल् के मन पर एक बार नशा सवार होता है। कलाकार आदमी, जरा सनकी होता है। काश कुसुम एक बार उसकी आँखों की पकड़ में आ जाय। लेबेदेव दूर से ही बटल पर निगाह जमाये रहता है। इधर जगन्नाथ गांगुली का नशा गहरा गया था। उसने भी बाई के साथ साथ नाचना शुरू किया। जगन्नाथ के माथे पर मदिरा का पात्र। दोनों हाथों में क्लेरेट की बोतलें। वह अदा के साथ भार-सन्तुलन रखते हुए बाई के साथ-साथ नाच रहा था। बाबू ठीक विदूषक की तरह लगता था। साहब मेम लोग मजा लेते हुए बहनाशा हँस जा रहे थे।

बाई-नाच खत्म हो गया। अबकी बहू नाच। ढोल मजीरा और शहनाई के साथ वह नाचेगी। कुसुम ने नाचघर में प्रवेश किया। आज वह पहचान में नहीं आती। उसने पीली किनारी की लाल साड़ी पहन रखी है। साड़ी की झलमलाहट में उसके शरीर का प्रत्येक अंग स्पष्ट हो उठा है। बटल ने कहा था नग्नता से भी अधिक आकर्षक। यह भी वही। कुसुम की आँखों में काजल, गालों पर आल्ता, ओठों पर पान की लाली गले में जूही के फूलों की माला है। कुसुम घूँघट डाले हुए है। कमर में कपड़ा खोंसे हुए। घुम घुमकर वह नाच नाचती है और विद्यासुन्दर गान गाती है। नृत्य की लय पर घूँघट गिर पड़ता है, छाती का कपड़ा हट जाता है। साहबों की आँखों में लालसा जाग उठती है। लेबेदेव उसी बीच बैटल् के पास आ बैठा। कुसुम देख पायी लेबेदेव को, आँखों में कटाक्ष। लेकिन लेबेदेव उस कटाक्ष के भुलावे में आनेवाला पात्र नहीं। बैटल् उठकर इस बार लेबेदेव के पास खड़ा हुआ। लेबेदेव ने धीमे धीमे कहा, "वह नाचनेवाली मेरे थियेटर की प्रमुख गायिका है।" मदिरा से रक्तिम बैटल की दृष्टि लोलुप हो उठी। कुसुम की दृष्टि बटल् की ओर गयी। दोनों ही की आँखों में चुम्बक का आकर्षण। कुसुम ने दनादन कटाक्षों के तीर मारे जोसफ बटल पर, शिल्पी चंचल हो उठा। लालसा से उसकी देह थर थर काँपने लगी। कुसुम नाचती-नाचती आगे आयी शिल्पी की तरफ, अपने गले से जुही की माला उतारकर उसने शिल्पी के गले में डाल दी। शिल्पी ने लपककर कुसुम को कसकर पकड़ लिया। कौन जाने उस मजा स्थल में ही एक केलि क्रीडाकाण्ड घटित हो जाता किन्तु जगन्नाथ ने चाहे इच्छा से हो या नशे के झोंक में, वाता-वरण को हल्का कर दिया। वह उसी क्षण लाल वस्त्रवाली कुसुम के पैरों के

पास घुटने टवकर बैठ गया और चीत्कार कर उठा, "मा माँ, अरी मा, तुम साक्षात महिषमर्दिनी दुर्गा हो, मैं तुम्हारा महिष हूँ, मेरा वध करो माँ, मेरा वध करो!"

जगन्नाथ के इस आकस्मिक कौतुक से वटल की लालसा का ज्वार उतर गया। हँसी और ठहाका से नाचघर मुखरित हो उठा।

पाँच
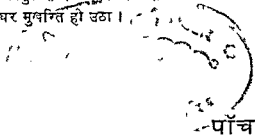
पास के हॉल म रिहर्सल चल रहा था। उसी बीच एक बार नीलाम्बर बैण्डो ने लेबेदेव के सामने शिकायत की। द्वितीय अक के अंतिम दृश्य को अग्रेजी म प्रस्तुत करना होगा, किन्तु बहुतेरे लोग अच्छी तरह अग्रेजी नही बोल पाते हैं। नीलाम्बर वण्डो का अहकार है कि वह अच्छी अग्रेजी बोलता है। गोलोक दास से नीलाम्बर ने यही बात कही, तो वह बोला कि उसके विचार म नाटक से अग्रेजी कथोपकथन को छोड देना ही उचित है। गोलोक के विचारो का लेबेदेव को पता है। गालोक आरम्भ से ही बेसुरा अलाप रहा है। नाटक की भाषा बँगला हो। बीच बीच मे अग्रेजी या मूर भाषा की छौक रह। इसलिए कहता है कि एक दृश्य अग्रेजी भाषा म हो, यह उसे बिल्कुल पसन्द नही है। लेबेदेव ने सिर्फ यूरोपीय लोगो का रुख देखकर व्यवसाय की खातिर अग्रेजी को रख छोडा है। गोलोक ने साफ साफ ही कहा था—"साहब, दो नावा पर पैर रखकर चलना ठीक नही होगा। तुम बँगला नाटक खेलना चाहते हो तो बँगला मे ही खेलो। और अग्रेजी चाहते हो तो अग्रेजी नाटक मे ही हाथ डालो।' किन्तु लेबेदेव न गोलोक की उस सलाह को सक्षिप्त नाटिका के समय मान लेने पर भी पूरे नाटक के समय हँसकर उडा दिया है। क्योकि थियेटर के पीछे उसे काफी रुपये लगाने पडे है, सावधानी नही बरतन पर सारे रुपये डूब जा सकते है।

नीलाम्बर बोला, "अग्रेजीवाले भाग म यदि किसी मेम को उतारा जाता तो बहुत अच्छा होता, सर! मेम के साथ अभिनय नही करने पर क्या वह जमेगा? बगाली लडके लडकी भला अभिनय करेंगे क्या?"

"तुमने मेम के साथ अभिनय किया है?" लेबेदेव ने पूछा।

"और चान्स ही कहा मिला सर?" नीलाम्बर बोला, "एक बार चान्स

मिलन पर मैं चकित कर देता। साहब मेम का नाटक देखने के लिए सबसे पहले टिकट कटाकर मैं कलकत्ता थियेटर जाता था, सर! डैडी ने कितना ही मारा-पीटा। लेकिन वह एक नशा था, सर! जब रुपये शाट पड गये तो उस थियेटर के गेटकीपर का काम धर लिया। आखिर सन् दरबान! यार-दोस्त मजाक उडाते। डैडी ने त्याज्य पुत्र करार दिया लेकिन थियटर को मैंने छाडा नहीं, सर, गेटकीपर होकर साहब मेम लोगो के कितने ही नाटक देखे—मिड नाइट आवर, वानबी ब्रिटल् ट्रिप टु स्काटलण्ड, क्रोनोनवाटमथोलेगेस—लाफिग राफिग बेली ब्रस्ट। लाइन बाई लाइन कमिट मेमोरि। लिसिन ”

नीलाम्बर कण्ठस्थ डायलाग धडाधड बोल गया।

लेबदेव ने उसकी पीठ थपथपाकर कहा, 'ब्रेवो, तुमने अभिनय करना सीखा क्यो नही ?"

"सीखना चाहा था, सर!" नीलाम्बर बोला, "वह जो कलकत्ता थियटर का मैनजर मिस्टर स्विज है, उसको कितना ही फ्लैटर किया। उसके घाडे की लगाम थामी, क्रिसमस में डाली भेजी। यहा तक कि फैंसी स्कूल म उसकी खिदमतगारी की। साहब न खुश होकर ऐक्टर के रूप मे नही, स्टेजहैण्ड के रूप म स्टेज पर जाने दिया। फिर मैं भी क्लेवर चैप ठहरा। विग के छोर से मौका पाते ही थियेटरी पोज दिखा देता।"

"तुम कलकत्ता थियेटर को छोडकर चले क्यो आय ?'

'यह सोचा कि आपके यहा ऐक्ट करने का चान्स पाऊँगा।' नीलाम्बर बोला, "तो भी चुपचाप एक बात कहता हूँ, सर! उस नकी नैकी बकी गल के साथ एक्ट करने म वैसी फीलिंग नही आती, सर! यदि गाडेस लाइक मेम एक्ट करती तो मैं चौंधिया देता।'

लबेदेव को लडका अच्छा खासा मजेदार लगा था। हास्य नाटक मे तो ऐसा ही फराटेदार प्राणवन्त युवक चाहिए। लबेदेव बोला, "तुम हताश मत हो बैण्डो, शायद एक दिन तुम्हारी आशा पूरी होगी।"

"इसका मतलब ?"

'मतलब यह कि एक दिन मेरे थियेटर मे अग्रेजी नाटक भी शुरू होगा। अग्रेज ऐक्टर ऐक्ट्रेस भी अभिनय करगे।'

"सच कहते हैं, सर ?" नीलाम्बर बोला, "तो फिर नेटिव बगाली फोस भग कर देंगे ? कब, सर, कब ?'

'गवनर जनरल के पास अर्जी दी है।" लबेदेव ने कहा, "बगला अभिनय यदि अच्छा हुआ तो अर्जी अवश्य मजूर होगी।"

"तव अपन अंग्रेजी थियेटर मे मुझे ऐक्ट तो करने देंगे, सर ?" नीलाम्बर कातर कण्ठ से वोला, "कम-से-कम बेयरा-बावर्ची या हुक्कावरदार का पाट देंगे ?"

"तुम्हे निश्चय ही मैं अच्छा पाट दूगा !"

खट् से जूता ठोकर मिलीटरी कायदे से सलाम बजाते हुए नीलाम्बर बोला, "आप मेरे रिलीजन फादर है, सर ! धमपिता। मैं आज ही मिस्टर स्विज को सुना आता हूँ—तुम तो कोई ऐश-साहब, खाक साहब हो, मिस्टर लेबेदेव वेरी वेरी बिग् साहब है। ग्रेटेस्ट आव् ग्रेट साहब।"

"नही-नही, बैण्डा," लेबेदेव ने कहा, "अभी ये सब बातें किसी को मत बताना। यह बात गोपनीय है।"

"मदर ब्लकिस् ओथ सर, माँ काली की सौगध। मैं किसी को नही बताऊँगा।" नीलाम्बर प्राय नाचते नाचते बाहर गया।

जरा देर बाद ही गोलोकनाथ दास हडबडाता हुआ आ धमका।

"मिस्टर लेबदेव," गोलोक ने पूछा, "तुमन नीलाम्बर से क्या कहा है ?"

"क्यो, क्या कहता है वह ?"

"हाल मे बडे आईने के सामने खडे हो अपने-आप वह तरह-तरह के साहबी पोज देता है और आईने की प्रतिच्छवि से कहता है—मिस्टर लेबेदेव न अग्रेजी थियेटर खोला है और मुझे उसका हीरो बनाया है। मदर ब्लकिस् ओथ, बैण्डो, यू विल बी ए हिरो विथ मेम हिरोइन ! फिर नया पोज देता है, फिर बोलता ह।'

"लडका पागल तो नही ?'

"पागल तुम हो।"

"इसका मतलव ?"

"और आदमी मिला नही। उसी नीलाम्बर से कह बैठे कि अग्रेजी थियेटर खोल रहे हो।"

"उसस क्या हुआ ?"

"सवनाश हो सकता है।"

"क्यो, क्या ?"

"मिस्टर रावथ के कान तक यह खबर गयी तो वह हिंस्र हो उठेगा। एक बँगला थियेटर खोल रहे हो, इसी पर उसको कितनी आपत्ति है, और अगर वह यह सुन ले कि तुमने अग्रजी थियेटर के लिए भी अर्जी दी है तो वह तुम्हारा सवनाश कर डालेगा।'

'मैंने इतनी गहराई म नही देखा। वण्डो को रोक दो नाकि वह इस बात को आर नही फैलाय।'

'उससे अधिक तो टिरेटी बाजार मे ढोल पिटवाने से बात गोपन रहेगी।"

लेबेदेव का रूसी रक्त गम हो उठा। वह कुछ तेज हो बोला, "तुम सभी लोग रावथ से भयभीत होते हो। मैंक्नर न कहा, रावथ धाकड आदमी है। कनल किड ने कहा, यह आदमी भारी धूत है। तुम कहते हो, वह सवनाश कर डालेगा। आदमी अडियल है, इसम स देह नही, किन्तु मैं क्या अबोध बालक हू ? मैंने भी क्या अपने प्रयास से इतना मारा प्रभाव नही जमा लिया है ? मैं तुम्हारे साथ शत लगाता हू, तुम देख लेना, रावथ का कलकत्ता थियटर जह नुम म चला जायेगा। लेकिन मेरा नया थियटर जम उठेगा।"

गोलाक वाला, 'मिस्टर लेबेदव तुम वादक हो। तुम सगीतशिल्पी हो, भाषातत्त्वविद हो और हो स्वप्नद्रष्टा। किन्तु मिस्टर रावथ तो नीलामदार, व्यवसायी और धूत है। तुम रूस दश क निवासी हो रावथ इगलिस्तानी है। तुम अकेले हो, रावथ के पीछे कम्पनी बहादुर है।"

लबदेव का उत्साह जस उतार पर आया। उसने कहा, "बाबू, मैं रूसी हू, पीछे नही हटूगा मैं।

गोलोकनाथ दाम जितना भयभीत हो उठा था, लेबेदेव उसका उचित कारण ढूढ नही पाया। रिहसल का काम निवाध रूप से चल रहा था। छोटी हीरा मणि के मन म क्षोभ भरा अभिमान था। उसकी धारणा थी कि कतारा अर्थात सुखमय का पाट वह गुलाबसुन्दरी से भी कही अच्छी तरह अदा कर सकती है। घूम फिरकर वह बार बार यही बात दुहराती है। किन्तु गुलाबसुन्दरी अर्थात् चम्पा न सुखमय की भूमिका को इतना प्राणमय कर दिखाया कि गोलोक और लेबदेव की पसन्द ठीक प्रमाणित हुई है। चम्पा ने सारे सवाद कण्ठस्थ कर लिय हैं। वाक्या का वह स्पष्ट उच्चारण करती है। बोलत समय प्रत्येक भाव को साफ-साफ अभिव्यक्त करती है मानो कितन दिना की अनुभवी अभिनत्री हो। वह सबके साथ अच्छा निभा लेती है, केवल छोटी हीरामणि को छोडकर। हीरा मणि के मन मे चम्पा के प्रति एक मलिन ईर्ष्याभावना थी। थियटर के दल मे इस तरह होना कोई विचित्र बात नही। इस मामले मे सचालका को कुछ कडा होना ही पडता है।

चम्पा अपन घर म मरिसन को अब और घुसने नही देती। और मेरिसन

भी सहसा चुप लगा गया था। यह भी एक अच्छा लक्षण था कि वह चम्पा की मानसिक शांति का भंग करने नहीं आता। लगता है स्किनर की पहरेदारी ने अच्छा रंग दिखाया था।

कुसुम का गाना अच्छा ही होगा।

थियेटर का भवन प्राय: खड़ा हो गया। अब इसकी साज-सज्जा पर नजर दौड़ानी होगी।

अभिनय क्रिया के बीच-बीच में दर्शकों को आनन्दित करने के लिए लेबेदेव ने जादू करिश्मे की जो बात सोची थी, वह भी आश्चर्यजनक ढंग से सुलझ गयी। वह बहुत दिनों से एक अच्छे भारतीय बाजीगर की तलाश में था, किन्तु आसानी से कोई बाजीगर मिलता नहीं। गोलोक दास भी इस मामले में कोई खास सहायता नहीं कर पाया।

उस आदमी का नाम था—कण्ठीराम। लेबेदेव ने पहले-पहल उसे 'चड़क-उत्सव' में देखा था। चितपुर रोड पर असंख्य ढोल-ढोल आकाश को विदीर्ण कर रहे थे। सड़क के अगल-बगल पक्के मकानों के बरामदों पर नरनारियों का जो कोलाहल हो रहा था वह भी उसमें मिल गया था। कालीघाट से कसाई-टोला होते 'चड़क' के शव संन्यासीदल की भीड़ आगे-आगे चल रही थी। बाणों से भिदा रक्तरंजित शरीर, शारीरिक कष्ट का जैसे चिह्नमात्र भी नहीं उन लोगों की आकार भंगिमा में। स्वांग देखने के लिए भी लोगों की भीड़ उमड़ आयी थी। बाँस की तीलियों और कागज से पहाड़, मन्दिर, मयूरपंखी और जाने क्या-क्या तैयार किए गये थे। लेबेदेव को अब भी एक स्वांग की याद आती है। एक आदमी ने नकली तपस्वी का भेष सजाया था। वह विचित्र दण्डीधारी तख्त पर बैठा ध्यानमग्न था। कहार लोग उस तख्त को कन्धे पर लिए चल रहे थे और नकली योगी माला जपने के साथ-साथ स्त्रियों की ओर ताकते हुए जैसे उन्हें आँखों से निगल जा रहा था। वह कभी बरामदे में खड़ी देवियों को आँखों से निगलता और फिर मानो पकड़े जाने पर जल्दी-जल्दी माला जपते हुए सामने की देवप्रतिमा को झुक झुककर प्रणाम करता। एक खुली जगह में 'चड़क-बाँस' खड़ा किया गया था। एक संन्यासी पीठ को जख्मी कर और दूसरा बाण से जाँघ को छेदकर शून्य में चक्कर काट रहा था। उनके आहत शरीर से झरता रक्त चारों ओर छिटक रहा था। कोई भी कष्ट ही नहीं जैसे उन्हें, भौंहों पर शिकन तक नहीं। उनका चक्कर खाना खत्म होने पर एक युवक और एक युवती चड़क-बाँस पर चढ़े। युवक बिल्कुल काला कलूटा, युवती भी वैसी ही। लेकिन चेहरे पर रंग पोतकर युवक ने साहब का रूप बनाने की चेष्टा की थी—जूता-मोजा

पहन, लाल पतलून, नीला कोट, पीला टोप, हाथ म एक खाली थैली। युवती न घाघरा-कमीज और ओढनी धारण कर रखी थी। युवक आवाज लगा रहा था "लाग, भेलकी लाग। कण्ठीराम का लाग॥ भोज राजा का चेला। भानुमति का खेल॥" वे जब चक्कर खा रहे थे, क्या ही उल्लास था दशका म! चक्कर के दौरान टोप उडा, ओढनी उड गयी। वशभूषा अस्तव्यस्त। किन्तु थैली को युवक ने कसकर पकड रखा था। सहसा थैली स कुल छ कबूतर निकालकर उसने छोड दिये। आश्चयजनक करिश्मा। उस चक्कर के बीच ही वे कबूतर कहाँ स आ गये! वे कबूतर चोक म उस चक्र के चारा ओर चक्कर काटने लग। दशक समूह मारे आनन्द के चिल्ला उठा। किन्तु इसके बाद ही उनकी डरी हुई चीख। युवक ने थली स एक जोडा साँप बाहर निकाला। दाना साप आकाश मे कुलबुलान लगे। युवक न दोना साँपा को दशका के बीच म छाड दन का भय दिखाया। जन समूह म धक्कमधुक्की और रलपल मच गयी, इसलिए कि कौन जल्दी वहाँ से भाग निकले। लेकिन युवक ने दोना सापा को छोडकर गिराया नही, गपुगप् करके मानो उन्ह निगल गया। दशकगण भी आश्वस्त हुए। पसीने स लथपथ युवक-युवती चडक-बाँस से नीचे उतर आय। घम घूमकर प्याला आग किया। अच्छी खासी आमदनी हो गयी। लेबदव भीड के बीच था उसको देखकर युवक-युवती ने लम्बा सलाम ठोका। खुशी के मार लेबदेव उन्ह सोने की एक मुहर ही दे बठा। उन दोना के आनन्द को कौन देखता?

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"कण्ठीराम। यह सरस्वती मेरी पत्नी है।"

"तीन नम्बर वेस्टन लेन! मर इस पत पर मुझस मिलो। तुम लोगा को खूब आमदनी होगी।'

कई महीन तक लेबेदव ने उनकी प्रतीक्षा की, लेकिन व आये नही। सहसा दुर्गापूजा उत्सव के बाद वे दाना हाजिर हुए। कण्ठीराम सस्वर चिल्लाया—"लाग, भेलकी लाग। कण्ठीराम का लाग॥ भोज राजा का चेला। भानुमति का खेला॥" खाली हाथ से उसने लेबेदेव के पट पर टटोला, पलक मारते ही पट के ऊपर से एक जिन्दा मेढक निकल आया। बहादुर लडका! लबदेव के रूम के सामने कण्ठीराम ने खेल दिखाये। मदिरा पीने क गिलास को कडकडा-कर चबा जाने का खेल। लम्बी तलवार को उसने मुख मे डालकर हिला डुला दिया, मुह से आग की चिनगारियाँ निकाली। हैरत में डाल देनेवाले खेल।

लेबदेव ने कण्ठीराम-दम्पति को बाजीगरी के खेल दिखाने के लिए बहाल कर लिया। अवश्य ही गोलोकनाथ दास को यह बाजीगरी वगरह पसन्द नहीं।

उसने इतना ही कहा, "बाजीगरा का कोई भरोसा नही। वे कुछ भी कर सकते हैं। इसके अलावा, नाटक करना चाहते हो तो नाटक करो। उसम बाजीगरी और खेल तमाशा की क्या जरूरत है!"

लेबेदेव न जानकार की तरह कहा, "दशक लोग यही सब चाहते हैं। देखते नही कि कलकत्ता थियेटर मे प्रहसन के साथ-साथ वेस्ट मिन्स्टर ब्रिज और बच खेल की नकल उतारते है?"

गोलोक और भी कितना कुछ कहना चाहता था कि कण्ठीराम सहसा चिल्ला उठा—"लाग, भेल्की लाग। कण्ठीराम का ताग।।" गोलोक के पास आकर उसके माथे पर हाथ फेरते हुए उसने चोटी म से एक छिपकिली बाहर निकाल दी। गोलोक समय नही पाया कि वह हँसे या गुस्सा करे, अन्त म सबके साथ वह भी हो-हो करके हँस पडा। उसने फिर कोई आपत्ति नहीं की।

थियेटर की पोशाक-सजावट आदि की भी व्यवस्था हो चुकी है। देशी पोशाक-सजावट। इस मामले मे अगुआ गोलोकनाथ दास ही है। निस्सन्देह वह लेबेदेव से अच्छा समझता है। फिर भी लेबेदेव के उत्साह के चलते कपडो के रग चटकीले रखे गय थे। लेबेदेव का विचार था कि थियेटर वास्तव नही, वास्तव की नकल होता है। दरअसल यह पूरा-का पूरा ही नकल है। इसीलिए वस्त्र-सज्जा म भी रगा का बाहुल्य रहता है। लेबेदेव कहता है, "तुम लोगा की बगाली साज सज्जा मे रग नही। सबकुछ कसा तो अधमला, सादा सादा। स्टेज पर तो रग चाहिए। चटकीला रग, जो तेल लम्पा के प्रकाश मे भी आखो को चौंधिया दे।"

एक दिन लेबेदेव चम्पा को साथ लेकर चीनाबाजार गया। उसके मन मे आया कि अभिनेत्रियो मे स सिफ चम्पा को ले जायेगा तो कुसुम की चुटकिया और हीरामणि की ईर्ष्या प्रबलतर हो उठेंगी, हो उठें। प्रारम्भ से ही चम्पा के प्रति कैसी तो एक स्निग्ध भावना रही है लेबेदेव की। उस रमणी की हँसी, चचलता, वात्सल्य, आसू—सबकुछ ही मानो लेबेदेव को अपनी ओर खीचते हैं। तो भी गोलोकनाथ दास की पालिता आत्मीया समझकर लेबेदेव कैसी तो एक दूरी चम्पा स बनाये रखता। चम्पा भी उस दूरी मे कमी नही लाती। कुसुम जैसी देह से चिपकी रहनेवाली है चम्पा बिल्कुल ही वैसी नही। किन्तु कभी-कभी मन म आता है, चम्पा को पास खीच लाना कितना सहज है! मैक्नर ने पूछा था "चोर नायिका किस तरह की शय्या सगिनी है?" समय-समय पर वह प्रश्न भी लेबेदेव के मन मे गुनगुनाता है।

चीनाबाजार की भीड के बीच चलते चलते उन दोनो के शरीर कई बार

एक-दूसरे से टकराये। लेबेदेव को अच्छा लगा। नारी उसके लिए कोई नयी वस्तु नहीं। छियालीस वर्ष के लम्बे जीवनकाल में लेबेदेव ब्रह्मचर्य नहीं धारण किये रहा। तब भी इस निचिद्र और कभी की क्रीतदासी ने लेबेदेव के मन में मानो एक नया कौतूहल जगा दिया है। चम्पा को उसने आउट हाउस में आश्रय देना चाहा था। यह क्या सिर्फ एक विपन्ना की रक्षा करने के उद्देश्य से था? चम्पा ने उस प्रस्ताव का प्रतिवाद किया था। गोलोकनाथ दास के मारफत उसने इसका कारण बताया था, लोगों की निन्दा से साहब के थियेटर की क्षति होगी। लेकिन लेबेदेव निन्दा से नहीं डरता। यदि डरता तो 'खाचा रथ' में बैठी चोरी के अभियोग से लांछिता नारी को वह नायिका का पद नहीं देता। लेबेदेव को पता है कि नायक-नायिका से सम्बन्धित कुत्सा रया बहुधा उपकार ही कर जाती है।

लेबेदेव के साथ बाजार आकर चम्पा भी बहुत खुश थी। कतारों में तरह-तरह की दूकानें। सिल्क, लेस, मिठाई, मछली, मदिरा, चीनी बर्तन, पंखे, काँच के पात्र, घोड़े का साज—क्या नहीं उस बाजार में! सुदूरवर्ती इंगलैण्ड, अमरीका, फ्रांस, चीन से तिजारती वस्तुएँ आ-आकर इन सभी छोटी-बड़ी दूकानों में लदी हुई हैं। सीधी-सीधी सड़क, नंगी धूल भरी, सीढ़ियाँ टूटी-फूटी किन्तु दूकानों के अन्दर सजे-सजाये कक्ष।

"यही दूकान सॅर—यही दूकान—वेरी फाइन शू-ब्लैकिंग आइ गाट सॅर!"

'सलाम सॅर। वेरी फाइन क्लव बीवर हैट आई गाट। मास्टर, कम कम एण्ड सी!'

"माइ शाप सर! सिल्क लेस—प्लेट ग्लास—ओल्ड सर्वेण्ट सर—बाडिस, ब्लाउज, मैंसर आइज। मिन्च स्टॉकिंग्स, योर ओल्ड स्लेव सॅर!"

दूकानदार मानो खींचाखींची करते हैं।

भीड़ को ठेलता लेबेदेव बाबूराम पाल की कपड़े की दूकान में चम्पा को ले आया। बहुत ही बड़ी दूकान। शीशे के आलोक में जगमगाती। रंगों की क्या ही छटाएँ! कपड़ों का क्या ही निखार!

दासानुदास भाव से खुद बाबूराम ने लेबेदेव को आमन्त्रित किया। साथ ही साथ चम्पा को भी। उन्हें कहाँ बिठाये, किस प्रकार अभ्यर्थना करे, बाबूराम पाल मानो कुछ सोच नहीं पाता। अन्ततः पूरी गद्दी पर गलीचा बिछाकर उन्हें बिठाया। कर्मचारियों में से किसी ने गुलाबजल छिड़क दिया, इत्र लगा दिया, बड़े-बड़े गिलास और पान लाकर रख दिये। इतनी आवभगत, जगना है चम्पा ने जीवन में कभी नहीं पायी थी। लेबेदेव पुलकित मन से चम्पा को

ओर रह रहकर ताक रहा था। आनन्द मे भरपूर उस रमणी का चेहरा।

लेबेदेव को बाबूराम पहचानता है। भारी खरीदार। थियेटर के लिए लगभग सारे कपडो की आपूर्ति उसीने की है। चितपुर के दर्जी लोग पोशाकें तैयार कर रहे हैं। नये थियेटर का मालिक खुद एक देशी रमणी को साथ लेकर आया है। बाबूराम एकबारगी पुलकित हो उठा है।

बाबूराम ने मानो पूरी दूकान को उलट पुलटकर रख दिया।

"सच कहती हू," चम्पा बोली, "इतने प्रकार के कपडे मैंने जीवन मे नही देखे। कितने रग, कितनी डिजायनें। मेरी सारी अक्ल गुम हो गयी है। साहब, मैं कुछ भी पसन्द नही कर सकती। इच्छा होती है सबको ही पसन्द कर बैठू।"

बाबूराम बोला, "मेमसाहब का जैसा सुन्दर चेहरा है, इस पीले रग पर खूब खिलेगा।"

लेबेदेव ने कहा "यह हल्का गुलाबी कैसा रहेगा ?'

चम्पा को पहले-पहल फटी मैली गुलाबी साडी मे ही लेबेदेव ने देखा था, 'खाचा-रथ' मे।

बाबूराम चापलूसी करते हुए बोला, "साहब की पसन्द की बलिहारी है! पीले रग नही, उस गुलाबी रग मे ही मेमसाहब हजार गुना सुन्दर लगेंगी।"

लेकिन चम्पा ने गुलाबी रग पसन्द नही किया। अन्त मे फीके सब्ज रग की साडी ली।

बाबूराम गदगद् होकर बोला, "अहा, सब्ज रग मे मेमसाहब लाख गुना सुन्दर लगेंगी।"

लेबेदेव ने चम्पा के लिए पीले, गुलाबी और सब्ज रग की तीनो ही साडिया काफी दाम देकर खरीद ली।

घर लौटते समय रास्ते मे चम्पा कृतज्ञता जताने लगी।

लेबेदेव ने कहा, "इतनी कृतज्ञता जताने की जरूरत नही। मैंने अपने ही स्वार्थवश तुम्हे यह सब दिया है। मेरी नायिका सस्ती साडी पहने, इससे मेरी ही बदनामी होगी।"

बात जैसे कुछ अनकही हो गयी। मेरी नायिका! लगता है, मेरे थियेटर की नायिका कहना अच्छा होता। मेरी नायिका। लेबेदेव को यह वाक्य बहुत अच्छा लगा, मेरी नायिका!

लेबेदेव ने गम्भीर भाव से चम्पा के चेहरे की तरफ देखा। उस तरुणी ने उस समय मुख घुमा लिया था। वह उस रास्ते की भीडभाड देखने मे ही मगन थी। लेबेदेव की विभ्रमित उक्ति जैसे उसके कान मे पडी ही नही।

कई दिन बाद चम्पा ने बात उठायी, "साहब, एक दिन विलायती थियेटर दिखाने की बात कही थी, दिखा दो।"

सच ही, उसे थियेटर दिखाना खास तौर से जरूरी है। कामों की भीड़ में लेबदेव इस जरूरी बात को बिल्कुल ही भूल गया था।

नीलाम्बर बैण्डो को उसने कलकत्ता थियेटर के बाक्स का टिकट खरीद लाने का हुक्म दिया। नीलाम्बर तो बहुत ही खुश। कलकत्ता थियेटर में वह गेटकीपर और स्टेजहैण्ड का काम करता था। वहाँ सभी उसके परिचित हैं।

वहां एक प्रहसन होता है। 'बालची ब्रिटल्'। उसके साथ एक नया संगीत आयोजन—'रूल ब्रिटानिया'। अंग्रेजों में देशाभिमान है। देश पर हुकूमत करने का अहंकार उनकी रग रग में पैठ गया है। अपनी हुकूमत के विस्तार की कहानी को भी संगीत के द्वारा वे प्रचारित करते हैं। अंग्रेज नर नारियों का दल उसे सुनने जाता है और नया अहंकार लेकर घर लौट आता है। रूस भी क्षमता में पीछे नहीं किंतु लेबेदेव अपने देश की गुण गरिमा स्वांग में डूबे इस क्षुद्र कलकत्ता सेटलमेण्ट में किसको सुनाये? बल्कि वह तो इस देश के असली निवासियों की कहानी, एशियाई ज्ञान विज्ञान, साहित्य धर्म-दर्शन की बातें पाश्चात्य जगत को सुनाना चाहता है।

ठीक कुछ देर बाद नीलाम्बर खाली हाथ लौट आया। उसके कोट शर्ट फट गये हैं। पतलून अस्तव्यस्त आंखों के कोये सुख, माथे पर कटने का निशान।

लेबेदेव ने कहा, "मिस्टर बैण्डो तुम्हें टिकट कटाने को कहा था, माथा कैसे कटा लिया?"

'बरी बिग फिस्ट फाइट, सॅर।" नीलाम्बर ने कहा।

"किसके साथ?'

"उन गोरों के साथ,' बोलते ही वह लज्जित हो उठा, "मतलब उस रॉटन थियेटर के गोरे गेटकीपर के साथ।"

"क्यों, क्यों?"

"कहता है आप लोगों को कलकत्ता थियेटर में घुसने नहीं दिया जायेगा। एक भी टिकट उनके यहां नहीं बेची जायगी।"

'किसने कहा?"

"व्हाइट गेटकीपर, सॅर!' नीलाम्बर तड़पकर बोला, "मैं डोण्ट केयर, सॅर! पाँव में एक सीजस, सॅर, एक छिटकी मारी सॅर, गेटकीपर धड़ाम, फेल। स्ट्रेट चला गया मैनेजर मिस्टर स्विज के पास। मैनेजर मुझे लाइक करता था। वह बोला, 'नीलूम, हमारे थियेटर में चले आओ। एक्सपीरियेन्स्ड स्टेजहैण्ड की

जरूरत है। तुम्हारी तनख्वाह बढा दूगा।' मैंने कहा, 'आइ नो स्टेजहैण्ड एनी मोर, आइ ए हीरो।' मैनेजर बौखला गया। मैं भी बौखला उठा। कहा, 'लूक मिस्टर स्विज यू ए ऐश साहब। खाक साहब। मिस्टर लेबेदेव ग्रेटेस्ट ॲव ग्रेट साहब।' स्विज ने ऐशवाली बात को समझा, ऐश माने गधा। और जाता कहाँ! मेर बैक पोरशन मे बूट की किक्। और व्हाइट गेटकीपर फिस्ट फाइट।"

"छि छि, बैण्डो, तुम मारपीट कर आये?"

'क्यो नही करता, सॅर!" नीलाम्बर बोला, "मेरा इसल्ट माने योर इन्सल्ट। मैं भी कह आया हू, मदर ब्लैकिस ओथ, माँ काली की सौगध! मिस्टर लेबेदेव इगलिश थियेटर खोलता है, तब तुम लोगा का रॉटन थियेटर एकबारगी ब्लाइण्ड माने काना हो जायगा।"

'मदर ब्लकिस ओथ,' लेबेदेव न कहा, "तुम्ह फिर कभी ये सब बातें नही बतानी हैं।"

"जो आना, सॅर।" नीलाम्बर बोला, "आप मेरे रिलीजन फादर, धमपिता हैं। आप जो कहग वही मानकर मैं चलूगा।"

नीलाम्बर सलाम ठोककर चला गया। आज फिर थियेटर जाना नही हुआ। रावथ सिफ अडियल नही, कमीना भी है। लेबेदेव के दल को वह घुसने नही देगा। लेबेदेव पर जिद सवार हुई। कलकत्ता थियेटर जाना ही है। उसने कलकत्ता गजट के पन्ने उलटे। निकट की तारीख मे उन लोगो का कोई अभिनय नही। वह जानता है कि उन लोगो की अन्दरूनी हाल्त खूब अच्छी नही। अधिकतर वे थियेटर को भाडे पर देकर आय जुटाते हैं। मीटिंग पार्टी, बाल-डान्स आदि के लिए थियेटर भाडे पर दिया जाता है। कोई नया शौकिया दल चदा जमाकर किनने नाटक खेलेगा कलकत्ता थियेटर के मच पर! पहला अभिनय तीस अक्तूबर को है। एक हास्य नाटक 'ट्रिक अपॉन ट्रिक' या 'विण्टस इन द माउस'। उसके साथ एक परिचित सगीतायोजन 'द पुअर सोल्जर।' लेबेदेव ने आदमी भेजकर वहा के कमचारियो से बाक्स का एक टिकट खरीद लिया।

शुक्रवार, तीस अक्टूबर। रात आठ बजे कलकत्ता थियेटर मे सद्रस्क्रिप्शन को लेकर अभिनय है। साहब के साथ थियेटर देखने जायेगी, यह बात चम्पा गोपन नही रख पायी। दल के सभी लोगो को बता दिया। हीरामणि न ईर्ष्या से मुह बिचकाया था, लेकिन कुसुम अभिमान से मुह फुला बैठी।

कुसुम ने कहा, "साहब, मैं एक्टिंग नही करती, सिफ गाना गाती हू, इसी-लिए न मैं विलायती नाटक देखने नही जाऊँगी!'

चम्पा बोली, "कुसुमदी चलें न । बाक्स में क्या जगह नहीं होगी ?"

लेबदेव ने बाक्स में चम्पा को जरा एकांत में पाना चाहा था, किन्तु कुसुम के सामने चम्पा के प्रस्ताव को ठुकरा नहीं पाया । इसके अलावा कुसुम भी ठहरी अच्छी गायिका, नाटक का पहला इण्डियन सेरिनेड । कुसुम भारतचन्द्र का गान गायेगी । उसे उत्साहित करना ही है । उसे भी खुश रखना जरूरी है ।

"क्या नहीं होगी जगह ?" लेबदेव ने कहा, "अच्छा ही है, कुसुम भी चले न ।

दोनों बहुत ही खुश । हीरामणि का मुंह और भी लटक गया ।

सन्ध्या होते न होते ही कुसुम सज धजकर आ गयी । वह सुनहरे काम की नीली बनारसी साड़ी पहने थी । उसका गोरा रंग धपधप् कर रहा था । पूरे शरीर पर गहने । हाथ में चूड़ियां, बाला बाजूबंद, गले में तीन लड़ियोंवाला मुक्ताहार, अशर्फियों की माला, नाक में नाकछवि, कानों में झुमके, माथे पर टिकुली । नितम्ब का चन्द्रहार झीने वस्त्र को पारकर झनक रहा था । और चम्पा ने बहुत ही सीधे सादे ढंग से अपने को सजाया था । उसने आज नयी गुलाबी रेशमी साड़ी पहनी थी जो कुछ दिन पहले लेबेदेव ने उसे खरीद दी थी । हाथ में कुछ चूड़ियां गले में कांच के मोतियों की माला ।

कुसुम बोली "तेरा यह कैसा साज है गुनावी ? हाथ गला जैसे सूना सूना-सा है । जानती कि तू ऐसा सादा सजकर आयगी तो मैं ऐसी भड़कीली सजधज नहीं करती ।'

चम्पा बोली, मैं क्या तुम्हारी तरह अमीर हूं कुसुमदी ? गरीब औरत, इतना सोना हीरा कहां पाऊंगी ?

कुसुम ने व्यंग्य करते हुए लेबेदेव से कहा, 'तुम्हारा नेह-छोह किस तरह का है साहब ? गुनावी को एक जोड़ा सोने का कंगन भी नहीं गढ़ा दे पाये ?

चम्पा पटपट बोल उठी 'जानती हो कुसुमदी, यह रेशमी साड़ी साहब ने नीलाबाजार से खरीदकर मुझे दी है ।

'दुर बुद्धू लड़की, कुसुम ने चम्पा के गाल पर ठुनकी मारते हुए कहा सिर्फ साड़ी को लेकर मगन है ! साहब से सोना-हीरा वसूल ले । आह भई, तेरा गला बड़ा खाली-खाली लग रहा है । यह मोतियों की तीन लड़ियां पहन लें । तेरे सांवले रंग पर मानो खूब खिल उठेंगे ।'

चम्पा के गले में मुक्ताहार पहनाते पहनाते कुसुम बोली 'मगर आज ही रात को मुझे लौटा देना । गहनों के प्रति मुझे बड़ा मोह है ।

लबेन्ब ने एक भड़कीली पालकी भाड़े पर ली । गद्दी पर गलीचा बिछा

हुआ। पालकी के बाहरी ढाचे पर के रगीन शीशे अन्दर मोमबत्ती जलने पर बाहर से चमचमाते। उडिया कहार, खूब तगडे दीखते थे वे। पालकी मे तीन-चार जने आसानी से बैठ सकते है। लेबेदेव आज कुछ शान शौकत के साथ कलकत्ता थियेटर जाना चाहता है। इसीलिए पालकी के आगे आगे आसा सोटावाले भी चलेंगे। साथ ही पथ को आलोकित करने के लिए दो मशालची रहेंगे। रूसी बैण्डमास्टर लेबदेव गायिका और नायिका को लेकर थियेटर देखने जा रहा है। रावथ का दल देखे, लेबेदेव उन लोगो से बिल्कुल नही डरता।

पालकी मे दो युवतियो को साथ लिय जाता लेबेदेव खूब अच्छा लग रहा था। कहारा का दल लय के साथ हुहकारी द रहा था। दुलकी चाल से पालकी चल रही थी। भीतर मोमबत्ती के आलोक मे दोनो रमणिया मोहक लग रही थी। कुसुम के सामीप्य की उष्णता लेबेदव महसूस कर रहा था, लेकिन चम्पा जसे कुछ अलग-अलग थी। रास्त के लोग उस शानदार पालकी और उसके विचित्र यात्रियो को उत्सुक आखा से देखते जाते थे। लबेदेव को लगता था मानो वह पूरब का नवाब हो। हरम की सुन्दरियो को लेकर विहार करने निकला है।

कलकत्ता थियेटर राइटस बिल्डिंग के पीछे है। रात उतर आयी है। इस तरफ ज्यादा भीडभाड नही। फिर भी थियेटर के सामने बग्घी, फिटिन, लैण्डो, पालकिया का जमघट था। इसी बीच बहुतरे दशको ने आना शुरू कर दिया था। थियेटर देखना केवल कोरा मनोरंजन नही, इसका एक सामाजिक पहलू भी है। कितने ही लोगा के साथ भेंट मुलाकात। साज पोशाक, गहने हैसियत देखना और दिखाना, गपशप करना निन्दा शिकायत, नये नये गोपन रहस्या का उदघाटन —य सारी बातें थियेटर देखने के बीच चलती है। इन सबसे बढकर पहली रात का अभिनय देखने के पीछे एक निखालिस अहकार भी सिर पर सवार हा उठता है। इसीलिए थियटर शुरू होने स काफी पहले ही अनेक यूरोपीय दशक आ उपस्थित हुए थ।

अच्छे खासे आडम्बर के साथ लेबदेव अगल-बगल दो रमणियो को साथ लिये थियेटर भवन मे दाखिल हुआ। थियटर भवन के पच्छिम तरफ आने जान के आम रास्त है। दो फाटक। नियम था कि पुराने किले की तरफ अयात् दक्षिणी फाटक से पालकीवाले कहार प्रवेश करेंगे और आगन मे आकर उत्तरी फाटक स बाहर निकलेंगे। मुख्य फाटक के पास लेबेदेव की पालकी रुकी। यूरोपीय द्वाररक्षक ने आदर के साथ तीनो को पालकी से उतार लिया। लेबेदव को आशका थी कि रावथ का दल किसी तरह की अभद्रता दिखायेगा। वह आशका

निर्मूल सिद्ध हुई।

अनेक परिचित चेहरे। फद्मा की कौतूहल। इन सबको अनदेखा कर व सीधे निर्दिष्ट बाक्स में आ बठे। छोटे-से कक्ष मे मखमल-मढी चार सुनहरी कुर्सियाँ। मोमबत्ती के मद्धिम आलोक म बाक्स म बैठन मे कोई असुविधा नही। दखत दखत सामन की सीटें भर गयी, बाक्स भी खाली नही रहे। लेबेदेव बीच म बठा, उसके दोनो ओर दोना सगिनियाँ बैठी।

कुसुम बोली, "री मैया, क्या गजब का दृश्य! ठीक जस नवाब का दरबार।"

चम्पा चारा ओर देखकर बोली, कितन बडे-बडे झाड फानूसवाले लम्प हैं! बरामदे में शीशे के रोशनदानो मे मोमबत्तियाँ कैसे टिमटिमा रही हैं! ठीक जैसे दीपावली।"

कुसुम बोली, "अरी गुलाबी, लोग कितने हैं, देख!"

चम्पा बोली, "लेकिन मुझे तो डर लगता है यह सोचकर कि इतने लोगो के सामन मुझे भी एक्टिंग करनी होगी।

लेबेदेव ने आश्वस्त करते हुए कहा, "वैसा कुछ नही। पहले पहल सभी को डर लगता है। जिस दिन म्युजिक रात्र म पहले पहल वायलिन बजायी थी मुझे भी डर लगा था। स्टेज पर उतरते ही वह डर दूर हो जाता है।"

चम्पा बोली, "अच्छा हमारा थियेटर भी क्या ऐसे ही सजाया जायेगा?"

लबदेव न कहा, नहीं, नही विलायती नकल नही करूँगा। अपना थियटर हम बगाली कायदे म सजायेंगे। आम के पल्लव झूलेंगे, फूलमालाएँ होगी कदलीस्तम्भ और मगलघट रहगे। गुलाबजल छिडक देना होगा। दत्र और धूप धुएँ की गन्ध से थियेटर भवन मद-मस्त हो उठेगा।

सगिनियाँ खुश होकर बोली, "खूब अच्छा खूब अच्छा!"

इधर आर्केस्ट्रा शुरू हो गया। मशालचियो ने मच के पर्दे के सामने की बत्तियो को जला दिया।

इस बार पर्दा उठा। मच म जुडा दृश्यपट, मद्धिम आलोक म भी वह जगमगा रहा था। सचमुच जोसफ बटल् महान् चित्रशिल्पी है। उसे चाहे जस भी फाड लाना होगा।

सगीत आयोजन---'दि पुअर सोल्जर'। कलकत्ता थियेटर मे यह कई बार हो चुका है। तब भी अच्छा ही रहा। कुसुम ने कहा, 'वाद्यसगीत खूब अच्छा है किन्तु आउँ माउँ करके क्या तो गाता है, बाबा, कुछ समझ नहा पाती।'

चम्पा परिहास करते हुए बोली "साहब से अच्छी तरह सीख ले न वह

हाउँ-माउँ गाना, तब तो साहबो की जमात म सिर्फ तेरे ही गाने की माँग होगी, कुसुमदी !"

कुसुम बोली, "तेरी बात गलत है क्या ? साहब लोग तो मानो हमारा गाना सुनने के लिए ही बुलाते हैं।"

बगलवाले बाक्स स किसी ने जस 'सी-सी' की आवाज करके चुप रहने का कहा।

लेबदेव ने घूमकर देखा। निकट के बाक्स म एक यूरोपीय, साथ म एक श्वेतागिनी। मोमबत्ती के आलोक मे वह नेम रक्तहीन सी लगती है, भूरी आखो मे चमक नही। लेकिन दूरवाले बाक्स मे एक बगाली बाबू रमणिया के साथ बैठा है। रमणियो का साँवला रग स्वास्थ्य से समुज्ज्वल, आखो की चमक मे प्राणो की प्रचुरता। कुसुम लेबेदेव से देह सटाकर बैठी, मगर चम्पा जस कसी तो अलग थलग है।

तालिया की गडगडाहट के साथ गान का कायक्रम समाप्त हुआ। पर्दा गिरा। हाल मे शोरगुल।

कुसुम खिलखिलाकर हँसती हुई बोली, 'हाय हाय, गुलाबी, वह बायी तरफ बीचवाली जगह म कैसी भारी भरकम मेम है ! माँ री, इतनी मोटी मेमसाहब भी होती है !"

'जानती हो कुसुमदी," चम्पा बोली, "हमारे ठीक सामने की कतार म जो नीली पोशाकवाली मेम बैठी है, उसन अभी अभी अपना मुह घुमाया था। उसकी नाक के नीचे मैंन मूछा की रेखा देखी।'

अच्छी लगी थी उनकी निन्दा वार्ता। लेबदेव जानता है कि कलकत्ता शहर मे विलायती मेम दुर्लभ है। यहाँ अगर चार हजार साहब होगे तो मेम कुल दो ढाई सौ। अपने देश से मेम को बगाल लाने म प्रति मेम पर प्राय पाच हजार रुपये लग जाते हैं। विलायत से इण्डिया आने के लिए जो छटी बची मेमें राजी की जाती हैं, वे ही आम तौर पर इस देश म आती है। एडिनबरा का नाम ही है भारतीय विवाह-हाट के लिए जिस्म का बाजार। छ मास के भीतर ही मम इच्छानुसार पति बदल लेती है। वे स्थिर हो बैठ नही पाती, दास दासियो का दल उनके पीछे खटता रहता है। नौ बजे व नीद से जागती हैं डेढ बजे खाना खाती ह, उसके बाद चार-पाँच बजे तक सुखनिद्रा। शाम को हवाखोरी, रात्रि-भोज मे गयी रात तक नाच। यही हुई उनकी दिनचर्या। मेम पालना नही, हाथी पालना ! जब कि प्रतिमास मात्र चालीस-पचास रुपये खच करके देशी रखल रख सकते है। साहब बेचारे करें क्या !

कुछ देर बाद प्रहसन शुरू हुआ—'डिस्गाइज'। लेबेदेव ने फिर जोसफ बैटल द्वारा अंकित दृश्यपट की तारीफ की। दृश्यपटों में अपने चातुर्य इतना कि दूर से वे दृश्यपट नहीं लगते। जैसी उनकी रंगयोजना, वैसी ही भावगरिमा।

नाटक शुरू से ही जम उठा। रंगिनियाँ अच्छी तरह समझ नहीं पाती, किन्तु प्रहसन में घटना-समावेश ऐसा कि उसी में वे दर्शकों के साथ-साथ हँस पड़तीं। कलकत्ता शहर के थियेटर में प्रहसन ही खूब जमते हैं। लेबेदेव ने इसीलिए अपने थियेटर के लिए भी प्रहसन पसन्द किया है।

फिर हँसी का रेला। मोटा अभिनेता जो मसखरी कर रहा था! अभिनेत्री ही कैसे पीछे रहती? चम्पा की आँखें हर्ष से उज्ज्वल। वह हँसी के बीच भी एकाग्र भाव से अभिनय की बारीकियों का लक्ष्य करती जा रही थी।

फिर हँसी का तूफान। कुसुम हँसते हँसते लेबेदेव के शरीर पर ढुलक पड़ी थी। चम्पा भी खुलकर हँसी थी। लेबेदेव ने भी उनकी हँसी में योग दिया।

उसी हँसी के बीच कभी लेबेदेव ने चम्पा के हाथ को अपने हाथ की मुट्ठी में जकड़ लिया है। थोड़ा रूखड़ा किन्तु उष्ण-कोमल चम्पा का हाथ। अनमना-सा होकर लेबेदेव ने पता नहीं कब चम्पा के उस हाथ को अपनी छाती पर खींच लिया है। दोनों ही के मुह की हँसी एक साथ मिल गयी है। लेबेदेव के हृदय की धड़कन ने जैसे चम्पा के हाथ में सिहरन भर दी है। लेबेदेव की आँखों में निस्सीम वासना।

एक क्षण!

चम्पा ने धीरे धीरे लेबेदेव की मुष्टि-कारा से अपने हाथ को निकाल लिया।

चम्पा करुण भाव से हल्का हल्का हँसी, उसके बाद लेबेदेव के कान के पास मुह ले जाकर चुपके चुपके बोली, "साहब, मुझे क्षमा करो, मेरे ऊपर क्रोध न करना। मैं मेरिसन को चाहती हू।"

छः

मैं मेरिसन को चाहती हूँ! मैं मेरिसन को चाहती हूँ!! यही सरल वाक्य लेबेदेव के लिए दुर्बोध हो उठा। जिस मेरिसन ने कापुरुष की भांति अत्या-

चार किया, मिथ्या अभियोग से नहीं बचाया, बिना प्रतिवाद किये कठिन सजा को भुगतते देखा, फिर ऊपर से अकारण सन्देहवश मार-पीट की, उसी मरिसन को चम्पा चाहती है ! चाहे, भले ही चाह। उससे लेबेदेव का क्या आता जाता है ? वह केवल देखना चाहता है कि इस अनबूझ प्रेम के चलते उसके अभिनय को क्षति नहीं पहुचे। तब भी वह स्थिर नहीं रह पाया।

एक दिन चुपचाप उसने स्फिनर को बुलाया। स्फिनर का हाव भाव जैसे कुछ बदल गया है। रिहर्सल के समय प्राय ही वह चम्पा की ओर देखते हुए क्लारियोनेट बजाता है। चम्पा जब नाटक के सवाद बोलती है, स्फिनर दूर से एकटक ताकता रहता है। ताकते रहने की बात ही है। लड़की के सुपुष्ट शारीरिक गठन म स्वास्थ्योज्ज्वल काया मे, सुन्दर शोभामय मुखाकृति म जो एक आकर्षण है, उसे उपेक्षित कर जाना किसी पुरुष के लिए सहज नहीं।

"मिस्टर स्फिनर," लेबेदेव ने पूछा, "तुम तो मिस गुलाब की खोज-खबर रखते हो।"

"यू मीन मिस चम्पा ?"

स्फिनर उसका असली नाम जानता है। वस्तुत जानने की ही तो बात है। स्फिनर काफी दिनो से गोलाकनाथ दास के निर्देश से चम्पा की देखरेख करता था।

"हा हा, मैं मिस गुलाब, इसका मतलब है मिस चम्पा, की ही बात कह रहा हूँ।'

'हा मिस्टर लेबेदेव, मैं उसकी खोजखबर रखता हू। फिर भी रिहर्सल के बोझ के चलते ज्यादा देख सुन नहीं पाता।"

"लड़की मेरे थियेटर की एक मुख्य अभिनेत्री है। उसका बुरा भला देखना हमारा कर्तव्य है।"

"यह तो ठीक है सॅर !'

"उसका पहलेवाला मद मिस्टर मेरिसन क्या उसके घर जाता है ?"

"नहीं, सॅर।"

"तुमने किस तरह जान लिया ? तुम तो कहते हो कि ज्यादा देख सुन नहीं पाते तुम !"

"यह ठीक है। तब भी मेरा एक आदमी है। वह भी देखता-सुनता है।"

"यू मीन स्पाइग ?"

"ठीक वसा नहीं। मिस्टर डिसूजा, मिस चम्पा के घर के निचले तल्ले में रहता है। उसी से पता कर लेता हूँ। मिस्टर मेरिसन कई बार मिस चम्पा

के घर मे घुसने गया था, लेकिन मिस चम्पा ने घुसने नही दिया। इसको लेकर दोनो म खींचतान हुई। मिस्टर मरिसन तब भी मिस चम्पा के घर म नही घुस पाया।

'मेरिसन न कोई मारपीट तो नही की ?"

"उस तरह की खबर तो मुझे मिस्टर डिसूजा स नही मिली।'

जो भी हो, तुम लडकी पर जरा नजर रखा करो।"

"वडी खुशी स रखूगा, सॅर!

स्पिनर चला गया। लेबदेव का कुछ अजीब लगा। चम्पा न कहा था कि वह मेरिसन को चाहती है, किन्तु उसे बढावा जरा भी नही देती। प्रेम की रीति किसी रीति का नही मानती। तो भी लबदव सुनकर आश्वस्त हुआ कि मरिसन चम्पा के घर नही आता।

प्रथम अभिनय-रात्रि आग आ रही थी। इस कारण यह उत्कण्ठा स्वाभाविक थी कि बँगला थियटर का लकर वह एक नया प्रयोग करा जा रहा है। लेबदेव का भविष्य बहुत कुछ उसकी सफलता पर निभर करता था। अनिश्चित भाशका उसके मन को हिला रही थी। अभी तक हताश होन की कोई बात नही। गोलोकनाथ दास की अनुकूलता स अभिनय की अच्छी तैयारी हुई थी। दल म कुछ हद तक ऐक्यभाव स्थापित हो चुका था। वाद्यसगीत के मामने म भयभीत हान की काई बात नही। वादक के रूप म लेबेदेव की ख्याति जमी हुई है। देशी और विदशी वाद्यों का सम्मिश्रण चित्त का आकर्षित करता है। कुसुम का गाना अच्छा ही हुआ। थियटर भवन की दीवारें और छत तैयार हो चुकी है। गलरी का काम खत्म कर कारीगर लोग अब स्टेज को बना-सॅवार रहे हैं। सीन-स्क्रीन, आलोक व्यवस्था साज सज्जा प्रत्येक छोटी मोटी वस्तुओ की तरफ दृष्टि रखनी पडी थी। जगन्नाथ गागुलि न ठेकेदार के रूप म अवश्य ही काम खराब नही किया है। आश्चय क्या! उसे थियटर बनाने की और जानकारी नही, इसलिए हर तरह की छोटी मोटी बाता पर लेबदेव को ध्यान देना पडा था। समय नही। समय नही। आजकल भाषातत्व की चर्चा बन्द, अनुवाद का काम आगे बढ नही पाता। लेबेदेव के सामने अभी एक लक्ष्य है। बँगला थियटर। रावय और प्रमुख अग्रेजा को वह दिखा देगा कि कलकत्ता शहर म जो कभी नही हुआ वही एक रूसी करने चला है। बँगला थियटर। सारे कलकत्ता शहर को चौंका देगा। बगाली अभिनेता अभिनेत्री नाटक खेलेंगे। यह क्या मामूली बात है। अवश्य ही गोलोक बाबू की सहायता न मिलती तो इस थियटर के काम मे लगना सम्भव नही होता। आदमी खूब है। किस तरह मुह नीचे

के आग एक मोड लेकर गाडी मलगा की गली मे घुसी । दोनो ही मौन थे, चम्पा के घर के सामने बग्घी रुकी तो चम्पा उतरने के लिए उठ खडी हुई ।

लेबेदेव ने मृदु स्वर मे पूछा, "तुम अब भी मेरिसन को चाहती हो ?"

"हाँ ।"

"तो फिर मेरिसन को घर मे घुसने क्या नही देती हो ?"

"या ही ।"

चम्पा तज कदमा से गाडी स उतरकर घर के अधकार मे विलीन हो गयी ।

दो एक दिन बाद स्फिनर ने चुपके चुपके लेबेदेव को जो सूचना दी वह कुछ रहस्यमय थी मिस्टर डिसूजा अथात चम्पा के पडोसी किरायेदार ने बताया है कि इस बीच एक दिन साझ को दो यूरोपीय और एक बगाली बाबू चम्पा के घर गये थ । वे कौन थे ? डिसूजा ठीक-ठीक कह नही सका, चेहरे मोहरे का विवरण ठीक से मिल नही पाया । दोनो यूरोपीय प्रौढ आयु के थे, बगाली बाबू कृष्णकाय और तोंदियल । विवरण सुनकर लेबेदेव को पहले ही जगन्नाथ गागुलि की बात याद आयी । लेकिन वह क्यो दो यूरोपीय लोगो को साथ लेकर रात्रि के अधकार मे चम्पा के घर जायेगा ? क्या बातें हुइ, कुछ पता नही चला । मालूम हुआ, एक दीपक थामे चम्पा उन्ह दुतल्ले पर ले गयी, खातिरदारी करके बठाया और धीमे स्वर म बातचीत की, लगभग आधा घण्टा बाद वे लोग चले गये । जाने के समय चम्पा नही आयी, उसकी बूढी दाई उन्ह द्वार तक पहुचा गयी । उन लोगो मे क्या मेरिसन था ? निश्चित ही नही, क्याकि मिस्टर डिजूसा मेरिसन को पहचानता है । अलावा इसके मेरिसन युवक है । दोना यूरोपीय प्रौढ थे । कौन चम्पा के घर जा सकना है ? चम्पा ता कुछ बताती नही । और बतायेगी ही क्यो ? स्वाधीन युवती है । किसके साथ बात करेगी, किसके साथ मलजोल रखेगी—इसकी कैफियत क्षण भर के साथी को देने क्यो आयेगी ?

स्फिनर ने कहा, 'गाडी मे बैठते समय एक यूरोपीय ने अग्रेजी म कहा था, 'औरत को राजी कर पाने पर इस आदमी को एक धक्के म धराशायी किया जा सकता है । दूसर न कहा 'अभी तो राजी हुई नही, बाबू तुम राजी करो ।' बाबू बाला, 'रुपय क लोभ स सारा तेज फीका पड जायेगा ।''

टुकडी टुकडी बात । किस बात के लिए राजी ? कौन है वह आदमी जिसका भाग्य चम्पा के राजी होने पर निभर था ? तेज ? किसलिए ? लेबेदेव कुछ भी समझ नही पाया ।

अधिक चिन्ता करने का समय भी नहीं। वही कुछ दिन बाद ही प्रथम अभिनय की रात आयेगी, सारी तैयारियों में घड़ी के कांटे पर नजर रखते हुए चलना होता है।

वह बोला, 'मिस्टर स्किनर, तुमने सूचना देकर बहुत अच्छा किया है। अवश्य ही ऐसा नहीं कि मुझे बहुत ज्यादा कौतूहल है। फिर भी वह हमारे थियेटर की अभिनेत्री है, उसके हित-अहित पर नजर रखना हमारा कर्तव्य है। तुम जरा और खोज खबर लो। है न?'

कौतूहल लेबदेव के मन में खूब ही था। कौन थे वे दोनों यूरोपीय, कौन था वह बाबू? किस विषय को लेकर उनकी बातें हुई? सबकुछ ही मानो रहस्यमय।

चम्पा से सीधे पूछ लेना कैसा रहेगा? लेबदेव के मन को कुछ अधिक संकोच हुआ। तो भी वह स्थिर नहीं रह सका।

थियेटर की नयी पोशाकें तैयार होकर दर्जी के यहां से आयीं। सबने पहनकर देखा। पोशाक पहनते ही लेबेदेव को दिखाने के लिए चम्पा दौड़ी आयी। जिस पोशाक में वह कभी दर्शकों के सामने उपस्थित होगी, वही। पुरुषवेशिनी चम्पा, अब उसका नाम सुखमय। ठीक जैसे युवा तरुण। जिसका उनमत्ताता जनाना चेहरा, सीधी लम्बी स्वस्थ काया। बाल जैसे कटे छँटे, माथे पर पगड़ी, शरीर पर पूरे आस्तीन की फीतवाली मिरजई। नीचे का पहनावा कोरदार महीन धोती, पैरों में चप्पल।

लेबदेव के कमरे में बड़े आईने के सामने खड़ी हो चम्पा खिलखिलाकर हँस पड़ी। बोली, "मा री देखो तो क्या गजब! खुद को ही खुद पहचान नहीं पाती, देखो, देखो छोकरा आईने में मेरी ओर देखते हुए किस तरह हँसता है! दुर करमुहे, लाज नहीं आती तुझे? किन्तु मेरा तो उसके साथ प्रेम करने को जी चाहता है।"

इन तरल क्षणों में सुयोग पाकर लेबेदेव ने कहा "आईने का पुरुष मेरिंसन नहीं है क्या?

चम्पा बोली अहा, वह कलमुहा यदि आईनावाले पुरुष के समान होता तो क्या मैं तुम्हारे यहाँ काम करने आती?

लेबेदेव ने कहा, "तुम्हारे तो चाहनेवाले बहुत हैं।

कुछ सकपका गयी चम्पा। वह बोली इसका मतलब?

कितने ही लोग जाते है तुम्हारे घर, तुम्हें राजी करने।"

"तुम क्या कहना चाहते हो, साहब, मैं समझ नहीं पाती।'

"क्यो, उस दिन साझ को दो यूरोपीय और एक बगाली बाबू तुम्हारे घर नही गये ?"

"नहीं ।"

उत्तर सक्षिप्त किन्तु समझना मुश्किल ।

लेबेदेव ने कहा, "नही । ठीक बोलती हो ?"

"तुम वकील तो नही हो ?" चम्पा बोली "मुझसे जिरह क्यो करते हो ? कहती हू, नही । मान लो, नही ।"

वही तो ।"

'यदि इतना सन्देह है तो जासूस लगाकर पता लगाओ न ।"

'एसा क्रोध आ गया ? क्या मैं तुम्हारे साथ एकाध हँसी मजाक भी नही कर सकता ?"

"यह मजाक करना बिलकुल ही नही," चम्पा अभिमान के साथ बोली, "इसका मतलब हुआ, मुझ पर सन्देह करना ।'

चम्पा और कोई भी बात बोले बिना चली गयी ।

लेबेदेव का मन शिथिल हो गया, तो क्या मिस्टर स्किनर ने गलत सूचना दी थी ?

कुछ देर बाद जगन्नाथ गागुलि आया । कृष्णकाय तोदियल बाबू । ऐसी रूपाकृतिवाले बगाल मे हजारो है । तब भी लेबेदेव ने रसिकता के बहाने उससे पूछा, 'क्या जगन्नाथ बाबू आजकल क्या तुम चम्पा के घर आने जाने लगे हो ?"

जगन्नाथ कुछ सकपका गया, वह बोला "किसने कहा है ? उस छोकरी का साहस भी कम नही । मेरे बारे मे जो सो कहती फिरती है ! साहब, मेरी पसन्द क्या इतने नीचे चली गयी है कि मैं एक चोर दाई के घर जाऊँगा ? हाँ, यदि कहो कि कुसुम के घर गया या नही तो स्वीकार करूँगा कि गया हूँ । अनेक बार गया हूँ किन्तु एक दाई ! अरे छि ।"

'रुपये के लोभ स क्या सबका तज खत्म हो जाता है, जगन्नाथ बाबू ?" लेबेदव ने पूछा ।

जगन्नाथ जैस और भी ठण्डा पड गया । इतस्तत करत हुए बोला, 'लगता है छोकरी यह सब बोलकर बडी वीरता दिखा गयी !'

लेबेदेव ने रहस्य के अँधेरे म एक और ढेला फेंका । वह बोला, "तुम आजकल दो अधेड साहबो को साथ लेकर स्त्रियो के घरो म नही जाते हो क्या ? जानता हूँ कि घर मकान का कारबार करत हो, रमणियो की दलाली कब से

शुरू की ?"

"सब झूठी बातें हैं।" जगन्नाथ जीभ काटते हुए बोला, "उफ, कैसा सफेद झूठ बोल सकती है यह लडकी ! मैं भला कब दो साहबो को लेकर उसके घर गया ? कलकत्ता शहर मे क्या सुन्दर स्त्रियो का अभाव है कि मैं, श्रीयुत बाबू जगन्नाथ गागुलि, उन्हे लेकर दाई के घर जाऊँगा ?"

जगन्नाथ बहुत अधिक विरोध जता रहा है, बातचीत भी कैसी तो जैसे सन्देहजनक ।

"कौन थे वे दोनो साहब ?' तेज स्वर मे लेबेदेव बोला, "रावथ और बटल ! '

"लगता है उस छोकरी ने यह सब कहा है ?" जगन्नाथ गरज उठा, "उसे हम देख लेंगे ।

जगन्नाथ चले जाने को हुआ ।

लेबेदेव न कहा 'ठहरो ।' उसने पुकारा, "चम्पा, मिस चम्पा !"

चम्पा फिर आयी । उसने अपना थियेटरी वेश बदल दिया था, अपनी साडी पहने वहा उपस्थित हुई । जगन्नाथ को देखकर वह दरवाजे के पास ही खडी हो गयी । सिर नीचा किये हाथ की उँगलिया कुरेदने लगी ।

चम्पा," लेबेदेव उत्तेजनारहित स्वर मे बोला, "जगन्नाथ ने सब कबूल किया है, उस दिन रावथ और बैटल तुम्हारे घर गये थे ।"

चम्पा बाली, 'साहबो को पहचानती नही नाम भी याद नही, हा जगन्नाथ बाबू साथ थे ।"

लेबेदेव ने कहा तुमने तेज दिखाया था । क्या उनकी बात से राजी नही हुई तुम ? '

"नही ।

बात क्या थी ?'

'थियेटर के दिन सन्ध्यावेला म तुम्हे बताये बिना चम्पत हो जाना ।'

अथात मेरे प्रथम दिन के अभिनय को व्यथ कर देना । तुम नायिका हो । तुम्हारे पाट का जोड मिलना सम्भव नही, अतएव पहली ही रात को इतने कष्ट स आयोजित अभिनय व्यथ ।

'ठीक वही ।

तो फिर जरा देर पहले तुमने झूठी बात क्यो कही ?"

'विवश होकर वे धमका गय थे म यदि सारी बातें खोल दूगी तो वे तुम्हारा और मेरा सवनाश कर देगे ।'

"तुम उनकी बात से राजी क्यो नही हुई ?"

'साहब, क्या मैं इतनी बेईमान हू !" चम्पा रुलाई से रुद्ध स्वर म बोली, "लालबाजार की सडक से तुम एक दागी चार को उठा लाये, उसे सिखाया पढाया, स्नह प्रेम दिया सम्मानित स्थान दिया। और मैं अन्तिम घडी मे तुम्हारी नाव को उलट दूगी ? वह मैं नही कर सकूगी। टुकडे टुकडे मेरे कर दिय जायें तब भी नही कर सकूगी।'

चम्पा तजी से वहा से बाहर चली गयी।

जगन्नाथ सिर झुकाये खडा था।

लेबेदेव गरज उठा, "तुम झूठे, फरेबी, धूत और विश्वासघाती हो। क्यो, क्यो मेरे विरुद्ध षडयन्त्र करने पर तुल गय तुम ? मैं क्या तुम्ह रुपये नही देता, तुम्हारे साथ काम कारोबार नही करता ?"

जगन्नाथ लज्जित नही हुआ, वह बोला, "तुम विदेशी रूसी हो, शहर कल कत्ता मे तुम और कितने दिन कारोबार करोग ? अंग्रेज यहा रहेग, मुझे उनके साथ आजीवन कारोबार करना होगा।'

"इसीलिए तुम मेरा सवनाश करोगे, जिसने किसी भी दिन तुम्हारी क्षति नही की।"

"सवनाश तवनाश नही जानता,' जगन्नाथ विज्ञभाव से बोला "हम कार-बारी आदमी है। जहा सुविधा देखेंगे, वहीं चक्कर लगायेंगे। इसके अलावा प्रतिस्पर्धा सभी व्यवसायो म है। तुम्हारे थियेटर-व्यवसाय मे भी है। मिस्टर रावथ वैसा क्या अन्याय करता है अगर वह उस छोकरी को तुम्हारे थियटर स फोड लेना चाहता है ? तुम भी क्या जोसफ बैटल को अपने थियेटर म फोड ले जाना नही चाहत ?"

एक नाजुक जगह पर चोट की इस चतुर व्यवसायी ने। लेबेदेव कुछ भी जवाब नही दे पाया, सिफ चीख उठा, 'गेट आउट, गेट आउट, यू चीट।"

जगन्नाथ क्रूर हँसी हँसकर बोला, "बाहर तो जाता हूँ किन्तु मेर बकाया रुपये झटपट चुका देना। नही तो फिर कोट कचहरी करनी होगी। भला हो।'

सात

बँगला थियेटर
२५ न० डोमतला
मिस्टर लेबेदेव
सम्मानसहित घोषणा करता है
उपनिवेश की भद्रमहिलाओ और भद्रमहोदयो से
कि उनका
थियेटर
खुल रहा है
आगामी कल, शुक्रवार २७ तारीख को
एक सुखात नाटक के साथ
जिसका नाम है
डिसगाइस
अभिनय ठीक आठ बजे शुरू होगा
उसका टिकट थियेटर मे मिलेगा

बाक्स एव पिट — आठ रुपया
गैलरी — चार ''

यह विज्ञापन कलकत्ता गजट के २६ नवम्बर १७९५ के अक म अग्रेजी मे प्रकाशित हुआ। लेबेदेव न अखबार को कई बार उलट पुलटकर देखा। उसका थियेटर! पढते हुए अच्छा लगा। उसका थियेटर! कैसा तो एक गम्भीर आत्मसन्तोष का भाव मन म उमड रहा था। इस बार के विज्ञापन म थियेटर के नाम को स्पष्ट किया गया बँगला थियेटर। क्यो नही करेगा वह? जो लोग उसके साथ खटे, जिन्होने अनुप्रेरणा दी जिन्होने अभिनय म भाग लिया, उनके नाम पर ही लेबेदेव ने अपने थियेटर का नामकरण किया है।

पूर्वपरिकल्पना के अनुसार थियेटर को बगाली कायदे स सजाया गया था। बाहरी द्वार पर आम्रपल्लव दोनो ओर कदलीस्तम्भ और मगलघट के ऊपर नारिकेल। हॉल के ऊपर छत के नीचे विलक्षण रगो का चँदोवा और वहाँ से लटकते मोमबत्तियावाले बेशकीमती झाड फानूस। द्वारा और खिडकियो पर टँग ढाकाई मलमल के पर्दे। मच ठीक ठाकुरवाडी के दालान की तरह। नीले कपडे पर सोले की सफेद चाँदमाला पवित्र शुभ्रता से समुज्ज्वल। मच के सामने

नीचे की तरफ पवित्र अल्पना। नीचे दीवाली की तरह जगमगाती दीपो की माला। यवनिका विशेष रूप से शान्तिपुरी धोती की पट्टियो से तैयार की गयी थी। दृश्यपट खूब अच्छे नही होने पर भी आखो को लुभाते थे। कलकत्ता शहर और लखनऊ के विलक्षण प्रतिरूप थे वे। मच के सामने कुछ निचाई पर वाद्यमण्डली के बैठने का स्थान था। वहा सितार, इसराज, सारगी, बासुरी, वीणा, तबला मृदग के साथ रखे हुए थे वायलिन चेलो, बजो, मैण्डोलिन, क्लारियोनेट और अन्य विलायती वाद्य। रजनीगन्धा की सजावट, धूप अगरु की गन्ध, सबकुछ मिलकर एक सुहावना परिवेश।

ड्रेस रिहर्सल हो चुका है। दल के लोगो मे प्रगाढ उत्साह है, नवीनता का एक उन्माद जैसा कुछ था जो उन्हे जीवन्त किये हुए था। पहले-पहल बँगला अभिनय। हालांकि वह मूल नाटक का सक्षिप्त रूप—एकाकी है। बँगला थियेटर, बगाली अभिनेता-अभिनेत्री। नाटक अग्रेजी से बँगला मे अनूदित, परिकल्पना एक भाषा-शिक्षक बगाली की, लेकिन निर्देशन एक रूसी आदमी का।

एक रूसी आदमी! भारत मे ही कैसा लगता है! सचमुच ही एक रूसी आदमी। देश बगाल मालिक दिल्ली का बादशाह, शासक अग्रेज, लेकिन प्रथम बँगला थियेटर का प्रतिष्ठाता एक रूसी आदमी!

लेकिन आज दल के सारे ही लोग जैसे जाति धर्म वर्ण को भूल गये थे। बाबू गोलोकनाथ दास ने स्वय कालीबाडी मे पूजा चढा आने के बाद केले के पत्ते पर रखे सिन्दूर का लाल टीका, हिन्दू ईसाई का भेद किये बिना, सबके ललाट पर लगा दिया। नीलाम्बर बैण्डो ने कोट पतलून पहने ही बहूबाजार के शिव-मन्दिर मे साष्टाग प्रणाम करके सबको प्रसाद बिल्वपत्र बाटे। मिस्टर स्किनर सवेरे ही गिरजाघर मे प्रार्थना कर आया। कुसुम ने नारायण शिला के पास कीर्तन का आयोजन किया था, इसीलिए सबको बताशे बाँटे। हीरामणि पीछे रहनेवाली नही। उसने भी क्षणिक कलह भुलाकर पीपलवृक्ष पर चढायी गयी मालाएँ सबके गले मे पहना दी। और, और चम्पा खुद मिट्टी से लगी देवी दुर्गा की तस्वीर लेबेदेव के माथे से छुला गयी। बोली, 'साहब, बडा भय होता है। इतने लोगो के सामने, इतने साहब मेम लोगो के सामने हँसी मसखरी करनी होगी, सोचने से भी जैसे कलेजा काँप उठता है। इसे पास ही दीवाल पर टाग दूगी। अभिनय के समय जब भय का अनुभव होगा तो तभी दुर्गा की छवि को निहार लूगी। माँ मन को साहस देगी, मेरा डर ही जाता रहेगा।"

थियेटर के टिकटो की इतनी माग होगी, यह लेबेदेव ने सोचा नही था। विज्ञापन के प्रकाशित होने के साथ साथ टिकट खरीदने के लिए लोगो

की भीड उमडने लगी। पिट बाक्स और गलरी मे जितन लोग आ सक्ते थे, उसम कही ज्यादा लोग टिक्ट की माग करनवाले। क्रेता केवल यूरोपीय लोग नही, हिंदू धनीवग से भी काफी लाग। बहुतेरों को निराश करना पडा। प्रथम अभिनय रात्रि। कलकत्ता गजट के प्रतिनिधियो को छोडा नहीं जा सकता। टाउन मजर कनल किड और उसकी एशियाई सहधर्मिणी, बरिस्टर जान डों और उसकी हिंदुस्तानी उपपत्नी मिस्टर जस्टिस और मिसेज हाइड, मुख्य न्यायाधीश सर रावट और लेडी चेम्बस---इस तरह के जिन सम्माननीय लागो न अनेक तरह स लबदव को सरक्षण-सहायता दी उन्ह भी आमन्त्रित करना पडा। दशको के बैठने की जगह को लेकर लेबेदेव परेशान हो उठा। कुछ फालतू कुर्सियो की उसने पहले से ही व्यवस्था कर रखी थी, इसीलिए लाज रह गयी। तो भी भीड के कारण जाडे की रात म भी हॉल खूब गम हो उठा था। आमन्त्रित लोग आने लगे थे। दशकगण भी धीरे धीरे जमा होने लगे। उनकी अभ्यथना के लिए दूसरे लोग तैनात कर दिये गये थ। लेबेदव खुद अभी यह काम नही कर सकता। गोलोक दास भी साज सज्जा-कक्ष म व्यस्त था। सारे साज-सामान की व्यवस्था उसने खुद की थी। फिर भी लेबेदव न पर्दे के किनारे एक छोट-से फाँक से हाल मे नजर दौडायी। आलोक मे झलमला रहा था हॉल, विविध रगो का मेला। उसी मे अनेक जातियो के नर नारी। अंग्रेज, अर्मीनियाई, पुतगाली, मूर, सिख जेंटू---दशको का अपूव सम्मिश्रण। वहाँ कौन तो बठ हैं? रावथ, स्विज और वडल। य लाग टिक्ट कटाकर आय ह। कुछ भी गोलमाल तो नही करेंगे? विशिष्ट व्यक्तियो के बीच इतना साहस अवश्य ही उन्हे न होगा। अर अर! पिट म पिछली कतार म वह मेरिसन तो नही? हाँ, वही है। मेरिसन भी टिक्ट कटाकर देखने आया है! किसकी करतूत है, चम्पा की या हीरामणि की? मिसेज मेरिसन ता बगल मे नही है। निश्चय ही वह आना नही चाहती। दशकगण धीमे धीमे शोर कर रहे हैं। आँखें नचा-नचाकर थियेटर की सज्जा पर गौर करत है और फिर आपस मे टीका टिप्पणी करते ह।

मिस्टर स्पिनर ने सूचना दी, अब सिफ पाच मिनट बाकी हैं। वादकगण सबके-सब तयार हैं। पर्दे पर कुजवन का दश्य है। उसी कुजवन म खडी होकर कुसुम भारतचन्द्र का गीत गायगी। अभिसारिका के वेश मे कुसुम। महीन नीलाम्बरी साडी म उसका गौरवण दीप्त हो उठा है। मनको लुभानेवाला उसका रूप जैसे सौ गुना खिल गया है। कुसुम ने कुजवन का आश्रय लिया है।

सहसा अभिनेत्री चम्पा कही स लपकी आयी और लेबेदेव के पाँव पर हाथ

भुगाये अपना काम किये जाता है।

विज्ञापन का मसौदा तैयार करना होगा। गालोक बाबू ने हौदा-कसे हाथी पर गाजे-बाजे के साथ हाट-बाजार में जाकर थियेटर की घोषणा करने की बात कही थी, लेकिन लेबेदेव उसके लिए राजी नहीं हुआ। हाट-बाजार के लोग भीड़ लगाकर यात्रागान सुनेंगे। थियेटर की मोटी दिखाई' देने की सामर्थ्य कहाँ? लेबेदेव यदि थियेटर-प्रवेश की कीमत आधी ही कर दे तो भी उसे चुकाने की क्षमता जनसाधारण में नहीं। लेबदेव की दृष्टि मुख्यत यूरोपीय जमात पर है। उन्हें यदि रुचिकर लगे, तभी उनकी देखादेखी एशियाई धनी मानी सरक्षण देने के लिए आगे आयेंगे। लेबेदेव ने तय किया कि कलकत्ता गजट में ही आकर्षक विज्ञापन देना है। वह विज्ञापन शहर के धनी लोगों की नजर से छिपा नहीं रहेगा।

माननीय बड़े लाट बहादुर द्वारा अनुमति प्रदान किये जाने की बात विज्ञापन में पहले ही देनी होगी। वह एक पंक्ति ही रावथ की देह में आग लगा देगी। उसका नाम तो शहर की रसिक मण्डली के लिए अपरिचित नहीं। नाम के बल पर वह विज्ञापन दृष्टि को आकर्षित करेगा।

स्त्री पुरुष अभिनय करेंगे। बँगला थियेटर कहने से ऐसा नहीं कि यात्रा-पार्टी की तरह पुरुष लोग दाढ़ी मूँछ मुड़ाकर जनाना हाव भाव की नकल करेंगे। देशी विलायती वाद्यसंगीत की बात भी लिखनी होगी। भारतचन्द्र राय का गान प्रस्तुत किया जायेगा। यह भी लिखना नहीं भूलना होगा। इस देश में कवि भारतचन्द्र की बड़ी कदर है। बैठे बैठे लेबदेव ने अपने हाथ से अंग्रेजी में विज्ञापन लिखा और काटा, लिखा और काटा, अन्त में एक विज्ञापन मनोनुकूल हुआ, जिसमें अनावश्यक लफ्फाजी नहीं बल्कि यथेष्ट आकर्षण है। उसने उसे कलकत्ता गजट के कार्यालय में भेज दिया। ताकीद के साथ कि जिससे दो एक दिन में ही वह प्रकाशित हो जाये।

एक दिन एक आकस्मिक झमेले ने उन्हें उलझा दिया। बात यों हुई कुछ दिन हुए लेबदेव के हॉल से छोटी मोटी कीमती वस्तुएँ चोरी चली जाती थी। आज चाँदी की पनडिब्बी, दो दिन बाद सोने मढ़ी चाँदी की मुखनली। एक दिन छोटी पीकदानी, दूसरे दिन जरदा की डिब्बी। वस्तुओं की कीमत वैसे बहुत ज्यादा नहीं, किन्तु अक्सर चोरी चले जाना भी अच्छा लक्षण नहीं। लेबदेव के साथ जो लोग काम करते थे, वे प्राय पैर पकड़कर कहते, "हुजूर, मा-बाप है। हुजूर के साथ नमकहरामी नहीं करूँगा। हमने चोरी नहीं की। हुजूर के पास कितने ही तरह के लोग आते हैं, दो-तीन घण्टे रहते है। उनसे पूछिए।"

लेबेदव ने बात को दबा देना चाहा था। लेकिन एक दिन सवेरे रिहर्सल के समय गालोक दास न ही दल के सामने बात उठायी। वहाँ सभी उपस्थित थे। अभिनेता अभिनेत्रीगण, षण्ठीराम और सरस्वती। कुसुम और वादक-मण्डली।

गोलोक दास न कहा, "बात यह बिलकुल ही अच्छी नहीं। घर म स इस तरह चीजें चोरी चली जायें यह हा ही नहीं सकता।

हीरामणि फुफकार उठी "हो सकता है। ऐसा होना स्वाभाविक है। साहब अगर अब भी लुट नहीं जाता तो उसम भी काली माई की दया है।"

गोलोक बोला, "इसका मतलब ?

"मतलब साफ है।" हीरामणि क्रूर हँसी हँसते हुए बोली, 'घर म चोर पालने पर घरलू वस्तुएँ चोरी जायेंगी, यह क्या कोई नयी बात है ?"

चोर पालना ? गोलोक बोला, "तुम क्या कहना चाहती हो, साफ-साफ कहो।"

'और धूल मत झोंको गोलोक बाबू।' हीरामणि हुनहुना उठी, "तुम तो जैसे जानते नहीं कि हमारे बीच चोर कौन है!"

'बोल ही दो न।" गोलोक ने कहा।

हीरामणि चम्पा की ओर अंगुली उठाकर बोली, "यही चोर है।"

हीरामणि के आकस्मिक आक्रमण स सभी स्तब्ध।

गोलोक बोला, 'क्या अनाप शनाप बोलती हो, हीरामणि!'

"अनाप शनाप ही बोलती हूँ गोलोक बाबू," हीरामणि ने कहा, 'जिसको तुम लोग गुलाब कहते हो वह चम्पा है। एक दागी चोर, देखोगे, देखो "

हीरामणि न हठात चम्पा की पीठ पर स कपडा हटा दिया। उसकी कोमल पीठ पर विचित्र हो उठे जख्मों के लम्बे लम्बे निशान। हॉल मे एक दबी आवाज उभरी।

हीरामणि विजयिनी की भाति बोली, "कहो उसन चोरी नहीं की! 'खाँचा रथ' म बैठकर शहर का चक्कर नहीं लगाया! लालबाजार म हाट के लोगों के बीच बेंत नहीं खायी?'

चम्पा मूर्तिवत बैठी रही। कुसुम न सीधे आकर चम्पा की पीठ पर का कपडा उठा दिया। बोली, 'अच्छा किया है उसने चोरी की है। हीरामणि, तेरा धन तो चुराया नहीं। जिसका चुराया है वही दोष लगाये। क्या कहते हो साहब?'

लेबेदव निरुत्तर।

हीरामणि व्यग्य करते हुए बोल उठी, "साहब अब क्या बोलेगा ? वह तो औरत का ढलमलाता चेहरा और छलछलाती आँख देखकर ही मस्त हो गया है, वह क्या अब साहब है—भड़ुए का भड़ुआ। नही तो इस तरह चोर को पालता!"

लेबदेव न कहा, "नही, मिस चम्पावती ने चोरी नही की।"

"तुम क्या जानत हो, साहब ?" हीरामणि बोली, "मेरिसन साहब न मुझे खुद बताया है कि उसने चोरी की है।"

'मेरिसन !" लेबेदेव न कहा, 'मेरिसन ने तुमसे कहा है ! तुम मेरिसन को जानती हो क्या ?"

'तो क्या जानूगी नही ?" हीरामणि गर्व से बोली, "कलकत्ता शहर मे तुम्ही एक साहब नही हो, मेरिसन भी साहब है, असली विलायती साहब। वह मेरे लिए जान छिडकता है। उसी ने तो मुझे सब बताया। यह औरत चोर है, दागी चोर।"

हठात चम्पा खडी होकर दृढ स्वर म बोली, "मैं चोर नही, मैं चोर नही !"

"तो फिर तेरी पीठ पर बेंत का दाग क्या है री औरत ?" हीरामणि चीख उठी।

"वह तुम नही समझोगी।" कहकर चम्पा तजी से बगलवाले कमरे मे जाने लगी, लगता है अपने रुदन को छिपाने के लिए।

गोलोक दास दढ स्वर मे बोला, "नतिनी, ठहरो, जाओ मत !"

चम्पा खडी हो गयी।

गोलोक ने कहा, "आज मिस्टर लेबेदव के घर की चोरी का कोई फसला हो जाये। आज हम चोर को पकडेंगे ही। इस घर से कोई एक कदम भी आगे नही बढायगा। मैं कापालिक तांत्रिक को साथ लेकर ही आया हूँ, वह बाहरवाले घर म प्रतीक्षा कर रहा है। जाग्रत काली मा के सामने उसन मन्त्र पढे ह, मन्त्रित चावल साथ ले आया है। उस मन्त्रित चावल को इस घर के सभी लोग खायेंगे। जो चोर नही, उसे कुछ नही होगा। किन्तु जो चोर है, उसके चोरी नही कबूलने पर मुह से खून गिरेगा और वह यही मर जायेगा। मिस्टर लेबेदेव, तुम अपने नौकरो चाकरो को बुलाओ। वे भी आयें।"

व लोग कौतूहल से घर के आसपास ही ताक झाक कर रहे थे। बुलाते ही वे सात आठो जन घर म आकर खडे हो गये। उनके मुख भी पीले पड गय हैं।

हीरामणि न प्रतिवाद किया, "मैंने चोरी नही की। मैं क्या मन्त्रित चावल

खाने जाऊँ ?"

कण्ठीराम सूखे मुह से बोला "बाबू मैं तो यही कल परसा यहा आया हूँ मैं ही क्या मन्त्र पढा चावल खाऊँ ?"

गोलोक दास धमकी दे उठा, 'तुम सभी लोग खाओगे। मैं भी खाऊँगा। जो चोर नही, उसे कुछ नही होगा। जो चोर है, वह नही बबलन पर रक्त उगलेगा, यही गिरकर मर जायेगा। तान्त्रिक महाराज, अब इस कमरे म आओ।'

एक बीभत्स चेहरेवाले कापालिक ने घर मे प्रवेश किया। माथाभर धूल धूसरित जटाएँ, दाढी मूछ भरा चेहरा, लाल लाल जलती आँखें और ललाट पर लाल सिन्दूर का बडा सा टीका जो लाल वस्त्र के साथ मिलकर दपदपा रहा था। उसके हाथ मे एक खप्पर।

'जय मा, जय माँ," कहकर कापालिक चीख उठा सभी जस आतंकित हो उठे, कण्ठीराम मारे डर के रोने लगा।

कापालिक ने धमकी दी 'अय, चुप रह !'

पति को जकडकर सरस्वती काँपने लगी।

कापालिक ककश स्वर मे गा उठा—

"माँ कालीर किर।
चोर जावे ना फिरे॥
एक कणा चाल पडा।
खेलेइ धरा छाडा॥
जे करछे चुरि।
तार धूचबे जारिजुरि॥

"जय माँ श्मशानकालिके, नरमुण्डमालिके ! ओउम ह्रिं किल किल फट स्वाहा। जय मा, जय माँ !

गोलोक बोला तान्त्रिक महाराज, पहले मुझे दो मन्त्रित चावल।"

'ले बेटा।' कापालिक ने खप्पर से मन्त्रित चावल निकालकर गोलोक दास को दिये, गोलोक ने खा लिये। कापालिक ने उसकी ओर कठोरता से ताका। गोलोक के मुह से रक्त नही निकला।

अबकी बार चम्पा आगे आयी। मन्त्रित चावल माँगा। कापालिक ने दिया। चम्पा ने खाया कापालिक ने कठोरता से ताका। चम्पा का भाव सहज। कमरे मे स्तब्ध सभी लोग उत्सुक। कुछ क्षण। चम्पा पर कोई विपत्ति नही आयी।

हीरामणि अस्फुट स्वर म बोली, 'सब झूठ, सब ढोंग।'

"अरी ओ, चुप रह," कापालिक कर्कश स्वर में धमकी दे उठा, "किसने कहा मिथ्या ? अरी ओ, चुप रह !

"मा कालीर किरे।
चोर जावे ना फिरे॥
एक कणा चाल पडा।
खेलेइ धरा छाडा॥
जे करेछे चुरि।
तार घूचवे जारिजुरि॥"

कसी ता एक अवाछिन नीरवता। मन्त्रित चावल कुसुम ने खाया। हीरामणि ने खाया। कापालिक अब कण्ठीराम के सामने आ खडा हुआ। उसकी पत्नी फफककर रो उठी। कण्ठीराम का मुख और भी विवर्ण।

कापालिक ने हाक लगायी—

"जे करेछे चुरि।
तार घूचवे जारिजुरि॥"

'ले बेटा, खा," कापालिक चिल्ला उठा।

कण्ठीराम ने मन्त्रित चावल हाथ म लिया। सरस्वती किसी भी तरह उसे खाने नही देगी, कण्ठीराम चावल फेंककर लपका सीधे लेबेदेव की तरफ। उसके पाव जकड लिये उसने, फफकते फफकते बोला, "हुजूर, मुझे मारकर नही फेंकें। मैं चोर हू, मैंने आपकी चीजें चुरायी हैं।"

कापालिक अपनी सफलता पर ठठाकर हँस पडा, सरस्वती चीख मारकर रो उठी। हीरामणि का चेहरा फक्। कुसुम ने चम्पा को कसकर पकड लिया। चम्पा की आखो स आसू भर रह थ, किन्तु मुख पर लाछन के मिटने की चरम तृप्त हसी।

कण्ठीराम ने अपना दोष कबूल किया। वह छोटी जात का है। बहुत ही गरीब। बाजीगरी दिखाने से भी दो वक्त का भात नही जुटता। हाथ की सफाई का उसे अभ्यास है। चोरी करना उसका स्वभाव। कीमती वस्तु देखते ही चुराने के लिए हाथ खुजलाने लगता है। कितनी ही बार पकडा गया, लोगो के हाथ से मार खायी। एक बार थाना-पुलिस मे पडा। दारोगा को बाजीगरी दिखाकर सन्तुष्ट करने पर सिर्फ कुछ बेंत खाकर बच गया। इस बार का मान रहा नही। माल को वह घर मे नही रखता क्योंकि घर का कोई ठिकाना नही, बाजीगरी दिखाने के लिए वह घूमता रहता है। माल हाथ मे आते ही उसने एक दूकान म बेच दिया था। दूकानदार साला ज्यादा दाम नही देता। चोर के ऊपर

बटमार। पानी के भाव माल को बच देना पडा।

लेबदेव न कहा, 'कण्ठीराम, तुम्हे अगर पुलिस के हाथ म दे दू ?"

"मर जाऊँगा हुजूर," कण्ठीराम गिडगिडाकर बोला, "गोरा साहब के नालिश ठोकने पर वे लोग गगाघाट पर नाम स ल्टकाकर फाँसी द देंगे।"

'तुम बाजीगरी दिखाने पर फाँसी स छूटकर नही आ सकत ?'

'गोरे सिपाही की फाँसी का फदा वज्र है।" कण्ठीराम हाँफते हुए बोला, 'व लोग न ब्राह्मण समझते हैं, न चाण्डाल समझत हैं, न शाप को मानते है। बाजीगरी को भी नही मानते। देखा नही उन्होने ब्राह्मण महाराजा नन्दकुमार को फाँसी पर लटका दिया! राज्य के लोगा का शाप उस फाँसी के फन्दे की गाँठ का ढीला नही कर पाया।'

सरस्वती पूरे सुर म रोते-रोत बोली, "हुजूर हमारे धरमबाप हो। मैं तुम्हारी गरीब बेटी हूँ हुजूर, मेरे अभाग मद को गोरे पुलिसवाला के हाथ मे मत दो। इतना रोकती हूँ तो भी अभागा चोरी करके ही रहता है। हुजूर, यदि उसको गोरे पुलिसवाला के हाथ म दे दोगे तो बेटी का सिन्दूर पुछ जायेगा। तब बेटी उसी फासी के गढ मे माथा पटककर मरगी। हुजूर, हुजूर !"

लेबेदेव ने विरक्त होकर डाँटा, 'आह, चुप रह! धनधना मत। बोल साले, और करगा चोरी ?'

"तुम्हारा कुछ नही चुराऊगा हुजूर!" कण्ठीराम बोला, 'अगर तुम्हारा कुछ चोरी करूँ तो माता के कोप से मरूँ, माँ शीतला की कसम।

आ आज तू जा।'

कण्ठीराम और सरस्वती ने लेबदेव के चरणो म साष्टाग प्रणाम किया।

लेबेदेव न कहा, 'दख, ठीक समय से काम पर आना। काम मे नागा करन पर मैं ही तुझे गोली मार दगा।'

"जरूर हुजूर। वे बोले।

'सुन" लेबेदेव ने कहा "तुम लोगो की तनख्वाह डबल कर दी है। समझे ? खबरदार फिर चोरी नही करना।'

व लोग तेज कदमा से चले गये।

गोलोक चकित होकर बोला, "साहब, चोर का छोड दिया ?'

लेबेदेव ने कहा, "आदमी गुणवाला है। हाथ की सफाई उसकी अच्छी है। जाने दो।'

लेबदेव ने कापालिक को खुश करके दक्षिणा दी। वह आदमी जाते समय एक बोतल बढिया विलायती लाल पानी माग बैठा। वह लाल 'कारणवारि

उत्सग करने पर माँ बहुत खुश होगी। ल्वदेव न उसे एक बोतल पुरानी क्लॉरेट दी, वह आशीर्वाद देते हुए चला गया।

उत्तेजना शान्त होने पर रिहसल आरम्भ हुआ। आज रिहर्सल जैसे जमा नही।

फिर भी लेबेदेव के मन से एक भारी बोझ उतर गया। चम्पा के पूव परिचय की बात खुल गयी, खुल जाये। हीरामणि का अभियोग जो मिथ्या प्रमाणित हुआ, वही बडे सन्तोष की बात है।

काफी परिश्रम के बाद उस दिन देह मन क्लान्त था। कालीपूजा। अँधेरी रात दीपमालाओ से झलमला रही थी, मन ने जरा ताजा होना चाहा। रिहसल का विशेष दबाव नही था। पव के उपलक्ष्य मे अभिनेत्रीदल ने छुट्टी ली थी। लेबेदेव के हाल मे आये हुए थे गोलाकनाथ दास और चम्पा। आज की नीरवता म गोलोक ने चम्पा को विशेष रूप से शिक्षा दी थी। आज्ञाकारिणी छात्रा की भाति चम्पा ने पाठ सीखे थे। लेबेदेव ने उनसे रिहसल बन्द करने को कहा। ज्यादा अभ्यास से एकरसता आयगी।

लेबेदेव ने कहा, "दीपावली की रात। आतिशबाजी छूट रही है। चम्पा, चलो तुम्ह घर छोड आता हूँ। घूमना भी होगा, आतिशबाजी देखना भी होगा।'

"तुम भी चलो, दादू," चम्पा बोली, "तुमने भी बहुत परिश्रम किया है।"

गोलोक आना नही चाहता था, लेकिन चम्पा ने छोडा नही। लेबेदेव अच्छी तरह समझ गया कि उसको दूर रखने के लिए चम्पा ने यह चालाकी की है। ठीक वही, बग्घीगाडी पर उसने गोलाक दास को लेबेदेव के पास ठेल दिया। वह खुद गाडी के एक छोर पर बठी।

टिरेटी बाजार मे आलोक ही आलोक था। दूकानो म दीपो और मोम बत्तियो की कतारें सजी हुई थी। हल्की हवा म दीपशिखाएँ काप-काप उठती थी। कितने ही घरो की छतो पर आकाशदीप और किसी किसी पर चीनी लैम्प झूल रह थे, रगबिरगे झलमलाते हुए। एक मकान की छत पर आतिशबाजी के आलोक का फुहारा छूट रहा था। कान के पास ही एक पटाखा आवाज करत हुए फूट पडा, घोडा भडककर एक आदमी के कन्धे पर पर रखने लगा। गनीमत हुई कि वह बाल बाल बच गया। सडक पर लोगो की भीड ही भीड। इसी बीच एक पागल अपना प्रलाप किये जा रहा था। बाबू लोग पत्नियो के साथ गाडियो और पालकियो मे घूमने निकले थे। यूरोपीय लोग भी अलग नही थे। वे भी सपत्नीक-सपरिवार दीपावली और आतिशबाजी देखने निकल पडे हैं। माथे पर से हुस करके उडते हुए एक 'आकाशतारा' न आकाश मे जाकर 'तार'

बरसाये।

वे तीनो चुपचाप जा रहे थे, बाहर की आतिशबाजियो का आतनाद उनकी नीरवता को और भी गम्भीर बना रहा था।

गाडी के लालबाजार के पास पहुचने पर गोलोकनाथ दास ने कहा, "लेबेदेव साहब, मैं यही उतर जाता हू। चम्पा मलगा मे रहती है, मैं चितपुर मे। बिल्कुल उल्टा रास्ता। इस भीड मे घर पहुचते पहुचते बहुत देर हो जायेगी।"

चम्पा जैसे कुछ बोलने जा रही थी। बोल नही पायी।

गोलोकनाथ दास उतर गया।

चम्पा जिस तरह एक छोर पर बठी थी उसी तरह बैठी रही। दोना के बीच खाली जगह।

लेबदव बोला "तुमने गोलोक बाबू को क्यो बुला लिया ?"

चम्पा बोली, "यो ही।'

"क्या मुझसे डर लगता है तुम्हे ?"

"नही।'

'तो फिर इतना हटकर क्या बैठी हुइ हो ?"

"यो ही।"

फिर दोनो ही चुप। गाडी बैठकखानावाले माग के पास आ गयी। इस तरफ कुछ सुनसान सा है। एक फूस का घर आतिशबाजी के आ गिरने स जल रहा है। लगता है लेबदेव का अन्तर भी धधक रहा है। अग्नि के आलोक मे माग के किनारे एक पेड के नीचे बग्घीगाडी दिखायी पडी। गाडी म और कोई नही, मेरिसन खुद है और—और हीरामणि! चम्पा की भी नजर उधर गयी। हीरामणि ने भी उन्हे देखा। उसने लाज से जैसे कुछ परे हटना चाहा, लकिन मरिसन न उसको कसकर पास खीच लिया। मरिसन के एक हाथ म ह्विस्की की बोतल थी। दूसरा हाथ पागल की तरह राह चलनेवालो के सामने ही हीरामणि की देह से छेडखानी करन लगा। लेबदेव की बग्घी उस खडी बग्घी के पास से गुजरने लगी तो हठात मेरिसन अपनी बग्घी पर खडा होकर चीख उठा, "यू डर्टी ब्लैक होर!' चम्पा की तरफ 'थू' करके उसने थूक दिया। थूक के छीटे चम्पा के गाल पर आ पडे। उसके दो चार छीट लेबेदेव के हाथ पर आ गिर। घृणा से लेबेदेव ने उन्हे पोछ डाला किन्तु चम्पा पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी रही।

फूस का घर उस समय भी जल रहा था। जल रहा था लेबदव का अन्तर। चित्रमयी चम्पा की ओर देखकर गाडी को उसने जोर स दौडा दिया। बहूबाजार

रखकर उसने प्रणाम किया। जरा हँसकर बोली, "साहब, नाटयगुरु तुम्ही हो। इसलिए तुम्हे प्रणाम करती हूँ।"

आठ बजने म एक मिनट बाकी है। मच के दोनो छोरो से मगल शख-ध्वनि हुई। साथ ही साथ रगशाला का कलगुजन शान्त हुआ। एक नीरव प्रतीक्षा। मच के दोना पाश्ववर्ती द्वार खुल गये। लेबेदेव के नतृत्व मे वादकदल ने एक ही पोशाक मे रगालय मे प्रवेश किया। लेबेदेव ने बीच म खडे होकर दशको की ओर रुख किया और भावहीन चहरे से नीचे झुककर अभिवादन किया। लम्बी तालिया की गडगडाहट रगशाला मे गूज उठी। लेबेदेव घूमकर खडा हुआ, वायलिन की गज हाथ मे ली, साथ ही साथ दूसरे वादको ने अपने-अपने वाद्ययन्त्र को सँभाला। घण्टे पर पडी एक चोट ने रगशाला को चचल कर दिया। यवनिका खिसक गयी। सामूहिक वाद्यसगीत के साथ साथ अभिसारिकावेशिनी कुसुम ने *प्रिय कवि भारतचन्द्र का गान छेड दिया।*

गान पर गान। सुर और स्वर का कणविमोहन सम्मिलन। सुरूपा कुसुम के उत्तेजक कटाक्ष, दश्यपट का वण-वैचित्र्य, सबने मिलकर एक ऐसे रस का सचार किया जिसकी कलकत्ता के रगमचो पर कल्पना नही हो सकती थी। भारतीय सेरिनेड के समाप्त होते न होते तालियो और 'फिर से' 'फिर से' का शोर। कुसुम ने प्रशमको की ओर देखकर और भी गीत गाये। लम्बी तालियो के बीच आयोजन के पहले चरण की समाप्ति हुई। तालियो के बीच ही निकट के द्वार से लेबेदेव ने सदलबल पर्दे के भीतर प्रवेश किया। वह सीधे बढा। कुसुम को जैसे उसी की अपक्षा थी। कुसुम को दख पाते ही लेबेदेव ने असीम आनन्द से उसे जकड लिया।

नाटक से पहले चटनी के रूप मे जादूगरी के खेल का आयोजन था। कण्ठीराम और सरस्वती न विचित्र पोशाकें पहन रखी थी। उन्होने मच पर आश्रय लिया। यवनिका उठत ही तालिया के बीच उन्होने करतब दिखाने शुरु किय। पहले लपका लपकी या उछालने और पकडने का खेल। फिर शीशे चबाना, मुह से आग बरसाना। एक के बाद एक जादूगरी। दशका को सिफ विविधता देने के लिए। किन्तु इस बार की तालियो मे वह जोर नही। पर्दा गिरा।

इसके बाद बँगला नाटक शुरू हुआ। दि डिस्गाइस' अथवा काल्पनिक छदमवश। *प्रथम दृश्य या अकवाले नाटक अश के अनुसार* अलग अलग पोशाक और मुखौटे मे कुछ वादक मच पर रह गये।

एक पथ का दृश्य। लेबेदेव के नेतत्व मे मूल वादकदल ने पूववत रगशाला मे अपना अपना स्थान ग्रहण किया। अधीर प्रतीक्षा के बीच घण्टे पर चोट की

आवाज गूंज उठी। पर्दा उठते ही दिखायी दिया कि वातायन के नीचे वादक लोग अन्तरवर्ती संगीत बजा रहे हैं। कुछ क्षणों के वाद्यसंगीत के बाद सुखमय की सहचरी भाग्यवती के रूप में अतर बाई ने अपना पहला संवाद बान्का से कह सुनाया। अतर ने कहा 'सज्जनो, यह मेरी स्वामिनी सुनकर संतुष्ट हुई हैं। और, उन्होंने हम लोगों से जाने को कहा है—मंगल हो!"

नहीं, अतर उतनी अच्छी तरह बोल नहीं पायी। चम्पा इसमें कहीं अच्छा बोलती है लेबेदेव ने सोचा। चम्पा के सम्भाषण में कहीं शिथिलता नहीं उच्चारण स्पष्ट, स्वर तेज किन्तु कर्कश नहीं। पुरुषवेश में वह एक शिष्ट सौम्य प्राणवान युवक की तरह लगेगी। प्रथम संवाद से ही वह जमा देगी। पूरे नाटक में चम्पा को मोहनचन्द्र बाबू के छद्मवेश में सुखमय की भूमिका देकर ही नाटक आरम्भ करना होगा। वादक लोग चले गये। उसके बाद नाटिका का घटना क्रम लबालब नदी की धारा की तरह आगे बढ़ा। सेवक राममन्तोष की भूमिका में हरसुन्दर खूब अच्छा उतरा। उसकी उठी हुई मूँछें। बदन पर मिरजई, टोपी पत्तीदार। घघटवाली अपनी स्त्री को परस्त्री समझकर उसने अत्यन्त नाटकीय संगीत द्वारा प्रेमनिवेदन किया। वह बोला, "प्राणेश्वरी, मेरी मीठी छुरी! यह देखो तुम्हारा महाबली और पराक्रमी गजपूत तुम्हारे पैरों तले पड़ा हुआ है।" प्रथम रात्रि की उस छोटी नाटिका में दल के लोग जमे उत्तेजना के साथ अभिनय कर रहे थे। उनकी भाषा, सम्भाषण गतिविधि हाव-भाव, हास्य लास्य—सबने जैसे दर्शकों के मन को प्रफुल्ल बना दिया। कभी हल्की हँसी, कभी जोर की हँसी, कभी अट्टहास ने समुद्र-तरंगों की तरह पूरे प्रेक्षागार को हिल्लोलित कर दिया। और हिल्लोल उठा लेबेदेव के मन में भी। सफल, सफल, सफल! पहला दृश्य सफलता के साथ पूरा हुआ। दर्शकों के बीच भी उसकी प्रतिक्रिया खूब अच्छी रही। दूसरे दृश्य में चम्पा ऊपर के बरामदे से अभिनय करेगी। मंच पर उतरने से पहले उसने दुर्गा के चित्र से माथा लगाया, गोलोक को प्रणाम किया। उसके बाद उसका सहज-मुक्त अभिनय! नायक भोलानाथ के वेश में विश्वम्भर था। प्रेमपागल नायक ने नायिका की दासी कहने की भूल की। नाटिका जम उठी। इस दृश्य के समाप्त होने पर चम्पा दौड़ी आयी। जाड़े की रात में भी उत्तेजना से बदन पर पसीना ही-पसीना, ओठ पर अभी भी पसीने की बूँदें जमी हुई थीं। उसने कहा "माँ री पहले-पहल तो मुझे डर लगा था, लेकिन उसके बाद जरा भी डरी नहीं। इस तरफ देख पायी कि मेरिसन भी आया है। साहब, तुमने उसको आमन्त्रित किया था क्या?"

हीरामणि पास ही थी, बोल उठी, "साहब क्या आमन्त्रित करेंगे? वह

ललमुहा मरा नाच रग देखने के लिए टिकट खरीदकर आया है।"

चम्पा बाली, 'हीरादीदी, तू उधर खूब अच्छी तरह आख मार मारकर रँगरेली करती है, क्यो ?"

तीसरे दश्य मे बीच बीच मे हास परिहास का पुट लिये नाटिका की सुखात परिणति आ गयी। अभिनय पूरा होने के बाद पदा उठा। नेवदेव को बीच म रखकर अभिनता-अभिनत्रिया ने दशको का अभिवादन किया। दशका ने देर तक तालिया बजाकर अपनी गुणग्राहकता का परिचय दिया। दशको म से किसी न फूला के गुच्छे मच की ओर फेंक दिये।

बाहर मच के द्वार के पास उत्साही दशको का दल अभिनेता-अभिनत्रियो साथ अतरग होना चाहता है। चुन-चुनकर कुछ लोगो को भीतर आने दिया गया। टाउन मजर स्वय उपस्थित। लेबेदव को अपन हाथ से गुलदस्ता भेंट किया। सर रावट चेम्बस ने भी फूल भेजे हैं।

किन्तु लेबेदेव ने सभी अभिनेता-अभिनेत्रियो के लिए उसी रात खास तरह के उपहार जुटा रखे थे। सोना-चादी के तरह तरह के आभूपण—अगूठी, कगन, बाजूबन्द आदि। प्रसन्न मन से लेबेदेव एक एक कर सबको वह उपहार देने लगा। रमणियो म से हीरामणि ने कणफूल, अतर ने बाजूबद, कुसुम न कगन पाये। और सबसे अन्त मे चम्पा के लिए उपहार। बक्स खोलकर लेबेदेव ने एक सोने का मटरमाला (तुलसीदाना) निकाला। चम्पा के गले मे उसे डालते हुए वह बोला, "इसे लेकिन अपना रुपया देकर ही गढवाया है। यह चोरी का माल नही है।"

चम्पा ने मटरमाला को अपने हाथ से छाती पर दबा लिया।

वे सभी लोग अपनी साज-सज्जा बदलने म व्यस्त हो गये थे। ऐसे समय मे स्टेज के बाहरी द्वार पर कोलाहल सुनायी दिया। कोई साहब दरबान के साथ बुरी तरह उलझ रहा था। साहब सज्जा कक्ष मे घुसना चाहता था, लेकिन वह रोक रहा था। एक कायकर्ता ने दौडकर खबर की। लेबदेव न निर्देश किया कि वह पता लगाये—कौन साहब है ? क्या चाहता है वह ?

कायकर्ता ने कुछ देर बाद सूचित किया, "साहब फूलो का गुलदस्ता किसी महिला को देना चाहता है।"

"क्या नाम है ?"

"साहब का नाम मेरिसन है, महिला का नाम बताया नही।"

हीरामणि बोली, "अहा, आने दो, आने दो।"

मेरिसन जरा बाद ही हाजिर। चेहरे और आँखो पर उल्लास भरा कौतू-

हल। हाथ में एक बड़ा-सा फूलों का गुलदस्ता। सज्जा-वस्त्र की विचित्रता से वह कुछ स्तम्भित सा हुआ, फिर लेबेदेव को देख सहृदयता से बोला "काग्रेच्युलेशन्स मिस्टर लेबदेव। दि शो वाज मारवेलस!"

अपना हाथ उसने बढ़ा दिया मिलाने के लिए। लेबदेव ने खुशी खुशी हाथ मिलाया।

मरिसन ने कहा, 'फूलों का गुलदस्ता सजाकर आने में कुछ देर हो गयी। अपनी पसन्द के अनुसार इस भेंट करने की तुम्हारी अनुमति क्या मुझे मिल सकती है?"

लेबदेव ने प्रसन्नता के साथ कहा, अवश्य अवश्य!'

हीरामणि उत्सुक हो उठी।

किन्तु मेरिसन ने एक बार उसकी ओर देखकर आँखें फिरा लीं। बोला, "कहाँ है वह लाख लड़की जिसका नाम सुखमय है?"

चम्पा जरा ओट में ही थी। उसे देख पाते ही वह उल्लास से चीख उठा, "दयर शी इज। डार्लिंग दिस इज फॉर यू!'

काँपते हाथों से चम्पा ने फूलों का गुलदस्ता ले लिया।

मेरिसन अस्फुट स्वर में बोला 'यह, सिर्फ यह अपने रुपये से खरीदकर लाया हूँ। चोरी का माल नहीं।"

चम्पा आवेगवश थरथराकर काँपने लगी।

सहसा सबके सामने ही चम्पा को जकड़कर मरिसन ने चूम लिया। चम्पा ने कोई भी बाधा नहीं दी। फूलों का गुलदस्ता उसके हाथ से थाम ही गिर गया। हीरामणि और स्थिर नहीं रह पायी। धरती पर गिरे फूलों के गुलदस्ते पर बार बार लात मारकर तेज कदमों से वह वहाँ से चली गयी।

प्रथम अभिनय की सफलता ने पूरे शहर के रसिक समाज में तहलका मचा दिया था। दर्शकों की चर्चा से सुख्याति जनसाधारण तक फैल गयी थी। टिकट की माँग करनेवाले इतने थे कि लेबेदेव को लगा, और भी बड़ा थियेटर भवन तैयार कर पाता तो अच्छा होता। सिर्फ तीन सौ लोग किसी तरह बैठ सकते हैं। पहली अभिनय रात्रि में इतने दर्शक आये थे कि कई लोगों को बैठने की सुविधा नहीं मिली। इसको लेकर दबी चर्चा सुनी गयी थी। तो भी उसने जोर नहीं पकड़ा, इसलिए कि देखने सुनने की बातें चित्त को लुभानेवाली थीं। हँसी के हिलोर में लोगों ने शारीरिक असुविधा का ख्याल ही नहीं किया। द्वितीय अभिनय के समय इस बात को दृष्टि में रखना आवश्यक हो गया। दूसरी बार लेबदेव पूरे नाटक का अभिनय करायेगा—बंगला, सूर और अंग्रेजी भाषाओं

मे। पात्रो की सख्या भी अधिक। मच और भी लम्बा रहने पर अच्छा होता।

किन्तु और भी बडे प्रेक्षागृह की मुख्य बाधा थी आर्थिक खीचतान। केवल निज के रुपये लगाकर और ऋण लेकर एक अच्छे थियेटर का निर्माण करना एक दुस्साध्य काम है। फिर भी उसने इस बडी आशा से इसमे हाथ डाला कि गवनर जनरल शायद उसे अग्रेजी थियेटर की अनुमति दे देंगे। लेकिन वह अनुमति अभी तक प्राप्त नही हुई। लेबेदेव को मिस्टर जस्टिस हाइड से सूचना मिली कि पहली रात के अभिनय की सुख्याति गवनर जनरल के कान तक गयी है। किन्तु अग्रेजी थियेटर से सम्बद्ध अनुमति के मामले मे वह अभी तक कुछ तय नही कर पाये हैं। एक खास प्रभावशाली दल इसका विरोध कर रहा है। देखें कहा का पानी कहा पहुचता है!

और जगन्नाथ गागुलि का असहयोग जरा भयकारक है। लेबेदेव ने उस दिन उस बाबू को जरा कठोरता से ही गालिया सुनायी थी। ऐसी मीठी कडवी बातें पहले भी हो चुकी हैं। हा, जगन्नाथ गागुलि उन सब बातो को लेता नही। लेकिन उस दिन उसके झूठ के पकड मे आने के बाद से वह आया ही नही, लेबेदेव ने यद्यपि उसके पास निमन्त्रण पत्र भी भेजा था। वह नालिश करने की धमकी दे गया था। सचमुच कुछ रुपये उसके बाकी हैं, लेबेदेव को भी उसमे कुछ मिलने है। उसने मुशी के पास से खाता मगवाकर देखा। सच ही जगन्नाथ महाजन है। किन्तु महाजन और भी अनेक हैं। ठेकेदार, इट लकडी पहुचाने वाले, कपडे के दूकानदार, स्वणकार—और भी कई, खासा कई हजार रुपये का ऋण। सभी लोग थियेटर की सफलता की ओर मुह किये चुप लगाये हुए थे। दो चार लेनदारो ने इसी बीच तकाजे शुरू कर दिय थे, किन्तु प्रथम अभिनय रात्रि मे जो आय हुई, ऋण चुकाने के लिए बिल्कुल ही पर्याप्त नही थी। लेबेदेव ने अलेक्जेण्डर किड, ग्रेनविल आदि साहबा का अच्छी खासी रकम कज दी थी, लेकिन कज देना भी मुसीबत बुलाना है। प्रभावशाली अग्रेज अफसर अगर सचमुच नजर बदल लें तो लेबेदेव किसके भरोसे रावय के साथ सघप करेगा? ऐसी अवस्था मे जगन्नाथ गागुलि का मामूली सा ऋण एक बडा बोझ है।

और हृदय की आकुलता! लेबेदव की आयु उसे सहन योग्य हो चुकी है। आयु लगभग छियालिस वप, लम्बे समय तक गम देश मे रहने से उसके चेहरे पर प्रौढत्व की छाप जरा जल्दी आयी थी। कान के पास बालो को सफेदी पकड चुकी थी। सिर के ऊपर बाल पतले हो चुके थे। कामना के प्रवाह मे मन्थरता दिखायी दे रही थी। नयी तरुणाई रहने पर वह निस्सन्देह चम्पा के

साथ इतना सयत व्यवहार नही रख पाता। उस दिन उसकी आखो के सामन मरिसन न चम्पा को चूम लिया, दस वष पूव होता तो इस अवस्था म वह शायद प्रतिद्वन्द्वी को घूस मार ही बैठता।

लेकिन मिस्टर स्फिनर न एक दिन मरिसन को घूस मारे थ। रावथ के विफल अभियान के वाद किसी विपत्ति की आशका स लवदव ने चम्पा पर कडी निगरानी रखन का निर्देश स्फिनर को दिया था। तव स स्फिनर ही चम्पा को साथ ले आता और पहुचा देता। इसस मेरिसन को चम्पा के साथ वात चीत करने का सुयोग न मिलता। एक दिन सन्ध्या म घर के अन्दर दाखिल होत समय सहसा मरिसन न आकर चम्पा का हाथ पकड लिया। चम्पा ने एक झटके से हाथ छुडा लिया।

इसको लेकर स्फिनर के सामन उनम कहा सुनी छिड गयी। चम्पा वोली, तुम वमतलव मुझे परेशान मत करो। मुझे तुम पा नही सकत।'

मेरिसन ने कहा "तो फिर फूलो का गुल्दस्ता हाथ म लकर मुझे चुम्वन क्यो दिया तून ?

"वह मेरी मर्जी। कहकर चम्पा तजी से घर के दरवाजे म घुसने लगी। मरिसन ने उस वाधा दी।

चम्पा बिगडकर वोल उठी मिस्टर स्फिनर तुम इस जान खा रहे आदमी को सभालो।'

दूसरे ही क्षण स्फिनर उन दोनो क बीच आकर खडा हो गया। मरिसन घणा स मुह बिचकाकर वाला, 'क्या एक चिचि से मरा अपमान कराना चाहती है ?'

चिचि' हुआ ईस्ट इडियन अर्थात दोगली जाति के सम्वन्ध म एक अपमान जनक शब्द।

चिचि शब्द सुनकर स्फिनर के माथ पर आग चढ गयी, वह अपन को सयत नही रख पाया। मेरिसन को तडाक स एक घूसा मारत हुए वोला, 'टक दिस यू ब्लडी लैंड आफ ए चिचि।

मेरिसन भी छोडनवाला जीव नही। दोनो के बीच भारी मुष्टियुद्ध शुरू हुआ। रास्ते पर भीड जमा हो गयी। राहगीरो की सहानुभूति स्फिनर पर थी। एक मामूली फिरगी एक साहव के साथ मारा मारी कर रहा था। उसी दृश्य का उस झुटपुटे म व मजा ले रह थे। जीतता अन्त म मेरिसन ही अगर फिरगी को पस्त होत देख पास के दो लोग वल्पूवक उन्ह छुडा न देते। सकट देखकर चम्पा कव घर म जा घुसी थी इसका ख्याल ही याद्धाओ

को नही हुआ।

स्पिनर ने इस घटना का विवरण देते हुए कहा, "वेल, मिस्टर लेवदेव, पता है क्या मिस चम्पा ने मिस्टर मेरिसन को घर म घुसने दिया ?"

"क्या जानू ? नारी के मन का समझना कठिन है।"

चम्पा न खुद ही अपने मन की बात खोलकर बतायी। घटना इस प्रकार थी कई दिनो के विश्राम के बाद फिर रिहसल के लिए जमात जुटी थी। प्रथम अभिनय रात्रि के बाद यह पहला जमाव था। ज्यादा देर वे गपशप ही करते रहे। लेबेदेव अपने आफिसवाले कमरे मे खजाची के साथ बैठकर लेन दारो से निबट रहा था। देनदारी अधिक। धीरे धीरे चुकायी जा रही थी। इधर द्वितीय अभिनय रात्रि के लिए फिर तैयारी होनी है। इस बार का पूरा नाटक मोहनचद्र बाबू के छद्मवेश मे सुखमय रूपी चम्पा के द्वारा ही शुरू होगा। बँगला, मूर और अग्रेजी भाषाओ का मिला जुला अभिनय। अभ्यास-रिहसल खूब अच्छा ही कराना होगा। लगातार नियमित अभिनय नही होने पर ख्याति मलिन पड जायेगी। ऐसे ही समय, बिना कोई अनुमति लिये, मेरिसन सीधे आफिस के कमरे मे आ घुसा।

'मिस्टर लेबेदेव," मेरिसन स्वाभाविक स्वर मे बोला "अपने खजाची से जाने को कहो, मुझे कुछ गोपनीय बातें कहनी है।'

खजाची चला गया।

"लुक, मिस्टर लेबेदेव," मेरिसन ने कहा, "तुम एक यूरोपीय हो, मैं भी एक यूरोपीय, तुम इस तरह काले आदमियो के सामने मुझे क्या अपमानित करवाते हो ?'

"मैं अपमान करवाता हूँ ?"

'तो क्या, नही ? तुम्हारा बढावा नही रहे तो क्या वह काली छोकरी मुझे दुतकार देन का साहस कर सकती है ? तुम पीछे नही रहो तो क्या वह कम-बख्त चिचि मुझ पर हाथ छोडने की हिमाकत कर सकता है ?"

'विश्वास करो, मैं इन सबके पीछे नही। मैं थियेटर करता और कराता हूँ। मैं इश्क का सौदागर नही हूँ। लेकिन तुम इतनी स्त्रिया के रहते उस अधमैली स्त्री के पीछे क्यो फिर रहे हो ?"

"वही तो समझ नही पाता। उस ब्लैक छोकरी मे एक ऐसा आकर्षण है जिसे मैं व्यक्त नही कर सकता। कितनी ही स्त्रिया का साथ किया, किन्तु उसके साथ के लिए छटपटाता रहता हूँ। सच बताओ तो, तुमने उसके साथ रात बितायी है ?"

"नहीं।"
"लो देखो, जरूर वह तुम्हे नाक मे रस्सी देकर नचाती है।"
"किसने कहा ? मुझे क्या दूसर काम नही ?"
"दूसरे सार काम भूल जाओग अगर उसके सहवास का स्वाद एक बार पा लो। नही पाया ?"
"कहता तो हूँ, नही।"
"बरजोरी से भी नही ?'
"नही, मैं जानता हूँ कि वह तुम्हे चाहती है।"
"सच ?'
"हाँ, मुझसे अनेक बार उसने कहा है।'
"सरासर झूठी बात।'
हो सकता है। उससे पूछो।"
"कैसे पूछू ? मुझे तो वह पास ही नही फटकने देती।"
"मैं बुलाता हू, मेरे सामने पूछो।"
'तुम बुलाओगे ? बुलाओ।"
लेबेदेव ने सेवक को बुलाया कहा, 'मिस चम्पा से कहो, साहब ने सलाम भेजा है।"
जो हुक्म' कहकर सेवक चला गया। मेरिसन प्रतीक्षा मे छटपट करने लगा।
कुछ ही देर मे चम्पा आयी। मेरिसन को देखने पर उसके मुख से किसी भी तरह का भाव परिलक्षित नही हुआ।
'मिस चम्पावती' लेबेदेव ने कहा 'मिस्टर मेरिसन तुम्हारे साथ बात करना चाहते है। गोपनीय बात, मैं बगलवाले कमरे मे जाता हूँ।'
"नही साहब," चम्पा बोली 'तुम रहो।'
एक विचित्र भावबोध! दोनो एक ही नारी से याचना करत हैं, एक मूक भाव से और दूसरा प्रकटत। वह दुर्जेया नारी क्या आज उत्तर देगी ?
मेरिसन का रूप नय प्रेमी सा है। आवगरुद्ध कण्ठ, अस्फुट स्वर मे उसने कहा "चम्पा, माइ स्वीटी तू जानती है कितना चाहता हू मैं तुझे! तब भी तू क्यो मुझे ठुकरा देती है ? सचमुच मैंने तुझ पर अन्याय किया है। तुझसे क्षमा चाहता हू। तुझे पाये बिना मैं झुलसता रहता हूँ। इतनी स्त्रियो के साथ मैं मेलजोल रखता हू लेकिन तेरा अभाव मैं किसी भी तरह भुला नही पाता। चम्पा, माइ डार्लिंग, क्या तू मुझे अपने पास नही आने देती ?"

मेरिसन की वातो म आन्तरिकता की ध्वनि थी। उसने चम्पा का हाथ पकड लिया, किन्तु वह जड प्रतिमा की तरह खडी रही, कुछ भी उत्तर नही दिया।

मेरिसन कहता गया, "जानती है, तेरे कारण पत्नी के साथ मेरी बनती भी नही ! तरे लिए मैं अपनी पत्नी को छोड बठा हूँ। बोल, तुझे फिर कब पाऊँगा?'

चम्पा अपना हाथ छुडात हुए घूमकर खडी हो गयी, बोली, "मिस्टर रावट मेरिसन, तुम मुझे उसी दिन पाओगे जिस दिन गिरजाघर मे धमपत्नी के रूप मे मुझे स्वीकार करोग।"

चम्पा की इस निष्कम्प वाणी ने कमरे की नीरवता को खण्ड-खण्ड कर दिया। जिस दिन तुम गिरजाघर मे धमपत्नी के रूप मे मुझे स्वीकार करोगे ! धर्मपत्नी के रूप मे स्वीकार करोगे ! धमपत्नी के रूप मे स्वीकार करोगे !

असम्भव,' मेरिसन न कहा, "यह असम्भव शत है। अपनी पत्नी के रहते मैं कैसे तुझे धमपत्नी के रूप मे स्वीकार करूँ ?"

"मेरी सिफ यही एक शत है।"

'चम्पा, डियरेस्ट हाट, तू अनजान मत वन। जानती है तू कि मैं हिन्दू नही, मैं हिन्दू पुरुषो की तरह पचास साठ शादियाँ नही कर सकता।"

"लेकिन अनेक रखैलें रख सकत हो तुम लोग, और रखैल बनने की मेरी साध नही। बॉब मरिसन, अब साध तुम्हारी धमपत्नी होने की है।"

'चम्पा डार्लिंग, मैंने क्या तुझे कुछ नही दिया ? प्रणय सुख नही दिया आनन्द नही दिया, पुत्र के रूप म सन्तान नही दी ?"

"हाँ, दी है' चम्पा रुद्ध कण्ठ से बोली, "लेकिन जारज सन्तान दी है। अपमान और अपवाद दिया है, अवना, लाछना और सजा दी है।"

चम्पा न हठात अपनी पीठ पर से कपडा हटा दिया और नगी पीठ को मेरिसन की ओर कर दिया। उसकी कोमल पीठ पर लम्बे लम्बे क्षत चिह्न विचित्र लग रह थे।

चम्पा वोली, "बॉब साहव तुम जब इन क्षत चिह्नो को हाथ से सहलाओगे तो मेरा सारा शरीर ज्वाला स झुलसा करगा, तव तक जब तक कि मैं तुम्हारी रखैल रहूँगी। वह ज्वाला तभी शान्त होगी जब मैं तुम्हारी धमपत्नी बनूगी।'

चम्पा धीरे धीरे किन्तु दृढ कदमो से वहा से चली गयी, अवाक् मेरिसन विस्मय के साथ उसके जाने के पथ को निहारता रहा।

उसके वाद बोला, 'विच् ! समझता हू मैं, मिस्टर लेवेदव, क्या तुम्ही ने इस औरत का माथा खराव कर रखा है ? मैं अपनी गोरी पत्नी को डाइवोस

करके इस काली औरत से ब्याह करूँगा ? समाज म मुह कस दिखाऊँगा ?"।
मेरिसन गुस्से म बाहर चला गया।

आठ

सन् १७९५ का क्रिसमस आ गया। कलकत्ता शहर के साहबी क समाज म महोत्सव है। गिरजाघर म प्राथना के लिए आम तौर पर आधा दजन पालकियां भी नही हाजिर होती, किंतु क्रिसमस का उत्सव धूमधाम से होता है। यहाँ पर देशी प्रभाव पडा है। साहबो के घरो क फाटक पर दोनो तरफ केले के पौधे गाडे जाते हैं, फूलो और पत्तो से फाटक को अच्छी तरह सजाया जाता है। बडे लाट जाने माने लोगो को प्रात कालीन नाश्ते पर आमन्त्रित करते है। लाल दीघी से दनादन तोप दागे जाते है। दोपहर म शानदार भोज। लम्बे पात्रो मे लाल मदिरा ढाल ढालकर सभी लोग पूरे वष भर का दुख शोक धो डालते हैं। सन्ध्या से लेकर सारी रात चलता है नाच गान।

लालदीघी के कमान ने सुबह से ही अनेक तोप दागे। उसके धमाके की आवाज ने कलकत्ता शहर को एक छोर से दूसरे छोर तक कँपा दिया। सुबह से ही लेबेदेव न भेंट की अनन्त डालिया दी और ली। उपहारो का पारस्परिक लेन देन उत्सव का अग है। प्रभावशाली अग्रेजो के यहा लेबेदेव न डालिया भेजी। फल फूल, भाति भाति की मदिराएँ। मिस्टर और मिसज ह की डाली विशेष रूप मे दशनीय थी। मिस्टर हे अग्रेजी सरकार के एक प्रमुख सचिव है। मिसेज एलिजाबेथ हे सगीतरसिक है। उनके यहा स एक गुप्त लिखित सन्देश आया—' मित्र, हताश नही होना, आवेदनपत्र अभी तक अस्वीकृत नही हुआ है।"

बड लाट सर जान शोर के पास अग्रेजी थियेटर की मजूरी क लिए लेबेदेव ने जो आवेदन किया था, वह अभी तक मजूर या नामजूर नहीं हुआ है। लेबेदेव के दिल म आशा बँधी।

नववष का नूतन उपहार आया—गवनर जनरल की अनुमति। महामहिम सर जान शोर ने प्रसन मन से अनुमति दी है कि गरासिम लेबेदेव कलकत्ता शहर मे अग्रेजी नाटक का अभिनय करा सकते हैं।

कलकत्ता शहर म गेरासिम लेबेदेव अग्रेजी थियेटर खोलेगा! सुनो स्विज,

सुनो जोसफ बैटल, तुम लोगो के जी-तोड बाधा डालने पर भी तुम्हारे ही प्रधान शासक ने एक विदेशी रूसी को तुम लोगो की भाषा मे नाटक खेलने की अनुमति दी है। जो बगाली अभिनेता-अभिनेत्रियो के द्वारा बँगला भाषा म अभिनय कराकर नाटक को जमा सकता है, वही विदेशी अब अग्रेजी नाटक से कलकत्ता शहर के यूरोपीय समाज को मात कर देगा।

उत्सव मनाओ, उत्सव। लेबेदेव का मन खुशी से लबालब है। बात की-बात मे उसने किरानी को बुलाकर हुक्म दिया—"भागीरथी मे नौका विहार की व्यवस्था करो, इसी समय!'

बात-की-बात मे पाच छ बजरे भाडे पर ले लिये गये। शीतकालीन हवा मे विचित्र निशान फहरा उठे। प्रत्येक को फूलो और लता पत्रो से सजाया गया। बजरे की छत पर मेज कुर्सियो की कतारें लगायी गयी। एक बजरे पर स्वय लेबेदेव और उसकी मुख्य सहचरिया। तीन बजरो पर वादक दल—गगा के वक्ष को गीतवाद्य से मुखरित करने के लिए। दो बजरो पर भोजन पान की सामग्री लेकर सेवकगण रहगे। लेकिन इस आनन्दोत्सव मे गोलोकनाथ दास ने योग नही दिया। अग्रेजी थियटर के बारे मे वह बाबू उदासीन है, इसीलिए शायद इस उत्सव म उसका उत्साह नही। और, योग नही दिया चम्पा ने। वह बोली कि उत्सव का समय लम्बा है। उतनी देर तक शिशु पुत्र को घर मे छोडे रखना उसके लिए सम्भव नहीं। सन्ध्या के आनन्दोत्सव मे चम्पा की अनुपस्थिति लेबेदेव के मन को बार-बार खटकती रही। तो भी कुसुम, हीरामणि, सौदामिनी आदि के सान्निध्य, बातचीत, हास्यगान, चुहलबाजी ने नौका विहार को जमा दिया।

सूय अस्त हुआ। कागज स बने रगबिरग चीनी फानूसो की कतारो म मशालची ने मोमबत्तिया जला दी अधकार मे गगा के वक्ष पर वे खूब सुदर लग रही थी। तटवर्ती पालवाले जहाजो पर भी प्रदीपमालाएँ थी। कुहास के बीच होकर तैरता आ रहा था मधुर वाद्यस्वर।

थोडी देर बाद कुसुम बोली, 'माथा भारी ह। मैं जरा नीचे के कमरे म जाती हू।'

वह चली गयी काफी देर होने पर भी आयी नही। किसी ने कहा, 'विद्या-सुदर का गान होता तो ठीक था।'

'मिस कुसुम, मिस कुसुम!' वे लोग आवाज दने लगे।

कोई भी सकेत नही मिला। हीरामणि बोली, "कुसुम जरूर सो गयी है।"

लेबेदेव प्रसन्न मन से बोला, 'ठहरो, उसे मै गोद मे उठा ले आता हूँ!"

हीरामणि ने नशे के झोंक में कोई अदनीन बात कह दी।

लेवदेव बजरे के कमरे में गया खूब सुसज्जित कमरा। गद्दीदार बिछी फश, तकिये पर माथा रखे शिथिल पड़ी हुई थी कुसुम। अस्तव्यस्त वेश। मोमबत्ती के आलोक में अस्पष्ट शरीर और भी ~मणीय हो उठा था। लेवेदेव को चम्पा की याद आयी। जाने दो उसे।

"कुसुम ' निद्रिता का हाथ पकड़कर लेवेदेव ने पुकारा, "कुसुम, उठो।"

कुसुम ने ताका लेवेदेव को देखकर उसने उठने की चेष्टा नहीं की, बोली, "बैठो।'

लेवदेव बैठ गया, बोला, 'क्या तुम्हारी तबीयत बहुत खराब है ?'

"शरीर नहीं, मन। कुसुम बोली।

"आज आनन्द के दिन मन खराब ! क्या, क्या ?'

'तुम लोगों को छोड़कर जाना होगा इसलिए।'

"इसका मतलब ?"

'जगन्नाथ गांगुलि अब और तुम लोगों के पास आने नहीं देगा।"

जगन्नाथ गांगुलि के साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? उसकी बात ही तुम क्या सुनोगी ?

'मैं उसकी रखैल हूँ।'

"कब से ?"

'उसी दुर्गापूजोत्सववाले बहू-नाच के बाद से। मेरे लिए उसने शोभाबाजार में एक घर भाड़े पर ले रखा है। खूब खर्च करता है। सिर्फ नाचने गाने और अजाने अचीन्हे लोगों के साथ रहना अच्छा नहीं लगता। उम्र बीतती जा रही, मन कुछ स्थिरता चाहता है। साहब, तुम तो मुझे रख ही सकते थे !"

लेवेदेव बोला, 'मुझे कौन रखे इसका ठिकाना नहीं !"

"जानती हूँ, तुम्हारा मन चम्पा की ओर है। लेकिन वह बड़ी तेज औरत है उसे तुम नहीं पा सकते। उसका मन भरिसन पर टिका है।"

लेवदेव ने प्रसंग को बदलने के लिए कहा 'तो क्या तुम सचमुच हमारे दल को छोड़ जाओगी ?"

'जाने की इच्छा नहीं' कुसुम बोली "इसको लेकर बाबू से झगड़ा होता है। लगता है अन्त में जाना ही होगा। सिर्फ एक बात कहे जाती हूँ, तुम आदमी अच्छे हो किन्तु चालाक नहीं हो। वही अंग्रेजी थियेटरवाले इस बार तुम्हारे साथ जोर आजमा रहे हैं। बातों ही बातों में बाबू से यह खबर जान ली है। ठेकेदारी के लोभ से बाबू उन लोगों के साथ जा चिपका है, सावधान !"

किस तरफ से सावधान रह, लेबेदेव कुछ भी समझ नही पाया। यही कि रावथ का दल लाल पीला होगा। और दल को तोडने की चेष्टा को छोड और कुछ भी नही करेगा। कुसुम शायद चली जायेगी। गोलोकनाथ दास के साथ इस विषय पर चचा हुई थी। कुसुम के जान को लेकर उतनी चिन्ता नही। ऐसी गायिका की खोज निकालना उतना कठिन नही जो विद्यासुन्दर का गान गा सके। अभिनेता भी सम्भवत मिल जायेंगे। किन्तु अभिनेत्रिया को नये सिरे से सिखा पढा लेना मुश्किल है। लेबेदेव ने स्किनर से चम्पा पर कडी निगाह रखने को कह दिया।

इधर अग्रेजी थियटर के लिए तैयारी करनी पडी थी। नये नये अभिनेताओ और अभिनेत्रियो की तलाश हुई। यहा भी वही समस्या। अभिनेता मिलते है, अभिनेत्री नदारद। सल्वी नाम के एक अग्रेज तरुण ने दल म भाग लिया। तरुण की बातचीत अच्छी। अभिनय करने की धुन सवार है उस पर। एक दो बार शौकिया अभिनय किया था। माग भी कोई विशेष नही। जो लेबदेव दगा उसीमे सन्तुष्ट। नीलाम्बर वण्डो तो बेहद खुश है, अग्रेजी थियेटर मे उसको वेयरा खानसामा का पाट देने पर भी वह हँसते हँसते काम करेगा। उसने फिर कहा, "नेकी नेकी ब्लैकी गल के साथ अभिनय म मजा नही, मोम जैसी मेम रह तो अभिनय म सुविधा हो।'

रुपया चाहिए आदमी चाहिए। कलकत्ता थियेटर के साथ होड लेना लडका का खेल तो नही। बगला थियेटर मे नवीनता की रौनक है। थोडी बहुत कसर रह जाने पर भी लोग त्रुटिया का ख्याल नही करते। लेकिन अग्रजी थियेटर का मानदण्ड बहुत ऊचा है। कलकत्ता थियेटर से अच्छा कर दिखाना चाहिए। रुपया चाहिए आदमी चाहिए। रुपया चाहिए, आदमी चाहिए।

लेबदेव ने द्वितीय अभिनय-रात्रि निश्चित कर दी। माच १७९६। उस बार दशका की बडी भीड थी। इससे बहुत से लोगो को असुविधा हुई थी। इसीलिए इस बार उसने टिकट बचन की व्यवस्था बदल डाली। थियेटर भवन मे सीधे टिकट बिक्री न कर उसन अग्रिम चन्दे उगाहने की प्रथा चालू की। टिकट का मूल्य भी इस बार बढा दिया। चार रुपये और आठ रुपये न करके सारे टिकट के शुल्क की दर एक मोहर कर दी अथात सोलह रुपये। दशक-सीटो मे भी उसन कमी कर दी। इस बार सिफ दो सौ व्यक्तिया के लिए व्यवस्था, किन्तु प्रसन्नता की बात यह कि देखते देखते नाटयरसिक लोग शुल्क भेज-भेजकर टिकट ले जाने लग। केवल एक दिन कलकत्ता गजट मे विज्ञापन निकला। बात-की बात में सारे टिकट खतम हो गये। इतने जनसमादर से उसका

बेहद उल्लसित होना स्वाभाविक था।

लेकिन बिना मेघ के ही वज्रपात।

द्वितीय प्रदर्शन के एक दिन पहले सन्ध्या समय बँगला थियेटर रिहर्सल जोरों से चल रहा था। कुसुम थी, चम्पा थी, हीरामणि, सौदामिनी, नीलाम्बर और सभी अभिनेता अभिनेत्री थे। अच्छा आनन्दमय वातावरण था। ऐसे ही समय मिस्टर डिसूजा, चम्पा का पड़ोसी, जो संवाद लेकर आया उससे सभी स्तम्भित हो उठे।

डिसूजा ने उत्तेजित अवस्था में जो सूचना दी उसका आशय यह था

सन्ध्या के कुछ ही बाद एक हिन्दुस्तानी ने दरवाजे की साँकल खटखटायी। एक चिराग लिये डिसूजा ने दरवाजा खोल दिया। साथ ही साथ माथे पर एक भारी वस्तु के आघात से डिसूजा चित हो गया।

जब होश आया तो आँख खोलकर उसने देखा कि उसकी पत्नी उत्सुक आँखों से चेहरे को निहार रही है। उसके माथे पर गीली पट्टी। दासी ताड़ के पत्ते के पंखे से हवा कर रही थी। लालटेन लिये और भी अनेक पड़ोसी। उस तरफ शोरगुल शुरू हो गया था। बातें तैरते तैरते कानों में आ रही थी—चोर, डाकू भाग गया।

डिसूजा कुछ स्वस्थ हो उठ बैठा 'क्या बात है?" मिसेज ने कहा, "भयंकर काण्ड! चार पाँच लोग डिसूजा को बेहोश कर सीधे ऊपर चले गये थे, मिस चम्पावती के घर में। ऊपर धरों की धम धम आवाज सुनकर मिसेज डिसूजा को आशंका हुई। उठकर बाहर आते ही अचेत डिसूजा को देखा। मिसेज तो भय से चीखने लगीं। चीख सुनकर मुहल्ले के लोगों ने हल्ला मचाया, उसी बीच वे लोग दौड़कर नीचे उतर आये। काले काले सपाट चेहरे, कौपीन के अलावा शरीर पर वस्त्र का एक टुकड़ा तक नहीं। आँरे अँधेरे में वे पहचान नहीं जा सके, सिर्फ उनकी नग्नप्राय देह चिपचिपाती हुई लगी। दो एक के हाथ में गठरियाँ थी। पड़ोसी उन्हें पकड़ने के लिए लपके थे, किन्तु उन आगन्तुकों ने सारे शरीर पर तेल मल रखा था। वे फिसलकर भाग गये, गली के मोड़ पर अंधकार में खो गये।

डिसूजा चलकर ऊपर गया। साथ में मिसेज और कुछ जिज्ञासु पड़ोसी थे। ऊपर जाकर उन्होंने वीभत्स काण्ड देखा। आततायियों ने चम्पा की बूढ़ी दाई माँ को बेहोश करके मुख हाथ-पैर बाँधकर छोड़ दिया था। घर-द्वार अस्तव्यस्त। थोड़े ही समय में वे लोग सारे साज-सामान उलट-पुलट गये हैं, कीमती चीजें जो जैसी थी सब ले गये हैं।

चम्पा न आशकित ही पूछा, 'मेरा बच्चा ?"

"नही है।"

"बच्चा नही है ?"

"वे लोग उसे भी चुरा ले गये है।"

"मेरा बच्चा नही है !" चम्पा आर्तस्वर मे चीख उठी। दूसरे ही क्षण वह सज्ञा खो बैठी।

समय नष्ट करने का नही। मूर्छिता की देखरेख की व्यवस्था करके लेबेदेव उसी क्षण डिसूजा, स्फिनर और गोलोकनाथ दास को साथ लेकर चम्पा के घर की तरफ निकला। बग्घीगाडी पर लदकर उसे मलगा की ओर हाका। मशालची मशाल लेकर साथ साथ दौड नही पा रहा था। जब वे मलगा आये ता देखा, गली मे भीड उस समय भी लगी हुई है। थाने से एक पुलिसमन और एक अफसर आये थे, पूछताछ करने और तलाशी लेने के बाद चले गये।

डिसूजा ने जो विवरण दिया था, चम्पा के घर की हालत ठीक वसी ही थी। बक्स पिटारे टूटे हुए, कुर्सी बेंच उलट पुलटे पड हुए। बिछावन की चादर छिन्न विच्छिन्न, चारो तरफ गड्ड मड्ड। शिशु की शय्या पर शिशु नही, सिफ पालतू काकातूआ चीख रहा था—'वेल्कम।' और उसके साथ साथ स्वर मिलाकर बूढी दाई मेरिसन को अनाप शनाप कोसे जा रही थी।

गोलाक दास ने कहा, "थाने पर जाने से पहले मेरिसन की खबर लेना ठीक होगा।"

लेबेदेव बोला, "वही अच्छा, वह आदमी तो धमकी दे ही गया था कि बच्चे को उठा ले जायेगा। हो सकता है उसी के घर म बच्चा हो।"

स्फिनर और डिसूजा वही उतर गय, गोलोक दास चम्पा को धीरज बँधाने के लिए थियटर को लौट गया। लेबेदव बग्घी को हाककर बठकखान की तरफ ले गया। मेरिसन का घर ढूढन म कुछ असुविधा हुई। घर अगर मिला भी तो पता चला कि दरवाजा खुलना ही मुश्किल है। उस इलाके म डाकुओ का भय है। देर तक आवाज लगाने पर लकडी के फाटक की एक फाक से एक नौकर ने कहा कि साहब घर म नही है।

आगन्तुक लेबेदेव को विश्वास नही हुआ। उसने कहा, 'मेम साहब हैं ? उन्हे सलाम बोलो, गेरासिम लेबेदव मिलना चाहता है।'

बहुत देर की प्रतीक्षा से ऊबकर वह अस्थिर हो उठा। यह देरी बहुत ही सन्देहजनक है। फिर आवाज लगाने पर नौकर ने इस बार फाटक खाला लेबेदेव ने मेरिसन के घर म प्रवेश किया। नौकर उसको बैठकखाने म ले गया।

जरा देर बाद ही मिसेज मेरिसन आयी, मोमबत्ती के प्रकाश मे दिखायी पडा—उसके स्वास्थ्य मे कुछ सुधार हुआ है।

"क्या बात है? इतनी रात को?" मिसेज मेरिसन ने जानना चाहा।

"मिस्टर मेरिसन कहा है?" लेबेदेव ने पूछा।

"पता नही।"

"इसका मतलब?" लेबेदेव को उत्सुकता हुई।

"मेरिसन ने तो कुछ दिनो से घर आना प्राय छोड ही दिया है।" मिसेज मेरिसन ने कहा, "मैं उसे उस डाइन के चगुल म छुडा नही पायी। आप भी नही।"

"मिस्टर मेरिसन रहता कहा है?"

"पता नही। जान, तुम जानते हो बॉब कहा रहता है?"

"जान नाम का साहब बगल के कमरे स आकर बोला, "कसाईटोला के रोजबड टैवन म। बिल्कुल ही विकट बदनाम जगह, कोई भी भद्र पुरुष वहा नहीं रह सकता।'

प्रौढ और भारी भरकम जान, चेहरा दपदप लाल। मिसेज मेरिसन न कहा, "मिस्टर लेबेदेव तुम्हारे साथ डाक्टर जान ह्विटनी का परिचय करा दू। पटना मे डाक्टरी करते थे। गर्मी बरदाश्त नही कर पाये। कलकत्ता भाग आये। एक पार्टी मे भेंट हो गयी। इन्होने ही मेरी जीवनरक्षा की है। इनकी चिकित्सा म अब म काफी अच्छी हो गयी हू।'

लेबेदेव बोला, "मिलकर प्रसन्न हुआ। आपका चेम्बर कहा पर है?"

डाक्टर ह्विटनी ने कहा "अभी तक चेम्बर लगाने के लिए सुविधाजनक घर मिला नही है। अभी मिसेज मेरिसन के ही घर मे हूँ।'

शिष्टाचार की बातो के लिए यह समय नही। लेबेदेव ने उन लोगो से विदा ली, बग्घी लेकर कसाईटोला के रोजबड टैवन की खोज म निकला।

रात्रि के अधकार मे भी रोजबड टवन को ढढ निकालन मे असुविधा नही हुई। उस इलाके की प्रसिद्ध जगह है। डाक्टर ह्विटनी ने ठीक ही कहा था, विकट बदनाम जगह। देश देश के नाविको की वहाँ भीड लगी रहती है। टूटी-फूटी मेज कुर्सिया, सस्ती देशी मदिरा की बास। निम्न वग की कृष्णकाया वारागनाएँ, मत्त पियक्कडों की चीख पुकारें गन्दी गाली गलौज, जल्दबाजो का हो हुल्लड—इन सबन परिवेश को नारकीय बना डाला था।

मेरिसन मिल गया। कोने की ओर एक मेज पर एक बोतल से देशी शराब पीते पीते वह नशे मे धुत्त होकर बैठा था। नशे की झोक मे वह लेबेदेव को

पहचान ही नही पाया। काफी देर तक आवाज लगाने का भी कोई नतीजा नही निकला तो टॅवन के एक छोकरे ने नशा टूटने की एक सहज व्यवस्था कर दी। हाथ के पास एक गिलास मे गन्दा पानी था। उसी को मेरिसन के माथे पर उँडेल दिया। खूब गाली-गलौज करने के बाद उसका नशा कुछ फीका पडा। अबकी वह लेबेदेव को पहचान पाया। उसने हार्दिकता से स्वागत किया, उसकी पीठ पर धौल जमाते हुए वही देशी मदिरा पीने का आह्वान किया। लेबेदेव ने औपचारिकता निभाते हुए सीधे प्रश्न किया, मिस्टर मेरिसन, तुमने अपने बच्चे को कहाँ खिसका दिया है?'

प्रश्न का अर्थ समझने मे मेरिसन को कुछ वक्त लगा। उसने सन्दिग्ध भाव से पूछा, 'मैंने? अपने बच्चे को खिसका दिया है? तुम क्या कहते हो मिस्टर लेबेदेव?"

लेबेदेव ने संक्षेप मे शाम की घटना को स्पष्ट किया। मेरिसन का नशा तब तक टूट चुका था। वह आशंकित होकर बोला, "कैसा सर्वनाश! किस कुत्ते की औलाद ने मेरे डार्लिंग ब्वाय को चुरा लिया?"

लेबेदेव ने पूछा, "क्या तुम कहना चाहते हो कि तुम अपने बच्चे को नही उठा लाये हो?"

"ईश्वर की दुहाई," मेरिसन ने कहा, "मैं इसके बारे मे कुछ भी नही जानता। आवेश मे एक दिन कहा था कि लडके को उठा लाऊँगा, किन्तु मा की गोद छुडाकर उसको रखूगा ही कहाँ? देखते हो कि मेरा खुद ही अपना ठिकाना नही, इस नरककुण्ड मे पडा हुआ हूँ।"

'क्यो पडे हुए हो?' लेबेदेव ने जिज्ञासा की, 'बैठकखाना मे तुम्हारा वैसा घर है।"

"मेरी पत्नी का घर," मेरिसन ने कहा, 'बहुत दिन हुए, वह घर छोड आया हूँ।"

"वहाँ जाते नही?"

'नही, वह असह्य लगता है। इसीलिए इस नरककुण्ड मे पडा हुआ हू। देशी मदिरा निगलता हूँ और अपनी काली होर् का सपना देखता हूँ।'

"लेकिन तुम्हारे बच्चे की खोज के बारे मे क्या होगा?'

"वही तो," सोच लेने के बाद मेरिसन बोला, "चलो, थाने पर चलें।"

थोडी ही देर मे दोनो जन थाना आये। उन लोगो की सारी बातें सुनकर दारोगा शिकायत दर्ज करने को तैयार नही हुआ। साफ साफ बोला, चोर को पकड ले आने पर हम सजा देते हैं, लेकिन हमारे द्वारा चोर को पकडना

सम्भव नहीं। कलकत्ता शहर में इस तरह की घटनाएँ हमेशा होती ही रहती हैं। कुछ दिन पहले ही चौरंगी-जैसी जगह से चार आदमियों ने एक मुसलमान के घर पर हमला बोलकर नारी का अपहरण किया।'

मेरिसन के जोर देने पर दारोगा ने कहा "आप लोगों को किस पर सन्देह होता है ?"

लेबेदेव मृदु स्वर में बोला कलकत्ता थियेटर के मालिक मिस्टर टामस रावथ पर।'

दारोगा चमक उठा कहा 'आप पागल हो गये हैं ? वह एक गण्यमान्य व्यक्ति हैं वह एक बच्चे को चुराने जायेंगे ? लगता है आप लोगों ने मदिरा की मात्रा बहुत ज्यादा ले ली है।"

आप विश्वास नहीं करना चाहते तो नहीं करें,' लेबेदेव ने कहा, 'मैं अपने ढंग से सन्देह का कारण बताता हूं। अपहृत शिशु की मां मेरे बंगला थियेटर की अभिनेत्री है। कुछ दिन पहले मिस्टर रावथ ने मिस चम्पावती से अनुरोध किया था कि मेरे थियेटर से वह सम्बन्ध तोड़ ले। मिस चम्पावती राजी नहीं हुई। मिस्टर रावथ उसको धमकी दे आये कि उसे अच्छा सबक सिखायेंगे। कल ही सन्ध्या समय मेरे थियेटर की द्वितीय अभिनय रात्रि का आयोजन है। इतने दिन रहते आज ही सन्ध्या में शिशु की चोरी हो गयी, इतने शिशुओं के रहते चुन छाटकर चम्पावती का ही शिशु चोरी चला गया। सन्देह का यह कारण क्या तर्कसंगत नहीं ?'

'आपने जो कहा वह हो सकता है,' दारोगा ने कहा, "मैं उससे भी बड़े सन्देहजनक पात्र को जानता हूँ।'

'कौन ? कौन ?"

'हमारे सामने बैठे हुए हैं, यही मिस्टर मेरिसन।"

मेरिसन ने प्रतिवाद किया 'आप कहना चाहते हैं कि मैंने अपने बच्चे की चोरी की है ?'

ठीक यही,' दारोगा बोला, इन्स्पेक्टर पड़ोसियों से सुन आया है। अपनी स्त्री के साथ आपकी बनती भी नहीं, उसे सजा देने के लिए आपने बच्चे को उठा लिया है। बच्चे की माँ अगर नालिश करे तो मैं आपको इसी समय गिरफ्तार कर सकता हूँ। अभी अच्छे भले खिसक जाइए।'

हताश होकर वे लोग थाने से चले आये, पुलिस की कोई सहायता उपलब्ध नहीं हुई। बल्कि व्यर्थ ही उधर से विपत्ति की आशंका थी।

अन्तिम चेष्टा के रूप में लेबेदेव ने कहा 'चलो, सीधे रावथ को जा पकड़ते

है। उसकी खुशामद करके बच्चे का उद्धार करें।"

लेकिन वहां भी तनिक भी सुविधा नहीं हुई। मिस्टर रावथ ने मुलाकात नहीं की। दरवान के मारफत कहला दिया कि जिसे जरूरत हो वह दूसरे दिन संध्या आठ बजे कलकत्ता थियेटर में मिले।

दूसरे दिन संध्या आठ बजे लेबेदेव के नाटक का द्वितीय प्रदर्शन शुरू होने की बात है। मनमानी असुविधा पैदा करने के लिए रावथ ने वही समय दिया था। क्या उसने सोच रखा था कि आनेवाले कल को बंगला थियेटर में अभिनय बन्द रहेगा? कोई आश्चर्य नहीं। हो सकता है आखिरी समय में अभिनय को रोक देना पड़े। नाटक की नायिका यदि इस गहरे शोक में अभिनय नहीं कर पाये तो थियेटर को बन्द करने के सिवा और कोई चारा नहीं। सद्य-पुत्रवंचिता जननी कैसे अभिनय करेगी, विशेष रूप से हास्य का अभिनय? कैसा सहज-सरल चक्र है! अभिनय के ठीक एक दिन पहले की संध्या में नायिका की सन्तान को उड़ा लिया गया, नायिका शोक में डूबी है, इतने थोड़े समय में दूसरी कोई व्यवस्था सम्भव नहीं, खासकर स्त्रीभूमिका में। इसलिए अभिनय बन्द! दर्शकों के सम्मुख माथा नत! अपमान! अर्थदण्ड! चामत्कारिक व्यवस्था! रावथ ने एक ऐसा रास्ता अपनाया जिससे सन्देह किसी भी तरह उसे छू न पाये, सन्देह करें भी तो उसके लम्पट और मद्यप पिता पर। रावथ की चतुराई इतने नीचे जा गिरेगी, इसकी आशंका लेबेदेव ने नहीं की थी। उसकी धारणा थी कि रावथ की दृष्टि चम्पा पर ही है। किन्तु एक युवती के अपहरण से शिशु का अपहरण और भी सहज काम है।

लेबेदेव बंगला थियेटर में लौट आया। मेरिसन ने साथ नहीं छोड़ा। वह चम्पा से मिलना चाहता है। थियेटर में सभी लोग होंगे तब भी वह उत्सुक हो बैठा था। लेबेदेव के लौट आते ही सभी लोगों ने समाचार जानना चाहा। उसके मुख पर निराशा के भाव देखकर वे लोग बहुत ही स्तब्ध रह गये।

चम्पा की चेतना काफी देर पहले लौट आयी थी। वह गोलोक दास के पास बैठी थी, उसकी वेदनासिक्त लाल लाल आँखें, खाया खोया-सा चेहरा। मेरिसन को देखकर वह जरा उत्तेजित होकर बोली, 'तुम—तुम ही इसके लिए उत्तरदायी हो।"

मेरिसन ने प्रतिवाद नहीं किया, कहा, "मैं—मैं ही इसके लिए उत्तरदायी हूं।"

सभी अचम्भित ! यह आदमी कहता क्या है ? मेरिसन बोला, "हाँ चम्पा डार्लिंग, मैं ही इसके लिए उत्तरदायी हूँ। मैं पिता होकर भी पुत्र की रक्षा नहीं कर पाया। किन्तु मैं अभी जान पाया हूँ कि किसन उसका अपहरण किया है।"

"किसन ? किसन ?"

'कुत्ते की औलाद रायस ने ! मुझे जरा भी सन्देह नहीं उसी ने यह काम किया है।'

लेबेदेव ने कहा "मुझे भी इसके बारे में कोई भी सन्देह नहीं।"

"शैतान," मरिसन गरज उठा हमारे साथ भेंट तक नहीं की उसने। मैं उसको अच्छा सबक सिखाऊँगा। मैं उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारूँगा।'

गोलाक बोला, 'मिस्टर मरिसन, व्यर्थ उत्तेजित मत हो।'

मरिसन रुद्ध कण्ठ से बोला 'क्या कहूँ बाबू ? उत्तेजित नहीं होऊँगा ! उसने मेरे डार्लिंग सन् की चोरी करायी तुम कहते हो उत्तेजित मत हो। मैं नशेबाज हूँ, मैं लम्पट हूँ मैं अभागा हूँ, किन्तु मैं भी अग्रज की औलाद हूँ, मैं भी मर्द हूँ। गुडनाइट, डियरेस्ट ! ड्युल (द्वन्द्व-युद्ध) के बाद यदि जिन्दा रहा तो फिर भेंट होगी।" मेरिसन ने नाटकीय मुद्रा में प्रस्थान किया।

लेबेदेव ने कहा "डर की बात नहीं, वह जितना गरजता है उतना बरसता नहीं।'

लेबेदेव ने संक्षेप में खोज की कहानी कह डाली। गहरी निराशा से उसका स्वर भारी हो उठा पुलिस की ओर से कुछ भी सहायता नहीं मिली। कल वह स्वयं न्यायाधीश सर राबर्ट चेम्बर्स के द्वार पर उपस्थित होगा, यह इच्छा उसने जतायी। चाहे जितना भी रुपया लगे, वह मिस चम्पावती के पुत्र की खोज करायेगा ही।

किन्तु चम्पा कातर स्वर में बोली, "कुछ भी होने का नहीं साहब, इस देश में जो जाता है वह लौटकर आता नहीं। मैं भी एक दिन खो गयी थी आठ-नौ वर्ष की लड़की। घर में बीमार माँ कलसी लेकर पोखर से पानी लाने गयी। झाड़ी की ओट से दानव का हाथ निकल आया—मोटा, काला, रोयेंदार ! उसके बाद मैं भी खो गयी, कहाँ ठिकाना ? कहाँ घर ? कहाँ पिता ? कहाँ माँ ? इस देश में जो जाता है वह फिर लौटकर नहीं आता।'

गोलाक ने कहा, 'तुम दुखी मत हो नतिनी !'

चम्पा बोली, 'जिसके जीवन में दुख ही दुख हो, वह फिर दुख क्या करे बाबा ?"

हीरामणि विरक्त होकर बोली, 'मुझे यह सब लन्द फन्द सुनने का समय

नही बाबू, कितनी देर मे बैठी बैठी थक गयी हू और इतजारी अब सही नही जाती। साफ कह दो बाबू कल तुम लोगो का नाटक होगा या नही ?"

बोलने की भगिमा अप्रीतिकर होने पर भी बात थी मतलब की। लेबेदेव क्या उत्तर दे ? वह जरा सकपकाने लगा। गोलोक दास ने कहा, "नाटक होगा क्या नही ? इतनी दूर आगे आ गये हैं, उसके टिकट बिक चुके हैं ! नाटक नही होने पर नुकसान उठाना पडेगा।"

'लेकिन मिस चम्पावती क्या कल अभिनय कर पायेगी ?" लेबेदेव ने प्रश्न किया।

चम्पा चुप लगाये रही।

गोलोक न कहा, "चम्पा नही कर सकती, हीरामणि तो है। वह क्या चला नही पायेगी ?"

हीरामणि टनकार देते हुए बोली, "मैं तो शुरू से ही कहती रही हूँ कि सुखमय का पाट निभा सकती हू। कितनी बार कितनी तरह के वेश सजाकर अभिनय कर चुकी हू और यह नही कर सकती ? किन्तु साहब को यह पसन्द हो तभी।"

लेबेदेव ने इस बार कोई भी राय नही जाहिर की।

गोलोक न कहा 'कल की बात कल देखी जायेगी। आज सबको विश्राम की जरूरत है क्योकि अचानक यह आधी वर्षा आ गयी।"

वही अच्छा। क्लान्त और चिन्तित लेबेदेव ने क्षणिक चैन की सास ली। वह बोला, 'कल हम सभी लोग नौ बजे यहाँ उपस्थित हागे।"

गोलाकनाथ दास जीवट का आदमी है। आज के थियेटर को किसी भी हालत म ठप्प नही होने देगा। इसीलिए नौ बजने म काफी पहले वह पालकी करके हीरामणि को बँगला थियेटर मे ले आया। और भी एक पुतुल नाम की नयी लडकी को भी। पुतुल वारागना क्या है। बहुत से पुरुषो को उसन देखा है पुरुषो से वह नही डरती। गोलोक दास का आशय था कि चम्पा यदि वास्तविक शोक म डूबी रहने के कारण अभिनय नही कर सकेगी तो हीरामणि उस भूमिका को कर लेगी और हीरामणि की भूमिका मे उतरगी पुतुल। हीरामणि की अपनी भूमिका उतनी बडी नही। पुतुल को सिखा पढा देने पर इस रात का काम वह चला देगी।

लेकिन लेबेदेव हताश हो उठा। सुखमय की भूमिका मे बिल्कुल बजान लगती है हीरामणि। वह अपनी मोटी काया लेकर हावभाव के साथ जब सुखमय के सवाद बोलने लगी तो हँसी के बदले जसे करुणा उमडने लगी। पहले

ही से यह हालत ! गालोक दास ने अनेक बार सुधारने की चेष्टा की, किन्तु हीरामणि की विफलता न महज करुणरस की सृष्टि की। हाय नम ! मुखमय की सारी सत्ता न माना हीरामणि को मिमटा दना चाहा। लबेदव दो एक बार बोलन का ढग बताने गया, किन्तु हीरामणि हुनहुना उठी, "मेरा स्वर साहब के कानो म मधु नहीं ढाल सकता तो टान दिये ही ! यह क्या मिस चम्पावती का गला है जो स्याह-काली रात म कानो म अमृत ढाले ? मैं जो कर सकती हूँ वही बहुत इसम अधिक मुझम नहीं होगा। यह कह देती हूँ।"

कैसी तो एक वितृष्णा होती है इस स्त्री की गुरदुरी बातो स। चम्पा हमेशा सीखन को उन्मुख रहती है और यह स्त्री, कितना अन्तर, कितना अन्तर !

लबेदेव और भी गरम हो बोला, मिस हीरामणि, तुम क्रोध क्या करती हो ? अच्छा तो, जसा चाहो वसा ही बोलो।'

हीरामणि उसी तरह बोलन लगी अच्छे-बुरे का विचार नहीं किया, जसा जी चाहा वसा ही बोलन लगी। सुखमय के सवाद उस कण्ठस्थ थे। इसी न आफत खड़ी कर दी। कहीं वह धडाधड बोलती जाती कहीं याद गडबडाती तो टुकुर टुकुर दखने लगती, पार्श्वबाचक के स्वर पर कान ही नहीं देती।

दस बज गये। चम्पा अभी तक नहीं आयी, इस तरह कभी नहीं हुआ। वह बराबर निर्दिष्ट समय स कुछ पहल आती है और रिहसल में अत तक मौजूद रहकर अपना काम निबटा जाती है।

अब सन्देह नहीं वह जरूर आज की सन्ध्या के अभिनय म भाग नहीं ले पायगी। लबेदेव न एक आदमी को चम्पा के घर भेजा था। वह आदमी अभी तक वापस नहीं आया। लेबेदव का मन निराशा के गहरे अवसाद से भर उठा।

थोडी दर बाद ही चम्पा थियेटर के सज्जाकक्ष म आ गयी। विगत रात्रि का वह सूनेपन का भाव उसके चेहरे पर नहीं है। उसके पीछे-पीछे मरिसन भी घुसा। उस युवक के रक्त-सने माथे पर पट्टी बँधी है। चेहरे पर जमा हुआ रक्त, गदन के पास कटा-कटा कुछ झूलता हुआ। फिर भी पूरे चेहरे पर गर्व का एक भाव। बात क्या है ? सभी लोगो ने जानना चाहा।

मेरिसन ने सगर्व जो बताया वह सक्षेप मे इस प्रकार है। सारी रात मरिसन सो नहीं पाया। बेसब्री के साथ वह रात भर रावथ के घर के सामने टहलता और प्रतिहिंसा की आग से जलता रहा था। साहस करके रात म वह घर म नहीं घुसा क्योंकि रावथ के कुत्ते खुले हुए थे और मौके जा रहे थे। सुबह होने पर रावथ का खानसामा कुत्ता को सैर हवाखोरी के लिए ले गया। मौका

देखकर मेरिसन उस घर मे घुस गया। रावथ सपरिवार नींद से जागकर बरामदे म खडा अँगडाई ले रहा था। ऐसे ही समय अचानक मरने मारने पर आमादा एक श्वेतकाय युवक को देखकर वह डर गया। मेरिसन ने जानना चाहा, "कहा पर मेरे बच्चे को छिपा रखा है, जल्दी बोल ? रावथ ने कुछ भी न जानने का भाव जताया। मेरिसन ने उसे डुयेल के लिए चैलेंज किया, किन्तु रावथ ने युवक की धमकी को हँसकर उडा दिया। फिर तो मेरिसन झपट पडा रावथ पर। न सुनने योग्य गाली-गलौज, लात घूसे, कुछ भी बाकी नही रखा। आकस्मिक आक्रमण से रावथ घबरा गया। वह भूमि पर गिरकर रक्षा के लिए चिल्लाने लगा। उसकी चीख पुकार सुनकर उसके नौकर-चाकर दौडे आये। लेकिन गोरे युवक पर हाथ छोडने का साहस वे नही कर सके। मेरिसन का साहस बढा, उसने रावथ को तडातड मारना पीटना शुरू किया। मालिक की दुदशा देखकर वे स्थिर नहीं रह सके। फूलो का एक छोटा गमला मेरिसन के माथे को लक्ष्य करके फेंक दिया। गमला ठीक माथे पर नही लगा, उसके कोने से लगकर मेरिसन का माथा कट गया और टपाटप रक्त झडने लगा। इसी बीच रावथ खडा हुआ, उसने भी प्रत्याक्रमण कर दिया। उसकी देखादखी नौकर चाकर हिम्मत करके आगे आये। लेकिन स्थिति बिगडती देख मेरिसन तुरंत ही खिसक गया।

मेरिसन गर्वित भाव से बोला, 'कुत्ते की औलाद की आख पर जो निशान छोड आया हू वह एक महीने मे भी दूर नहीं होगा। हरामजादा अन्त मे अपनी बीवी की स्कर्ट पकडकर छुटकारा पा गया।

गोलोक ने विज्ञ की भाति कहा, 'इस सारी मारपीट मे लाभ क्या हुआ ?'

मेरिसन तमककर बोला, "बाबू, तुम लोगो का भात खाया शरीर है, मारपीट से क्या लाभ होना है यह सांड के पुट्ठे का गोश्त खाये बिना समझ नही सकोगे।"

चम्पा जरा हँसकर बोली, 'दादू उसकी बात जाने दो। हमारा बच्चा चोरी चला गया है, दुख से कलेजा फटा जाता है, तो भी यही खुशी होती है कि बॉब साहब आज हम लोगो के लिए लड आया है।"

'क्या पता, नतिनी ?" गोलोक दास बोला, "तेरे मन की थाह पाना ही कठिन है। तू क्या आज रात अभिनय करेगी ?"

"अवश्य करूँगी, दादू," चम्पा बोली, "जानती हूँ बहुत कष्ट होगा, फिर भी हार नही मानूगी। वे शैतान लोग मना रहे हैं कि मैं शोक से टूट जाऊँगी। अभिनय बन्द हो और उनके प्राण खुलकर हँसें। लेकिन मैं उन लोगो को हँसने

नहीं दूंगी। मैं अभिनय करूँगी। यही मेरा प्रतिशोध है।"

वह कैसा अभिनय ! सद्य पुत्रवंचिता जननी किन्तु यह कौन कहेगा उसके अभिनय को देखकर ? उस रात के अभिनय में बोलचाल, हावभाव और हास्य लास्य से चम्पा ने सबको मुग्ध कर दिया। यह जैसे सहज अभिनय हो। जो वास्तविक वह नहीं। वही तो अभिनय है ! प्रारम्भ से ही तन्मय भाव से उसने पुरुष वेश में शुरू किया, महानुभावो, यह भली भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं और उन्होंने हम सबसे जाने को कहा है।" उसी तल्लीन भाव से वह अभिनय करती गयी। कोई दर्शक क्षण भर के लिए भी सन्देह करेगा कि यह पुरुषवेशिनी नारी सद्य पुत्रवंचिता वियोगिनी है ? कौन-से लोग उस शिशु को घर से छीन ले गये हैं कि उसे चैन नहीं ! शिशु को फिर कभी वापस पाया जा सकेगा कि नहीं, यह बात भी अनिश्चित ! चम्पा बार-बार मंच के बगल की दीवार से टँगी दुर्गा छवि को देखती और अभिनय करती जाती है। अभिनय के बीच बीच में विश्राम के क्षण में उसकी आँखें भर आती हैं। वह आँखों का जल पोंछकर अधरों पर हँसी ले आती है और अगले अंश के अभिनय के लिए प्रस्तुत होती है। चम्पा आज नूतन प्रतिशोध की आग से जल रही है। वह हार नहीं मानती वह हार नहीं मानेगी। वह दर्शकों को हँसायेगी किन्तु अप हरणकर्त्ताओं को नहीं हँसने देगी। किसी भी तरह हँसने नहीं देगी।

नवद्य आज थियेटर देखने नहीं आया। जरूर वह मेरिसन के हाथ से मार खाकर शारीरिक व्यथा से बिस्तर पर पड़ा है। किन्तु उसका सहकारी स्विज आया है। चम्पा के अपूर्व अभिनय से जब पूरे प्रेक्षागार में हँसी की लहरें फूट रही हैं, स्विज मुंह लटकाये बैठा हुआ है। सभी दर्शक चम्पा के अभिनय से हँसेंगे, लेकिन शिशु का अपहरण करनेवाले हँस नहीं सकेंगे। क्रोध ईर्ष्या और हताशा से उनकी छाती फुन्नम जायेगी तब भी वे कुछ बोल नहीं सकेंगे। अभि नव प्रतिशोध है चम्पा का।

उसकी विलक्षण अभिनय-कुशलता ने जैसे आज पूरे दल को प्रभावित किया है। सभी अपनी-अपनी भूमिका का दक्षता के साथ अभिनय करते जाते हैं। पूरे वातावरण के उत्साह ने हीरामणि को भी उत्साहित किया है, वह अपनी ईर्ष्या की मलिनता को क्षण भर के लिए भूल गयी है। नीलाम्बर वैष्णव ने लेबदेव के समक्ष स्वीकार किया है कि सभी ब्लैक गर्ल ऐसा वैसा अभिनय नहीं करता। कम-से-कम चम्पा नहीं। मोम की पुतली नहीं हो क्षीर की पुतली के

अन्य नकल करने में भी आनन्द है अगर वह थोर की पुतली इसी तरह से सजीव हो उठे। नौनम्बर बैण्डी भी आज अभिनय में दर्श सलोनी है।

दो दृश्यों के बीच-बीच में कण्ठीराम भी मानो नये उत्साह से अभिभूत कर देनेवाले करिश्मे दिखाता जाता है।

नाक् नेतरी साग।
कण्ठीरामेर साग् ॥
भोज राजार खेला।
भानुमतीर खेला ॥

"लाग्—लाग्—लाग्।' कण्ठीराम चिल्लाता है और खेल दिखाता है। बीच-बीच में मसखरी टिप्पणी करता है और सारे दर्शक हँसी से लहालोट हो उठते हैं।

दूसरा दृश्य लम्बी तालियों के बीच समाप्त हुआ। यह परीक्षा सिर्फ गोपा की नहीं, लेबेदेव के भाग्य की भी। आज का अभिनय सफल होने पर लेबेदेव की योजना की ख्याति जम उठेगी। केवल एक दृश्य और। तृतीय और अन्तिम।

तृतीय दृश्य से पहले कण्ठीराम चिल्लाता है, 'लाग् भेलकी लाग् कण्ठीरामेर लाग्। बाबू हो, साहब हो, और माँ मणि और मेम मणि हो, आज नया करिश्मा दिखाऊँगा, नया कौतुक। यह जो मेरी घरनी को देखते हैं महाशयो, मेरी ब्याहता घरनी। दूसरे की घरनी नहीं, मेरी अपनी घरनी।"

'मर गयी," सरस्वती ने मुह बिचका दिया, "अरे मर्दुआ, तेरे कितनी घरवालियाँ हैं रे ?"

'देखा न साहबो," कण्ठीराम ने कहा, "पूरे घर भर में स्त्री पुरुषों में बीच मसखरी करत लाज न आयी साली को! घरवाली नहीं मानो नारद मुनि है। कहता हूँ तेरे प्यार के यार कितने हैं री औरत ?"

"क्या मुझ पर सन्देह करता है बनरमुहे ?" सरस्वती ने नाराज़ मुँह बना दिया, "तेरे मुह में आग झोकूगी। मैं सती सावित्री सीता "

'तू अगर सीता है तो अग्निपरीक्षा दे।" कण्ठीराम ने कहा।

"जला न आग," सरस्वती बोली, "तुझे लेकर चिता पर चढ़ जाऊँगी।"

नकली डर दिखाते हुए कण्ठीराम ने कहा, "ओ बाब्बा, चिता की आग बहुत तेज होती है, बदन पर बड़े-बड़े फफोले पड़ जायेंगे। समझा न बाबू लोगो, साहब लोगो, मेरी बीस पचास गण्डे घरवालियाँ हैं अग्निपरीक्षा मैं क्यों दूँगा ?"

"क्या रे बनरमुह," सरस्वती बोली, "क्या बक बक करता है ?"

'देख," कण्ठीराम बोला, "वह अग्निपरीक्षा रहने दे, अगर मैं जलाकर राख

हो जायेगी। उससे अच्छा है कि तुझे टोकरी से दबा रखूं।"

'मैया री, मैं मुर्गी हूँ क्या ?'' नाक फुलाकर सरस्वती बोली, "मैं टोकरी के नीचे दबी नहीं रहूंगी।'

तू टोकरी के नीचे दबी क्या नहीं रहेगी री औरत ?" कण्ठीराम ने कहा, 'जरूर तेरे मन में डर समा गया है। जरूर तेरे पाप का भण्डा फूटेगा।

'मैं नहीं दबी रहूंगी।

हाँ तू रहेगी।"

'नहीं मैं नहीं रहूँगी।

'हाँ, तू रहेगी रहेगी, रहेगी। कण्ठीराम एक बर्छी उठाकर बोला, 'यह दस बर्छी टोकरी के नीचे नहीं दबी रहने पर तुझे बर्छी से गाँथ दूंगा।'

'तब रहूंगी ' सरस्वती नकली भय से बोली "मुर्गी की तरह टोकरी के नीचे दबी रहूंगी।

सरस्वती मंच पर बैठ गयी। कण्ठीराम ने बेंत की एक बड़ी टोकरी से उसे ढक दिया उसके बाद एक कपड़े से टोकरी को ढक दिया। वह टोकरी को दबाकर खुद ही उस पर बैठ गये और पूछा 'क्या री घरवाली, है तो ?"

'हाँ हूँ रे मदुए। टोकरी के भीतर से सरस्वती ने जवाब दिया।

जरा बाद फिर कण्ठीराम ने कहा 'क्या री घरवाली किसी बाबू के घर तो नहीं जाती ?"

'नहीं रे मदुए नहीं।' सरस्वती ने जवाब दिया।

क्यों री घरवाली किसी साहब के घर तो नहीं जाती ?

टोकरी के भीतर सरस्वती चुप।

'क्या री, भीतर से कुछ बताती क्या नहीं ?'

टोकरी के भीतर से कुछ भी उत्तर नहीं आया।

कण्ठीराम ने भयंकर क्रोध का अभिनय किया। उसके बाद नकली गुस्से से टोकरी के भीतर बर्छी घुसाकर इधर उधर घुमाया, साथ ही सरस्वती का मृत्युसूचक कातर आर्त्तनाद।

कण्ठीराम ने बर्छी बाहर निकाल ली। उसके चमचमाते फलक से ताजा लहू टपकने लगा। पूरा प्रेक्षागार स्तब्ध विस्मित।

कण्ठीराम भी मानो लहू देखकर अवाक्।

दुख भरे स्वर में वह बोला, क्या री घरवाली, मर गयी क्या ?"

टोकरी निरुत्तर।

सचमुच मर गयी। हाँ," कण्ठीराम चीख उठा, उसने टोकरी को उलट

दिया।

दर्शकमण्डली ने बड़े ही आश्चर्य से देखा—मंच सूना! सरस्वती का चिह्न तक नहीं। कण्ठीराम ने तब टोकरी को उलट पुलटकर दिखाया, टोकरी का भीतर भी खाली!

कण्ठीराम ने नकली रोना शुरू कर दिया, "मेरी घरवाली कहाँ चली गयी। मेरी कमसिन जवान घरवाली कहाँ चली गयी रे। अरी तू लौट आ री जहाँ भी जैसी अवस्था में है, लौट आ री!"

सहसा प्रेक्षागार में दर्शकों के पीछे से सरस्वती का कण्ठस्वर सुनायी दिया, "यही तो मदुए, अभी आयी।"

दर्शकों के पीछे के दरवाजे से ठमकती हुई आ घुसी सरस्वती। उसकी गोद में एक शिशु। वह शिशु को लिये मंच पर जा चढ़ी।

प्रेक्षागार चकित तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

तालियों का सिलसिला कम होने पर कण्ठीराम ने पूछा, "गोद में किसका बच्चा है री?"

"मेरा।" सरस्वती बोली।

"कहाँ, देखूं।" कण्ठीराम ने शिशु पर ओढ़ाये गये कपड़े को हटा दिया। दिखायी पड़ा उसका धपधप करता गोरा रंग। खिला खिला सा शिशु उसके माथे के रुपहले केश प्रदीप के आलोक में चमचमाने लगे।

कण्ठीराम ने फिर पूछा, 'सच बोल, किसका बच्चा है?"

सरस्वती ने उत्तर दिया, "कहती तो हूँ, मेरा और उस मेरिसन साहब का।'

हँसी का रेला फूट पड़ा प्रेक्षागार में। केवल मिस्टर स्विज ने हड़बड़ाकर सीट छोड़ दी और दनदनाता हुआ बाहर चला गया। और मेरिसन वादकों के निकट से मंच पर फाँद गया, अपने शिशु को छीन लिया और दौड़ा चला गया। सज्जाकक्ष की ओर जहाँ चम्पा थी।

लोगों के अट्टहास के बीच कण्ठीराम की जादूगरी पर पर्दा गिरा।

लेकिन असली नाटक का अभिनय समाप्त होने के बाद ही उस रात सज्जाकक्ष में उसकी जादूगरी पर से पर्दा उठा। अपूर्व थी यह जादूगरी, अवास्तविक, अविश्वसनीय।

मंच पर की जादूगरी के पीछे जो दाँव था उसे कण्ठीराम ने खोल दिया।

पिछले दिन अंग्रेजी थियेटर के मालिक ने उसे बुला भेजा था बँगला थियेटर में घुसते समय। दूत साक्षात यमदूत-जैसा था जिसे देख पति पत्नी उस मालिक के पास जाने को बाध्य हुए। ललमुँह अंग्रेज मालिक ने कहा, 'खबरदार कल

बँगला थियेटर मे जादूगरी दिखाना मत। ये पचास रुपये।" एक साथ इतने रुपये उसने देखे नही थे। रुपये को वह खूट में बाँधने लगा, ऐसे ही समय उसने सुना कि साहब उस गुण्डे को हिन्दुस्तानी में कह रहा है, "औरत बड़ी तेज-तर्रार है, ऐसा मौका नही मिलेगा। आज शाम ही उसके घर में लूट-पाट मचाकर बच्चे को उडा लो। फिर तो औरत थियेटर में भाग नही ले पायगी। मर्द का भेष बनाकर मसखरी करना भूल जायगी।" कण्ठीराम ने सुनते ही समझ लिया कि वे चम्पा दीदी की ही बात कर रहे हैं। लूटपाट की बात सुनकर उसका हाथ कुलबुलाने लगा। उसने साहब से कहा, "साहब, मैं हाथ की सफाई दिखाता हूँ और हाथ साफ करता हूँ। चोरी करना मेरा नशा है मैं उन लोगो के साथ चोरी करने जाऊँगा।' साहब ने कहा, "शाबास!" कण्ठीराम उन लोगो के साथ चोरी करने गया। धर्मतल्ला में ताल के किनारे एक बूढे बरगद के नीचे जमा होकर चोरो के दल ने कपडे उतार। उन्हे सरस्वती के जिम्मे किया। उन्होने कौपीन पहन लिये। सारे बदन पर तेल मल लिया जिससे किसीके द्वारा पकड लिये जाने पर फिसलकर चम्पत हुआ जा सके। चोरी की घटना सभी को मालूम थी। चोरी के बाद वे लोग फिर धर्मतला मे ताल के किनारे जमा हुए। चुराये गये बच्चे को देखकर सरस्वती बोली, 'लूट का माल तुम लोग लो मुझे यह बच्चा दे दो।' गुण्डे खुशी खुशी लूट का हिस्सा लेकर, बच्चे का बोझा उतारकर चलते बने।

"तुम लोगो ने उसी रात बच्चे को पहुंचा क्यो नही दिया?' लेबेदेव ने पूछा।

साहब, डर हुआ कि कही वे गुण्डे यमदूत की तरह इस तरफ उपद्रव न कर बठें। इसीलिए सोचा कि कल ही लौटा दिया जायेगा। गोरा बच्चा एक रात मौसी के साथ पड-तले सोया। घरवाली ने कहा, 'बडे साहब भले आदमी है, तेरी चोरी पकडी जाने पर भी तुझे जेल नही भिजवाया। उनके साथ बेईमानी मत कर। कल का खेल हम जरूर दिखायेंगे। तभी मेरे दिमाग को दाव सूझा। मैं उस गोरे बच्चे को लेकर खेल दिखाऊँगा और सभी को अचम्भित कर दूगा। बैल की टोकरी के नीचे से चुपके से खिसककर मेरी घरवाली पिछवाड़े से निकली और सामने के रास्ते पर आ गयी। वहा मेरा एक साथी कपडे मे लिपटे गोरे बच्चे को लिये खडा था, उसे लेकर मेरी घरवाली बडे हाल मे घुसी।"

वे सारे लोग एक स्वर मे प्रशसा करने लगे। चम्पा सरस्वती से लिपट गयी। उसकी आखो से झरझर आसू झडने लगे।

मरिसन ने कहा, "चल, थान म गवाही दे आ।"

कण्ठीराम बाला, "माफ करो, साहब, वे लोग मुझे ही चोर बताकर चालान कर देंगे। मैं दागी चोर हूँ, मेरी बात पर कौन विश्वास करेगा ? जो बख्शीस देनी हो, इसी समय दे डालो। इतनी दर म बाहर कही वे गुण्डे घात न लगाये हुए हो।"

मोटी बख्शीस लेकर कण्ठीराम अपनी स्त्री के साथ खुशी खुशी चला गया। जाते समय कह गया कि वे लोग उस देश को छोडकर जा रह है, नही तो गुण्डे उन्ह खत्म कर देंगे।

लेबदेव उस समय कृतज्ञ मन से इसी उधेडबुन मे था कि लडकी को किस तरह सुखी बनाऊँ। कृतज्ञता जताने के लिए धन, वस्त्र, आभूषण कितना कुछ दे डाला उसने चम्पा को, किन्तु उसमे भी उसका मन नही भरा। वह चम्पा को वास्तविक रूप से सुखी करना चाहता था। उसका उपाय एक ही है—मेरिसन के साथ चम्पा के विवाह की व्यवस्था करना। किन्तु क्या वह सम्भव है ? मेरिसन को चम्पा गहराई से प्यार करती है, लेकिन वह पूरी सामाजिक मर्यादा के साथ मेरिसन की सहधर्मिणी होना चाहती है। इस आकाक्षा मे न्यायपूर्ण तर्क है। जिस पुरुष ने नारीत्व की अवहेलना की है उस नारी मर्यादा की स्वीकृति तभी मिलेगी जब वह उसे धर्मपत्नी के रूप मे ग्रहण कर लेगा। प्रेमातुरा किन्तु दृढ सकल्पवाली इस देशी रमणी के प्रति लेबदेव की श्रद्धा उमडती है। किन्तु यह सामाजिक मिलन कैसे सम्भव होगा ?

मरिसन सचमुच चम्पा को चाहता है। क्या यह महज यौन आकर्षण है! अगर यही होता तो चम्पा से ठुकराये जाने के बाद मरिसन क्या पर छोड देता और मदिरा और वेश्याओ के साथ अपने आपको भुलाये रखना चाहने पर भी भुला नही पाता ? क्या अवैध पुत्र सन्तान ही के लिए उसका मोह है ? पुत्र के अपहरण से चिन्तित मेरिसन ने बेहिचक थाना-पुलिस की दौडधूप की, रावय के घर पर हमला भी किया और सरस्वती की गोद से पुत्र को छीनकर सारे दर्शको के सामने उसका पिता होना जाहिर किया। पितृत्व की स्वीकृति! जो मेरिसन अभियुक्ता चम्पा को मुक्त कराने नही गया, उसी ने रगमच पर सबके सामने अपनी अवैध सन्तान को स्वीकार करने म द्विविधा का अनुभव नही किया! मेरिसन क्या अब भी चम्पा से विवाह करना अस्वीकार करेगा ?

मुक्त क्रीतदासी चम्पा, दाई चम्पा, दागी आसामी चम्पा, अभिनेत्री चम्पा, नेटिव चम्पा—वह कितनी ही शोभामयी और सुदर्शना युवती क्यो न हो, गोरे साहबी समाज की नजर मे एक ब्लैक वूमन है। उसके साथ साहबो का सहवास

चल सकता है उसे रखैल की तरह रखा जा सकता है। शायद विवाह करना भी चल सकता है लेकिन गोरी पत्नी के रहते वह असम्भव। विवाह-विच्छेद बहुत दुस्साध्य है। वारेन हस्टिंग्स न मडम इमहाफ का व्याहा था, उसके पूव पति से विवाह विच्छेद कराने के बाद। कलकत्ता शहर म विवाह विच्छेद सम्भव नही हुआ। किसी जमन शासक के निर्देश पर पहले का विवाह टूट सका। मडम इमहाफ तभी वारेन हस्टिंग्स स विवाह कर सकी। इससे लकर साहबी समाज म कितनी तरह की बातें उठी कितनी निन्दा कितनी कुत्सा! फिलिप फ्रांसिस मडम ग्रैण्ड के साथ प्रेमलीला म मगन हुआ। मिस्टर ग्रण्ड न सुप्रीम कोट म नालिश कर दी। कलक-कथा। मोटा मुआवजा देने पर फ्रांसिस न छुटकारा पाया। विवाह विच्छेद के बाद मडम ग्रण्ड न फ्रांसिस के घर म आश्रय लिया। लेकिन पूण-विवाह सम्भव नही हुआ।

विवाह विच्छेद तो रुपय का खेल है। फिर वह भी साहब ममा के बीच ही सीमित। किसन कब सुना है कि किसी गोरे पुरुष ने गोरी पत्नी को तलाक देकर एक काली रमणी से धमानुसार विवाह किया? कलकत्ता शहर का साहबी धम इतना उदार नही है। लेबदेव न बात ही बात म एटर्नी डान मकनर से विवाह-विच्छेद के बार म पूछा था लेकिन किसी का नाम नही लिया, सिफ समस्या बतायी थी। लेकिन मकनर ने कहा कि अंग्रेजा के धम के अनुसार पूण विवाह विच्छेद सम्भव नही, चच उसे स्वीकार नही करता। मजबूरी म पति पत्नी को अलग अलग रहने की अनुमति मिल जाती है किन्तु उनम स कोई पुनर्विवाह नही कर सकता। एकमात्र पालियामट ही विशेष स्थिति म विवाह-विच्छेद की अनुमति द सकती है। उसमे बहुत समय और व्यय लगता है। लेकिन गोरी पत्नी को छोडकर काली स्त्री से विवाह करने की बात का समथन श्वेत समाज म कोई नही करेगा।

अर्थात मेरिसन और उसकी पत्नी के चाहने पर भी विवाह विच्छेद सहज-सम्भव नही, बल्कि इसे असम्भव ही कहा जा सकता है। एकमात्र गवनर जनरल के राजी होने पर ही विवाह टूट सकता है।

चम्पा के साथ मरिसन के विवाह का एक ही उपाय है—मिसज मरिसन की मृत्यु।

नहीं—नही। लबदेव लूसी मरिसन की मत्यु की कामना नही करता। वह सुखी-स्वस्थ रहे। लबदेव को याद आया, मिसज मरिसन अब काफी स्वस्थ हो गयी है। साथ रहनेवाले डाक्टर की देखरेख म उसका स्वास्थ्य सुधर चला था। हारमोनिक टवन के बाल डास म लेबदेव की लूसी मरिसन स फिर मुला-

कात हुई। आर्केस्ट्रा के साथ सगीत के लिए लेबदव को अच्छी रकम मिली थी। नाच के बाद जब लूसी मरिसन लेबेदेव के पास आयी तब वाद्य का बजना ब-द था। लेबेदेव न बुलाया, उसे साथ लेकर वह पास के एका त बरामद म आया। लूसी मेरिसन का बनाव बहुत अच्छा था। उसके सुथरे रग पर गहरा रूज लिपस्टिक खूब चटक रहा था, माथे का जूडा माना आकाश को छूता हुआ। उसके साज-सिंगार की अतिशयता मे रुचिसम्पन्नता बिल्कुल ही नही थी। लूसी मरिसन के साथ लेबेदेव को चम्पा का स्वत स्मरण हो आया। घिसे तावे की तरह रग होने पर भी उसमे यौवन की स्निग्ध दीप्ति है, सौम्य सु दर उसके चेहर का सौ दय है। लेबेदेव न सोचा, चम्पा पर मरिसन का आकषण अकारण बिल्कुल नही।

मिसेज मेरिसन न आरोप किया, "मिस्टर लेबदेव, तुम ही सारे अनथ के मूल हो।"

"मेरा अपराध ?" लेबेदेव न पूछा।

"उस ब्लैक होर को तो मन बेंत खान की सजा दिलायी थी, चोर की तरह शहर म घुमाया था। मेरिसन फिर उसके पीछे नही लग पाता। कि तु तुमने छोकरी को अभिनेत्री बनाकर विख्यात कर दिया, रसिक-समाज म उसके अभिनय कौशल की ख्याति है। मरिसन अब फिर उसके प्यार मे गोन गा रहा है। पता है मेर पति ने मुझे छोड दिया है! मेरी दूकान मे जाता नही, मरे घर म आता नही। रात दिन एक सस्ते टैवन मे पडा रहता है! राजगार ध धा नही। जुआ खेलता है और दो पैसे पाता है, उसी से दिन गुजारता है।"

'इसम क्या मेरा दोप है मिसेज मेरिसन ?" लेबेदेव न कहा, 'आप यदि अपने पति को पकडे नही रख पाती ता मैं उसे क्या करूँ ?"

"ठीक कहते हो," मिसेज मेरिसन बोली, 'मरा ही दोप है। मैंन क्या उसे अपना मन हृदय दे डाला ? मरा पहला पति मुझे चाहता था। वह मुझस कही अधिक महान था। यूराप के जहाज मे जिस दिन और सारी स्त्रिया के साथ कलकत्ता शहर आ पहुची, श्वेत कुमारो के दल की भीड लग गयी थी। होम से रमणिया आयी है, चिल्ला उठे थे उल्लास से वे लोग। सिसकारी दी, गीत गा उठे। चच म वधुओ की हाट लगी। वद्ध प्रौढ-तरुण साहबो का दल हाट मे अपनी-अपनी पस द की चुनने गया। मेरिसन नही गया, उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। एक प्रौढ गजे सिरवाले साहब ने मुझे पस द किया। उसकी एक शराब की दूकान थी। अच्छी-खासी स्थिति, बैठकखाना म घर। मैं भी मनचाह पति का इन्तजार नही कर पायी। कई पौण्ड खच करके पति और घर-गृहस्थी क लिए

कलकत्ता शहर आयी। रूप न सही, रुपया तो है। इधर-उधर नही करके विवाह की सम्मति दे दी। मरिसन मेरे पति की दूकान म युवा कमचारी था। उस युवक के प्रेम मे विभोर होकर अपने पति के साथ मैंने विश्वासघात किया था। लगता है इसीलिए गाड न मुझे यह सजा दी है। मेरिसन, मेरे प्रियतम दूसरे पति न एक ब्लक होर के मोह मे पडकर मुझे छोड दिया है। लेकिन मैं हार नही मानूँगी अपने पति को लौटा ही लाऊँगी।'

'किस प्रकार ?

"अभी नही बताऊँगी। कल सन्ध्या समय तुम्हारे घर म आऊँगी। तुम्हे आपत्ति तो नही ?

'यू आर वल्कम मिसज मरिसन।

लूसी मेरिसन भाव म डूबी सी जैसे नाचती हुई हॉल म लौट गयी।

दूसरे दिन अपराह्न मे वह लेबदव के घर म आ उपस्थित हुई। दिन के आलोक मे वह बिल्कुल ही अच्छी नही लगती थी। गडढे म धसी आँखें रक्त-हीन रूखी काया असमय बुढापे की छाया मान लूसी मरिसन के सवाग पर।

नम्रतासूचक शब्दोच्चारण के बाद लूसी मेरिसन काम की बात पर उतर आयी। पूछा, 'मिस्टर लबेदेव तुमन क्या अंग्रेजी थियटर खोला है ?'

"हाँ।'

'मुझे उसी थियटर म अभिनय का सुयोग दो। दखत हो मैं नाच सकती हूँ। घण्टो नाचती हूँ। मैं गा भी सकती हूँ। सुनोग गाना ?'

लूसी न एक कडी गाना शुरू किया। उसका तीखा बसुरा स्वर कानो को कष्ट दन लगा।

लूसी बोलती गयी, "मैं अभिनय भी कर सकती हूँ। देश क स्कूल म आफे-लिया करती थी। अभी भी याद है। सुनोग ?'

नीरस और हास्यास्पद सम्भाषण। असुन्दर उसका हावभाव। लेबदव के मन मे आया, लूसी मेरिसन सिफ एक पाट का अच्छा अभिनय कर सकती है, मकबय की डाइन का पाट।

"क्यो, पसन्द नही आया ?" लूसी न हताश भाव स पूछा।

'वैसा नही,' लेबेदेव ने शिष्टाचार की खातिर कहा, "मैं [illegible] शौकिया अभिनत्री नही चाहता। प्रशिक्षित [illegible] भनत्री चाहिए। के साथ स्पर्धा करन की बात है [illegible] े नही होने होड ल सकूँगा ?'

'लेकिन यह ब्लैक होर् वर्

"नही, लेकिन नटिवो म अभिनेत्री मिलती ही नही। यह बात निश्चित जानो। इसीलिए चम्पा को तैयार करना पडा। खर जो भी हो, तुम अभिनय क्यो करना चाहती हो ?"

वातिका की तरह करुण स्वर मे मेरिसन बोली, "अपने पति को समझा देना चाहती हू कि मैं भी अभिनय कर सकती हू। उस ब्लैक होर से भी अच्छा अभिनय कर सकती हू।"

"किन्तु यह स्पर्धा बेकार है," लेबेदेव न सलाह दी, "तुम्हारा पति इसमे भुलावे मे नही आयेगा।"

"क्यो, क्यो ?"

"वह चम्पा को सचमुच चाहता है।"

"जानती हू, उस डाइन ने उस पर जादू कर दिया है।" दबे आक्रोश से लूसी मरिसन बोली, "नटिव छोकरी छोकरे जादू की विद्या मे दक्ष होते हैं। कलकत्ता शहर न होकर यदि यह 'होम' होता तो डाइन को आग मे जलाकर मारन की व्यवस्था करती। लेकिन इस देश मे तो वह हो नही सकता, मुझे दूसरा रास्ता अपनाना होगा।"

'कौन सा रास्ता ?"

' विष से विष का नाश।"

"इसका मतलब है तुम विष दकर चम्पा की हत्या करोगी। उससे तुम्हे फासी होगी और मेरिसन को भी पा नही सकोगी।"

"म तो कहना नही चाहती, मिस्टर लेबेदव," लूसी न चुपके चुपके कहा, "मैं भी जादू की विद्या शुरू करूँगी। मेरे मशालची की बीवी क्षान्तमणि वशीकरण जानती है। उसका एक उस्ताद है। सुना है उस उस्ताद के पास से बाघ का नख धारण करने और किसी पौधे की जड खाने से प्रेमी वश मे आ जाता है। क्षान्तमणि ने वशीकरण से उस मशालची को वश मे कर रखा है। मैं भी वशीकरण करूँगी।"

"तुम इन सबमे विश्वास करती हो ?"

"बता सकते हो कि मैं किस पर विश्वास करूँ ?' कहते कहते लूसी मेरिसन फफक पडी। रोते रोते उसने कहा, "मैं क्या जानती नही कि मेरा शरीर टूट गया है, मेरा यौवन चला गया है, मैं बदसूरत हू, बेडौल बुढिया ! मैं किस बूते पर मेरिसन को पकडे रहूँ ?"

प्रेतिनी की तरह रोने लगी मिसेज मेरिसन, आखा के जल से गाल का रग धुल जाने पर वह और भी बीभत्स लगने लगी।

दुख की अधिकता से लेबेदेव परेशान हो उठा, समझ नहीं पाया कि कैसे इस अभागिनी को सान्त्वना दे।

उसने नरमी से पूछा, 'तुम मिस्टर मेरिसन को चाहती हो ?"

"खूब, खूब खूब।'

'तुम उसका भला चाहती हो ?"

"वह तो चाहती ही हूं।"

"तब तुम उसे छोड़ दो पकड़े रखने की चेष्टा मत करो। विवाह विच्छेद की व्यवस्था करो। तुम सतायी गयी स्त्री हो, गोरी ललना और सम्पन्न हो, चेष्टा करने पर पार्लियामेण्ट से भी विवाह विच्छेद की कानूनी अनुमति ला सकती हो तुम।'

लूसी मेरिसन दुखावेग से तड़प उठी, 'तुम क्या हो, मिस्टर लेबेदेव ? तुम मेरे मित्र हो या शत्रु ? मेरे विवाह विच्छेद करा लेने पर मेरिसन खुशी-खुशी ब्लक होर से विवाह कर लेगा।

'वे दोनों सुखी होंगे और अगर सचमुच तुम मेरिसन को चाहती हो तो तुम्हें भी सुख मिलेगा।'

लगता है उस ब्लक होर ने तुम्हें वकील नियुक्त किया है ?" घृणा भरे स्वर में लूसी बोली 'मैं जीते जी मेरिसन का छुटकारा नहीं दूंगी। मैं वशीकरण से मेरिसन को भेड़ बनाकर अपने कदमों पर ले आऊँगी। तुम देख लेना। अभी अलविदा।'

लूसी मेरिसन चली गया। उसके लिए लवदेव के मन में दुख था। लेकिन प्रेम की इस प्रतियोगिता में उसके लिए स्थान कहां है ?

चम्पा—लूसी—मेरिसन की त्रिकोणात्मक समस्या को लेबेदेव सहज ही भूल गया जब अयाचित भाव से चित्रकार जोसफ बटल् स्वयं उससे मिलने आया। सिर्फ मिलने नहीं एक अप्रत्याशित सुखद प्रस्ताव लेकर वह आया।

यही प्रस्ताव। जोसफ बटल् और कुछ मंच शिल्पियों के साथ टामस रावर्थ का मनमुटाव हो गया था। बटल ने रावर्थ के साथ गाली-गलौज की। आदमी वह धूर्त और दगाबाज है। कलकत्ता थियेटर में वह सबके साथ दुर्व्यवहार करता था। यहाँ तक कि जोसफ बटल् जैसे कलाकार को अपशब्द कह देता था। जहाँ नहाँ अपमान। रावर्थ कंजूस है। रुपये पैसे मार लेता है। इस तरह के और भी कितने ही अभियोग हैं। इसीलिए बटल और कुछेक लोगों ने कलकत्ता थियेटर छोड़ दिया है। वे खुद ही अपना थियेटर खोलना चाहते हैं, किन्तु स्थान का अभाव है। सरकारी अनुमति मिलने में भी समय लगेगा। अगर लेबेदेव अपने

प्रस्तावित अंग्रेजी थियेटर मे उन्हे ले ले तो वे लोग खुशी खुशी शरीक हो सकते हैं। बैटल् न मुक्तकण्ठ स लेबेदेव की सराहना की। जैसी पारगतता उसकी सगीत म है, वैसी ही उसकी नाटयप्रयोग मे कुशलता। कुछ नेटिव लडके लडकियो को लेकर उसन एक एसी रसमयी कला प्रस्तत कर दी जो सचमुच अप्रतिम है। इसी लिए चारा ओर लेबेदेव की वाहवाही गूज उठी है। अगर बटल् और उसके दल को लेबेदेव अपने प्रस्तावित थियटर मे ले लेगा तो वे लोग उस धोखेबाज टामस रावथ को उचित शिक्षा दे देंगे।

प्रतिशोध की सम्भावना और आत्मसन्तोष की अधिकता के कारण लेबेदेव सिफ बैटल् को लेने के लिए ही तैयार नही हुआ, उसने एकबारगी उस व्यवसाय के अन्यतम भागीदार के रूप मे भी स्वीकार कर लिया।

जरा भी समय बर्बाद किये बिना एटर्नी के यहाँ से पक्का कागज बनवाकर दोना पक्षो के हस्ताक्षर के साथ भागीदारी के व्यवसाय को उसने कबूल कर लिया। नय प्रयास से लेबेदेव ने अंग्रेजी थियेटर की कानूनी व्यवस्था बनायी।

नीलाम्बर बैण्डो खुश हुआ। अब छुई-मुई ब्लैकी गल के साथ उसे अभिनय नही करना होगा। गाडेस लाइक मेम के इद गिद खानसामा के रूप मे चहल कदमी करते हुए वह आगे आयेगा।

गोलोकनाथ दास प्रसन्न नही हुआ। उसने लेबेदेव से साफ साफ पूछा, "साहब, क्या तुम आखिर मे बगला थियेटर को गडढे म डाल दोगे ?"

जरा सकोच के साथ लेबेदेव ने कहा, "वैसा क्यो ? बँगला थियेटर भी बीच बीच मे चलेगा किन्तु अंग्रेजी थियेटर को नियमित करना होगा। बाबू, मैं व्यवसाय करन आया हूँ। बहुत रुपया लगाया है, बहुत कज-उधार किया है। बँगला थियेटर के द्वारा उसे चुका नही सकूगा। तुम्हारी बँगला भाषा मे नाटक कितने हैं ? मैं खुद कितने नाटक अंग्रेजी से अनुवाद करूँगा ? दो दिन बाद जब बँगला थियेटर का नयापन खत्म हो जायेगा तब हमे थियेटर का फाटक बन्द करना होगा। इससे बढकर कलकत्ता थियेटर को शिकस्त देकर अगर मेरा अंग्रेजी थियेटर जम उठे तो उसके मुनाफे की रकम मे सिफ वही थियेटर चलेगा सो नही, कभी-कभी बँगला थियेटर भी दिखा सकेंगे।"

गोलोकनाथ दास प्रसन्न नही हुआ, बोला, "साहब, तुम्हारा थियेटर है। तुम जो अच्छा समझोगे, करोगे। किन्तु बँगला थियेटर जम उठा था। चम्पा, कुसुम हीरामणि, नीलाम्बर—ये सभी लोग प्राण देकर तुम्हारे थियेटर को जमाये रखते। तुमने तो और भी एक नाटक का अनुवाद किया है। मैंने संशोधन किया है। वही नाटक होता। अभी काफी दिन चल जाता। उससे तुम्हारा नाम होता।

अंग्रेजी थियेटर कितने अच्छे-अच्छे हुए हैं। अंग्रेजी थियेटर से तुम्हें पैसा मिलेगा, किन्तु क्या इतना सुनाम मिलेगा ?"

"जोसफ बैंटल्-जैसा कलाकार मिला है, उसके द्वारा सुन्दर-सुन्दर सीन अंकित करवाऊँगा। मेरे अंग्रेजी नाटक में अभिनय जम उठेगा।"

गोलोक सन्देह के स्वर में बोला, 'लेकिन वह बटल् साहब तो धूर्त रावय साहब का दाहिना हाथ था न ? बैंटल् साहब के सम्मान में कलकत्ता थियेटर में विशेष अभिनय होने पर क्या मोटी रकम की थली निल्पी के हाथ में नहीं थमा दी गयी थी ? मुझे तो लेकिन यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।"

"तुम लोगों की जाति बड़ी भीरु है बाबू,' लेबेदेव ने कहा, "मैं सुदूर रूस से सिर्फ साहस पर भरोसा करके आया हूँ। कन्धे पर दायित्व लेना जानता हूँ।"

गोलोक ने क्षोभ के साथ कहा, जो अच्छा समझते हो, करो। मैं शिक्षक ठहरा, इतनी बहत्तर बुद्धि मैं नहीं जानता न ! केवल भय है कि फिर कहीं धूर्त रावय के फन्दे में न जा पड़ो।'

'कोई परवाह नहीं। डरो मत।" लेबेदेव ने तब जोर से कह तो दी यह बात, लेकिन उसके मन को एक खटका लग गया। इस तरह अचानक जोसफ बटल ने दल्बल के साथ लेबेदेव का साथ दिया, यही रहस्यमय है। तो क्या गोलोक बाबू ने ठीक कहा कि इस सबके पीछे रावय की चालबाजी है ?

लेबेदेव जरा सावधान रहेगा।

भागीदारी के कागज पर हस्ताक्षर होने के दो चार दिन बाद से ही जोसफ बैंटल के व्यवहार में कुछ परिवर्तन लक्ष्य किया गया। कैसा तो एक मालिकाना अक्खड़पन। नया नाटक पसन्द करने के मामले में उसकी असहनीय खींचतान। अनेक प्रकार के नाटक लेकर लेबेदेव ने विचार विमर्श किया, कोई भी बटल को जँचा नहीं। बात ही-बात में वह कह बैठा 'माइण्ड यू गेरासिम मैं भी एक पार्टनर हूँ, मुझे भी कुछ हक है।' बटल ने सीधे सीधे निर्देश दिया कि उनका जो साझा थियेटर है, उसमें बँगला नाटक का अभिनय नहीं चलेगा। अपने ही थियेटर में अपने मनचाहे नाटक का अभिनय नहीं होगा यह जानकर लेबेदेव मन ही मन खिन्न हो उठा। गोलोकनाथ दास को बुलाकर उसने प्रस्ताव रखा "कलकत्ता में कहीं और सिर्फ हिन्दुओं और मूरों के लिए नाटक का अभिनय करने से कैसा रहेगा ? उस नाटक से अंग्रेजी जबान को बिल्कुल हटा देना होगा।" गोलोक ने प्रसन्न मन से सहमति दी। लेबेदेव ने नये सिर से विज्ञापन लिखा, लेकिन बैंटल की जिद के चलते तीसरी बार का अभिनय आगे नहीं बढ़ पाया।

नये दृश्यपटा के अकन की योजना की बात लेबेदेव ने उठायी। बैंटल ने उस बात को उडाते हुए थियेटर के सज्जाकक्ष मे मनमाना छवि अकन शुरु किया। भीगे वस्त्र मे हीरामणि को घण्टो खडी किये रहा, माडल के रूप म। कलसा बगल मे रखे बगललना की देहनगिमा, पुष्ट यौवन का तीव्र उभार, भीगे वस्त्र से भाक्ती देहलालिमा—चलती हुई तूलिका से कैनवास पर खिल उठी। उल्लसित और आत्मविभोर शिल्पी ने माडल को दूर नहीं रखना चाहा। प्रसन्न हीरामणि भी प्रतिदान म पीछे नही रही। लेबेदेव ने खुले अभद्र व्यवहार का प्रतिवाद किया। बैंटल् ने उसे हँसी मे उडा दिया।

मेरिसन को लेकर एक नया गोलमाल हुआ।

एक दिन दोपहर म टिरेटी बाजार के चौराहे पर खूब भीड जमी थी। बुलबुल की लडाई। हाथ की छडो पर डोर से बँधे लडाकू बुलबुलें लिय कुछ लोगो का एक दल बठा हुआ था। खुली जगह मे धूल माटी पर बुलबुलें लड रही थी। चगुल मे बँधे नन्हे अस्त्र से वे प्रतिद्वन्द्वी को जख्मी कर रही थी। केवल आनन्द नही कइया ने दाँव लगा रखे थे।

लेबेदेव ने दूर से देखा कि उनमे मेरिसन भी है। मैला फटा पैण्ट शर्ट उसका पहनावा, गाल पर बढी हुई दाढी, बिखरे हुए बाल। नेटिवा के साथ मिलकर मेरिसन जुए में मत्त हो उठा था। सहसा लगा जैसे कोई वडा दाव वह हार गया। जेब मे कुछ था नही, नेटिव लोग रुपये के लिए उसकी खीच-तान करने लगे। लेबेदेव को देख आश्वस्त हो मेरिसन दौडा आया, पाच रुपये उधार माँग बैठा। रुपये नही देने पर नेटिव लोग उसका अपमान करेंगे। लेबेदेव ने कहा "दे सकता हूँ एक शर्त के साथ।'

"कौन-सी शर्त ?"

इसी समय मेरे साथ चले आना होगा।"

"कसे जाऊँ ? आज एक बार भी नही जीता। जीते बिना खाऊँगा क्या ?"

"मेरे अतिथि हुए तुम। लेबेदेव ने रुपये देकर कहा, "चले आओ।"

नेटिव लोगो को रुपये चुकाकर मेरिसन ने लेबेदेव का अनुसरण किया।

"मिस्टर मेरिसन," लेबेदेव ने कहा, "दिनादिन तुम कितने नीचे गिरते जा रहे हो, इसका ख्याल रखते हो ?"

'किसने कहा कि नीचे जा रहा हू ?' मेरिसन ने क्षीण स्वर मे कहा, 'मैं आकाश के पक्षी की तरह मुक्त, स्वाधीन हू।"

"बाजपक्षी की चोट खाये उस पछी की तरह छटपटा रहे थे तुम, उन जुआरी पावनदारो के हाथ।"

"स्वाधीनता का सुख भी है। दुख भी है। मैं जजीर मे बँधे पक्षी की तरह नही रहना चाहता।"

"लगता है इसीलिए शराब की दूकान छोड दी?"

"स्त्री के धन से धनी होने की इच्छा नही है।"

"जूठनवत्ति की इच्छा क्यो? काम करके जीविका नही चला सकते?"

"सुविधाजनक काम नही मिलता। पूजी नही जो व्यवसाय करूँ।"

"मेरे थियेटर मे काम करोगे? मैं अग्रेजी नाटक कर रहा हूँ। सज्जाकक्ष की जिम्मेवारी तुम पर रहेगी। राजी हो?"

"हा, हू।'

लेबेदेव मेरिसन को साथ लिये सीधे थियेटर मे उपस्थित हुआ। जोसफ बैटल उस समय तैलचित्र म सिक्तवसना हीरामणि का लेप आँचल खीचने म व्यस्त था। लेबदेव न मेरिसन की नियुक्ति का प्रस्ताव किया। चित्रकारी म विघ्न पाकर बटल् का मूड पूरा बिगड गया था। पागल कौए जसा मेरिसन का चेहरा देख वह चीखता हुआ फट पडा, 'भूल मत जाओ, इस थियेटर का मैं एक भागीदार हू। इस थियेटर म आवारो के लिए जरा भी स्थान नही। उस आदमी के प्रति अगर कुछ दया हो तुम्हे तो उस अपन अस्तबल मे साईस बनाकर रख सकते हो, इस अग्रेजी थियेटर के सज्जाकक्ष मे नही।"

"तुम कहते क्या हो, जोसफ?" लेबेदेव ने कहा, "मिस्टर मरिसन का अस्त बल का साईस बनाकर रखू! यह क्या एक अग्रेज जेण्टिलमैन नही?"

"जेण्टिलमन!' बटल बोला 'अरे छि, उसके सिर स पर तक भद्रता का लेश भी नही और वह अग्रेज समाज का कलक है। जो एक ब्लक होर के लिए अपनी अग्रज वाइफ का त्याग कर, घर-भर के लोगो के सामन बास्टाड को अपनी सतान घोषित करे, वह हरामजादा न अग्रेज है न जेण्टिलमन। एम नरक के कीडे को हमारे इस थियेटर मे जगह देने पर यह भी नरककुण्ड हो जायेगा।"

इतनी देर के बाद मेरिसन ने मुह खोला "मिस्टर बैटल तुम्हारे मूली नस दाता का कुछ घसा स उखाड फेंकन की शक्ति मेरी मुट्ठी म है। लेकिन मिस्टर लेबदेव के तुम भागीदार हो सिफ इसीलिए तुम्ह छोड दिया है। मैं अग्रज हू। मरी धमनियो मे अग्रेजी रक्त प्रवाहित है। मैं अपनी स्त्री के साथ कसा व्यवहार करूँ, अपनी रखैल से कैसा सम्बन्ध रखू, अपनी पुत्र सतान को कसी स्वीकृति दू—य मेरे व्यक्तिगत मामले हैं। मैं इन मामलो मे किसी के सामने कफियत नही दूगा, खास तौर से तुम्हारी तरह के एक ऐसे आदमी के सामन जो मेरी ही

जूठन उस औरत का उपभोग करता है।"

बटल ने कहा, "व्हाट डू यू मीन ?"

"वह जो हीरामणि है, जिसको गीले कपडे पहनाकर तुम चित्र बनाते हो, जिसके साथ सहवास के लिए लालायित हो, वह मेरी उपभोग की हुई है—उच्छिष्ट, परित्यक्त। तुम चले हो मुझे सच्चरित्रता का उपदेश देने ?"

हीरामणि अपना नाम सुनकर चकित हुई। वह हनहना उठी, "क्या कहता है मेरा नाम लेकर यह साहब मर्दुआ ?"

मेरिसन ने कहा, "तुम्हें मैंने छोड दिया है तुम मिस्टर बटल के साथ मौज करो।"

"जान निछावर," हीरामणि बोली, "मेरा बटल् साहब ही अच्छा है।

सबके सामने हीरामणि आगे बढकर जोसफ बैटल् के गले में झूल गयी। बटल् ने जबरन अपने को छुडा लिया, मेरिसन की ओर झपटते हुए बोला, "कुत्ते की औलाद, आइ विल टीच यू ए लेसन !"

बैटल लपका मेरिसन की ओर। उसके जरा-सा हटते ही वेग न सँभाल पाने के कारण बैटल् मुह के बल जा गिरा। मेरिसन हँस पडा, उपहास करते हुए बोला, "फिर भेंट होगी। मैं अभी बहुत नीचे जा पडा हूँ, भाग्य को फिर लौटा लाऊँगा। तब तुम्हें अपना पोर्ट्रेट बनाने की मजूरी दूँगा, बाइ-बाइ !"

मेरिसन दरवाजे की तरफ आगे बढा। लेबेदेव ने कहा, "मिस्टर मेरिसन, क्या तुम जा रहे हो ? मेरे थियेटर में काम नहीं करोगे ?'

मेरिसन ने कहा, नहीं मिस्टर लेबेदेव, मैं दुखी हूँ तुम्हारे उदार प्रस्ताव को मैं स्वीकार नहीं कर पाया। इसके बाद जब तुम्हारे साथ मुलाकात होगी तब देखोगे कि मैंने जीवन में प्रतिष्ठा अर्जित कर ली है अपने प्रयास से अपनी शक्ति से। तुम विदेशी रूसी हो, किन्तु मेरे सजातीय इंग्लिशमैन से तुम हजार गुना अच्छे हो। तुम्हारा मंगल हो।

मेरिसन चला गया।

दिन पर दिन बीतते गये। अंग्रेजी नाटक की योजना फिर भी आगे नहीं बढी। बहुत से नाटक लेकर लेबेदेव ने चर्चा की, किन्तु भागीदार जोसफ बटल् ने किसी पर सम्मति नहीं दी। सीन-स्टेज को लेकर उसने अनेक उलट फेर किये, किन्तु सुधारने का कोई प्रस्ताव नहीं पेश किया। बल्कि लेबेदेव थियेटर के रूम का बैठे बिठाये वेतन देता रहा। आय नहीं, व्यय प्रचुर। मानो साधारण-सी रकम

खत्म हो गयी। उधार लो। बटल् से रुपये मांगने पर उसने कहा, "रुपये देने की बात नहीं। मैं शिल्पी हूँ। मेरी तूलिका के स्पर्श से जो दृश्यपट खिल उठेंगे, वही मेरी पूंजी है। मैं उससे अधिक एक पैसा नहीं दे सकता।"

"तो फिर जल्दी जल्दी सीन बना डालो।"

"मैं आर्टिस्ट हूँ," बटल ने कहा, 'चित्र बनाना या नहीं बनाना मेरे मूड पर निर्भर करता है।"

"तो क्या बैठा-बैठाकर लोगों को वेतन दूं ?"

"नहीं दे सकते तो वे चले जायेंगे।" बटल ने कहा, "तनख्वाह नहीं पाने पर वे तुम्हारा भालूवाला चेहरा देख-देख बेगार नहीं खटेंगे।'

"क्या मतलब है तुम्हारा ?" हताश हो लेबेदेव ने पूछा।

"बहुत सीधा।' बैटल बोला 'ऐसा एक प्रोडक्शन करो जिससे कलकत्ता शहर चाम्ड हो। सुपब प्रोडक्शन, रावथ की आँखें कपाल पर जा चढ़ेंगी। सोचेगा कि इस जोसफ बैटल को दुत्कारकर उसने गलत ही तो किया था।'

'किन्तु प्रोडक्शन का प्रयास तो नहीं हो रहा।"

"कहां से होगा ?" बैंटल ने कहा, "रुपये लगाओ, रुपये लगाकर स्टेज का नये सिरे से बना डालो। होम से माल मसाला मंगाओ। तभी तो सभी कुछ ढंग से किया जायगा ? नहीं तो क्या तुम्हारे द्वारा अंकित इस रद्दी सीन पर इंग्लिश थियेटर होगा ? आज पचास रुपये दो, सीन का कपड़ा खरीद लाना होगा।'

"रुपया नहीं है,' लेबेदेव ने कहा 'जो कपड़ा है उसी से काम चलाओ।'

"तो जाये भाड़ मे" बटल बोला, 'रुपये का जोगाड़ करो तब काम मे हाथ लगाऊँगा। अभी मिस्टर स्विज के अखाड़े पर जाता हू, फेंसिंग का प्रक्टिस करने। लौटकर देखूं कि सीन चित्रित करने का कपड़ा मौजूद है।"

बैंटल् तो फरमाइश करके चला गया, किन्तु काम चाहिए। लेबेदेव ने सोचा, कल्पनाशील शिल्पी है। उसको हाथ मे रखने की जरूरत है। लेबेदेव ने कैशबक्स को उलट-पलटकर देखा, दो सौ के करीब रुपये हैं। वही देकर सीन आंकने का कुछ कपड़ा खरीद लाने के लिए सरकार को टिरेटी बाजार भेज दिया।

थियेटर के स्टेज पर खड़ा हो गया लेबेदेव। जनशून्य मंच। मन मे आया कि कितना विशाल है ! अपने आपको बहुत अकेला महसूस किया। मन को लगा जैसे सूने प्रेक्षागार म सूने मंच पर अभिनय किये जा रहा है। उद्देश्यहीन भाव से दृश्यपट

खडे हैं। पादप्रदीप मे आलोक नही। पिट और बाक्स की कुर्सिया खाली। कब फिर आलोक जलेगा, दशक आयेंगे, सगीत मूर्च्छना उठेगी, अभिनेता-अभिनेत्रिया की मधुर स्वरलहरी ध्वनित होगी तालियो से प्रेक्षागृह मुखरित होगा—कौन जानता है? लेबेदेव की छाती को मथती हुई एक दीर्घ श्वास छूटी।

प्रेक्षागार के धुधले आलोक में वह जसे खो गया। अग्रेजी थियेटर की मरीचिका, तृषातुर आशा ने उसको भटका भटकाकर परिश्रान्त कर डाला है।

मच पर एक हल्की-सी आहट। "कौन है वहा?"

"मैं चम्पा।"

"तुम अचानक यहा?"

'बहुत दिनो से बुलाया नही। इसलिए खुद ही देखने आ गयी।'

सचमुच बहुत दिनो से इन लोगो की बुलाहट नही हुई।

चम्पा बोली, "इस रगमच से कैसा तो एक मोह हो गया है।"

"और रगमच के मलिक से घृणा।"

"क्या तो कहते हो! तुम पर श्रद्धा करती हू,' चम्पा ने कहा, "मुक्त क्रीतदासी, दाई, अत्यन्त साधारण स्त्री जो चोरी की बदनामी के साथ जानी जाती है, उसीको तुमने रगमच पर *स्थान दिया, सुग्गे की तरह अभिनय करना सिखाया।* मर्यादा दी, आत्मविश्वास दिया—और मैं तुमसे घृणा करूँ? करती हूँ श्रद्धा और भक्ति।'

"मैं श्रद्धा नही चाहता, भक्ति नही चाहता, चाहता हू जरा-सी सहानुभूति जरा-सा प्यार।" लेबेदेव कातर कण्ठ से बोला, "मैं बहुत एकाकी हू—एकाकी।'

"मैं भी।'

"सो क्या! तुम्हारे तो सन्तान है। प्रेमी है।"

'मेरिसन नही है।'

"इसका मतलब?"

'वह कही चला गया है, उसका कोई पता नही।'

"कहाँ गया है? कुछ बताया नही?"

"नही उसने कहा, 'चम्पा डार्लिंग, भाग्य को लौटाने जाता हू। अगर भाग्य को लौटा पाया तो फिर भेंट होगी। दिस इज ए सैड बड वल्ड। यहाँ रुपये मे मनुष्य का मूल्य आँका जाता है। मुझे यदि रुपया रहे तभी समाज मे प्रतिष्ठा, नही तो घृणा।'

मैंने कहा, रुपया चाहिए? मेरे पास कुछ रुपये जमा हैं, तुम ले लो।

'वह रुपया नही चाहिए।' उसने कहा, 'बाबू निमाइचरण मल्लिक से कुछ

रुपये उधार लिये हैं। बाबू चालाक आदमी है, लेकिन उदार है। उसके घर पूजा-पर्व में, बाई नाच में अच्छी-अच्छी मदिरा दी है। मेरा विश्वास करता है, इसी लिए एक बात पर, रुक्के पर, कुछ उधार दे दिया। उन रुपयों से भाग्य को लौटाऊँगा। तब कलकत्ता शहर लौटूंगा।

'तुम मत जाओ।' मैंने कहा।

उसने सुना नहीं।

मैं रो पड़ी, कातर स्वर में बोली, 'तुम मुझसे विवाह मत करो, इन नहीं, लेकिन मुझे छोड़कर नहीं जाओ। छोटे मुँह से बड़ी बात कहती हूँ। दासी होकर राजरानी होने का स्वप्न देखती हूँ। मेरा स्वप्न टूट गया है। तुम मत जाओ। अपना दरवाजा खोल रखा है। तुम आओ, तुम आओ। पहले की तरह ही मेरे साथ रहो।

उसने सुना नहीं।

मैंने उसके पाँव जकड़ लिये, रो रो बेहाल हुई।

उसने सुना नहीं बोला, 'माइ हार्ट, मैं अंग्रेज की औलाद हूँ। भाग्य की खोज में समुद्र लाँघकर आया हूँ। इतने दिन केवल आहार विहार किया, भाग्य-लक्ष्मी की आराधना नहीं की। इस बार करूँगा। अलविदा डियरेस्ट।

मैंने अपनी सन्तान, पुत्र को उसके हाथ में थमा दिया, बच्चे का मोह होगा तो जा नहीं पायेगा। उसने बच्चे को दुलार लिया। उसके बाद हँसकर बोला, "इसके लिए भी मुझे जाना होगा। इसको आदमी बना पाने के लिए अपने भाग्य को लौटाना ही होगा।

जाते समय उसने कहा, 'चम्पा डियरेस्ट क्या तुम मेरे लिए प्रतीक्षा नहीं करती रहोगी?

'युग-युग तक प्रतीक्षा करूँगी।' मैंने कहा।

वह चला गया। कहाँ गया, कितने दिनों के लिए गया, कुछ नहीं जानती। उसके लिए सोचते सोचते आकुल हो उठती हूँ। आशंका होती है कि क्या वह लौट आयेगा!'

लेबेदेव ने मन ही मन मेरिसन से ईर्ष्या की। भाग्यशाली है मेरिसन। दो नारियाँ उसका ध्यान करती हैं। एक उसकी धर्मपत्नी और दूसरी उसकी प्रेमिका। एक उसको कानूनी दावे के जोर से पाना चाहती है दूसरी का सम्बल केवल प्रेम है। एक उसकी स्वजातीया है, दूसरी विदेशिनी। किन्तु एक स्थल पर दोनों मिलती हैं। दोनों ही मेरिसन के लिए सोचती हैं। लेकिन लेबेदेव के लिए सोचनेवाली कोई नहीं। देश विदेश में उसने ख्याति और सम्मान पाया है,

आशा निराशा के झूले पर वह झूला है। किन्तु उसके लिए सोचे, ऐसी किसी को नही पाया। भाग्यशाली मेरिसन!

लेबेदेव ने चम्पा को धीरज बँधाया, "मेरिसन आयेगा, निश्चय ही लौट आयगा। मैं जानता हू वह तुम्हे चाहता है। एकान्त भाव से चाहता है। तुम्हारे लिए उसने अपने सुख का विसर्जन कर दिया है। सामाजिक लाछना की उपेक्षा की है। वह जरूर लौट आयेगा, चम्पा!"

"उसी आशा से दिल को कडा किये हुए हू।" चम्पा ने कहा, "उसके लौट आने की आशा लेकर मैं युग युग तक प्रतीक्षा करूँगी।"

लेकिन जिसके आने की राह क्षण-भर भी नही देखी, वह था जोसफ बटल। उसके साथ दो और भी लोग थे। क्या पता इस चम्पा को लक्ष्य करके बटल थियेटर मे कही लकाकाण्ड न रच दे।

मिस्टर स्विज के तलवारबाजी के अखाडे से बटल् सीधे थियेटर को लौट आया। कमर मे उस समय भी तलवार झूल रही थी। उसने अच्छी खासी मदिरा पी ली थी। दोनो आखें लाल-लाल, जबान भी लडखडाती हुई। उसके साथिया के पैर लडखडा रहे थे। उनके हाथ मे मदिरा की बोतल थी। बैटल् उखडे स्वर मे यह कहते कहते घुसा, "कम आन ब्वायज, वी विल मेक मेरी एट दिस हल् आफ ए प्लेस।"

मच पर प्रवेश करते ही लेबेदेव और चम्पा पर उसकी नजर पडी।

"बाइ जोव, गेरासिम," एक पूरी हँसी हँसते हुए बैटल् ने कहा, "तुम इस सुन्दर काली स्त्री से प्रेम करते हो।"

लेबेदेव लज्जित होकर बोला, "क्या बकवास करते हो, जोसफ! तुम इसको पहचानते नही? यही चम्पा उर्फ गुलाब है। मेरे बँगला थियेटर की हिरोइन।"

"यही तो!" जोसफ उत्फुल्ल होकर बोला, "मेकअप छूट जाने से इसको पहचान नही पाया। स्टेज की अभिनेत्री मे भी अधिक सुन्दर लगती है यह, अपूर्व। क्या फीगर है, जैसे ब्रोंज की एक जीवित अप्सरा। गेरासिम इतने दिनो से इस सुन्दरी को कहा छिपा रखा था?"

लेबेदेव ने कहा, "बँगला थियेटर का रिहर्सल होता नही, इसलिए इसके आने का प्रयोजन नही हुआ।"

"प्रयोजन है," जाघ ठोकते हुए बैटल् बोला, "अलबत्ता प्रयोजन है। मैं इसका एक चित्र बनाऊँगा। यह मेरी माडल है। वह हीरामणि एक भद्दी औरत है। यह एक स्त्री रत्न है। क्या कहता है, बिली!"

बिली नामक एक अनुचर ने कहा, "यह औरत अलबत्ता एक रत्न है।

रुपए उधार लिए हैं। बाबू चालाक आदमी है, लेकिन उदार है। उसके घर पूजा-पर्व में, बाई नाच में अच्छी अच्छी मदिरा दी है। मेरा विश्वास करता है, इसी लिए एक बार घर, रुपये पर, कुछ उधार दे दिया। उस रुपए में भाग्य का लौटाऊँगा। तब कलकत्ता शहर लौटूंगा।'

'तुम मत जाओ।' मैंने कहा।

उसने सुना नहीं।

मैं रो पड़ी, कातर स्वर में बोली, 'तुम मुझसे विवाह मत करो, हर्ज नहीं, लेकिन मुझे छोड़कर नहीं जाओ। छोटे मुंह से बड़ी बात कहती हूँ। दासी होकर राजरानी होने का स्वप्न देखती हूँ। मेरा स्वप्न टूट गया है। तुम मत जाओ। अपना दरवाजा खोल रखा है। तुम आओ, तुम आओ। पहले की तरह ही मेरे साथ रहो।

उसने सुना नहीं।

मैंने उसके पाँव जकड़ लिए, रो रो बेहाल हुई।

उसने सुना नहीं, बोला, 'माइ हार्ट, मैं अग्रेज की औलाद हूँ। भाग्य की खोज में समुद्र लाँघकर आया हूँ। इतने दिन केवल आहार-विहार किया, भाग्य-लक्ष्मी की आराधना नहीं की। इस बार करूँगा। अरविदा डियरेस्ट।

मैंने अपनी सन्तान, पुत्र को उसके हाथ में थमा दिया, बच्चे का मोह होगा तो जा नहीं पायगा। उसने बच्चे को दुलार लिया। उसके बाद हँसकर बोला, 'इसके लिए भी मुझे जाना होगा। इसका आदमी बना पाने के लिए अपने भाग्य को लौटाना ही होगा।'

जाते समय उसने कहा, 'चम्पा डियरेस्ट क्या तुम मेरे लिए प्रतीक्षा नहीं करती रहोगी?

'युग-युग तक प्रतीक्षा करूँगी।' मैंने कहा।

वह चला गया। कहाँ गया, कितने दिनों के लिए गया, कुछ नहीं जानती। उसके लिए सोचते सोचते आकुल हो उठती हूँ। आशंका होती है कि क्या वह लौट आयगा!"

लेबेदेव ने मन ही मन मेरिसन से ईर्ष्या की। भाग्यशाली है मेरिसन। दो नारियाँ उसका ध्यान करती हैं। एक उसकी धर्मपत्नी और दूसरी उसकी प्रेमिका। एक उसको कानूनी दावे के जोर से पाना चाहती है दूसरी का सम्बल केवल प्रेम है। एक उसकी स्वजातीया है, दूसरी विदेशिनी। किन्तु एक स्थल पर दोनों मिलती हैं। दोनों ही मेरिसन के लिए सोचती हैं। लेकिन लेबेदेव के लिए सोचनेवाली कोई नहीं। देश विदेश में उसने ख्याति और सम्मान पाया है,

आशा निराशा के झूले पर वह झूला है। किन्तु उसके लिए सोचे, ऐसी किसी को नही पाया। भाग्यशाली मेरिसन!

लेबेदेव ने चम्पा को धीरज बँधाया, "मेरिसन आयेगा, निश्चय ही लौट आयेगा। मैं जानता हू वह तुम्हे चाहता है। एकान्त भाव से चाहता है। तुम्हारे लिए उसने अपने सुख का विसर्जन कर दिया है। सामाजिक लाछना की उपेक्षा की है। वह जरूर लौट आयेगा, चम्पा!"

"उसी आशा से दिल को कडा किये हुए हू।' चम्पा ने कहा, "उसके लौट आने की आशा लेकर मैं युग-युग तक प्रतीक्षा करूँगी।"

लेकिन जिसके आने की राह क्षण भर भी नही देखी, वह था जोसफ बटल। उसके साथ दो और भी लोग थे। क्या पता इस चम्पा को लक्ष्य करके बैटल थियेटर मे वही लकाकाण्ड न रच दे।

मिस्टर स्विज के तलवारबाजी के अखाडे से बैटल् सीधे थियेटर को लौट आया। कमर म उस समय भी तलवार झूल रही थी। उसने अच्छी खासी मदिरा पी ली थी। दोनो आखें लाल-लाल, जबान भी लडखडाती हुई। उसके साथिया के पर लडखडा रहे थे। उनके हाथ मे मदिरा की बोतल थी। बैटल उखडे स्वर मे यह कहते-कहते घुसा, "कम ग्रान ब्वायज, वी विल मेक मरी एट दिस हल् आफ ए प्लेस।"

मच पर प्रवेश करते ही लेबेदेव और चम्पा पर उसकी नजर पडी।

"बाइ जोव, गेरासिम," एक पूरी हँसी हँसते हुए बटल् ने कहा, "तुम इस सुदर काली स्त्री से प्रेम करते हो।"

लेबेदेव लज्जित होकर बोला, "क्या बकवास करते हो, जोसफ! तुम इसको पहचानते नही? यही चम्पा उर्फ गुलाब है। मेरे बँगला थियटर की हिरोइन।"

'यही तो!" जोसफ उत्फुल्ल होकर बोला, 'मेकअप छूट जाने से इसको पहचान नही पाया। स्टेज की अभिनत्री मे भी अधिक सुदर लगती है यह, अपूर्व। क्या फीगर है, जैसे ब्रौज की एक जीवित अप्सरा। गरासिम, इतने दिना से इस सुदरी को कहा छिपा रखा था?"

लेबेदेव ने कहा, 'बँगला थियेटर का रिहर्सल होता नही, इसलिए इसके आने का प्रयोजन नही हुआ।"

'प्रयोजन है," जाघ ठोकते हुए बैटल् बोला, "अलबत्ता प्रयोजन है। मैं इसका एक चित्र बनाऊँगा। यह मेरी माडल है। वह हीरामणि एक भद्दी औरत है। यह एक स्त्री रत्न है। क्या कहता है, बिली!"

बिली नामक एक अनुचर ने कहा, "यह औरत अलबत्ता एक रत्न है।

"हाँ, यह थियेटर मेरा है—मेरा—मेरा ! तुम्हे भागीदार बनाया है सिर्फ सीन चित्रित करने के लिए। तुम केवल पग पग पर बाधा की सृष्टि करते हो। आज से हमारी साझेदारी खत्म। समझे ?"

"कह देने से ही साझेदारी खत्म ?" बटल् ने विरोध किया, 'क्या कानून अदालत नही है ?"

'तो कानून-अदालत ही देखो,' लेबेदेव ने कहा, "बाहर निकलो। मेरे इस थियेटर से बाहर निकल जाओ। दरवान, खानसामा, मशालची—कौन कहा है ? इधर आ जाओ।'

साथ साथ थियेटर के कर्मचारी दल बाँधकर हाजिर हुए। लेकिन मरने मारने पर उतारू दो साहब मालिकों का दख स्तम्भित खड़े रह गये वे लोग।

बैटल ने कहा, "तू दरवान के द्वारा मुझे धक्के दिलायेगा ? तो देख, जाने से पहले तेरे नरक को गुल्जार कर जाता हूँ।'

कहते-कहते वह तेजी के साथ तलवार से एक सीन को काटने-फाडने लगा। उसके साथी मच की चीजो को तोडने फोडने और तहस नहस करने लगे। पूरे मच पर पल भर मे जैसे आंधी बहने लगी।

"रोको, रोको यह ध्वसलीला !" लेबदेव चिल्ला उठा।

किन्तु कौन किसकी बात सुनता है ? विद्युतगति से बैटल के हाथ की तलवार चलने लगी। तेज तलवार के गहरे आघात से एक एक कर कीमती सीन बरबाद हो गये। बैटल् के उन्मत्त साथियो के हमले से मच का कठघरा भी क्षतिग्रस्त हुआ। यवनिका नीचे गिरकर नष्ट भ्रष्ट हो गयी।

लेबदेव चीख उठा, 'ओ दरबान, बन्द करो यह सब काण्ड !" लेकिन देशी सेवकगण साहब लोगो का रगढग देखकर मूरत की तरह खडे रहे। उस पर सामने तल्वारधारी मदमत्त साहब। सेवकगण एक कदम भी आगे नही बढे। *बटल् के एक साथी ने जलती मोमबत्ती से सीन के एक हिस्से मे आग लगा दी।* आग धाय धाय कर जल उठी।

बटल् के दल को रोकने के लिए लेबदेव खुद ही आगे बढा, किन्तु बटल के दूसरे साथी ने लेबेदेव के माथे पर मदिरा की बोतल दे मारी। लेबेदेव अचेत हो टूटे रगमच पर गिर पडा।

१

जब होश हुआ, लेबेदेव ने देखा कि वह सज्जाकक्ष मे एक मेज पर लेटा है। बहुत-सारे लोगो की भीड। सामने उत्सुक नेत्रो से निहारती चम्पा। कुसुम भी

वी विल मेक ए गुड न्यूड। क्या कसा हुआ गठन है! जस्ट हैव ए लुक एट हर ब्रेस्ट!"

'ठीक कहता है,' बैंटल् ने कहा, "देखना हूँ तुझे भी आर्टिस्ट की आँखें है। सचमुच इस औरत का नग्न चित्र बूढ़ों को भी जवान बना देगा। कम आन डार्लिंग, मैं आज ही तुम्हारा एक न्यूड स्केच खीचूँगा। कम इन टु दि ग्रीन रूम।"

बैंटल् चम्पा का हाथ खींचने लगा। चम्पा ने जबरन अपना हाथ छुड़ा लिया।

लेबेदेव विरक्त हो बोला, 'जोसफ, लड़की को तंग मत करो।"

'व्हाई, पार्टनर,' बैंटल ने कहा 'मैं क्या तुम्हारे थियेटर के अर्धांश का मालिक नहीं? तो फिर अपने थियेटर की अभिनेत्री पर आधा अधिकार देने में तुम्हें क्यों आपत्ति है? तुमने तो इतने दिन उपभोग किया, अब मेरी पारी है।"

लेबेदेव ने कहा, "जोसफ, सुनो, चम्पा उस तरह की औरत नहीं।"

'बिल्कुल हिन्दू सती साध्वी!' बैंटल ने व्यंग्य किया, "तुम इस बात पर यकीन करते हो?"

'चम्पा मेरिसन को चाहती है। एकमात्र मेरिसन के प्रति वह अनुरक्त है।' लेबेदेव ने कहा।

घृणा के लहजे मे बैंटल बोला, 'वह नरक का कीड़ा! वह दोगला! तब तो मैं पहले ही उस कुत्ते के पास से औरत को छीन ले जाऊँगा। कम आन डार्लिंग। कम इन टु दि ग्रीन रूम।'

बैंटल फिर चम्पा का हाथ पकड़ने लगा। चम्पा ने हाथ उठाकर पूरी शक्ति से बैंटल् के गाल पर तमाचा मारा। उसका गाल लाल हो उठा। बैंटल क्रोध से फट पड़ा। वह गरजा, 'यू डर्टी ब्लैक बिच। तेरी हिमाकत कम नहीं। तू जेण्टिलमैन पर हाथ उठायेगी? तुझे मैं अच्छा सबक सिखाऊँगा। यहीं पर सबके सामने विवस्त्र करके तेरी इज्जत लूटूँगा।"

हिंसक उत्तेजना के साथ चम्पा को पकड़ने के लिए बैंटल लपका, लेकिन लेबेदेव ने तेजी से सामने आकर बाधा डाली।

"हट जाओ, पार्टनर," गरज उठा बैंटल्, 'हट जाओ। मैं यहीं पर उसका उपभोग करूँगा।'

"नहीं। लेबेदेव ने कहा, 'मेरे थियेटर में यह सब बेअदबी नहीं चलेगी।"

'अकेले तुम्हारा थियेटर?"

"हाँ, यह थियेटर मेरा है—मेरा—मेरा ! तुम्हें भागीदार बनाया है सिर्फ सीन चित्रित करने के लिए। तुम केवल पग पग पर बाधा की सृष्टि करते हो। आज से हमारी साझेदारी खत्म। समझे ?"

"कह देने से ही साझेदारी खत्म ?" बटल् ने विरोध किया, 'क्या कानून-अदालत नहीं है ?"

"तो कानून-अदालत ही देखो," लेबेदेव ने कहा, "बाहर निकलो। मेरे इस थियेटर से बाहर निकल जाओ। दरवान, खानसामा, मशालची—कौन कहाँ है ? इधर आ जाओ।"

साथ साथ थियेटर के कर्मचारी दल बाँधकर हाजिर हुए। लेकिन मरने मारने पर उतारू दो साहब मालिकों का दल देख स्तम्भित खड़े रह गये वे लोग।

बटल ने कहा, "तू दरवान के द्वारा मुझे धक्के दिलायेगा ? तो देख, जाने से पहले तेरे नरक को गुल्जार कर जाता हूँ।'

कहते-कहते वह तेजी के साथ तलवार से एक सीन को काटने-फाड़ने लगा। उसके साथी मंच की चीजों को तोड़ने फोड़ने और तहस नहस करने लगे। पूरे मंच पर पल भर में जैसे आँधी बहने लगी।

"रोको, रोको यह ध्वंसलीला !" लेबेदेव चिल्ला उठा।

किन्तु कौन किसकी बात सुनता है ? विद्युतगति से बटल के हाथ की तलवार चलने लगी। तेज तलवार के गहरे आघात से एक एक कर कीमती सीन बरबाद हो गये। बटल् के उन्मत्त मायियों के हमले से मंच का कठघरा भी क्षतिग्रस्त हुआ। यवनिका नीचे गिरकर नष्ट-भ्रष्ट हो गयी।

लेबेदेव चीख उठा 'ओ दरवान, बन्द करो यह सब काण्ड !" लेकिन देशी सेवकगण साहब लोगों का रंगढंग देखकर मूरत की तरह खड़े रहे। उस पर सामने तलवारधारी मदमत्त साहब। सेवकगण एक कदम भी आगे नहीं बढ़े। बटल् के एक साथी ने जलती मोमबत्ती से सीन के एक हिस्से में आग लगा दी। आग धाँय धाँय कर जल उठी।

बटल के दल को रोकने के लिए लेबेदेव खुद ही आगे बढ़ा, किन्तु बटल के दूसरे साथी ने लेबेदेव के माथे पर मदिरा की बोतल दे मारी। लेबेदेव अचेत हो टूटे रंगमंच पर गिर पड़ा।

जब होश हुआ, लेबेदेव ने देखा कि वह सज्जाकक्ष में एक मेज पर लेटा है। बहुत-सारे लोगों की भीड़। सामने उत्सुक नेत्रों से निहारती चम्पा। कुसुम भी

थी। एक झालरवाले पंखे से वह लेबेदेव के सिर पर हवा कर रही थी। लेबेदेव के माथे में असह्य पीड़ा। माथा पट्टी से बँधा हुआ। गोलोकनाथ दास जानकार की तरह लेबेदेव की नाड़ी देख रहा था। उसने आश्वस्त करते हुए कहा, "कोई भय नहीं, साहब, माथे पर जोर से लगी थी। जरा-सा कट गया है, जल्द ही ठीक हो जायेगा। चोट के चलते जब जाड़ा-बुखार नहीं आया, तो अब कोई भय नहीं।"

लेबेदेव को याद आयी बटल और उसके साथियों की निर्मम ध्वंसलीला की बात। लेबेदेव हैरान हुआ। क्या यह काण्ड? लेबेदेव तो सिर्फ चम्पा के सम्मान की रक्षा के लिए गया था। उसके लिए बैंटर् सारे मंच, दृश्यपट आदि को तहस नहस कर डालेगा, क्या? क्या?

गोलोक बोला, "डाक्टरों को विदा कर दिया गया है। चोट खाकर तुम्हारे गिरते ही चम्पा की चीख से अभागे दरबान और नौकरों चाकरों का होश आया। असली मालिक को मार खाते देख वे पागल हो उठे। जिसने जो हाथ में पाया उसीसे बटल् और उसके साथियों को मारने लगा। बैंटर् की तलवार की खाँच से मशालची का कंधा कट गया है, भय की बात नहीं। दरबान वगैरह भी दल में तगड़े थे। उन्होंने तलवार छीन ली, बैंटल अन्त में अपनी जान बचाने के लिए मैदान छोड़कर भाग गया। सेवकों के हाथ से उसने भी कम मार नहीं खायी। बड़े कष्ट से कर्मचारियों ने आग को बुझाया।"

"स्टेज की क्या हालत है?" लेबेदेव ने पूछा।

"वह बात नहीं पूछो वही अच्छा।" गोलोक ने कहा, "सबको फिर नये सिरे से बनाना होगा।"

चम्पा दुख के साथ बोली, "मैं पापिन अभागिनी हूँ। मेरे कारण ही यह सब काण्ड हुआ।

कुसुम बोली, "तू मिथ्या दुख मत कर, चम्पा! तेरा कुछ भी दोष नहीं। दोष सोलह आने मेरा है।"

चम्पा बोली, "तुम्हारा दोष कैसे, कुसुमदी?"

"मैंने तो आज सवेरे ही बाबू से सुना था," कुसुम ने कहा, "आज ही बँगला थियेटर में कोई काण्ड होगा।

चम्पा ने पूछा, "जगन्नाथ बाबू कैसे पहले ही जान गये?"

"उस अंग्रेजी थियेटर के दलमुहा के साथ भाजकल बाबू का खूब मेल जोल है। वहीं बाबू ने सुना कि बँगला थियेटर को नष्ट भ्रष्ट कर दिया जायेगा। यह बात जान लेने पर यदि उसी समय दौड़ी आकर साहब को सचेत कर देती

तो यह काण्ड ही नही होता । मैं क्या जानती थी कि इतनी जल्दी एक लका-काण्ड घटित हो जायेगा ?"

लेबेदेव ने उत्सुक होकर पूछा, "क्या कलकत्ता थियेटर म यह कुचक्र चला था कि बँगला थियेटर नष्ट-भ्रष्ट हो जाये ?"

"वही तो सुना साहब," कुसुम ने कहा, "वह जो तुम्हारा भागीदार है, वही असली शिखण्डी है । उसको सामने रखकर उन लोगो का बडा साहब तुमसे लड रहा है । बाबू बोला कि उन लोगो मे झगडा झझट होने की बात झूठ है । सिर्फ तुम्हे चकमा देने का यह षडयन्त्र है ।"

क्या ही क्रूर मगर सहज षड्यन्त्र ! लेबेदेव ने मन ही-मन अपने को धिक्कारा—क्या सचमुच ही वह निरा बेवकूफ है ! क्यो उसने बिना जाने समझे झूठी आशा म पडकर बटल और उसके दल बल पर विश्वास कर लिया, उत्साह के साथ अपने भागीदार के रूप मे स्वीकार कर लिया ? गोलोक बाबू ने मना किया था, लेकिन लेबेदेव ने उसकी बातो पर कान नही दिया । सफल षडयन्त्र !

कुसुम बोली, 'मैंने सोचा, सन्ध्या समय साहब को जरा एकान्त रहेगा । उसी समय क्यो न षड्यन्त्र की बात कह आऊँ ! ओफ यदि मैं पहले ही भागी आकर बता देती, वैसा होने पर यह काण्ड तो नही हो पाता !'

लेबेदेव उठ बैठा ।

गोलोक न बाधा दी, बोला "उठते क्यो हो, साहब ? थोडा और विश्राम लेने मे शरीर चगा हो उठेगा।"

'विश्राम ? ' लेबेदेव ने कहा, "नही मुझे विश्राम नही । नीच-कमीने लोग कैसा सर्वनाश कर गये, मुझे यह देखना होगा।"

वह खडा होने लगा । माथा उस समय भी धमधम कर रहा था । तो भी मच पर वह जायेगा ही । चम्पा और कुसुम के कधे पर भार देकर वह कांपते कदमो से मच की तरफ बढ गया । गोलोक पीछे-पीछे चला ।

उन लोगो की आँखो के सामने बीभत्स दृश्य । लग रहा था जैसे एक आँधी वर्षा मच के ऊपर से बह गयी है । माल असबाब अस्त व्यस्त, कटघरा उलटा-पलटा पडा हुआ है । सीन दृश्यपट सारे चिथडे चिथडे, यवनिका फट-चिट गयी है । पादप्रदीप और लम्प आदि चूर चूर, फूटी लालटेनो के शीशे इधर उधर बिखरे हुए । जगह-जगह आग मे जली हुई । मोमबत्ती के आलोक की छाया म मच के ध्वस्त स्तूप ने विकट रूप धारण कर लिया था ।

हताशा, घृणा, क्षोभ, प्रतिहिंसा के नाना भावो के मन्थन म लेबेदेव का

मा उफनने लगा। आँखों के सामने तिल तिलकर निर्मित एक मायालोक जैसे आज श्मशानभूमि बन गया है। हजारों रुपये बर्बाद हो गये। बहुत सी वस्तुएँ मरम्मत के सर्वथा अयोग्य। नये सिरे से तैयार करने के लिए हजारों रुपये चाहिए। रुपये कहाँ हैं! आँखों के सामने जो ताण्डव हो गया, उसके लिए कोई भी दैवी दुष्प्रकोप उत्तरदायी नहीं। उत्तरदायी है नीच मनुष्य का कुटिल कुचक्र। कैसा भीषण कपटजाल, कैसा घृणित विश्वासघात!

लेबेदेव गरज कर उठा 'कलकत्ता शहर में क्या कानून अदालत नहीं है? मैं उन्हें सही सबक सिखाऊँगा।"

लेकिन व्यर्थ ही था उसका संकल्प। आहत लेबेदेव दूसरे दिन परामर्श के लिए सीधे एटर्नी डान मैकनर के आफिस मे उपस्थित हुआ। मैकनर ने बहुत ही उदासीनता के साथ उसे बैठने को कहा। संक्षेप में लेबेदेव ने घटना की जानकारी दी, किन्तु मैकनर ने उसे बढ़ावा बिल्कुल ही नहीं दिया। उसने कहा, "मिस्टर लेबेदेव, जोसफ बैटल् ने मुझे पहले ही सारी सूचना दे दी है दोष तुम्हारा है। बैटल् तुम्हारा भागीदार है। उसके काम मे बाधा डालना ठीक नहीं हुआ।"

'कौन-सा काम?" लेबेदेव विरक्ति के साथ बोला, 'थियेटर के सज्जा-कक्ष में एक अभिनेत्री का सर्वनाश कर डालना?"

"बैटल ने सिर्फ नग्नचित्र आँकना चाहा था।" मैकनर ने कहा, "औरत भी सती-साध्वी नहीं। आग क्या लग गयी तुम्हारे सर्वांग में?"

"मैं—मैं उस स्त्री को पसन्द करता हूँ।'

'यह मैं जानता हूँ" मैकनर बोला, 'उस चोर स्त्री के लिए तुम मुझे लालबाजार के लॉकअप मे ले गये थे। तुम्हारे बँगला थियेटर की वही नायिका है। उस तरह की देशी स्त्री पैसा देने से ही मिल जाती है। उसको लेकर भागीदार के साथ कलह करना शोभनीय नहीं।"

"लाख रुपये देकर भी चम्पा जैसी स्त्री को खरीदा नहीं जा सकता।' लेबेदेव ने कहा।

मैकनर हो-हो करके हँस पड़ा। बोला, 'लगता है तुम उस काली औरत के प्रेम में पड़ गये हो।"

"वह बात रहने दो।' लेबेदेव ने कहा, "जोसफ बैटल् ने मेरी बहुत सारी चीजें तहस-नहस कर डाली हैं। उसका क्या उपाय है?'

'तुम्हारी चीजें नहीं,' मै[illegible] [illegible], "दोनों की [illegible] न। बैटल् तुम्हारा भागीदार है।

"भागीदार व्यवसाय का," लेवेदेव बोला, "थियटर के भवन और असवाब का नही। खुद अपने ही द्वारा तैयार किये गय पाटनरशिप डीड के का भूल गये हो तुम ?"

"सम्पत्ति के अधिकार पर तक हो सकता है," मैकनर ने कहा, तुमन बटल को सीन आक्ने के लिए कहा नही, मचमज्जा को वहतर ह लिए कहा नहीं।"

'उसने सब चौपट कर दिया है।"

"वह कहता है कि रद्दी माल को नष्ट किये बिना नय माल का निम होता।"

"वह मब बेकार की बातें मैं सुनना नही चाहता। मैं नालिश करं

"लम्बा मुकदमा चलेगा। कितना पैसा है तुम्हारे पास ? बैटल् से सकोगे, रावय उसकी पीठ पर ह ?"

'कितना खच होगा ?"

'ठीक-ठीक नही कहा जा सकता। मुकदमा चलने पर बहुत रुप कई हजार रुपय। भागीदार के विरुद्ध साझी सम्पत्ति को नष्ट करने क मौग सिद्ध होगा या नहीं, सन्देह है। कुछेक हजार रुपय निकाल सकते

"कुछेक हजार ?" लेवेदेव न कहा, "तुम लोगो की अदालत मे न्याय नही मिलता ?"

"हमारी न्याय-पद्धति की त्रुटियाँ मत निकालो," मैकनर ने वि कहा, "तुम विदेशी रशियन हो, हमारी दया से कलकत्ता शहर मे खाते अपनी हैसियत भूलो मत। नालिश करना चाहते हो तो कम-से-कम रुपय अग्रिम मेरे आफिस मे जमा करा जाओ। उसके बाद तुम्हार पत्र तयार करूँगा।'

"पाँच सौ रुपय !" लेवदेव न कहा, "मिस्टर मकनर, कुछ कम सकता ?"

'यह मेरा आफिस है।" मैकनर वाला, "यह मछली की हाट न को लकर मछली का मोलभाव नही होता।"

'इतन रुपय मरे पास नही हैं। और ऋण लेकर उसकी व्यव सम्भव नही।"

बैरिस्टर जान शॉं स भेंट हुई। ग्राा ने महानुभूति जतायी किन्तु मुकदमा नही करने की सलाह दी। लबेदेव पर जिद सवार थी। रुपया कहा मिल सकता है ? वह कनल किड के बँगले पर हाजिर हुआ। किड न कई हजार रुपये उससे उधार ले रखे हैं। किसी भी तरह से हाथ नीचे नही करता। इस बार भी नही किया। सिर्फ पीठ थपथपाकर कहा "डरो मत। मैं रावथ और बटल् को धमकी दूगा जिससे वे तुमको और परेशान न करें। क्यो व्यथ मामला मुकदमा करोगे ? मुकदमे में हार जीत के बारे मे कुछ कहा नही जा सकता। बल्कि मैं कोशिश करूँगा कि बैटल से कुछ रुपये तुम्हे बतौर मुआवजा दिला दूँ।"

लेकिन लबदेव दया का भिखारी नहा। वह भीख मागकर कुछ रुपये पैसे जेब म भर लेना नही चाहता। वह अपने अधिकार के बल पर क्षतिपूर्ति का दावा करना चाहता है। निरुपाय हो वह न्यायाधीश सर रॉबर्ट चेम्बस के घर उनसे मिलने गया। लेडी चेम्बस एक सगीतज्ञ महिला है। वह लेबेदेव की गुणग्राहिका ह। न्यायाधीश पार्टी मे गये हुए थे। लेडी चेम्बस ने सहृदयता से सारी बातें सुनी, किन्तु बोली कि वह स्वय कुछ करन की क्षमता नही रखती। लेबेदेव चाहे तो पत्र द्वारा न्यायाधीश को जानकारी दे द।

पत्र लिखन का सकल्प लेकर जब लेबेदेव घर लौट आया तो देखा कि कई लोग उसकी बाट जोह रहे थे। ये सब लोग लेनदार थ।

उन्हे कही पता चल गया था कि साहब का थियेटर ध्वस्त हो चुका है, इस लिए वे दौडे आये थे रुपये वसूलने। लेबेदेव अपने देनदारो स एक पैसा भी वसूल नही कर पाया, मगर उसके लेनदार वसूली के लिए मुस्तैद हैं। किसी एक विलियम होथ ने लेबेदेव का काम कर देने की मजदूरी के रूप म कई सौ रुपये का दावा किया है। उस आदमी को वह पहचानता तक नही, काम लेने की बात तो दूर रही। झूठा है जरूर इसके पीछे भी रावथ की साजिश है। कर्मचारी मेल्वी म लेबेदेव ने उस चिट्ठी का उपयुक्त उत्तर लिखन देने को कहा। अन्य वास्तविक लेनदारो का आश्वासन दिया। कहा, "अपना सवस्व तक देकर मैं तुम लोगो का बकाया यथाशक्ति चुका दूगा।'

बहुत ही तेज लेनदार हरिराम। उसने कहा, यथाशक्ति क्या साहब ? मेरी पूरी रकम नही मिलने पर छोडनेवाला नही मैं। आपको जरूर यह पता होगा कि देनदार को जल की हवा खिलाने का कानून है।'

तब करन लायक हालत शरीर और मन की नही। लबेदव खीजकर बोला, 'तुम्हारी जो मर्जी हो करो। मैं एक कानी कौडी भी तुम्हें नहीं दूँगा।'

हरिराम बोला, "तो फिर अदालत म भेंट होगी। लालबाजार की पुलिस

चौकी अवश्य ही श्वसुर का घर नही ।"

दूसर लोगो ने शोर मचाया, "साहब, हमारे रुपय का क्या होगा ?"

'मिलेगा, मिलेगा, जरूर मिलेगा ।"

एक आदमी वोला, 'साहब, मीठी बातो से कुछ नही बनता। मिलेगा-मिलेगा तो बहुत दिन से कहते रहे हो। कितने दिन मे दोगे, साफ-साफ कह दो।"

"सात दिन," आवेश मे आकर लेबेदेव ने कहा, "सात दिन के अन्दर तुम लोगो के रुपय चुका दूगा।"

कुछ लोग अविश्वास से हँसे। एक आदमी ने टिप्पणी जड दी, "साहब के थियटर मे लालबत्ती जलती है, कानून अदालत किये बिना कानी कौडी भी नही मिलने को।'

विरक्त हो लेबेदेव कह उठा, "उस थियेटर की इट लकडी, खिडकी दरवाजे बेचकर भी तुम लोगो के बकाय चुका दूगा। मैं रूसी हू। मै फरेबी नही।

दूसर दिन अभिनेता अभिनेत्रिया को साथ लेकर गोलोकनाथ आया। सभी ने मिलकर जोर दिया, "साहब, आओ हम लोग फिर बँगला थियेटर चलायेंगे।" चम्पा बाली 'मैं एक भी पैसा नही लूगी।" कुसुम भी बिना पैसा लिये काम करने को राजी। उसन जगन्नाथ गागुलि का छोड दिया था। आदमी वह भारी कजूस है। इसके अलावा लेबेदेव के साथ सम्पक रखने की बात को लेकर कुसुम मे उसकी खटपट प्राय चलती ही रहती थी। कुसुम जगन्नाथ से कहीं ऊँचे स्तर के धनी-मानी व्यक्ति की अकशायिनी हो गयी थी। उसने नय बाबू हृषीकेश मल्लिक ने खुशी-खुशी उसे थियेटर मे गाने की अनुमति दी थी। इससे बाबू की सामाजिक प्रतिष्ठा बहुत बढ जायगी। नीलाम्बर बैण्डो का अग्रेजी थियेटर का स्वप्न टूट चुका था। उसने कहा, "आप मेरे रिलीजियन फादर ह, साहब! हमारी नेकी नेकी-ब्लैकी गल ही अच्छी। उन मोम-जैसी मेमा का दल गलकर बह गया है। जाय, अच्छा ही हुआ। आइए, हम लोग एक बार और सघर्ष करें। लाल मूलिया को देख हमे हिम्मत हुई है।'

लेकिन लेबेदेव का मन टूट गया था। वह राजी नही हुआ। कहने से ही थियटर चलाना नही हो जाता। उसन जो ऊँची प्रयोगकुशलता का परिचय दिया था, उसके अनुरूप अभिनय-आयोजन नही हो पाये तो अपयश ही हाथ आयगा। ख्याति के शिखर पर अवकाश ले लेना ही उचित है। नही तो जो आज प्रशसा मे पचमुख है, वे ही निन्दा म शतमुख होकर टराने को आयेंगे। इसके अतिरिक्त आर्थिक सम्बल अति सामान्य। बौखलाये लेनदार। वे तकाजे। नये सिरे से उधार मिलना सम्भव नही। नये सिरे से सीन आकना, नय सिरे से रग-

मच बनाना कैसे होगा ? थियेटर एक अकेले आदमी का काम नही। मच, दृश्यपट, प्रकाश, वाद्य, अभिनय, नाटक, प्रायोजना—सबको मिलाकर थियेटर होना है। किसी एक की नीरसता से सारा मजा जाता रहेगा। नही—अब थियेटर नही।

एकमात्र आशा है—प्रधान न्यायाधीश सर रावर्ट चम्बर्स को पत्र लिखा जाये। सारी बातें लेबदेव ने सक्षेप मे लिखी। कर्नल किड और मिस्टर ग्लड विन के पास मोटी रकम होने की बात लिखी। वही रुपया वसूल होने पर सारी कर्ज चुकायी जा सकती है।

पत्र का उत्तर आया। देनदारी के मामले मे न्यायाधीश कुछ नही कर सकते। प्रधान न्यायाधीश ने कानून का सकेत किया किन्तु वह खुद गर-कानूनी काम कर चुके हैं, यह बात क्या अब साहबी समाज मे अजानी है ? किसी एक बाजार मे बनामी से उन्होंने एक भाग हडप लिया है। उस बाजारवाले मामले की सुनवाई उन्होने खुद की है। बाजारवाले मामले पर विचार करने के लिए न्यायाधीश हाइड को वह रोगशय्या से बेंच पर खीच ले आये। न्याय नही प्रहसन ! सभी लोग छि छि करते है। वही अब लेबेदेव को कानून का सहारा लेने के लिए कहते हैं।

नही, कानून अदालत वह नही करेगा। प्रभु मसीह ने कहा है अगर कोई तुम्हारे कोट के लिए दावा करे तो उसे घडी भी दे डालो। नही तो कानूनजीवी लोग आकर तुम्हारी शर्ट उतार लेंगे।

लेबेदेव ने सात दिन के अन्दर ऋण चुकाने का वादा किया था। रुपये कहा है ? उस थियेटर की ईट-लकडी खिडकी दरवाजे बेचकर वह रुपये जुटायेगा।

लेबदेव के बँगला थियेटर म नयी भीड जमा हो गयी है। भारी तादाद म लोग, लेकिन इस बार दर्शकों की भीड नही। रसग्राही श्रोताओ की भीड नहीं। ईट लकडी पत्थर के नीरस खरीदार लोगों की भीड है। तोडनेवाले मजदूरों के सावेल की चोट से चूना-सुर्खी की परतें उठने लगी। एक एक कर ईटें बाहर आने लगी। उत्तम कोटि की अच्छी-अच्छी ईटें। झाड-फानूसवाले लम्प श्रेताओं की दृष्टि को आकर्षित करते हुए भूमि पर पडे थे। सीन के फ्रेम, मच की लकडी, दीवार से उखडे हुए खिडकी-दरवाजे, अभिनेता-अभिनेत्रियो की पोशाक-सज्जा, बाक्स के ढाँचे, कुर्सी बेंच और अनेक तरह के वाद्ययन्त्र अस्तव्यस्त गिरे पडे थे। जिस थियटर को एक एक दिन करके लेबेदेव ने अपनी देखरेख म तैयार

करवाया था, उसी थियेटर को आज अपनी देखरेख मे ही उसने तोडकर गिरा दिया है।

टामस रावथ न दलाल भेजकर थियेटर को खरीद लेने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन लेबेदेव ने घृणा के साथ उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। प्रवचक, स्वार्थी, कमीन, कुचक्रियो के साथ वह किसी भी प्रकार का सम्पर्क नही रखेगा। उसके अपने हाथो निर्मित उस आत्राक्षित थियटर मे कलकत्ता थियेटर के मालिक लोग नये सिरे मे थियटर चलायें, उनके नृत्य गीत, अभिनय, वाद्यसगीत और तालिया से प्रेक्षागार मुखरित हो—इस अपमान को लेबेदेव सह नही पायगा। युद्ध म वह पराजित हुआ है, किन्तु अपने ही राज्य मे शत्रुआ को युद्ध जीतने का फल नही चखने दगा। सब कुछ को गिराकर मटियामेट कर देगा। शत्रु लोग विजय का आनन्द मना लेने पर भी भोग के आनन्द से वचित रहग। युद्धशास्त्र की इस नीति का सबको पता है। लेबेदेव उसी मटियामेटवाली नीति का अनुसरण करगा। इसीलिए बिना समय गँवाये उसने अपने द्वारा निर्मित थियेटर-भवन की एक एक इट निकालकर सबको पानी के मोल बेच दिया था। हा पानी के मोल ही। उसकी मुसीबत के दिन से फायदा उठाने का मौका देख चालाक व्यवसायी लोगो न सारी मूल्यवान वस्तुएँ पानी के मोल खरीद लेने के लिए भीड लगा रखी थी।

सिर्फ सात दिन का समय है। लेनदारो के रुपये चुका देने का उसने वादा किया है। सिर्फ सात दिन के भीतर वह सारी सम्पत्ति बेचकर अपने को ऋण-मुक्त करेगा। कनल किड, ग्लैडविन आदि जैसे प्रतिष्ठित लोगा पर यद्यपि उसके काफी रुपय निकलते हैं, मगर वादो के बावजूद उन्होने एक दमडी तक नही चुकायी। लेकिन लेबदेव अपने लेनदारा को नही टरकायेगा। और टर-काना चाहने पर भी वे लाग क्या छोड देंगे? लेबेदेव के लिए लालबाजार के जेलखाने का द्वार तो खुला है, एक ही दरख्वास्त और दनदार का जेल।

गोलोकनाथ दास ने परामश दिया 'ग्लैंडविन के विरुद्ध नालिश ठोक दो।" लेकिन वह असम्भव है। मोटी रकम की नालिश म मोटी फीस देनी होगी। लेबदेव के पास तो एक छदाम तक नही।

तोडो, तोडो, हाथ चलाओ। थियेटर की इमारत को तोडकर टुकडे टुकडे कर दो, ईंट-लकडी पत्थर, खिडकी दरवाजे उखाड-उखाडकर पानी के मोल बेच दो। शावेल की ठाय-ठाय आवाज हो रही थी, हडहडाकर बालू सुर्खी गिरी जा रही

मच बनाना कैसे होगा ? थियटर एक अक्ल आदमी का काम नही। मच, दृश्यपट, प्रकाश, वाद्य, अभिनय, नाटक, प्रायोजना—सबको मिलाकर थियटर होना है। किसी एक की नीरसता से सारा मजा जाता रहेगा। नही—अब थियेटर नही।

एकमात्र आशा है—प्रधान न्यायाधीश सर राबर्ट चेम्बस को पत्र लिखा जाय। सारी बातें लेबेदेव न सक्षेप म लिखी। कनल किड और मिस्टर ग्लड विन के पास मोटी रकम होने की बात लिखी। वही रुपया वसूल होन पर सारी कज चुकायी जा सकती है।

पत्र का उत्तर आया। देनदारी के मामले म न्यायाधीश कुछ नही कर सकते। प्रधान न्यायाधीश न कानून का सकेत किया किन्तु वह खुद गैर-कानूनी काम कर चुके हैं, यह बात क्या अब साहबी समाज म अजानी है ? किसी एक बाजार मे बनामी से उन्होने एक भाग हडप लिया है। उस बाजारवाले मामले की सुन-वाई उन्होन खुद की है। बाजारवाले मामले पर विचार करने के लिए न्यायाधीश हाइड को वह रोगशय्या से बच पर खीच ले आय। न्याय नही प्रहसन ! सभी लोग छि छि करते है। वही अब लेबेदेव को कानून का सहारा लेन के लिए कहते है।

नही, कानून अदालत वह नही करेगा। प्रभु मसीह न कहा है अगर कोई तुम्हारे कोट के लिए दावा करे तो उसे घडी भी दे डालो। नही तो कानूनजीवी लोग आकर तुम्हारी शर्ट उतार लेंग।

लेबेदेव न सात दिन के अन्दर ऋण चुकाने का वादा किया था। रुपय कहाँ ह ? उस थियटर की इट लकडी खिडकी दरवाजे बचकर वह रुपय जुटायगा।

लबदेव के बँगला थियेटर मे नयी भीड जमा हो गयी है। भारी तादाद मे लोग लेकिन इस बार दशको की भीड नही। रसग्राही श्रोताओ की भीड नही। इट लकडी-पत्थर के नीरस रोजगार लागो की भीड है। तोडनेवाले मजदूरो के साबल की चोट स चूना-सुर्खी की परतें झडने लगी। एक-एक कर इटें बाहर आने लगी। उत्तम कोटि की अच्छी-अच्छी ईंटें। झाड-फानूसवाले लम्प श्रोताओ की दृष्टि को आकर्षित करते हुए भूमि पर पडे थे। सीन के फ्रेम, मच की लकडी, दीवार से उखडे हुए खिडकी-दरवाजे, अभिनेता-अभिनेत्रियो की पोशाक सज्जा, बाक्स के ढाँचे, कुर्सी बेंच और अनेक तरह के वाद्ययन्त्र अस्तव्यस्त गिरे पडे थे। जिस थियेटर को एक एक दिन करके लेबदेव न अपनी देखरेख म तयार

करवाया था, उसी थियेटर को आज अपनी देखरेख मे ही उसने तोडकर गिरा दिया है।

टामस रावथ ने दलाल भेजकर थियेटर को खरीद लेने का प्रस्ताव रखा था, लकिन लेबेदेव ने घणा के साथ उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। प्रवचक, स्वार्थी, कमीने, कुचक्रिया के साथ वह किसी भी प्रकार का सम्पक नही रखेगा। उसके अपने हाथो निर्मित उस आरक्षित थियेटर मे कलकत्ता थियेटर के मालिक लाग नये सिरे से थियेटर चलायें, उनके नृत्य गीत, अभिनय, वाद्यसगीत और तालिया से प्रेक्षागार मुखरित हो—इस अपमान को लेबेदेव सह नही पायगा। युद्ध म वह पराजित हुआ है, किन्तु अपने ही राज्य मे शत्रुओ को युद्ध जीतने का फल नही चखने देगा। सब कुछ का गिराकर मटियामेट कर देगा। शत्रु लाग विजय का आनन्द मना लेन पर भी भोग के आनन्द से वचित रहेंगे। युद्धशास्त्र की इस नीति का सबको पता है। लेबेदेव उसी मटियामेटवाली नीति का अनुसरण करेगा। इसीलिए विना समय गँवाये उसने अपने द्वारा निर्मित थियेटर भवन की एक एक इट निकालकर सबको पानी के मोल बेच दिया था। हा, पानी के मोल ही। उसकी मुसीबत के दिन से फायदा उठाने का मौका देख चालाक व्यवसायी लोगा न सारी मूल्यवान वस्तुएँ पानी के मोल खरीद लेने के लिए भीड लगा रखी थी।

सिफ सात दिन का समय है। लेनदारो के रुपये चुका देने का उसने वादा किया है। सिफ सात दिन के भीतर वह सारी सम्पत्ति बेचकर अपने को ऋण मुक्त करेगा। कनल किड, ग्लैडविन आदि जैसे प्रतिष्ठित लोगो पर यद्यपि उसके काफी रुपये निकलते हैं, मगर वादो के बावजूद उन्होने एक दमडी तक नही चुकायी। लेकिन लवदेव अपने लेनदारा को नही टरकायेगा। और टरकाना चाहन पर भी वे लोग क्यो छोड देंगे? लेबेदेव के लिए लालबाजार के जेलखाने का द्वार तो खुला है एक ही दरख्वास्त और देनदार को जेल।

गोलोकनाथ दास ने परामश दिया, "ग्लैंडविन के विरुद्ध नालिश ठोक दो।" लेकिन वह असम्भव है। मोटी रकम की नालिश म मोटी फीस देनी होगी। लेबदेव के पास तो एक छदाम तक नही।

तोडो, तोडो, हाथ चलाओ। थियेटर की इमारत को तोडकर टुकडे टुकडे कर दो, इट लकडी पत्थर, खिडकी दरवाजे उखाड-उखाडकर पानी के मोल बेच दो। शावेल की ठाय ठाय आवाज हो रही थी, हडहडाकर बालू सुर्खी गिरी जा रही

थी। लाल धूल ने आकाश का रँग दिया था। लेकिन लेबेदेव के मन म रंग का नाम तक नहीं था। हृदय को कडा किय इंट-लकडी की कठोरता स वह अपना कारबार किय जा रहा था। सिर्फ नुकसान उठाने का कारबार। अपनी समझ के अनुसार इज्जत बचाने का यही एक रास्ता है। डूबते जहाज से यात्री अपनी प्रिय वस्तुएँ समुद्र म फेंककर हल्का होना और अपने प्राण बचाना चाहता है। लेबेदेव उसी तरह अपनी प्रतिष्ठा बचाने को बचैन है।

सिर्फ सात दिन का समय। दिन पर दिन बीतने लगे। जसे जैसे रुपये की आमद होती है वस-वसे लेबेदेव लेनदारो के बकाये चुकाता जाता है। थियेटर-भवन मिट्टी म मिल गया। सिर्फ मिट्टी और इट के ढेर। और रहा ही क्या? कुछ भी नही। लेकिन ऋण का अन्त नही हुआ।

सिर्फ दो सौ सत्ताईस रुपये का दावा करते हुए हरिराम ने परवाना जारी करवाया। लेबेदेव लालबाजार के फाटक म बन्द हो गया।

जेलखाने म समय-ही समय। समय मानो निश्चल पहाड हो। भारी बोझ बनकर समय मन के अन्दर बठा रहता है। लेबेदेव साधारण दागी आसामियो के साथ है, वही जो एक रूसी नागरिक, सुप्रसिद्ध वादक, प्रथम बँगला थियेटर का नियामक, भाषातत्त्वविद् बुद्धिजीवी और संस्कृति का सवाहक है। लालबाजार म साधारण कैदियो के साथ वह रहता है। कई मास पूर्व वह एक बार इस जेल मे आया था। उस समय शहर के नामी वादक के रूप मे उसने ख्याति भी पा ली थी। एक दागी रमणी की मुक्ति की टोह म वह आया था। 'खाचा रथ' म वह रमणी शहर की परिक्रमा कर आयी थी। लेबेदेव के मन मे उसे मुक्त करने की इच्छा थी। लेकिन अब वह खुद ही फाटक के अन्दर है। रमणी चोर नही थी, फिर भी चोरी के अभियोग मे सजा पायी। लेबेदेव अकिंचन नहीं, तब भी अकिंचन की भांति साधारण कैदियो के जेल म अटका पडा है। क्रिड और ग्लैडविन अगर कुछ भी रुपया चुका देते तो लेबेदेव सारे ऋण चुकाकर नया जीवन शुरू कर पाता। लेकिन दूसरे के हाथ म धन गया तो गया—पर हस्ते गत धनम्! बाहर का बरकशीश का लोभ देकर लेबेदेव ने कागज-कलम मंगायी और बरिस्टर जान शा को एक चिट्ठी लिखी—सिर्फ मामूली-सी रकम का दावा है वह दावा भी आधाररहित अविलम्ब जमानत की व्यवस्था करो

बरिस्टर जान शा आदमी बुरा नही, देसी स्त्री के साथ घर बसाये हुए है, मसाले के व्यवसाय को लेकर डचो के इलाके मे सट्टा खेलता है हाथ मे रुपया

रहने पर दरियादिल की तरह खर्च करता है। सम्भव है वह लेबेदेव की जमानत के लिए खडा हो जाये।

दो दिनो तक नरक की यन्त्रणा भोग लेने के बाद लेबेदेव मुक्त हुआ। जेलर ने कहा, "आप मुक्त हैं। जिस ऋण के दावे के चलते फाटक के अन्दर रहना पडा वह चुका दिया गया है।"

"तो क्या अब जमानत नही ?"

"नही, ऋण चुका दिया है।"

लेबेदेव का मन कृतज्ञता से भर उठा। जान शॉ ने सचमुच एक महान मित्र-जैसा काम किया है। सिर्फ जमानत की व्यवस्था नही, ऋण ही बिल्कुल चुकता कर दिया है।

जेल के फाटक के पास सेल्वी और गोलोकनाथ दास प्रतीक्षा कर रहे थे। इन दुख के दिनो मे उनसे छोडा नही जाता। लेबेदेव को घर ले जाने के लिए वे भाडे पर गाडी ले आये थे।

गाडी के अन्दर प्रतीक्षा कर रही थी चम्पा।

'नही, ऐसा अब क्यो ?" लेबेदेव ने कहा।

"मैं भुक्तभोगी हूँ," चम्पा बोली, "मैं जानती हूँ कि फाटक के अन्दर की यन्त्रणा कैसी होती है।'

"मिस्टर जान शॉ की कृपा से मुक्ति मिली," लेबेदेव ने कहा, 'उसको चिट्ठी लिखी थी, उसीने ऋण चुकाने की व्यवस्था करके मुक्ति दिलायी।"

सेल्वी बोला, 'नही, मिस्टर शॉ ने कुछ नही किया। आपकी चिट्ठी पाकर मुझे बुला भेजा। खेद जताते हुए उन्होने कहा कि डच इलाकेवाले व्यवसाय मे उन्हे भारी नुकसान हुआ है वह जमानत की कोई भी व्यवस्था नही कर पायेंगे। हम लोगो से ही व्यवस्था करने को कहा।

'क्या व्यवस्था की ?' लेबेदेव ने पूछा, 'किसने फिर उधार दिया ?"

सेल्वी ने हिचकिचाहट दिखायी, फिर बोला, 'मुझे बोलने की मनाही थी, लेकिन आपसे छिपाना अन्याय होगा। ये ये रुपये मिस चम्पा ने दिये है।'

'चम्पा ! तुमने एक साथ इतने रुपये दे दिये ?" लेबेदेव ने कहा।

'यह फिर मैंने किया ही क्या है !" चम्पा बोली "मैं फाटक के अन्दर रहने की यन्त्रणा जानती हूँ।'

"छि छि, तुम ये रुपये देने क्या गयी ?"

"रुपये तुम्हारे ही थे, साहब,' चम्पा ने कहा, "तुमने जो सोने का तुलसी

दाना मुझे उपहार में दिया था, उसी को बचकर तुम्हारी मुक्ति की व्यवस्था की है।"

नेबेदेव की आखे सहसा अश्रुसिक्त हो उठीं।

दु खेस्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगत स्पृह । वीतरागभयक्रोध स्थितधी मुनिरुच्यते ॥

शिक्षक गोलाकनाथ दास गीता पाठ कर रहा था और लेबेदेव तन्मय होकर सुन रहा था। दुख म जिसका मन उद्विग्न न हो। सुख म जिसकी स्पृहा नही, जिसे अनुराग भय क्रोध नही, वैसे ही स्थिर मनवाले मनुष्य को मुनि कहते हैं। गोलोक ने अनुवाद किया। लेबेदेव न सन्दर्भ के लिए उन्हे लिख लिया।

नहीं लेबदेव हि दुओ का मुनिपद पाने योग्य कभी नही हो सकेगा। दुख से उसका मन उद्विग्न है। स्वार्थी और कुचक्री अंग्रेजो के षडयन्त्र के चलते कल कत्ता शहर का सुप्रसिद्ध वादक, प्रथम बँगला थियेटर का प्रतिष्ठाता और सूत्र धार आज एकाएक सवस्वहीन हो चला है। भविष्य तो दूर की बात है, वत मान का निर्वाह कैसे होगा—यह भी अनिश्चित। थियेटर नष्ट हो गया। वादक दल टूट गया, अब सिर्फ साहबो अफसरो और देशी धनी मानी लोगो की पार्टियो और समारोह के अनिश्चित बुलावा पर निभर रहना होगा। भग्नहृदय लेबदेव की पुरानी वायलिन स स्वरो का उच्छ्वास नही उभर पाता। वह सुख चाहता है, सुख को प्राणो मे भर लेना चाहता है। अंग्रेजी समाज मे यह विन्शी अब सुख सुविधा नही प्राप्त कर सकेगा, यह बात निश्चित है। इसीलिए लेबेदेव न शिक्षक गोलोकनाथ दास की देखरेख म संस्कृत और बँगला भाषा के साहित्य म अपने-आपको तल्लीन कर दिया। भारतचन्द्र राय की रचना 'विद्यासुन्दर' वस्तुत सुन्दर है! क्या ही उसकी शब्दयोजना! लेबेदेव ने रूसी भाषा म उसका अनु वाद किया। घण्टे पर घण्टे दिन पर दिन वह रससागर म डुबकी लगाने लगा। संस्कृत और रूसी भाषाओ म कैसी समरूपता! साम्राज्यलोभी अंग्रेज बनिये संस्कृत भाषा का रसमाधुर्य क्या समझ पायेंगे? उनका लक्ष्य है—शासन और शासन! इसी उद्देश्य स देशी भाषा जितना सीखने की जरूरत है, उतना ही ये लोग सीखेंगे! सर विलियम जोन्स विद्वान व्यक्ति थे। किन्तु संस्कृत लिपि के बारे मे उन्होंने जो मत व्यक्त किया था उसे लेबदेव स्वीकार नही कर सकता। लेकिन लेबेदेव की मान्यता अंग्रेजी विद्वतसमाज म ग्राह्य नही। विदेशी होने के कारण ही क्या उसकी मान्यता को उन लोगो ने उड़ा दिया है? लेबेदेव ने प्राच्य भाषा का एक नया व्याकरण लिखा है। उसे प्रकाशित करना होगा।

कई वष पहले एक पुस्तकाकार रचना मास्को से रूसी भाषा मे प्रकाशित हुई थी। व्याकरण को अंग्रेजी भाषा मे प्रकाशित करना होगा। ताकि उसकी विद्वत्ता अंग्रेजी समाज मे प्रतिष्ठित हो, लोग समझें कि लेबेदेव केवल वादक नही विद्वान भी है।

किंतु भाषा-साहित्य के रससागर मे डुबकी लगाने पर भी लेबेदेव को सुख कहाँ ? जो आदमी कलकत्ता शहर मे वर्षों से लगभग पाँच हजार रूबल के बराबर कमा लेता था, वह आज प्राय कौडी-कौडी का मुहताज है। सम्पत्ति चाहिए। भाग्यान्वेषी अंग्रेजो ने पूरब के देशो म छल-बल और कौशल से लाखो मुद्राएँ अर्जित की हैं। अपने देश लौटकर शेष जीवन वे नवाबी भोग विलास मे बिता रहे हैं। केवल उच्च पदस्थ राजकमचारी नही, साधारण अंग्रेजो तक ने बेहिसाब धन कमाया है। और लेबेदेव थियेटर के मादक आकषण म अपना उपर्जित धन दोनो हाथो से लुटाकर सवस्वहीन हो चुका है। अगर कुटिल अंग्रेजो के षडयन्त्र से उसका सवनाश नही होता तो उसी थियेटर से वह फिर धनी हो जाता। जोसफ बटल और उसके दल के लोग अपना मतलब पूरा कर फिर रावथ के साथ जा मिले ह कलकत्ता थियेटर फिर इस गौरव के साथ चालू हो गया है कि उसकी होड लेनेवाला अब कोई नही। नही लेबेदेव अपने भाग्य को बदलेगा ही। मेरिसन की बात याद आयी। छोकरे की कोई खोज-खबर नही। नारी शरीर का लोलुप और मद्यप वह अंग्रेज युवक अपने भाग्य की खोज म सब-कुछ छोडकर निकल पडा है। कहा गयी उसकी लोलुपता ? कहा गया उसका चटोरपन ? लेबदेव भी भाग्य को बदलकर रहेगा। वह सस्कृत श्लोक तो कहता है—लक्ष्मी उद्योगी पुरुष सिंह का ही वरण करती है, सोये हुए सिंह के मुख मे मृग नही प्रवेश कर जाता। लेबेदेव ने लन्दन स्थित रूसी राजदूत महामहिम काउण्ट वोरोनसोव के नाम, सहायता का अनुरोध करते हुए, एक पत्र 'राइनेल सारलट नामक जहाज के एक नाविक के हाथ भेज दिया है। उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है। विलायत से पत्राचार मे कई मास लग जाते हैं।

कई दिनो से हाथ प्राय खाली था। मिसेज लूसी मेरिसन के यहा से वायलिन बजाने का बुलावा आया। मिसेज मेरिसन लिखती है—उसके विवाह की वषगाँठ के अवसर पर लेबेदेव यदि वायलिन बजाये तो उचित पारिश्रमिक वह देगी। विवाह की वषगाठ ! जिसके एक विवाह को मृत्यु ने चौपट कर दिया और दूसरा विवाह सिफ नाम भर का है उसीके विवाह की वषगाठ मे वायलिन

नही। दरवाजे खिडकियो पर भारी पर्दे। एक मेज पर बडी-सी घडी, जिसे स्वणजटित दो नग्न नारी मूर्तिया हाथा म थाम हुए थी। पूरे कमरे का रहस्य-मय धुधलका सिफ एक मामवत्ती के आलोक मे तरल हो उठा था।

लेकिन कहा है लूसी मेरिसन ?

लेवेदेव न चकित होकर पुकारा, "मिसज मरिसन ? कहां हो तुम ?"

दरवाजे का पर्दा हिल उठा। कुछ खसखसाहट की आवाज, पर्दा हटाकर लूसी मेरिसन ने प्रवश किया। विवाहवाला शुभ्र वस्त्र उसका पहनावा। सिर पर सफेद आढनी छाती पर उजले लस, कमर से नीचे फली हुइ श्वेत गाउन भूमि का स्पश कर रही थी। हवा म तैरत ग्नन मघ की भाति लूसी मेरिसन न कमरे म प्रवेश किया। मोमबत्ती के आलोक मे वह अवास्तविक लग रही थी। उसने जरा झुककर भद्रता जतायी।

"क्या बात है, मिसेज मेरिसन ?" लेवदेव ने पूछा, "आज तुम्हारे विवाह की वषगाठ है! कहा है आलोक, कहा है और लाग, कहा है समारोह ?'

'आलोक मेरे मन मे है,' लूसी बाली, "लोगो मे तुम हो, और तुम्हारी वायलिन का स्वर ही समाराह है।"

' नही, नही, बात मैं समझ नही पा रहा हू।" लेवेदेव ने कहा।

"सारे नौकरो को खिसका दिया है। और तुम्हे एक ऐसे क्षण मे बुलाया है जब प्रियतम के साथ मेरा मिलन हागा।"

कुछ सन्दिग्ध होकर लेवदेव न प्रश्न किया, "क्या तुम किसी और की प्रतीक्षा कर रही हो ? '

"अवश्य।"

'किसकी ?"

"अपने प्रियतम की। विवाह की वषगाठ क्या प्रियतम के बिना पूरी हाती है ?"

तो क्या आज मिस्टर मेरिसन आ रहा है ?"

'अवश्य। उसको आज आना ही होगा। इसीलिए तो मेरा यह अभिसारिका का रूप है।"

लेवदेव न हाथ की वायलिन का नीचे रख दिया। लगता है पति-पत्नी मे फिर मेल हो गया है! अच्छा, अच्छा है। लेकिन। लेकिन चम्पा की बात याद आयी। उस अभागिनी का क्या होगा ? लेवदेव का मन विपाक्त हो उठा। सभी धूत। सभी प्रवचक। जात समय क्या मरिसन न चम्पा से नही पूछा था, 'तुम मेरी खातिर प्रतीक्षा करागी ?' क्या चम्पा ने नही कहा था कि युग युग तक

बजाने का आमन्त्रण ! पारिश्रमिक वह नही लेगा लेबेदेव ने सोचा। किन्तु इतनी हार्दिकता दिखाने योग्य आर्थिक अवस्था नही। लेबेदेव ने आमन्त्रण को स्वीकार कर लिया।

मिसेज मरिसन का बैठकखानावाला घर लेबेदेव का देखा जाना है। सन्ध्या के घनीभूत होने पर वह वायलिन हाथ मे लिये वहा हाजिर हुआ। विवाह की वषगाठ की पार्टी। किन्तु और लोग कहाँ हैं ? बाहर घोडागाडिया भी नही खडी हैं। भीतर से भी आमन्त्रितो की बातचीत सुनायी नही पडती। तो क्या दिन और समय की भूल हुई ? कोट की जेब से निमन्त्रणपत्र को धुधले प्रकाश मे आखो के निकट ले जाकर देखा, पढा—कोई भूल हुई नहीं। अन्धकार मे घर को पहचानने मे भी उसने भूल नही की। ठीक जगह पर वह आया था। तो फिर ?

फाटक भिडा हुआ था। कुण्डी खटखटाने पर भी कोई सकेत नही मिलने देख लेबेदेव खुद ही द्वार को ठेलकर भीतर घुसा। और दिन आगन्तुको की भेट पहले नौकर से होती थी किन्तु आज घर मे मानो कोई मनुष्य नही। केवल एक खिडकी से आते धीमे प्रकाश पर नजर गयी।

"कोई है !" लेबेदेव ने पुकारा। कोई आहट नही। क्या यह विवाह के वषगाँठ की पार्टी है ? अतिथियो का समागम नही, नृत्य का आयोजन नही, भोज की व्यवस्था नही, आलोक का उजाला नही। सन्दिग्ध मन से उसने मुख्य कक्ष मे प्रवेश किया।

"बयरा ?"

आहट नही।

"कोइ है ?"

आहट नही।

मिसेज मरिसन !' लेबेदेव ने अबकी पुकारा।

'कम इन, मिस्टर लेबेदेव। मिसेज मरिसन की तेज आवाज सुनायी पडी, बगल के आलोकित कमरे से।

लेबेदेव ने उस आवाज का अनुसरण करते हुए बगलवाले कमरे के दरवाजे पर ठक ठक की।

लूसी फिर बोली, 'कम इन।

लेबेदेव कमरे मे घुसा। कमरे का धीमा प्रकाश धुधला और रहस्यमय। सुसज्जित कक्ष मोटा गलीचा, सोफा कुर्सी बेंच मेज से भरा, सुनहले फ्रेम-लगे बडे-बडे आइने, दीवारो पर छोटे-बडे मँझोले तैल चित्र जिनके विषय भाव दुर्बोध, छत की कडी से लटकता झाड-फानूसवाला लैम्प जिसमे प्रकाश का नाम

नही। दरवाजे खिडकियो पर भारी पर्दे। एक मेज पर बडी-सी घडी, जिसे स्वणजटित दो नग्न नारी मूर्तिया हाथो म थामे हुए थी। पूरे कमर का रहस्य-मय धुधल्का सिफ एक मोमवत्ती के आलोक मे तरल हो उठा था।

लेकिन कहा है लूसी मेरिसन ?

लेवदेव न चकित होकर पुकारा, "मिसेज मेरिसन ? कहा हो तुम ?"

दरवाजे का पर्दा हिल उठा। कुछ ससखमाहट की आवाज, पदा हटाकर लूसी मेरिसन ने प्रवेश किया। विवाहवाला शुभ्र वस्त्र उसका पहनावा। सिर पर सफेद आढनी, छाती पर उजले लेस, कमर से नीचे फली हुई श्वेत गाउन भूमि का स्पश कर रही थी। हवा मे तैरत श्वत मेघ की भाति लूसी मेरिसन ने कमरे म प्रवेश किया। मोमवत्ती के आलोक म वह अवास्तविक लग रही थी। उसने जरा झुककर भद्रता जतायी।

"क्या बात है, मिसेज मेरिसन ?" लवदव न पूछा, "आज तुम्हारे विवाह की वषगाँठ है ! कहा है आलोक, कहा है और लोग, कहा है समारोह ?'

'आलोक मेरे मन मे है," लूसी बोली, "लोगो मे तुम हो, और तुम्हारी वायलिन का स्वर ही समाराह है।'

"नही, नही, बात मैं समझ नही पा रहा हू।" लेवेदेव ने कहा।

"सारे नौकरो को खिसका दिया है। और तुम्ह एक ऐसे क्षण मे बुलाया है जब प्रियतम के साथ मरा मिलन हागा।'

कुछ सदिग्ध होकर लेवदेव ने प्रश्न किया "क्या तुम किसी और की प्रतीक्षा कर रही हो ?"

"अवश्य।"

"किसकी ?'

"अपने प्रियतम की। विवाह की वषगाठ क्या प्रियतम के बिना पूरी होती है ?"

'तो क्या आज मिस्टर मरिसन आ रहा है ?"

'अवश्य। उसको आज आना ही हागा। इसीलिए तो मेरा यह अभिसारिका का रूप है।"

लेवेदेव ने हाथ की वायलिन को नीचे रख दिया। लगता है पति-पत्नी म फिर मेल हो गया है ! अच्छा, अच्छा ह। लेकिन। लेकिन चम्पा की बात याद आयी। उस अभागिनी का क्या होगा ? लेवदव का मन विषाक्त हो उठा। सभी धूत। सभी प्रवचक। जात समय क्या मेरिसन न चम्पा स नही पूछा था, 'तुम मेरी खातिर प्रतीक्षा करोगी ?' क्या चम्पा ने नही कहा था कि युग युग तक

प्रतीक्षा करेगी ? और भाग्य का उदय होने के बाद वह गोरा युवक काली प्रेमिका को मँझधार में छोड़कर गोरी पत्नी के पास लौट आयेगा। ये सभी धूर्त हैं सभी प्रवचक हैं—लेबेदेव ने सोचा।

'लगता है तुम्हें विश्वास नहीं होता क्या ?' लूसी बोली, 'यह विश्वास नहीं होता कि बॉब, मेरा पति, मेरे पास लौट आयेगा ? मैं उस ब्लैक होर् में उसका पीछा ही नहीं छुड़ा सकी। तुम भी नहीं छुड़ा पाये। किन्तु आखिर उसने पीछा छोड़ा ता ! कहो, तुम तो सारी खबर रखते हो, कहो क्या मेरा पति अब उस काली औरत के घर जाता है ?"

"नहीं।

हँस पड़ी लूसी मॅरिसन। एक अस्वाभाविक हँसी।

'मेरा पति उस काली औरत के घर नहीं जाता।" लूसी गर्व से भरकर बोली, "क्या ? क्यो ? मैंने तुम्हारे दरवाजे पर धरना दिया था, अभिनेत्री बनकर प्रतियोगिता में उस औरत को हरान के लिए ! तुम राजी नहीं हुए। लेकिन मैंने हार नहीं मानी। उस ब्लैक-होर को अब अपने पति के कन्धे पर से उतार दिया है।"

'कैसे ?'

फिर हँसी। बन्द कमरे में हँसी की खनखनाहट लोट पोट होने लगी।

'और कैसे ?" लूसी बोली, वशीकरण करके।'

"वशीकरण करके ?

"हाँ, मिस्टर लेबेदेव, हाँ" लूसी मेरिसन विश्वास के साथ बोली, 'बैठक खानावाले बरगद के तले एक सिद्ध योगी रहता है। कितने ही लोग उसके पास जाते हैं। किसी का ब्याह नहीं हो पाता किसी को लड़का नहीं होता, किसी का प्रेमी नहीं रीझता। मेरी आधी कामना उसने पूरी कर दी है उसीने मेरे प्रिय तम को ब्लैक होर के चंगुल से छुड़ाया है। शेष कामना आज पूरी होगी। विवाह की इसी शुभ वर्षगाँठ के अवसर पर मेरा पति मेरे पास लौट आयेगा।"

"तुम इन सब पर विश्वास करती हो ?"

"अवश्य," लूसी कुछ उत्तेजित हो उठी, "विश्वास करूँगी नहीं ? सचमुच योगी, सबकुछ करने की क्षमता है उसकी, मुझे तो मेरे खानसामे की पत्नी ने उसके बारे में बताया। पालकी करके उसके पास गयी। कितने ही लोग जाते हैं। हिन्दू-मुसलमान, हाँ, क्रिश्चियन। कोई विफल होकर नहीं लौटता। मैं भी नहीं लौटूंगी। यह देखो, योगी ने मुझे क्या पहनने को दिया है ?"

लूसी ने अपनी छाती पर से ताँबे की एक बड़ी-सी ढोलकी (ताबीज) बाहर

निकाली। काले सूत से बँधी वह ढोल्की गले मे झूल रही थी। लूसी ने उसे हाथ मे लेकर कहा—'क्या है यह, जानते हो ?'

"क्या ?"

"मगर का दांत। सुंदरवन का मगर, एक बार उसकी पकड मे आने पर किसी को छुटकारा नही। वही दांत आज मेरे पति पर गडा है। वह आज सरसराता हुआ आयेगा।"

लूसी मेरिसन का माथा ठीक तो है ? लेबेदेव को आशका हुई। इस देश मे तावीज ढोल्की, कवच डोरा, झाड फूक खूब चलते हैं। लोग विश्वास करते हैं। तो क्या इसीलिए श्वेत रमणी भी विश्वास करेगी ? लेबेदेव सोचने लगा।

'अब भी अविश्वास ?" लूसी ने कहा, "क्या समझ लू कि इसीलिए तुम मौन हो ? सात बजेंगे, घडी टन टन करके सात बजायेगी। साथ-ही-साथ मेरा पति आयेगा। और साथ ही तुम अपनी वायलिन पर मीठा सुर छेडोगे, उत्तेजक सुर, मदहोश कर देनेवाला सुर। छेडोगे न ?"

"जरूर छेडूगा। लेकिन बजा है कितना ?'

लूसी ने घडी को देखा, उत्तेजित हो बोली, "नही, और दस मिनट बाकी हैं। मिस्टर लेबेदेव, अब समय नही। तयार हो जाओ। अपनी वायलिन बाहर निकालो, सुर दो, जिससे शुभ मुहूर्त व्यर्थ न जाये।"

लूसी चचल होकर छटपट करने लगी। एक बार दरवाजे के पास गयी। फिर जंगले के पास, फिर सोफे पर बैठी और फिर उठकर आईने के सामने खडी हुई। मुख नाक-ऐन पर पाउडर मल दिया। कैसा तो एक अस्वाभाविक बहका-बहका सा भाव।

लेबेदेव ने वायलिन निकालकर टया टया बजाया। गज से सुर दिया। बहुत-सी जगहों मे, बहुत सी अवस्थाओं मे उसने बजाया है, किन्तु इस तरह का रहस्यमय परिवेश उसके लिए बिल्कुल नया है। झाड-फूक-तावीज कवच मे वह विश्वास नही करता, किन्तु इस श्वेत रमणी के विश्वास का तो अन्त नहीं। शायद पतिमिलन-अभिलाषिणी का यह निरा पागलपन है।

कमरे के वातावरण मे उमस थी। भारी भारी माल-असबाब, खिडकी दरवाजे पर टँग पर्दे, अन्धकार जैसे दम घोट दे रहा हो।

"बत्ती जलाने मे नहीं होगा ?' लेबेदेव बोला।

"नही। दृढ स्वर था लूसी मेरिसन का, "नहीं, वह घर का आनाकिन करता आयेगा। मोमबत्ती का आलोक अब नहीं।

लूसी मेरिसन घडी के सामने खडी हुई। स्तब्ध-बन्द कमरे म घडी की टिक

टिक आवाज साफ साफ कानों म आती है। काँटा सात की तरफ बढ़ा आता है। लूसी मेरिसन स्तब्ध हो उठी। वह कान लगाकर सुनने लगी।

लेबेदेव न वायलिन के तार पर एक बार गज फेरी।

लूसी तज स्वर म बोल उठी "बन्द करो वायलिन की आवाज। वह आ रहा है, उसके आने की पगध्वनि सुनने दो।

किसी दूसरे समय म इस प्रकार की कड़ी बात सुनकर लेबेदेव जरूर ही क्षुब्ध होता, किन्तु आज नहीं हुआ। उस हिस्टीरियाग्रस्त प्रौढा रमणी का विरोध करना व्यर्थ था।

घर की स्तब्धता जैसे गहरा उठी। घड़ी की टिक्टिक आवाज और बढ़ गयी। लूसी कान खड़े किये रही, कौतूहलवश लेबेदेव भी।

घड़ी का काटा दिखायी पड़ता है।

टन् टन टन टन टन टन टन्।

कैसा आश्चय, भारी बूटों की आवाज!

लेबेदेव विस्मित।

लूसी अस्फुट स्वर मे बोली, 'वह आता है वह आता है!"

लूसी ताँबे की ढोलकी को बार बार चूमने लगी।

लेबेदेव पहले कही गयी बात के अनुसार वायलिन कन्धे पर रखकर बजाने के लिए तैयार हो गया।

लूसी ने द्वारपथ पर दृष्टि जमा ली।

बूट की आवाज दरवाजे के पास आयी। और भी पास। दरवाजे का पर्दा हट गया।

पर्दा हटाकर घुसा मेरिसन नहीं, एक श्वेतकाय प्रौढ। चेहरा दपदप लाल, गोल मटोल! लेबेदेव ने वायलिन नहीं बजायी।

साथ ही लूसी मेरिसन आर्त्त स्वर म चीत्कार कर उठी और अचेत होकर मेज पर लुढक गयी।

आगन्तुक ने तेज कदमों से आकर लूसी मेरिसन को अपने बलिष्ठ हाथों मे उठा लिया, सोफे पर लिटा दिया।

'मिस्टर लेबेदेव,' आगन्तुक ने कहा, मेहरबानी करके कुछ मोमबत्तियाँ जला देंगे?"

हुक्म के अनुसार काय। कमरे म अनेक मोमबत्तियों के जल उठने पर ही लेबेदेव आगन्तुक को पहचान पाया। यह आदमी वही डाक्टर जान हिक्की है। लूसी मेरिसन ने ही इसी कमरे मे परिचय कराया था। क्षण भर का परिचय,

इसीलिए कमरे के धुधले प्रकाश मे इसे पहचाना नही जा सका।

डाक्टर ह्विटनी ने स्मेलिंग साल्ट की हरी शीशी मूर्छिता की नाक से लगा रखी थी। वह लज्जित होकर बोला, 'मैं बहुत दुखी हूँ, मिस्टर लेबेदेव, तुम्ह ऐसे एक रहस्यमय परिवेश मे लाकर पटक दिया गया है।"

"नही, नही, उसमे क्या हुआ ?" लेबेदव ने कहा, "मिसेज मेरिसन अच्छी है न ?"

"हा, उत्तेजना की स्थिति मे आशाभग होन पर अचेत हो गयी है। अभी उसकी सज्ञा लौट आयगी। यदि कुछ अयथा नही सोचो तो पर्दे हटाकर खिडकियो को खोल दो, ताजी हवा से उसकी चेतना जल्दी लौट आयगी।

लेबेदेव आदशपालन के लिए तत्पर हो गया।

'सारी बातें जानकर जरूर तुम्ह कौतूहल हुआ है ?' डाक्टर न प्रश्न किया।

"कहन की बात नही।'

"मामला बहुत सीधा है।" डाक्टर ने कहा, "लूसी मिस्टर मरिसन को पाने के लिए व्याकुल हो उठी थी। लेकिन तुम जानते हा कि मेरिसन उस काली छोकरी को अलग नही कर पाता। लूसी ने पति को वश मे करने के लिए नाना प्रकार के दशी टोने टोटके किय। जडी बूटी खाने लगी। मैंने इधर उसके स्वास्थ्य की देख भाल की। मेरी मनाही पर कान नही दती थी। मैंने विपत्ति की आशका की। कभी कोई जहरीली चीज खाकर यह औरत मर तो नही जायगी ? मैंने खानसाम की घरवाली के द्वारा उसे उसी योगी के पास भेजा। मोटी बख शीश दन पर उसन मेरे कहने के अनुसार निर्देश दिये। महज मनोवैज्ञानिक मामला। ठीक सात बजे मेरिसन के बदले मैं आया। यह रहस्यमय व्यापार किय बिना किसी भी तरह से लूसी के मन का दाग नही मिटा पाता।

"क्या तुम कहना चाहते हा कि सारा खेल तुम्हारा रचा हुआ है ?"

"हा। म उसे एक मिथ्या मोह स मुक्त करना चाहता हू। जिसे वह पा नही सकती उसके पीछे दीवानी है। मैं उसको चाहता हू।"

कमरे मे फिर स्तब्धता। लूसी मरिसन के सफेद चेहर पर धीरे धीरे रक्त सचार हुआ। उसके दोना होठ थरथरा रहे थे। आखा की पलकें हिल उठी। डाक्टर न उसके कान के पास मुह ले जाकर बडे प्यार से अस्फुट स्वर म पुकारा, "लूसी, लूसी डार्लिंग।"

लूसी न आँखें खोली कमरे म चारो ओर देखा। धीरे धीर उठ बठी। लेबेदव को उसन लक्ष्य नही किया। उसकी दृष्टि डाक्टर पर पडी।

"लूसी डार्लिंग," डाक्टर ने कहा, "माइ पट, माइ डाव, माइ डियरेस्ट हार्ट।"

"जान डियर," लूसी बोली, "तुमने मुझे डरा दिया था। तुम कमरे मे घुसे, मैंने सोचा शायद बॉब आया।'

"यह सब बेकार की चिंता है।" डाक्टर ने कहा, "टॉम, तुम्हारा पहला पति, तो बहुत दिन पहले चल बसा। उसकी कब्र पर नियम स फूल रखना है। वह कहाँ से आयेगा?'

'लेकिन बाब तो जिंदा है,' लूसी अबकी फफक्कर रो पडी, 'वह क्या नहीं आया?'

"डियर, डियर," डाक्टर न कहा, "यो ही मत रो। तुम्हारा रूज नष्ट हो रहा है। वह नहीं आया तो नही आया मैं तो आ गया हूँ।"

"लेकिन योगी ने कहा था वह आयेगा।"

"कौन आयगा?

"मेरा पति।

"मैं ही तो तुम्हारा पति हूँ! मतलब, मै तुम्हारा पति होना चाहता हू! तुम मुझसे विवाह करोगी?

"तुम? लेकिन योगी ने कहा था "

'योगी ने मुझे भेज दिया। उसने कहा तुम जाओ। लूसी मेमसाब पति की प्रतीक्षा कर रही है। तुम उसस विवाह करो, वह सुखी होगी, तुम भी सुखी होगे।"

"क्या सचमुच योगी ने तुम्ह भेज दिया?'

'अवश्य, विश्वास नही होता क्या?' डाक्टर ने कहा, 'तो फिर सुनो, योगी के साथ तुम्हारी क्या-क्या बातचीत हुई थी।"

डाक्टर ने विवाह वषगाठ की सारी घटना की पष्ठभूमि सक्षप म बता दी।

लूसी मेरिसन सीधी होकर बठ गयी, बोली "लो, तुम इतना सबकुछ क स जान गय? आश्चय की बात।"

"आश्चय कुछ भी नहीं।" डाक्टर ने कहा, 'योगी न मुझे सबकुछ बता दिया है और तुमसे विवाह करन के लिए कहा है। तुम्ह लेकर होम लौट जाने के लिए। योगी ने कहा है कि तुम सुखी रहोगी।'

'कहा है कि मैं सुखी रहूगी?'

'हाँ, मैं तुम्ह सुखी रखूगा। लूसी, मैं तुम्ह चाहता हूँ।"

"तब वही हो।" दूसरे ही क्षण लूसी सन्दिग्ध होकर बोली, "लेकिन अपन दूसरे पति के रहते क्या मैं विवाह कर सकूँगी ?"

डाक्टर ने कहा, "उसकी व्यवस्था पहले ही कर रखी है। गवर्नर जनरल के पास दरख्वास्त पेश करके इस विवाह को रद्द कराना होगा। उसके बाद हम विवाह करके होम लौट जायेंगे। डिवनशायर के अपने गाँव म एक छोटा-सा काटेज बनाकर हम दोनों जन सुख से रहगे। कहो लूसी, राजी हो ?"

"राजी हू," लूसी मेरिसन ने जसे नवीन आशा का आलोक दख लिया, बाली, "जान, तुम्हारे ऊपर मैंन अत्याचार किया है, तुम्हारे मूक प्यार पर मैंन ध्यान नही दिया। इसीलिए तुम मानो मेरे पहले पति के वेश म आ गये हो। उसके साथ मैंने विश्वासघात किया था उस कम्बख्त युवक के प्रेम म पडकर। योगी की दया से आज मेरी आखें खुल गयी हैं। आज तुम्हारे रूप मे सिफ तुम्ह नही, अपने पहले पति को भी पा रही हू। बाब मेरिसन दूर चला जाये। विदा ले। मैं प्यार तुम्ह करूँगी। तुम्हे प्यार करत हुए मैं अपने प्रथम पति के प्रति किये गये विश्वासघात का प्रायश्चित्त करूँगी। जॉन, मुझे चुम्बन दो चुम्बन से अपने मिलन को साथक करूँगी।"

डाक्टर ने कमर मे हाथ डालकर लूसी को खडा कर दिया, उसके अधरो पर चुम्बन आक दिया। मुग्धा लूसी ने गले मे बाह डालकर जान ह्विटनी को मारे चुम्बनो के अस्थिर कर दिया।

प्रौढ प्रौढा के इस अप्रत्याशित मिलन पर प्रसन्नचित्त हो लेबेदेव ने वायलिन का सुर छेड दिया। प्रौढ प्रेमीयुगल की सलज्ज हँसती हुई दृष्टि न उस वादक के प्रति कृतज्ञता अर्पित की।

बैठकखाना के बरगद तलेवाल अज्ञात योगी का वशीकरण मन्त्र अन्तत एक आदमी के लिए कारगर हुआ। वह था डाक्टर जॉन ह्विटनी। लूसी मेरिसन थोडे ही समय मे भावी तृतीय पति के प्रति प्रेम से परिपूर्ण हो उठी। उसमे भविष्य का निश्चित आश्रय पाकर वह आश्वस्त हुई। उनके विवाह की कानूनी बाधा दूर होने मे कुछ दिन का समय लगा। राबट मेरिसन लापता है। उसका अता-पता कोई नही दे पाया। विवाह रद्द किये जाने की दरख्वास्त की सक्षिप्त नोटिस सरकारी गजट मे प्रकाशित हुई। दूसरी तरफ से कोई भी अनुरोध या प्रतिवाद नही आया। और आता ही कहाँ से ! राबट मेरिसन की लम्पटता और पत्नी के प्रति दुर्व्यवहार की बात सवविदित थी। गवनर जनरल ने विवाह को रद्द कर दिया।

सेण्ट जान के गिरजे म लूसी मेरिसन का तृतीय विवाह सम्पन्न हुआ।

वहुत अधिक धूमधाम से नही। डाक्टर ह्विटनी समझदार आदमी है। समारोह म व्यथ ही पसा खच करने का राजी नही हुआ। दोना जने की स्वदेश यात्रा म खच काफी हागा। जहाज का भाडा ही करीब दस हजार। फिर भी, किफायतसारी के बीच ही वह लेबेदेव को आमन्त्रित करना नही भूला। उचो का इलाका चुचुडा, जहा व दोनो मधुयामिनी मनाने गये। चुचुडा म गगा के किनारे पर ह्विटनी के एक मित्र का घर है। नये सुख की खाज म वे वही चले गये। विलायत लौट जाने मे कुछ समय लगेगा। मिसेज ह्विटनी की घर सम्पत्ति वेचकर रुपये उगाहन होगे। इस काम का भार टामस रावथ पर पडा, नीलाम दारी जिसका व्यवसाय था।

लेबेदेव का एक नया काम हुआ मुकदमा लडना। वह खुद नालिश करके अपने देनदारो से रुपये वसूल नही कर पाया। लेकिन लेनदारो के हमले स बचने के लिए उसे लडना पडा। अत मे जगन्नाथ गागुलि न नालिश ठोक दी। वहुत चेष्टा करन पर भी वह अधिक का दावा नही कर पाया। सिफ कुछेक सौ रुपये का दावा। फिर भी इस बुरे समय मे बाजार का वह बोझा भी कम नही। लेबेदेव जो फुटकर आय उपार्जित कर लेता था, उसका अधिकाश ही अदालत के खच मे होने लगा।

महामहिम काउण्ट वोरोनसोव के यहा से पत्र का कुछ भी जवाब नही आया। लेबेदेव ने उनके पते पर फिर एक पत्र भेजा। वे यदि एक साथ दो या तीन मस्तूलवाले जहाज भेज दें ता लेबेदेव पूव की पण्य-वस्तुए लादे गगा से नेवा नदी तक की यात्रा पर निकल पडेगा।

अदरक का व्यापारी जहाज की खोज खबर नही रखता। इस देश की यह एक कहावत है। लेकिन लेबेदेव इसको झूठ साबित करना चाहता है। गगा से नेवा—कलकत्ता शहर मे सेण्ट पीटसबग। लेबेदेव की कल्पना का पाल उडता हुआ वह चला, समुद्र से होकर समुद्र के उस पार।

वहुत दिना के बाद वह मलगा मे चम्पा के घर हाजिर हुआ। चम्पा का सौन्दय दारिद्रय के बीच भी खिल पड रहा था। बरामदे का मरगुमी फूल का पौधा पहले की तरह ही हँस रहा था। पालतू काकातुआ पहले की तरह ही 'वेलकम, 'वलकम' पुकार रहा था। चम्पा विपत्ति म पड गयी है। थियेटर के अभिनय के

बाद दाई का काम वह अब और नहीं कर पाती । यहा तक कि दूसरे रास्ते भी सरल नहीं । मामूली जमा पूँजी धीरे धीरे समाप्त होने को आयी । तब भी चम्पा के चेहरे पर की हँसी गयी नहीं । वह घर मे बैठकर मोमबत्तिया बनाती और अपने प्रतिपालक दादू गोलोकनाथ दास की सहायता से उन्हे बेचकर थोडा बहुत उपार्जन कर लेती ।

उस दिन कुसुम चम्पा के घर आयी थी । लेबेदेव से भी भेंट हुई । कुसुम ने आग्रह के साथ कहा "साहब, तुम चम्पा को समझाओ । यह बिल्कुल अबूझ है।"

"बात क्या है, मिस कुसुम ?'

कुसुम बोली, "इतना-कुछ कहा, चम्पा किसी भी तरह से बात नहीं सुनती। और दिना-दिन हाल कैसा होता जा रहा है !"

चम्पा बाधा डालते हुए बोली, "ओफ कुसुमदी, रहने दे वे सब बातें ।"

"लो, रहने क्या दूगी ?" कुसुम टनटनाकर बोल उठी, 'कहा के निकम्मे उस छोकरे साहब के ध्यान मे डूबी हुई है यह छोकरी । लेकिन उधर जो राजा-महाराजा पैरो के पास धरना दिये हुए हैं, उसका होश नहीं ।"

'हुआ क्या है ?' लेबेदेव ने पूछा ।

"मेरिसन साहब का तो पता नहीं," कुसुम बोली "मगर कुमार चन्द्रनाथ राय ने मुझसे वादा किया है कि वह चम्पा को रख लेगा । घर देगा, गाडी देगा, गहने कपडे देगा । कुमार इसका अभिनय देखकर मुग्ध हो गया । ऐसी एक स्त्री को रख पाने से समाज मे उसकी ख्याति बढेगी । फिर भी छोकरी राजी नहीं होती । बहन, तुझे फिर कहती हू राजी हो जा ! कुमार तुझे घर देगा, गाडी देगा, वस्त्राभूषण देगा ।"

चम्पा जरा हँसकर बोली, "मुझे उसका नाम पता दोगी ?'

'इसका मतलब ?"

'मतलब यह कि मुझसे विवाह कर क्या वह अपनी पत्नी के रूप मे मेरा परिचय देगा ?'

"वह कभी नहीं होगा । समाज की एक मर्यादा होती है । हिन्दू पत्निया है । तीन दुल्हने घर मे है । तुझे सबके ऊपर रखेगा, चम्पा !"

"तो फिर रखैल बनाकर रखेगा । विवाह तो करेगा नहीं ।'

"वही एक बात तेरी ! विवाह और विवाह । विवाह नहीं करने से क्या जन्म व्यर्थ हो जायेगा ? कितनी सुन्दर सुन्दर स्त्रिया विवाह किये बिना सुख से घर बसाती है । तू यह नहीं कर सकेगी ?"

'नहीं, कुसुमदी, रखैल रहकर देख चुकी हू । उस पर अब मन नहीं जाता ।'

"तो फिर मर तू !" कुसुम विरक्त हो बोली।

"वही अच्छा।" चम्पा ने जवाब दिया।

कुसुम चली गयी। जाते समय कह गयी, कुमार चन्द्रनाथ बिल्कुल उतावला है। एक बार चम्पा के 'हा' कहते ही पालकी भेज देगा।

कुमार चन्द्रनाथ राय जोडासाको का जाना माना सम्पन्न व्यक्ति है। उसका घर बडे लाट के प्रासाद के समान है। लेबेदेव ने दुर्गापूजा उत्सव मे वहा वाद्य वादन किया था।

"तुम राजी क्यो नही हुइ ?' लेबेदेव ने जिज्ञासा की।

"कारण जानते हो। चम्पा बोली, "उनमे से कोई भी विवाह नही करना चाहता। सिफ रख लेना चाहता है। मजे की एक बात कहती हू। उस दिन तुम्हारा वही स्फिनर आया था। देखती हू वह भी प्रेमनिवेदन करता है। सिफ प्रेम नही, वह विवाह भी करन को तैयार है। मैंने कहा, जानते हो हो कि मेरा अतीत दुर्भाग्यपूण रहा है। मेरा एक वच्चा है जिसका जन्म विवाह के बिना ही हुआ।' *स्फिनर बोला 'म उस लडके को अपने बेटे की तरह आदमी बना* ऊँगा। लेकिन में राजी नही हुई। वह दुखी हो बोला, 'तुम भी चिचि समझ कर मुझसे घणा करती हो!' बात तो सुनो, मैं साधारण नारी हू। मैं मनुष्य मे घृणा करूँगी! नासमझ की तरह रो धोकर वह चला गया।"

'मेरा कहना है कि तुम स्फिनर मे ही विवाह कर लो। तभी शान्ति पाओगी, जैसी शान्ति लूसी ने पायी। राबट मेरिसन पालतू बननेवाला आदमी नही। तुम क्या उसके भाग्यपरिवतन पर आस लगाये बैठी हो ?"

"नही,' चम्पा बोली, "उसके प्रेम का लोभ है, उसके नाम का लोभ है। जिस दिन मुझे और मेरे बच्चे को उसका नाम मिलेगा, उस दिन जीवन सार्थक होगा।'

"लेकिन वह है कहा ?"

'पता नही।"

किन्तु एक दिन पता चल गया।

चम्पा एक छोटी चिट्ठी लेकर लेबेदेव के घर हाजिर हुई। मेरिसन न चिट्ठी म लिखा था कि उसने श्रीरामपुर के डच इलाके म आश्रय लिया है। भाग्यपरिवतन के प्रयास म वह सफल नही हुआ है। अफीम के धन्धे म उसने रातारात अमीर होना चाहा था। बहुत सा पैसा भी कमाया था लेकिन उसके भागीदार

टामस पियसन ने उसे चकमा दिया है। पियसन डच जहाज पर चढकर श्रीराम-पुर स ईस्ट-इण्डीज भाग गया है। इधर लेनदारो ने मेरिसन के खिलाफ धोखा घडी का आरोप करते हुए अग्रेजी अदालत से वारण्ट जारी करवा दी है। मेरि-सन भी भाग जाता लेकिन सिफ चम्पा और बेटे के मोह के चलते वसा नही कर पाया। उसके कलकत्ता शहर जाने का उपाय नही। जाते ही कारावास। हा, पुत्र के साथ चम्पा जरूर श्रीरामपुर के ठिकाने पर चली आये।

चिट्ठी की बात गोलोक बाबू ने भी जान ली।

चम्पा मिलने के लिए जायेगी, किन्तु बच्चे को साथ लेकर नहीं। उसने गोलोक बाबू का साथ लेना चाहा। अजानी जगह। विदेशिया का राज्य। गोलोक बाबू के साथ रहने पर चम्पा को भरोसा रहेगा। गोलोक बाबू ने कहा 'नतिनी इस तरह उतावली जो हो उठी है, आज ही जाऊँगा।" कलकत्ता से श्रीरामपुर अधिक दूर नही है। डचो का राज्य। वहाँ अग्रेजो का कानून नही चलता। अनेक अपराधी अग्रेजी इलाके से भागकर वहा आश्रय लेते है। नदी के रास्ते से जाने म समय ज्यादा लगता है। उससे अच्छा हो कि घोडागाडी से वैरकपुर जाकर गगा को पार किया जाये और जल्दी जल्दी श्रीरामपुर पहुचा जाये। चम्पा समय नष्ट करना नही चाहती।

वाद म लेबेदव ने गोलोक बाबू से श्रीरामपुर की घटना सुनी। उन्ह श्री रामपुर पहुचने मे कई घण्ट लगे। ठिकाने पर मेरिसन को खोज पाने मे असु विधा नही हुई।

गोलोक दास कहता गया, "मिस्टर मेरिसन तो पहचान मे ही नही आता। वह क्षीणकाय हो चला है, गड्ढे मे धँसी आखें और रक्तहीन चेहरे पर बढी हुई खुरदरी दाढी। उसका भाग्यपरिवतन तो हुआ है, लेकिन और भी बदतर। एक देशी होटल के अँधेरे तग कमरे मे उसका बसेरा है। डाक्टर को दिखाने के लिए पसा नही। वैद्य की औपधि उसे जीवित रखे हुए है।

चम्पा को देखकर मेरिसन बच्चे की तरह बिलख पडा। कातर स्वर मे बोला, "मैं सिर्फ तुम्हें देखने के लिए बचा हुआ हूँ, चम्पा डार्लिंग! मेरा प्यारा पुत्र कहाँ है?"

"वह कलकत्ता शहर म है।' चम्पा ने कहा।

"उसे क्यो नही ले आयी? मरने से पहले एक बार उसको देख तो पाता!

'तुम मरोगे क्यो?" चम्पा बोली, "छि छि, ऐसी अशुभ बात नही बोलन, मेरी सेवा से तुम स्वस्थ हो उठोगे।"

हुआ भी यही। गोलोक बाबू कलकत्ता लौट आया। चम्पा श्रीरामपुर मे

रह गयी । यहाँ तक कि बच्चे तक को अपने साथ नहीं ले गयी, कहीं सेवा-सुश्रूषा में बाधा न हो । चम्पा की बूढ़ी दाई माँ बच्चे को देखती भालती है । गोलोक बीच बीच में श्रीरामपुर जाता है उनकी खोज खबर रखता है । गोलोक से पता चला, चम्पा की एकनिष्ठ सेवा सुश्रूषा से मेरिसन कुछ दिनों में स्वस्थ हो उठा । इस बार स्वयं मेरिसन ने चम्पा से विवाह करना चाहा । विवाह श्रीरामपुर में ही हो । डचों का एक बड़ा गिरजाघर है । लेकिन चम्पा बोली, "यहाँ नहीं ।'

क्या चम्पा डार्लिंग ?' मेरिसन ने कहा, 'यहाँ हमारे विवाह में बाधा कहाँ है ? लूसी के साथ मेरा विवाह विच्छेद हो गया है । हम श्रीरामपुर में ही घर बसायेंगे । यहाँ एक टैवर्न खोलूँगा । तुम और मैं, दोनों जने मिलकर उसे एक ऊँचे स्तर का टैवर्न बना देंगे । आओ चम्पा, माइ स्वीट लव, हम गिर्जे में चलकर विवाह करें ।'

चम्पा बोली, 'बाबा साहब विवाह यहाँ नहीं । तुम्हारे खिलाफ धोखाधड़ी का अभियोग है तुम भागकर निकले हो, किन्तु तुम्हारे फरार होने से बात नहीं बनेगी । तुम मुकदमा लड़ो । विवाह की बात उसके बाद ।'

"लेकिन मुकदमे में हारूंगा ही मैं ।" मेरिसन कातर स्वर में बोला, "हालाँकि मैं खास दोषी नहीं फिर भी सजा तो मुझे ही भोगनी होगी । कम्बख्त पियर्सन भागकर बच गया आखिर में जेल मैं जाऊँ ?"

शान्त गम्भीर स्वर में चम्पा ने कहा, "भागते रहकर तुम सुख नहीं पा सकते । बाबा साहब, कब तक भागते रहोगे ? तुम सुख को पाना चाहते तो तुम्हें पकड़ में आना ही होगा । जीवन भर प्रवंचना प्रताड़ना तुमने बहुत की । अब समय आया है उनका प्रायश्चित्त करने का । सजा के बीच से तुम नया आदमी बन उठोगे । चलो कलकत्ता शहर लौट चलो । अदालत में हाजिर हो । सजा भुगतो ।

उन दोनों को कलकत्ता में देख लेबेदेव को विस्मय हो आया था । चम्पा के उस अद्भुत आचरण की बात उसने मेरिसन से सुनी । मेरिसन ने कहा, "मेरी प्रियतमा ने ठीक ही कहा है, मैं चोट खाये कुत्ते की तरह भागता नहीं रहूँगा । मैं लड़ूगा । मैं सजा भुगतूगा ।

मुकदमे में मेरिसन को छ महीने की जेल हुई । सुप्रीम कोर्ट के जज साहब ने ज्यादा दोष पियर्सन पर डाल दिया । लेकिन पियर्सन समुद्र के उस पार है । मेरिसन अपने-आप हाजिर हुआ था इसलिए उसको सजा कम हुई । अदालत से मेरिसन हँसते-हँसते जेल गया । मंगेतर के जेल भेज दिये जाने पर भी चम्पा के चेहरे पर अपूर्व शान्ति थी । वह एक दिन गोलोक को साथ करके मेरिसन को

जेल म देखने गयी थी। मेरिसन ने कहा, "माइ डियरेस्ट, तुम कुछ महीने मेरी प्रतीक्षा करो। ये कुछ महीने दखत देखते बीत जायेंगे। उसके बाद तुममे द्वितीय मिसेज मेरिसन को देखूगा। किन्तु हो तुम अद्वितीय। क्या कुछ मास मेरी खातिर वाट नही जाहोगी, माइ हाट ?"

चम्पा न कहा था, "युग-युग तक वाट जोहूँगी, वाव माहव !"

गोलोक दास का मन खुशी से झूम उठा था।

महामहिम काउण्ट वोरोनसोव ने इस बार भी पत्र का कोई उत्तर नही दिया, जहाज भेजने की वात दूर रही ! जॉन ह्विटनी और लूसी कलकत्ता शहर के काम निवटाकर जहाज से अपने देश को रवाना हुए। लेवदव भी अपने देश लौट जाने का व चन हुआ। हताश होकर उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाज से इग्लैण्ड तव जाने की अनुमति पाने के लिए गवर्नर जनरल सर जान शार के पास आवेदन किया।

अनेक आशा निराशा के वाद लेबेदेव एक दिन सचमुच यूरोप जानेवाले जहाज पर चढा। आखिरी मुलाकात के लिए चादपाल घाट पर कितने ही लोग आये थे। बाबू गोलोकनाथ दास आया था, जिसके साथ इसी चादपाल घाट पर उसका परिचय हुआ, जिसस देशी भाषाएँ सीखने मे उसे सुगमता हुई, जिसकी सहायता से प्रथम बँगला थियेटर का अभिनय सम्भव हुआ। लेबेदेव उसकी वात नही भूलेगा। अपनी पुस्तक मे वह कृतज्ञ भाव से उसका स्मरण करेगा। नीलाम्बर बण्डो सेल्वी, स्फिनर, कुसुम, और भी अनेक आये थे।

आयी नही चम्पा। घर पर ही आकर वह लेबेदेव स विदा ले गयी थी।

"तुम मुझे जहाज पर चढाने के लिए चादपाल घाट नही जाओगी ?"

"नही।' चम्पा बोली।

"क्यो ?"

'घाट भर के लोगो के सामने एक अबोध वच्ची की तरह रा नही पाऊँगी।"

'तुम मेरे लिए रोओगी ?"

"अवश्य तुम्हारे साथ तो फिर भेंट होगी नही।'

'केवल इसीलिए रोओगी ?"

"नही, सो क्या ? रोऊँगी तुम्हारे स्नेह की बात को याद कर। मेरे द्वारा प्रतिदान नही मिलने पर भी तुमने इस साधारण-सी स्त्री को अपने स्नेह से वचित नही किया।'

चम्पा की आखें छलछला आयी। वह कपड़े मे लिपटा एक उपहार ले आयी थी, लेबेदेव के हाथ पर उसे खोल कर धर दिया उसने। दुर्गा का चित्र।

चम्पा बोली, "साहब, तुम शायद मानोगे नही, दुर्गतिनाशिनी दुर्गा तुम्हारे यात्रापथ को मगलमय करेंगी।"

स्नेह दान को लेबेदेव ने पूरे मन से स्वीकार किया।

लेबेदेव ने कहा, "तुम्हारे विवाहोत्सव मे वायलिन बजाने की मेरी इच्छा थी। वह पूरी नही होगी।"

"किसने कहा कि नही पूरी होगी? ' चम्पा दृढ़ विश्वास के साथ बोली, "और कोई सुने-न सुने, तुम्हारी वायलिन का स्वर मेरे कानो मे बज ही उठेगा, जब बाबू साहब के साथ मेरे विवाह का वह शुभ क्षण आयेगा।"

चम्पा ने लेबदेव की पगधूलि ली। लेबदेव ने उसके माथे पर विदा का चुम्बन अंकित कर दिया।

चम्पा तेजी के साथ वहाँ से भाग गयी, शायद रुलाई को रोकने के लिए।

●●